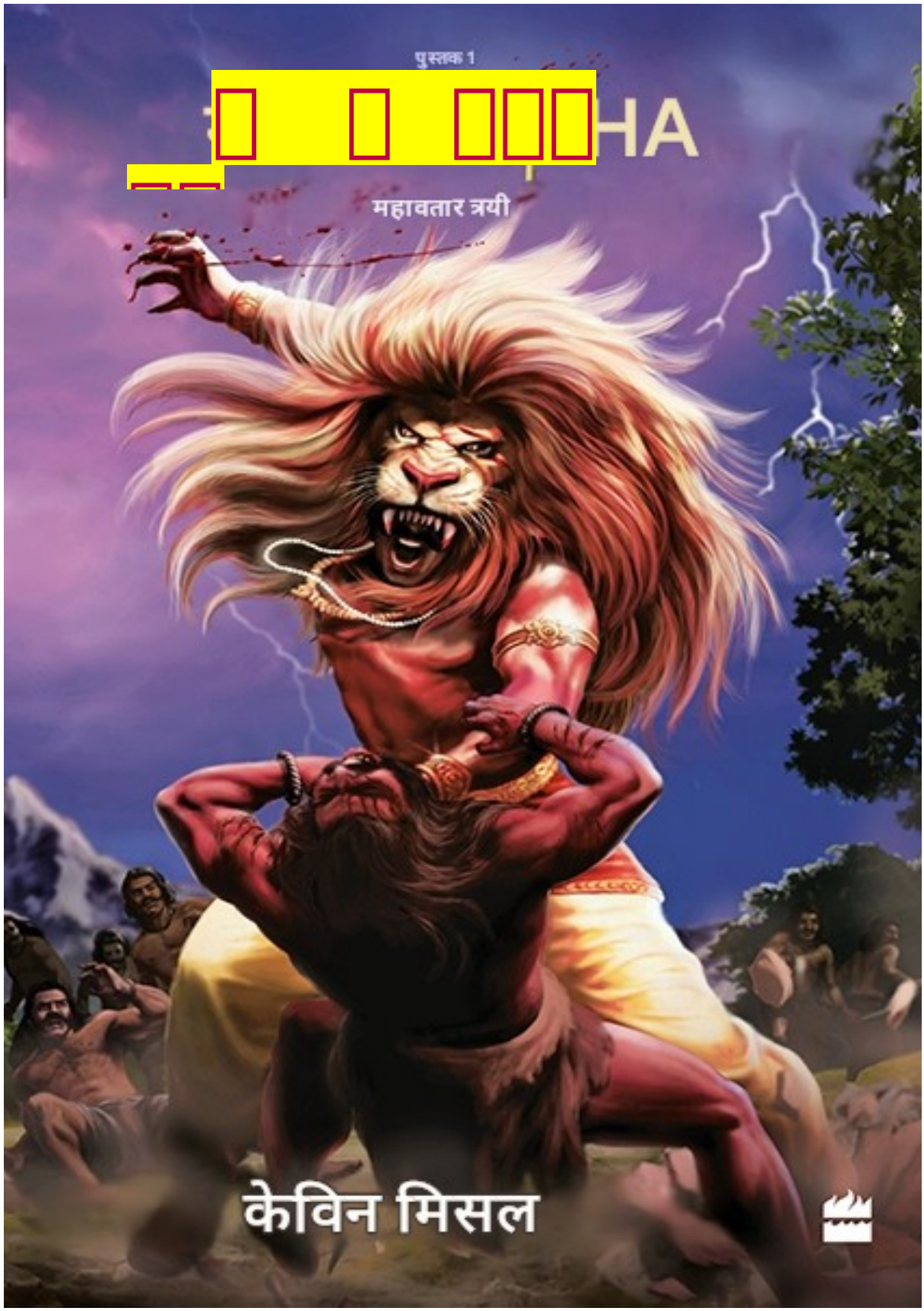
पुस्तक 1
HA
महावतार त्रयी
केविन मिसल

Table of Contents

कवर
शीर्षक पेज
विषयसूची
समर्पण
पाठक के लिए नोट
जनजातियाँ
प्रस्तावना
चौदह साल बाद
1 नरसिम्हा
2 प्रहलाद
3 नरसिम्हा

4 प्रहलाद . .
5 नरसिम्हा . . .
6 नरसिम्हा . . .
7 प्रहलाद . .
8 नरसिम्हा . . .
9 प्रहलाद . .
10 नरसिम्हा . .
11 प्रहलाद . .
12 हिरण्यकश्यप . . .
13 नरसिम्हा . .
14 अनुहराद .
15 प्रहलाद . .
16 होलिका
17 नरसिम्हा . .
18 हिरण्यकश्यप . . .
19 प्रहलाद . .
20 अनुहराद .
21 नरसिम्हा . .
22 हिरण्यकश्यप . . .
23 प्रहलाद . .
24 अनुहराद .
25 हिरण्यकश्यप . . .
26 नरसिम्हा . .
27 होलिका
28 नरसिम्हा . .
29 अनुहराद .
30 प्रहलाद . .
31 हिरण्यकश्यप . . .
32 नरसिम्हा . .
33 होलिका
34 हिरण्यकश्यप . . .

35 □□□□□□□□□
36 □□□□□□□□□
37 □□□□□□□□□□□□
38 □□□□□□□□
40 □□□□□□□□□
41 □□□□□□□□□□□□
42 □□□□□□□□□□□□
43 □□□□□□□□□
44 □□□□□□□
45 □□□□□□□□
46 □□□□□□□□
47 □□□□□□□□
□□□□□□□□
□□□□□
□□□□□ □□ □□□□□ □□□□
□□□□□ □□ □□□□□ □□□□
□□□□□□□□□□

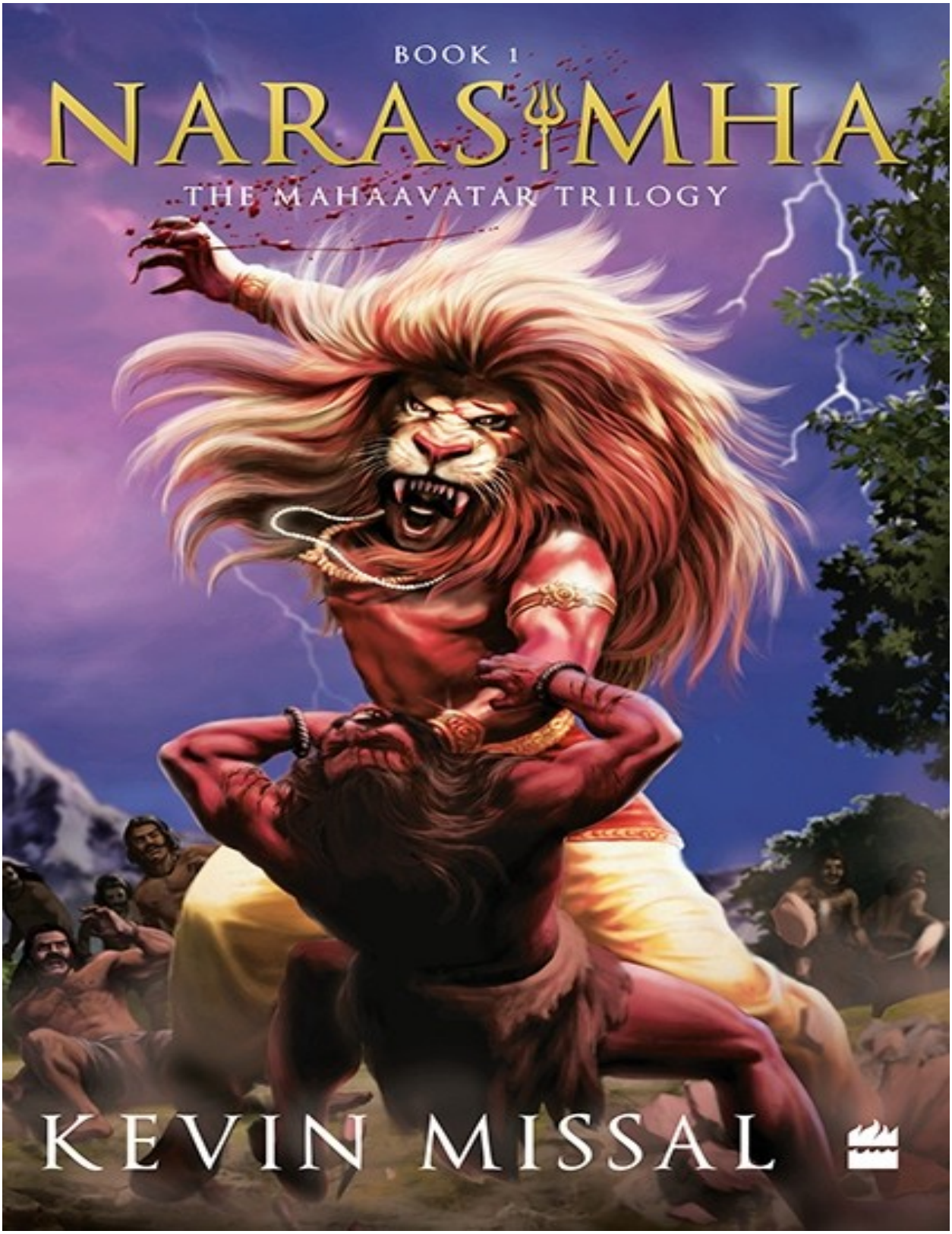
BOOK 1
NARASIMHA
THE MAHAAVATAR TRILOGY
KEVIN MISSAL

पुस्तक 1
नरसिंह
महाअवतार त्रयी

केविन मिसल

मेरे सभी पाठकों को – आप सब बहुत शानदार रहे हैं।
सभी महत्वाकांक्षी लेखकों से मेरा आग्रह है – लिखते रहिए और हार मत मानिए।

अंतर्वस्तु

पाठक के लिए नोट
जनजातियाँ
प्रस्तावना
चौदह साल बाद
1 नरसिम्हा
2 प्रहलाद
3 नरसिम्हा
4 प्रहलाद
5 नरसिम्हा
6 नरसिम्हा
7 प्रहलाद
8 नरसिम्हा
9 प्रहलाद
10 नरसिम्हा
11 प्रहलाद
12 हिरण्यकश्यप
13 नरसिम्हा
14 अनुहराद
15 प्रहलाद
16 होलिका
17 नरसिम्हा
18 हिरण्यकश्यप
19 प्रहलाद
20 अनुहराद
21 नरसिम्हा

22 हिरण्यकश्यप
23 प्रहलाद
24 अनुहराद
25 हिरण्यकश्यप
26 नरसिम्हा
27 होलिका
28 नरसिम्हा
29 अनुहराद
30 प्रहलाद
31 हिरण्यकश्यप
32 नरसिम्हा
33 होलिका
34 हिरण्यकश्यप
35 नरसिम्हा
36 नरसिम्हा
37 हिरण्यकश्यप
38 प्रहलाद
40 नरसिम्हा
41 हिरण्यकश्यप
42 हिरण्यकश्यप
43 नरसिम्हा
44 होलिका
45 प्रहलाद
46 प्रहलाद
47 प्रहलाद

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted]

[redacted]

पाठक के लिए नोट

इस उपन्यास को शुरू करने से पहले, मेरा यह दायित्व है कि मैं आपको सच्चाई बता दूं: यह भगवान नरसिम्हा की सटीक कहानी नहीं है। यह केवल मेरी व्याख्या है; उनकी मेरी पुनर्कल्पना है।
यह कहानी नरसिम्हा की है, जो आधा मनुष्य और आधा शेर है। यह कहानी इल्लावर्ती (वैदिक युग का एक काल्पनिक रूप) की दुनिया से है, जहाँ मैंने धार्मिक ग्रंथों के विभिन्न विश्लेषणों को आधार बनाकर एक सुसंगत कथा रची है। उदाहरण के लिए, भारत के कुछ गाँवों में भगवान नरसिम्हा को चिकित्सक के रूप में पूजा जाता है, इसलिए मैंने इस भाग को पुस्तक में शामिल किया है। साथ ही, कुछ ग्रंथों में प्रहलाद को केवल विष्णु भक्त के रूप में ही नहीं, बल्कि हिरण्यकश्यप की सेना में एक सैनिक के रूप में भी दर्शाया गया है।
इसलिए मैंने इन दोनों चित्रणों को मिलाकर कहानी में शामिल किया है।
हालांकि, मूल कहानी पौराणिक कथाओं से मिलती-जुलती है। मैंने केवल कथात्मक निरंतरता बनाए रखने के लिए विभिन्न कहानियों को एक साथ जोड़ा है।

जनजातियाँ

देवता
देव, इल्लावर्ती के उत्तर में स्थित स्वर्ग द्वीप से आए विदेशी हैं। उन्होंने देश के उत्तरी भाग पर कब्ज़ा कर लिया और प्रमुख शहरों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। उनके शासक का नाम इंद्र है। वे अग्नि, जल और बर्फ जैसे प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा करते हैं। उनकी आयु लंबी होती है - दो से तीन सौ वर्ष। वे अत्यंत गोरे हैं और अक्सर सफेद रंग से जुड़े होते हैं। वे सोमास के निर्माता हैं, जो स्वर्ग में पाए जाने वाले सोमालिया पौधों से प्राप्त एक नीला औषधीय द्रव है। वे धर्म के साथ-साथ त्रिदेव - विष्णु, महादेव और ब्रह्मा में भी विश्वास रखते हैं।
असुरों
असुर पाताल द्वीप के विदेशी हैं, जो काला सागर के पार, इल्लावर्ती के पूर्व में स्थित है। वे भूरे रंग की त्वचा और सुनहरी आँखों वाले हैं और देवताओं की तरह तत्वों की पूजा करने के बजाय शक्ति और वीरता जैसे गुणों की पूजा करते हैं। वे इल्लावर्ती के दक्षिणी क्षेत्रों पर शासन करते हैं और उनकी राजधानी कश्यपुरी है। उन्हें अक्सर बुराई से जोड़ा जाता है क्योंकि उनका कोई धर्म नहीं है और वे किसी धर्म में विश्वास नहीं करते हैं। वे सोमा का सेवन नहीं करते हैं। उनका कवच मजबूत होता है और वे युद्ध में कुशल होते हैं।

दानवस
दानवों को पौलोमा और कालकेय में विभाजित किया गया है। पौलोमा बौने विशालकाय प्राणी होते हैं, जिनकी लंबाई अक्सर दस से पंद्रह फीट तक होती है, जबकि कालकेय बीस फीट से अधिक ऊंचे होते हैं। वे विशेष रूप से उनके लिए निर्मित विशाल मीनारों में रहते हैं। वे बड़ी मात्रा में भोजन और पानी का सेवन करते हैं। वे ऐतिहासिक रूप से असुरों के रक्त संबंधी हैं और हिरण्यपुर में रहते हैं। निरंतर नींद और भोजन की आवश्यकता के अलावा, उनके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।
सिम्हास
इलवर्ती में प्रचलित पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु ने बुराई के विरुद्ध अपने पहले युद्ध में सिंहों की उत्पत्ति की थी। सिंह आधे शेर और आधे मनुष्य के स्वरूप के होते हैं। वे मृत शेर की खाल धारण करते हैं। वे भगवान विष्णु के लुप्त धार्मिक नगर वैकुंठ में निवास करते हैं। चूंकि देवता धर्म के पक्ष में हैं, इसलिए सिंहों ने देवताओं की ओर से युद्ध लड़ा। वे अधर्म से संबंधित मानी जाने वाली प्रथाओं के विरुद्ध हैं। उनके पंजे मजबूत होते हैं और उनकी त्वचा हल्के पीले रंग की होती है। उनकी दाढ़ी लाल रंग की होती है। इस युग का अवतार सिंह वंश से ही होगा।

प्रस्तावना

कायाधु
मृत्यु निकट थी।
कयाधु ने आग के गोले गिरते और जमीन, उद्यानों, खेतों और राज्य की झोपड़ियों से टकराकर फटते हुए देखे। तीरों की बौछार उसके महल के ठीक बीचोंबीच जाकर लगी, जिससे उसके असुर रक्षक घायल होकर खून से लथपथ होकर पीछे गिर पड़े। तीर लगने से बाल-बाल बचते हुए वह अपनी खिड़की से सब कुछ देख रही थी।
क्या हो रहा है?
इससे पहले कि वह स्थिति को समझ पाती, उसने काले कवच में सजे पहरेदारों को अपने कमरे में प्रवेश करते देखा, जिनके ठीक पीछे मानव गुरु नारद थे।
‘महामहिम, हमें आपको राज्य से बाहर ले जाना होगा,’ उसने विनती की।
‘इस हमले के पीछे कौन है?’ उसने पूछा, उसके माथे पर उगे बाल हवा में लहरा रहे थे।
इससे पहले कि नारद कुछ उत्तर दे पाते, एक और तीर कमरे में आया और पालने के पास जा लगा। बच्चा रोने लगा।
‘अनुहराद कहाँ है?’ उसने पूछा और दौड़कर पालने की ओर गई, शिशु को गले लगा लिया।
‘वो… उह… वो भूमिगत मार्ग में है,’ नारद ने सिसकते हुए कहा। वो गंजा आदमी था, जिसने सफेद धोती पहनी हुई थी और सीने पर एक लंबा सफेद मफलर था। ‘छिपा हुआ है। दुश्मन उसे नहीं ढूंढ पाएंगे।’
‘यह अच्छा है।’ उसने शिशु को पालने से उठाया और नारद को सौंप दिया। ‘उन्हें प्रहलाद को भी न ढूंढना पड़े।’
नारद ने बच्चे को गोद में लिया और व्यथित होकर कायधु की ओर देखा। उन्होंने पूछा, 'तुम्हारा क्या हाल है?'

कायाधु ने घबराहट में एक गहरी साँस ली। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे।
वह छिप नहीं सकती थी। वह बेहतर भविष्य, उम्मीद और समाज की बुराइयों से मुक्त होने के लिए पाताल द्वीप से इतनी दूर आई थी।
‘कालकेय और पौलामा कहाँ हैं?’ कायधु ने कश्यपुरी में निवास करने वाली दानव सेनाओं का जिक्र करते हुए पूछा।
‘उनमें से अधिकतर आपके पति के साथ चले गए, महाराज,’ नारद ने कहा।
उसने अभिशाप दिया। हिरण्य ने राज्य को कमज़ोर सेना के साथ अलग-थलग छोड़कर कितनी बड़ी मूर्खता की थी? वह जानती थी कि उसका पति अपने भाई की अस्थियां पाताल की पवित्र नदी में विसर्जित करने गया था।
और वह जानती थी कि वह कुछ समय तक वापस नहीं लौटेगा।
‘बाना तो यहाँ है,’ नारद ने कयाधु के मन की बात जान ली और महल में मौजूद दानव स्वामी का जिक्र करते हुए कहा। ‘होलिका भी यहीं है। वह उन्हें दक्षिणी द्वार पर रोके हुए है।’
तो कुछ उम्मीद जगी, कायाधु ने मन ही मन सोचा और मुस्कुराई। लेकिन फिर उसने नारद की गोद में शिशु को देखा; मासूम, उलझन में और रोता हुआ, और उसकी भौंहें तन गईं। वह झुकी और बच्चे के माथे को चूमा। 'इसे सुरक्षित स्थान पर ले जाओ।' ‘लेकिन आपका क्या कहना है, मेरी देवी?’ नारद ने पूछा।
कयाधु ने अपनी तलवार उठाई और उसे म्यान से बाहर निकाला। उसने नारद के साथ आए पहरेदारों से दो कटार और एक कवच ले लिया। ‘मुझे वहाँ जाकर अपने राज्य के लिए लड़ना है। मैं बस यह जानना चाहती हूँ… ये झंडे किसके हैं?’
नारद ने अपनी आँखें नीचे कर लीं। ‘नीचे।’
"वह खूनी युद्ध भड़काने वाला!" उसने मन ही मन कोसते हुए कहा।
‘वह युद्धविराम के लिए सहमत हो गया था! अब वह हमला क्यों कर रहा है?’ ‘महामहिम,’ नारद ने क्षमाप्रार्थी भाव से सिर हिलाते हुए कहा, ‘वह एक अवसरवादी है। भगवान हिरण्य को जाते देख उसने कश्यपुरी पर आक्रमण करके उसे जीतने का निर्णय लिया।’
कायधु ने मन ही मन प्रतिज्ञा की, "मैं उसे ऐसा नहीं करने दूंगी।"
जब रानी अपने बेटे को विदाई दे रही थी, तो उसने उसके छोटे-छोटे, गालों पर पड़ने वाले गड्ढों वाले हाथों को थामा और महसूस किया कि बाहर युद्ध चल रहा होने के बावजूद, दुनिया में बहुत सुंदरता मौजूद है।
मेरे बेटों के जन्म से पहले तक सब कुछ अवास्तविक सा लग रहा था।

जैसे ही उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, नन्हा प्रहलाद उससे लिपटा रहा, मानो उसे कुछ ऐसा पता हो जो उसे नहीं पता। कायधु ने अपना लॉकेट निकाला और अपने बेटे को दे दिया, जिसकी गोल-मटोल उंगलियाँ उसे कसकर पकड़ लिया।
‘मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगी। चिंता मत करो।’ विदा लेने से पहले उन्होंने शिशु को एक बार फिर चूमा। नारद अनिच्छा से प्रहलाद को गोद में लेकर चले गए, उनके पीछे-पीछे पहरेदार भी चल पड़े।

जैसे-जैसे कयाधु आगे बढ़ती गई, उसके महल के गलियारे लाशों से भरे पड़े थे – बाणों से भेदी गई दासियाँ, गले कटे सैनिक। और जैसे ही वह अपने सामने के भयावह दृश्य को समझने की कोशिश कर रही थी, तभी उसकी नज़र वानरों पर पड़ी, जो उस पर हमला करने के लिए घात लगाए बैठे थे।
तो बंदरों की जनजाति भी इसमें शामिल है, उसने खुद को तैयार करते हुए सोचा। सफेद कवच पहने वानर सेना ने उसे देखते ही उस पर हमला कर दिया। अपनी तलवार का इस्तेमाल करते हुए और उनके हमले को आसानी से नाकाम करते हुए, उसने बंदरों की खाल और हड्डियों को चकनाचूर कर दिया, और वे पीछे हट गए।
जैसे ही वह सीढ़ियों से नीचे भागी, उसने देखा कि उसकी एक असुर दासी के वस्त्र एक नीली आँखों और काले बालों वाले नाग द्वारा फाड़े जा रहे हैं, तो वह अचानक रुक गई। उसने अपनी तलवार नाग पर चलाई और दासी के चीखते ही उसका सिर दो टुकड़ों में फट गया।
'तुरंत भूमिगत मार्ग के लिए निकल जाओ, और अपने साथ जितनी हो सके उतनी महिलाओं और बच्चों को ले जाओ,' कायाधु ने लड़की को निर्देश दिया।
दासी ने सिर हिलाया और भाग गई।
कयाधु ने अपने महल के द्वार खोले और सामने भयंकर युद्ध देखा – कबीले की सेना के विरुद्ध लड़ रहे उसके सैनिकों की विशाल संख्या ही उसे भयभीत करने के लिए काफी थी। दोनों पक्ष तलवारों, लाठियों और त्रिशूलों का प्रयोग कर रहे थे, एक-दूसरे पर प्रहार कर रहे थे और क्रोध से भरे हुए थे जो अंततः फूट पड़ा।

‘अब तो जंगली लोग भी युद्ध का हिस्सा बन गए हैं,’ उसने उपहास उड़ाते हुए कहा।
सिंह ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह हिंसक हो गया, लगातार अपने पंजों से उस पर हमला करता रहा, जब तक कि उसके वारों को रोकते-रोकते उसके हाथ कमजोर नहीं पड़ने लगे। सिंह झपटा, लेकिन इससे पहले कि वह उस तक पहुँच पाता, एक विशाल हाथ ने उसे उठा लिया।
बाना ने ही दूसरे सिंह को मार डाला था। फिर उसने दूसरे सिंह को अपने हाथ में लिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।
'महारानी,' उसने थके-हारे रानी के सामने घुटने टेकते हुए आह भरी। 'हम जीत रहे हैं। चिंता मत कीजिए।'
कायाधु ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, ‘बचाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद…’
और फिर वही हुआ। धरती कांप उठी – बाना ने भी इसे महसूस किया। इससे पहले कि कयाधू कुछ समझ पाती, लगभग दस फीट लंबा बिजली के आकार का एक तीर उसके पास से गुजरा और बाना की छाती पर जा लगा, उसे भेदते हुए उसे बिजली के झटके से मौत के घाट उतार दिया।
वह इस बाण को जानती थी। यह एक वज्र था।
कयाधु ने सिर घुमाकर देखा तो ज़मीन हिल उठी थी क्योंकि मुख्य द्वार से एक विशाल हाथी गर्जना करते सिंहों से घिरा हुआ युद्धक्षेत्र में प्रवेश कर चुका था। हाथी पर एक बड़ा हथियार, एक प्रकार का तीरंदाज, लगा हुआ था। हाथी पर सवार व्यक्ति ने सीटी बजाई। धीरे-धीरे हाथी ने अपनी सूंड उठाई और वह व्यक्ति उस पर चढ़ गया। फिर हाथी ने उसे कायाधु के बगल में ज़मीन पर उतार दिया। कायाधु का रंग भूरा था और वह सोने के आभूषणों से सजे हुए थे, उनके गंजे सिर के किनारों पर सफेद बाल थे और उनकी धूसर आँखें आकाश की तरह चमक रही थीं।
कयाधु ने उस पर हमला करने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन जब वह मुड़ी तो उसने देखा कि उसके रक्षक मारे जा चुके थे। उसके सामने खड़े सिंह घात लगाकर बैठे थे, उनकी मुद्रा से ऐसा लग रहा था मानो वे उस पर हमला करने के लिए तैयार हों। ‘देवेंद्र,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा। ‘अगर तुम सोचते हो कि राजा की अनुपस्थिति में तुम इस राज्य पर कब्ज़ा कर सकते हो, तो तुम गलत हो।’

उस आदमी ने कंधे उचकाए और मुस्कुराते हुए कहा, मानो युद्ध उसे प्रसन्न कर रहा हो। 'क्या तुम्हें सच में लगता है कि मुझे इस राज्य की परवाह है? खैर, सच तो यह है कि मुझे परवाह है, लेकिन मैं आज यहाँ सिर्फ इसे जीतने के लिए नहीं आया हूँ।'
कायाधु ने आह भरी। वह युद्ध से थकने लगी थी।
‘मैं तुम्हारे लिए ही यहां आया हूं, मेरी प्यारी,’ देवेंद्र ने कहा। ‘क्यों मैं? हमने युद्धविराम पर सहमति जताई थी। और तुमने उसे तोड़ दिया। हम शांति से एक-दूसरे का साथ देते हुए साथ रह सकते थे। लेकिन तुम्हें अपनी श्रेष्ठता दिखानी थी। मेरे पति…’ उसकी आवाज़ रुक गई और उसकी आँखों में आँसू भर आए। इस युद्धविराम को करवाने के लिए उसने जितनी कोशिशें की थीं, उनकी कोई सीमा नहीं थी। ‘मैंने पूरी कोशिश की थी ताकि हम अंततः शांति के युग में रह सकें, लेकिन तुमने… तुमने युद्ध शुरू कर दिया। एक ऐसा युद्ध जो शायद कभी खत्म न हो। तुमने फिर से युद्धविराम तोड़ दिया! ठीक वैसे ही जैसे पिछली बार, जब तुमने हमें सोमास नहीं दिया और उसे प्रकृति में डाल दिया।’ ‘क्योंकि तुम मुझे मारने के लिए सोमास का इस्तेमाल करते!’ उस आदमी ने हैरानी से कहा। ‘कृपा करके, मेरी प्रिय, मुझे मूर्ख मत समझो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा पति पाताल क्यों गया है। वह परिषद को और सैनिक देने के लिए मनाना चाहता है, ताकि वह मुझ पर हमला कर सके।’
कयाधु ने सिर हिलाया। ‘वह तुम्हारी तरह पीठ में छुरा घोंपने वाला नहीं है। वह सचमुच अपने भाई की अस्थियां पवित्र नदी में विसर्जित करने पाताल गया था।’ उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, ‘क्या तुमने कश्यपुरी पर इसलिए हमला किया क्योंकि तुम्हें डर था कि वह संधि तोड़ देगा, ठीक वैसे ही जैसे तुमने पहले किया था और अब फिर कर रहे हो?’ वह हंस पड़ी। ‘एक चोर निर्दोष के हृदय में केवल चोर ही देख सकता है।’
एक पल के लिए उस आदमी की आँखों में अनिश्चितता की झलक दिखी, और फिर वह गंभीर हो गया। 'ठीक है, भले ही तुम सही हो, और युद्धविराम तोड़कर मैं मूर्खता कर रहा हूँ, मैं जोखिम नहीं लेना चाहता और हमले का शिकार नहीं होना चाहता, चाहे संभावना कितनी भी कम क्यों न हो। इसलिए आज मैंने जो यह खूबसूरत तबाही मचाई है, एक तरह का आक्रमण, यह उसके लिए एक चेतावनी है।'
‘किस बात की याद दिलाना?’ कयाधु ने पूछा।

देवेंद्र ने घोषणा की, “ऐसा कुछ भी न करना – जैसे पाताल जाना – जिससे मुझे उसकी सत्यनिष्ठा पर संदेह हो। उसे यह याद दिलाना कि भले ही युद्धविराम हो, मैं इलवर्ती का शासक हूं और वह हमेशा मेरे पैरों तले पड़ा कीड़ा रहेगा।” ‘तुम मूर्ख हो,’ कायाधु ने देवों के स्वामी पर थूकते हुए कहा। ‘भगवान इंद्र,’ उसने उनका उपहास उड़ाया।
इंद्र ने अपने चेहरे से थूक पोंछा और मुस्कुराया। 'अच्छा, फिर मिलेंगे। उम्मीद है कि उसे सबक मिल जाएगा और तुम्हें भी, कि मुझसे पंगा नहीं लेना चाहिए।'
हाथी ने अपनी सूंड फिर नीचे कर ली, और इंद्र ने जैसे ही उस पर पैर रखा, अचानक कायाधु उन पर झपटी। पल भर में एक दैत्य इंद्र के सामने आ गया और कायाधु के वार को रोक दिया, और तलवार दैत्य की छाती पर जा लगी। सिंह ने कायाधु के हमले का जवाब दिया और अपने विशाल पंजों से कायाधु के पेट पर वार किया और उसे जमीन पर गिरा दिया, और जब वह रेंगकर भागने की कोशिश कर रही थी, तो उसकी पीठ में वार कर दिया।
उसकी रीढ़ की हड्डी में तेज दर्द होने लगा और वह चीख पड़ी। जैसे ही वह मुड़ी और अचानक हुए हमले के कारण उसके हाथ से छूटी तलवार को उठाने की कोशिश करने लगी, तभी उस राक्षस ने उसके हाथ की हथेली पर पैर रख दिया और तुरंत उसके दाहिने कंधे पर पंजे मार दिए, जिससे उसका हथियार छूट गया।
उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ…
फिर उसे तेज जलन महसूस हुई और उसने गले को छुआ जहाँ से जलन शुरू हुई थी। उसे एहसास हुआ कि उसका गला काट दिया गया है और उससे रिसता हुआ खून उसकी उंगलियों को गीला कर रहा था और गर्म हो रहा था। उसकी त्वचा पीली पड़ गई, मानो उसके शरीर से जीवन निकल रहा हो।
नहीं।
‘मूर्ख!’ इंद्र ने गुस्से से उस आकृति की ओर देखा। ‘हमें उसे मारना नहीं था। हमें तो बस उसे डराना था!’
जब वह मुस्कुराई तो उसके होंठों से लाल रंग की एक पतली सी लकीर टपक उठी।
भले ही वह बेपरवाह होने का दिखावा कर रहा था, लेकिन वह उसकी आवाज़ में डर महसूस कर सकती थी। उसे वह डर बहुत अच्छा लगता था; इंद्र के दिल में धड़कते डर की आवाज़।

‘तुम…’ उसने उस सिंह की ओर देखा जिसकी तलवार से उसकी हत्या हुई थी; जिसके हथियार से उसका खून टपक रहा था।
‘वह वापस आएगा… वह तुम्हें मार डालेगा…’ उसने खांसते हुए कहा।
और फिर उसकी दृष्टि धुंधली हो गई, और अंततः वह अपने शत्रु द्वारा फैलाए गए अंधकार में डूब गई।

चौदह साल बाद

1

नरसिंह

मुझे आज के बारे में बुरा एहसास हो रहा है।
उसे पता नहीं था कि उसे ऐसा क्यों लग रहा था, पर ऐसा ही था। वह आमतौर पर सहज प्रवृत्ति का व्यक्ति नहीं था, लेकिन किसी कारणवश, आज कुछ अजीब सा लग रहा था। उसने खुद से कहा, ज़रूर मौसम का असर होगा।
उस भावना को दबाने की कोशिश करते हुए, नारा ने अपनी थाली में रखी सब्जियों पर ध्यान केंद्रित किया। उसे बहुत भूख लगी थी। और चाहे वह कितनी भी हरी सब्जियां खा ले, उसे कभी पेट भरा हुआ महसूस नहीं होता था। उसे मांस चाहिए था; उसे मांस की सख्त जरूरत थी। बिल्कुल वैसे ही जैसे मुझे पहले हुआ करता था...
लेकिन नहीं, उसने खुद से वादा किया था कि वह फिर कभी किसी जीवित प्राणी को अपनी भूख मिटाने के लिए चोट नहीं पहुंचाएगा। अतीत में उसने जो कुछ किया था, उसके बाद तो बिल्कुल नहीं।
मुझे बहुत कुछ सहना पड़ रहा है।
जैसे ही उसने फलियाँ और रसदार बेलें अपने मुँह में ठूँसीं, उसने देखा कि सराय शराबी लोगों से भरी हुई थी। नारा अपने शरीर को अनुशासित रखने में विश्वास रखता था और हमेशा इन पापों से दूर रहा था। पृष्ठभूमि में संगीत बज रहा था और उसके पैर ताल पर थिरक रहे थे, क्योंकि यह ढोल और ड्रमों से बनी एक आकर्षक धुन थी। हवा में पेय और मांस की गंध फैली हुई थी। पुरुषों और महिलाओं की तेज़ बातचीत की आवाज़ें एक-दूसरे की संगति का आनंद ले रही थीं।
सराय भर दी।
वे मानव थे। और नारा को देखकर भी लगता था कि वह भी मानव ही है।
क्योंकि मैंने अपनी त्वचा नहीं पहनी हुई है।

वह मिट्टी के जग से पानी पी रहा था तभी उसने एक तेज चीख सुनी।
अचानक सन्नाटा छा गया, और सराय में मौजूद हर कोई यह देखने की कोशिश में इधर-उधर देखने लगा कि शोर कहाँ से आया था।
नारा ने सूंघा और फिर आंखें बंद करके ध्यान केंद्रित किया। सन्नाटे में सबसे धीमी आवाज़ों को भी सुनने के लिए उसके कान खड़े हो गए। और फिर उसे एहसास हुआ कि वह आवाज़ कहाँ से आई थी।
बाहर!
वह तुरंत उठा और बाकी नागरिकों के साथ बाहर का नजारा देखने चला गया। शराबखाने के झगड़ालू लोग पहले से ही वहाँ मौजूद थे और सारा तमाशा देख रहे थे।
चीख एक महिला की थी। उसके शरीर पर चोट के निशान थे। उसकी आँखों के आसपास एक बड़ा घाव था और एक आदमी, संभवतः उसका पति, उसे पीट रहा था जबकि वह रो रही थी।
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!’ उसने उस बदनसीब महिला को थप्पड़ मारा और वह गिर पड़ी।
‘प्लीज, प्लीज!’ वह रोते हुए बोली।
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!’ उसने फिर कहा और उसे पहले से भी ज्यादा जोर से थप्पड़ मारा।
उस भयावह दृश्य को देखकर नारा ने अपनी आँखें बंद कर लीं। किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया। उनके लिए यह एक सामान्य घटना थी - एक आदमी अपनी पत्नी को पीट रहा था।
‘वह चाहती थी कि वह घर लौट आए,’ नारा के बगल में खड़े ग्रामीणों में से एक ने दूसरे से कहा। ‘वह नहीं लौटा। उसने उसे मजबूर किया और अब उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ रही है।’
दृश्य असहनीय हो जाने पर अधिकांश लोग अंदर चले गए। वैसे भी, यह एक निजी मामला था। कुछ देर बाद, अपनी पत्नी को बाहर कीचड़ में रोता हुआ छोड़कर, चौड़े कंधों और लंबे बालों वाला पति और शराब लेने के लिए शराबखाने में चला गया। जैसे ही वह उसके पास से गुजरा, नारा को उस आदमी की गंध महसूस हुई - उससे शराब की बदबू आ रही थी। घृणा से सिंह ने उस आदमी को घूर कर देखा। ‘क्या देख रहे हो यार!’ दुर्व्यवहार करने वाले ने नारा पर गुस्से से कहा, जो सीधा खड़ा था और

सराय के दरवाजे पर खड़े होकर उसने कहा, 'यह कोई सार्वजनिक पार्टी नहीं है!' नारा कुछ नहीं बोला। उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। गहरी सांस लेकर उसने सिर हिलाया और खुद को शांत होने दिया।
‘अच्छा है यार। मेरी तरफ देखने की हिम्मत मत करना…’ शराबी हिचकी लेते हुए बोला। ‘वरना मैं तुम्हारे साथ उससे भी बुरा करूंगा जितना मैंने उसके साथ किया। तुम्हारा वो सुंदर चेहरा बिगाड़ दूंगा, हेह!’ और सराय में घुसने से पहले उसने फिर हिचकी ली।
नारा ने आह भरी और आगे बढ़ा, उसकी निगाहें उस महिला पर टिकी हुई थीं। उसने पूछा, 'क्या आप ठीक हैं, महोदया?'
उसने ऊपर देखा, उसकी आँखों में ज़हर भरा था। 'तुम्हें क्या फर्क पड़ता है?' मैं एक चिकित्सक हूं। मैं आपके घावों का इलाज कर सकता हूं।
उसकी आँखें नम हो गईं। इस गाँव में डॉक्टर बहुत कम थे और उनका बहुत सम्मान किया जाता था। 'मैं माफी मांगती हूँ... बस...' उसकी आवाज़ नए आँसुओं में डूब गई।
नारा ने सिर हिलाया, उसके बगल में जमीन पर घुटने टेक दिए और उसके कंधे पर थपथपाया।
‘तुम्हारा नाम क्या है?’ उसने पूछा।
‘संध्या।’
'संध्या, मुझे अपना सामान लाने दो।'
'ठीक है।'
नारा अपने घोड़े की ओर चला, जो सराय के चबूतरे के पास बंधा हुआ था। उसके भूरे घोड़े पर कई थैले और थैले लटके हुए थे। उनमें से एक से उसने रुई, कुछ मरहम और दर्द निवारक सिरप निकाला।
वह महिला के पास गया और उसे सराय की सीढ़ियों पर बैठने में मदद की। फिर उसने उसके घावों की देखभाल करना शुरू कर दिया।
‘मेरे पति शांतनु कभी ऐसे नहीं थे,’ उसने कहना शुरू किया, जब वह उसके घावों पर तुलसी का मरहम मल रहा था। जलन होने पर वह दर्द से कराह उठी, लेकिन बोली, ‘यह सब उसकी संगत की वजह से है। वे सब शराबी हैं और उसे बिगाड़ भी रहे हैं।’ 'मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि शराब इंसान को मूर्ख बना देती है,' नारा ने जवाब दिया।

वह खिलखिलाकर हंसी, और फिर दर्द से कराह उठी क्योंकि उसके मुंह के किनारे पर चोट के निशान पड़ गए थे। उसने कहा, 'मुझे सबसे ज्यादा हैरानी इस बात की है कि मेरी मदद के लिए कोई आगे नहीं आया।'
'हम कायरों के युग में जी रहे हैं,' नारा ने कहा, यह महसूस करते हुए कि उसके शब्द उस पर भी लक्षित थे।
मैं पलायनवादी हूँ। बाकी सभी कायरों से कहीं ज्यादा बुरा।
उसने पट्टी लपेटी और पिन से उसे बांध दिया। ‘लो, अब तुम ठीक हो जाओगी। बस उससे दूर रहना। क्या तुम्हारे पास जाने के लिए कोई परिवार नहीं है?’
‘मेरे माता-पिता ने कम उम्र में ही मेरी शादी उससे करवा दी थी। वे दक्षिणी में रहते हैं,’ उसने कहा, और नारा सोचने लगी कि वह खुद कितनी छोटी रही होगी, क्योंकि अब वह शायद तीस साल की उम्र के आसपास होगी। उसका पति भी उसी उम्र का लग रहा था। वे बच्चे थे, जबकि नारा... ओह, वह तो बूढ़ा था।
दक्षिणी बहुत दूर थी। नारा ने मंदारा की बर्फ से ढकी पहाड़ियों को देखा, जो अपनी सुई जैसी चोटियों से आकाश को छूती हुई ऊँची खड़ी थीं। जिस गाँव में वह खड़ा था, वह मंदारा की तलहटी में बसी कई छोटी बस्तियों में से एक था। मंदारा उदय्यास की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, साथ ही महेंद्रगिरी पर्वत भी इसी श्रेणी में आते हैं।
‘क्या आप हमेशा से डॉक्टर ही थे?’ उसने पूछा।
नारा ने अपने होंठ सिकोड़े। 'समय ने मुझे ऐसा बना दिया।' उसने मुस्कुराने की कोशिश की।
समय के साथ कोई व्यक्ति चिकित्सा का उस्ताद कैसे बन जाता है?
‘अहम्म,’ उसने सोच-विचार करते हुए अपने जबड़े को भींचते हुए कहा, ‘जब आप बहुत अधिक रक्तपात देखते हैं, तो आपको एहसास होता है कि लोगों को मारने के बजाय उन्हें बचाना बेहतर है।’
‘तुम योद्धा थे? सैनिक?’ उसने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। ‘जानते हो, तुम मानव जाति के हिसाब से बहुत ही शानदार हो।’
नारा ने सिर हिलाया। ‘ओह, मैं मानव हूँ,’ उसने झूठ बोला। वह जानता था कि वह स्वर्णिम है। उसके कबीले के सभी लोग स्वर्णिम थे, सुनहरे बालों और लाल दाढ़ी वाले।
तभी दरवाजा ज़ोर से खुला। नारा के मुड़ने से पहले ही, उसकी पीठ पर ज़ोरदार प्रहार हुआ और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। होश में आने पर नारा ने देखा कि उस पर

हमला करने वाला कौन था – वही स्त्री-पीटने वाला शांतनु। और इस बार उसके दो दोस्त गुस्से से भरे चेहरों के साथ उसके पीछे खड़े थे। उनमें से एक के माथे पर चोट का निशान था और नारा उसे किसी कारणवश पहचान गया।
‘मेरी पत्नी को यहाँ क्या कर रहे हो?’ शांतनु ने उसका हाथ पकड़कर उसे ऊपर खींचा और फिर से एक थप्पड़ मारा। ‘अगर मुझे उसे डॉक्टर के पास ले जाना होता, तो मैं खुद ले जाता।’ उसने फिर से एक थप्पड़ मारा।
नारा ने कुछ नहीं कहा। वह शांत रहा।
लेकिन तभी उसने शांतनु को चाकू निकालते हुए देखा।
‘प्लीज, नहीं, मेरे प्यारे, फिर से चाकू नहीं!’ संध्या रोते हुए बोली। ‘वह तो बस मदद करने की कोशिश कर रहा था, मेरे प्यारे!’
तो उसने पहले भी उस पर इसका इस्तेमाल किया था। नारा के सीने में क्रोध उबल रहा था।
‘चुप रहो, वेश्या! मुझे पता है तू क्या कर रही थी। इस खूबसूरत चेहरे के साथ छेड़छाड़ कर रही थी!’ उसकी लाल आँखों से पता चल रहा था कि वह होश में नहीं था। उसकी वाणी भी लड़खड़ा रही थी।
नारा ने ज़मीन की ओर देखा, इस उम्मीद में कि सराय के पहरेदार आकर झगड़ा शांत कराएंगे, या कोई भी, कोई भी, हस्तक्षेप करेगा। लेकिन किसी ने परवाह नहीं की।
उसके सिवा कोई नहीं।
इस क्षण उसे एक पिछड़े गाँव में रहने के अपने निर्णय पर पछतावा हो रहा था, जहाँ किसी सामंत, राजा या सरदार का कोई संरक्षण नहीं था। यह एक स्वतंत्र गाँव था, इतना छोटा और महत्वहीन कि देश के रईसों की नज़र में भी नहीं आता था।
मुझे यह करना ही होगा। मैं इसे होने नहीं दे सकता... मैं इसे यूं ही होने नहीं दे सकता। क्योंकि अगर मैंने इसे नहीं रोका, तो यह जारी रहेगा। ‘इसके लिए, तुम्हारी सजा तुम्हारे अपराध के अनुरूप होनी चाहिए,’ शांतनु हंसते हुए बोला और धीरे-धीरे अपनी चाकू उसकी त्वचा पर रगड़ने लगा, उसके सीने के करीब पहुँचते हुए—
और फिर वह रुक गया।

शांतनु ने ऊपर देखा तो पाया कि नरसिम्हा ने दस्ताने पहने हाथों से उसका हाथ पकड़ रखा है। नरसिम्हा ने ठंडी आवाज में कहा, 'मेरा सुझाव है कि तुम चले जाओ।'
शांतनु ने एक पल के लिए पलकें झपकाईं और फिर अपने खाली हाथ से नारा को मुक्का मारने की कोशिश की। लेकिन उसके मुक्के का कोई असर नहीं हुआ - जरा सा भी नहीं।
‘तुम कौन हो?’ उसने हांफते हुए पूछा।
नारा ने अपना हाथ मरोड़ा और शांतनु की कलाई तोड़ दी। वह दर्द से चीखता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। उसी क्षण नारा ने शांतनु के दो दोस्तों को आगे आते और अपने खंजर निकालते हुए देखा।
उनमें से एक ने नारा से चिल्लाकर कहा, 'उसे छोड़ दो!'
नारा पीछे हट गया और शांतनु भाग निकला।
‘तुम खुद को समझते क्या हो?’ उस निशान वाले दोस्त ने पूछा।
‘क्या आप ही वो कंपनी हैं जो उसे बिगाड़ रही है?’ नारा ने अपनी उंगलियां चटकाते हुए पूछा।
“मैं विराटा हूँ,” उस ज़ख्मी व्यक्ति ने जवाब दिया। नारा उसे जानता था। वह गाँव के मुखिया का बेटा था, खुद एक ज़मींदार और कुख्यात व्यक्ति था। “शांतनु मेरा दोस्त है। तुम्हें उसके निजी मामलों में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। अगर तुम उससे पंगा लोगे, तो हमसे पंगा लोगे।”
नारा मुस्कुराई। 'यह समझना जरूरी है कि दोस्ती का मकसद इंसान को आगे बढ़ने में मदद करना होता है, न कि गलत रास्ते पर चलने पर उसका साथ देना।'
‘हमें दार्शनिक ज्ञान मत दीजिए, डॉक्टर साहब। हमने आपके बारे में सुना है – एक ऐसा तांत्रिक जिसका कोई घर नहीं, कोई पहचान नहीं और कोई ठिकाना नहीं। मेरी जैसी नीच औरत से इस तरह बात करने की आपकी हिम्मत कैसे हुई!’ विराटा नशे में होने के बावजूद काफी वाक्पटु था। ‘मैं आपको मरवा सकता हूँ और किसी को पता भी नहीं चलेगा या किसी को परवाह भी नहीं होगी।’
नारा ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे कोई परेशानी नहीं चाहिए, बेटे। मैंने अभी-अभी एक महिला की मदद की है...'
विराट ने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी। वह आगे बढ़ा और अपना खंजर नारा की छाती की ओर कर दिया। नारा पीछे हट गया, वार से बचते हुए, और विराट की बांह पकड़ ली। झटके से उसने मानव को उठाया और नीचे पटक दिया, ज़मीन पर

गिरते ही उसके चारों ओर धूल उड़ने लगी। विराट चिल्लाया, और नारा ने उसकी बांह पकड़कर इतनी ज़ोर से पीछे की ओर मोड़ दी कि उसे पता था कि दूसरा आदमी कम से कम एक महीने तक उसका इस्तेमाल नहीं कर पाएगा।
शांतनु के तथाकथित दूसरे मित्र ने कुछ नहीं कहा। वास्तव में, उसने अपना खंजर फेंक दिया, सिसकते हुए भाग गया। विराट उसके लिए रोया, लेकिन उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा।
मैं ऐसा नहीं करना चाहता था। लेकिन वह सच में बहुत परेशान करने वाला था। ‘आह… मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा…’ विराटा कर्कश स्वर में बोला। ‘मैं तुम्हें ढूंढकर मार डालूंगा!’
नारा ने मुखिया के बेटे को नज़रअंदाज़ करते हुए कंधे उचकाए और अपने घोड़े की ओर चल पड़ा। उसे वहाँ जमा भीड़ की फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी, जो उसकी ताकत के बारे में बातें कर रही थी और यह चर्चा कर रही थी कि क्या वह सच में इंसान है। लेकिन उसने इस पर ध्यान न देने का फैसला किया। उसे दो बच्चों को चोट पहुँचाने का दुख था, लेकिन वे इसके लायक ही थे।
और यह उचित लगा था। उन लोगों को दंडित करना जो इसके पात्र थे।
भगवान विष्णु जानते हैं कि मैंने कितने निर्दोषों को मारा है; वे लोग जो मृत्युदंड के योग्य नहीं थे।
अपराधबोध अब भी उससे चिपका हुआ था - उन युद्धों का अपराधबोध जिनमें वह शामिल था, जहां उसने उन लोगों की हत्या की थी जिनके परिवार थे, जो अच्छे लोग थे।
मुझे वह सब छोड़ना पड़ा। मुझे छोड़ना ही पड़ा।
और फिर भी, वह यहाँ था, और भी लोगों को चोट पहुँचा रहा था। खुद से किए वादे के बावजूद कि वह ऐसा दोबारा कभी नहीं करेगा। लेकिन फिर, यह अलग था। उसने उन लोगों को सज़ा दी थी जो इसके हकदार थे, और उसने कोई खून नहीं बहाया था।
केवल हड्डियाँ टूटी थीं।
और इसके पीछे सही कारण थे।
वह अपने घोड़े पर बैठा था, जबकि भीड़ अभी भी वहीं खड़ी उसे विस्मय से देख रही थी। वह अपने घोड़े को संध्या के पास ले गया। संध्या अब अपने पति शांतनु की देखभाल कर रही थी, जो बेहोश हो गया था। ‘आशा है तुम अपना ख्याल रखोगी। तुम उन सभी पुरुषों से कहीं अधिक मजबूत और महत्वपूर्ण हो जो तुम्हें चोट पहुँचाना चाहते हैं। ऐसे पुरुष के साथ मत रहो जो तुम्हें मारता है और

तुम्हारा सम्मान नहीं करता,’ उसने संध्या से कहा, और फिर शांतनु की ओर देखा। उसने नीले सिरप से भरी एक शीशी निकाली। ‘इसे दिन में दो बार दो। उसका दर्द कम हो जाएगा।’
'मुझे लगा था कि तुम सैनिक नहीं हो,' उसने शीशी लेते हुए जवाब दिया।
‘मैं नहीं हूँ।’ नारा ने आगे देखा। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह अन्याय को बर्दाश्त कर सकता था। वह इससे नफरत करता था और हमेशा इसे रोकने की कोशिश करता था।
उसने घोड़े को बगल में लात मारी और आगे बढ़ गया। आह भरते हुए उसे एहसास हुआ कि वह शुरू से ही सही था। उसे अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर भरोसा करना चाहिए था।
इसलिए मुझे आज के बारे में बुरा महसूस होना स्वाभाविक था।

2

प्रहलाद

उसके चारों ओर मृत्यु का साया मंडरा रहा था।
वह अपने युद्ध किले में था, अपने हजारों सैनिकों को आदिवासियों - वानर, यक्ष और नागों के हाथों मरते हुए देख रहा था। खून बह रहा था, सिर धड़ से अलग हो रहे थे और अंग क्षुद्र हो रहे थे।
प्रहलाद जानता था कि पंद्रह साल की उम्र में वह इसके लिए बहुत छोटा था। उसने मन ही मन बड़बड़ाते हुए गाली दी। अपनी उम्र के बावजूद, वह लंबा था, उसके बाल छोटे थे और शरीर पर पहले से ही कई निशान थे। ये निशान युद्धों, लड़ाइयों और उसके पिता के दिए घावों से मिले थे।
उनके पिता युद्ध प्रशिक्षण के मामले में हमेशा निर्दयी थे, यहाँ तक कि अपने बेटों को चोट पहुँचाने से भी पीछे नहीं हटते थे। आख़िरकार, असुर संस्कृति में शक्ति ही व्यक्ति की पहचान है।
असुर युद्ध सेनापति पसीने से तरबतर होकर प्रहलाद के बगल में प्रकट हुआ।
'महाराज, हमें क्या करना चाहिए?'

महाराज… वह दक्षिणा की राजधानी कश्यपुरी के राजकुमार थे। लेकिन जब भी कोई उन्हें उनकी उपाधि याद दिलाता, तो उन्हें अजीब लगता था। राजकुमार होना कोई मायने नहीं रखता था। वे हमेशा से विनम्र रहे थे।
प्रहलाद ने अपनी निगाहें संकुचित करके युद्धक्षेत्र पर डालीं - जो लाल, धूल से सना हुआ और खून से लथपथ था, क्योंकि दो सेनाएं, असुरों की काले कवच वाली सेना और अग्नि की बहुरंगी सेना, एक-दूसरे से लड़ रही थीं।
यह अग्नि के विरुद्ध लड़े गए कई युद्धों में से एक था, जो भगवान इंद्र के सेनापति के रूप में सेवा कर रहा था। और हर युद्ध के साथ, अग्नि इंद्र के और करीब आता जा रहा था। कश्यपुरी इस युद्धक्षेत्र से मात्र दो सौ किलोमीटर दूर था। पिछले युद्ध में यह चार सौ किलोमीटर दूर था।
अगली रात संभवतः कश्यपुरी में ही होगी!
प्रहलाद को उसके पिता हिरण्य ने अग्नि की सेना के खिलाफ अपनी रणनीतियों का इस्तेमाल करने के लिए भेजा था।
‘अब गुलेल का इस्तेमाल करो,’ उसने कप्तान से कहा। ‘दुश्मन के खिलाफ आग के गोले दागो।’
‘इसमें समय लगेगा, महाराज।’
प्रहलाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। गुलेलें तो वाकई समय लेने वाली होती हैं। उसने देखा कि अग्नि की सेना असुरों के विरुद्ध चौड़ी ढालों का इस्तेमाल कर रही थी। वे ढालें पीतल की बनी होती थीं, उनकी बाहरी सतह पर नुकीले कांटे होते थे और उन्हें दस आदमियों को उठाना पड़ता था।
अग्नि चतुर है। वह हत्या करते समय अपनी रक्षा भी करता है।
'तुम अपने खिलौनों के पास क्यों नहीं भाग जाते और मुझे इसे संभालने दो?' पीछे से एक जानी-पहचानी आवाज आई।
प्रहलाद ने अपने बड़े भाई अनुहरद की ओर देखा। अनुहरद देखने में सुंदर था, लेकिन उसकी आवाज़ ज़हरीली और कर्कश थी, जो शांत और सौम्य स्वभाव वाले प्रहलाद के बिल्कुल विपरीत थी। अनुहरद के बाल लंबे थे जिन्हें वह हमेशा पीछे बांधे रखता था, और उसकी आँखों में काजल लगा हुआ था। उसने असुरों के युद्ध वस्त्र पहने हुए थे जो ओब्सीडियन से बने थे।
‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘हमेशा की तरह आपकी मदद कर रहा हूँ।’ अनुहराद अंदर आया, जो अपने भाई से लंबा और मजबूत था। ‘पिताजी कप्तान से एक कबूतर लाए हैं जो आप खो रहे थे।’

प्रहलाद को विश्वासघात का अहसास हुआ और उसने तुरंत कप्तान की ओर देखा, जिसने अपना सिर नीचे कर लिया।
‘मैं ने हूँ। हम ने हैं,’ प्रहलाद ने जोर देकर कहा, लेकिन उसके भाई ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया और किले से निगरानी चौकी पर तैनात हो गया।
‘ऐसा नहीं लगता,’ अनुहराद ने युद्धक्षेत्र को देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा और फिर कप्तान की ओर मुड़ा। ‘दोबारा तीर लाओ, जब तक तुम्हारे पास अतिरिक्त सेना है, दुश्मन का ध्यान भटकाओ।’
प्रहलाद अतिरिक्त सेना का इस्तेमाल नहीं करना चाहता था। वे भाड़े के सैनिक थे – अविश्वसनीय कबीलेवासी – नरभक्षी, भूखे और घोर दुष्ट पिशाच। वह उनका इस्तेमाल न करने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन अनुहराद… नहीं… अनुहराद को कोई परवाह नहीं थी।
‘ठीक है, मेरे स्वामी।’ कप्तान अब मुस्कुरा रहा था।
क्या प्रहलाद एक सच्चे राजा, एक सच्चे नेता के लक्षण दिखा रहा था? ईर्ष्या की एक लहर ने प्रहलाद को स्तब्ध कर दिया, लेकिन हमेशा की तरह वह चुप रहा। ‘उन्हें भेजो। साथ ही, तीरों की बौछार उनके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे मेढ़ों से आगे जाकर लगनी चाहिए। यदि संभव हो, तो तीर चलाते समय गुलेलें भी तैयार कर लो। साथ ही, युद्ध हाथियों के साथ उन पर हमला करो। हमारे पास कितने हाथी हैं?’ अनुहराद ने आत्मविश्वास से पूछा।
‘अह, मेरे स्वामी, चार,’ कप्तान ने उत्तर दिया।
‘दानवों का क्या हुआ?’
‘दो लोगों को पहले ही भेजा जा चुका है। उनमें से एक घायल है।’
अनुहराद सोचने लगा। ‘अपने सबसे अच्छे धनुर्धारियों को लगाओ और भेड़ के पीछे वालों पर निशाना साधो। आज भेड़ ही हमारा दुश्मन है, मेरे साथी!’ उसने कहा, और कप्तान तुरंत उसके निर्देशों का पालन करने के लिए दौड़ पड़ा। प्रहलाद ने अनुहराद को घूरते हुए कहा, 'क्या तुम्हें इस बात का एहसास है कि पिशाच हमारे लिए सबसे सुरक्षित विकल्प नहीं हैं? वे हमारे खिलाफ हो सकते हैं।'
‘हम उन्हें पर्याप्त भुगतान करते हैं, भाई। चिंता मत करो।’
और हाथियों का क्या? युद्ध के पहले कुछ दिनों में ही हम अपने अधिकांश संसाधन खो देंगे। हमें इतने संसाधन बचाकर रखने होंगे ताकि हम युद्ध के अंत तक अपना गुजारा कर सकें।

अनुहरद प्रहलाद के बगल में खड़ा हो गया, उसकी सुनहरी असुर जैसी आँखें अपने छोटे भाई को घूर रही थीं। 'तुम्हें क्या लगता है कि यह अंत नहीं है? भाई, जिस तरह से हम लोगों को खो रहे हैं, उससे तो लगता है कि आज रात तक हमारा नरसंहार हो जाएगा। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कल होगा ही नहीं, क्योंकि बचाव का सबसे अच्छा तरीका आक्रमण ही है।'
वह मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया। प्रहलाद उसके पीछे गया और वे मीनार से नीचे उतर गए। वे उस मैदान में पहुँचे जहाँ सैनिक युद्ध में लौटने की तैयारी कर रहे थे। भोजन की आपूर्ति हो रही थी, तरकश भरे जा रहे थे और नर्सें घायलों की देखभाल कर रही थीं।
प्रहलाद ने कहना शुरू किया, 'पिताजी को मुझ पर भरोसा करना चाहिए था।' अनुहराद विशाल अस्तबल की ओर बढ़ा जहाँ सौ से अधिक आरक्षित घोड़े रखे जाते थे। ‘उसने ऐसा किया था, और फिर तुमने युद्ध के पहले दिन हारकर उसका विश्वास तोड़ दिया।’ अनुहराद ने काले घोड़े को पकड़ा और उस पर काठी कसी, फिर उस पर सवार होकर अपनी तलवार का निरीक्षण करने लगा।
प्रहलाद को निराशा और विश्वासघात का एहसास हुआ। सबसे ज़्यादा उसे हिरण्य पर गुस्सा आया। लेकिन उसने खुद को शांत रखा। उसने अपने भाई से पूछा, 'तुम कहाँ जा रहे हो?'
‘बाहर!’ अनुहराद ने अपनी तलवार किले के मुख्य द्वार की ओर तान दी, जो अब अवरुद्ध थे। ‘अगर राजकुमार जाकर अपना खून नहीं बहाएगा, तो कोई उसे गंभीरता से नहीं लेगा।’ वह मुस्कुराया। ‘अपनी शराब पियो और अपने बुर्ज से जीत का आनंद लो।’ उसने आँख मारी और द्वार की ओर घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा, उसके पीछे पिशाच भी चल रहे थे, जो पूरी तरह से तैयार होकर युद्ध के लिए कमर कस चुके थे।
प्रहलाद ने उनके भयानक चेहरों को देखा – उनकी त्वचा काली और पपड़ीदार थी, आँखें बड़ी और डरावनी थीं, और उनके पूरे शरीर पर स्याही जैसी एक अजीब सी लकीरें थीं। पिशाच कबीले के सबसे खूंखार लोग थे और हिरण्य ने उनके साथ गठबंधन कर लिया था। राजा का मानना था कि दूसरे कबीले के लोग बहुत ही नेक थे और पिशाच बर्बर थे। इसलिए उसने उन्हें अच्छा-खासा पैसा दिया था और वादा किया था कि युद्ध में मारे गए सभी शव उन्हें खाने के लिए दिए जाएँगे। पैसों से ज़्यादा, इंसानी मांस के इस वादे ने पिशाचों को आकर्षित किया था।

उनके द्वारा मनुष्यों को खाने की कल्पना मात्र से ही प्रहलाद को घिन आ गई, लेकिन उसने इस विचार को मन से निकाल दिया।
अब मैं क्या करूं?
उसने देखा कि कप्तान धनुर्धारियों के साथ पूरी स्थिति को कैसे संभाल रहा था, और उसने अपने सैनिकों को हाथियों को युद्ध में उतारने का आदेश भी दिया। घुड़सवार सेना भेजी गई, लेकिन प्रहलाद का ध्यान केवल घायलों पर ही केंद्रित था – उन सभी सैनिकों पर जो मर रहे थे, घायल हो रहे थे या अपने अंग खो रहे थे। उन्हें राजशाही की सेवा के लिए अच्छा खासा वेतन मिलता था, लेकिन क्या सोना जीवन से अधिक महत्वपूर्ण था?
आरंभ में, प्रहलाद के पिता ने अपने कुल की प्रतिष्ठा के लिए, और फिर अपनी जाति के संरक्षण और अस्तित्व के लिए संघर्ष किया था। लेकिन अब, वे भगवान इंद्र की बुराई से बदला लेने के लिए लड़ रहे थे, जिन्होंने कश्यपुरी पर आक्रमण करके प्रहलाद की माता कयाधु की हत्या कर दी थी।
यह युद्ध व्यक्तिगत था।
आरंभ में, जैसा कि उनके गुरु नारद ने उन्हें समझाया था, इंद्र असुरों के साथ काम करने के लिए तैयार थे और उन्होंने उन्हें सोमास (वह दिव्य पेय जो पूर्ण शक्ति प्रदान करता है) साझा करने के लिए आमंत्रित भी किया था। लेकिन असुरों को सोमास देने के बजाय, इंद्र ने उनके साथ विश्वासघात किया और इसे संसार में फैला दिया। इसके परिणामस्वरूप इंद्र और असुरों के बीच निरंतर युद्ध होते रहे।
और फिर भगवान हिरण्याक्ष मारे गए।
हालात बदल गए। असुरों ने शांति का प्रस्ताव रखा क्योंकि उन्हें लाखों लोगों की जान लेने वाले युद्ध की निरर्थकता का एहसास हो गया था। हिरण्यकश्यप और युद्ध नहीं चाहता था और उसने संधि पर सहमति जताई, जिसके अनुसार उत्तर दिशा (जहां देवलोक स्थित था) देवताओं को और दक्षिण दिशा (जहां कश्यपुरी स्थित था) असुरों को दे दी गई।
इस युद्धविराम को एक नई शुरुआत का प्रतीक माना जा रहा था…
लेकिन एक बार फिर इंद्र ने कश्यपुरी पर प्रहार किया, और इस बार उन्होंने ऐसा तब किया जब हिरण्यकश्यप अपने भाई की अस्थियां पवित्र पाताल नदी में विसर्जित करने के लिए निकले थे। इंद्र ने युद्ध को राज्य के केंद्र तक पहुंचा दिया, प्रहलाद की माता को मार डाला और संधि तोड़ दी।

‘महामहिम, आप क्या कर रहे हैं?’ कप्तान ने ऊपर से पुकारा।
प्रहलाद ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने असुर द्वारपालों को द्वार खोलने का आदेश दिया। वह घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा, उसके खुर खून से लथपथ ज़मीन पर पड़ रहे थे। थोड़ी ही दूरी पर युद्ध चल रहा था।
मुझे यह करना होगा।
‘चलो शुरू करते हैं,’ उसने गहरी सांस ली। जैसे ही वह युद्ध के केंद्र में पहुंचा, प्रहलाद के मन में आखिरी सवाल यही था कि क्या ऐसा करके मैं खुद को गौरवान्वित कर रहा हूं?

3

नरसिंह

खुद को देखो। तुम तो हत्या करने के लिए ही पैदा हुए हो।
नारा उल्लुओं की आवाज से जाग उठा। उसने पलकें झपकाईं। रात हो चुकी थी और झींगुरों की लगातार चहचहाहट उसे परेशान कर रही थी।
अपने पैरों पर खड़े होने के लिए संघर्ष करते हुए, वह लड़खड़ाते हुए गुफा के पार गया और एक छोटे से हस्तनिर्मित लकड़ी के बेसिन से पानी का जग उठाकर, उसमें से कुछ पानी अपने चेहरे पर छिड़क लिया, जिससे उसकी असमान दाढ़ी पूरी तरह भीग गई।
अचानक, नारा को वह समय याद आया जब उसे उसका भविष्य बताया गया था – कि वह अंततः क्या करेगा। उसने उस गंभीर सत्य को अपने भीतर दबाए रखा था, और अब तक किसी को भी इसका खुलासा नहीं किया था।
अगर मुझे जो बताया गया है वह सच है… तो मेरे लिए एकांत में रहना ही बेहतर है।
नारा के युद्ध छोड़ने, इंद्र की सिंह सेना को छोड़ने के कई कारण थे। उनमें से एक उसका भाग्य था। वह जानता था कि उसका अंत कहाँ होगा, और उसे अपने इस काम को जारी रखने में कोई अर्थ नहीं दिखता था।

लेकिन सबसे बढ़कर, वह जानता था कि वह कौन है।
शुरुआत में ही इसके संकेत मिलने लगे थे। जब उसने सोमा पत्थरों का सेवन किया, जिन्हें स्वयं गर्जन के राजा ने इंद्र के लिए युद्ध लड़ने की क्षमता बढ़ाने के लिए बनाया था, तब नारा ने बदलाव देखे। जबकि अन्य सिंह अपनी पूरी क्षमता तक विकसित हो चुके थे, इन पत्थरों ने उसके लिए और भी अधिक किया - उसे अधिक शक्ति और अधिक सहनशक्ति प्रदान की।
सोमा पत्थरों का सिंह जाति पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि सिंह एक अनुशासित जनजाति थी। तुलनात्मक रूप से, अन्य जनजातियों को सोमा पत्थर नहीं दिए गए थे, क्योंकि उनमें से अधिकांश इसके कारण पागल हो जाते थे। सोमा पत्थर अग्नि के समान थे। यदि कोई इसे वश में करना जानता है, तो इसे हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन यदि नहीं, तो यह हाथ जला देगा।
नर को हिरण्यकश्यप के एक हमले के दौरान अकेले ही बीस सैनिकों को हराने के बाद भगवान इंद्र के साथ हुई बातचीत याद आ गई।

नारा युद्ध कक्ष में दाखिल हुए, जहाँ अधिकांश योजनाएँ बनाई जाती थीं।
उन्होंने अपने राजसी और भव्य शरीर पर शेर की खाल ओढ़ रखी थी। लेकिन गर्व महसूस करने के बजाय, नारा भगवान इंद्र के सामने कमजोर महसूस कर रहे थे, जिनका रूप दृढ़ और बलिष्ठ था। उनका चेहरा निर्मल और कंधे चौड़े थे।
‘मेरे स्वामी।’ नारा घुटनों के बल बैठ गई।
इंद्र ने उसे खड़े होने का इशारा किया। 'क्या तुम्हें पता है तुमने आज क्या किया?'
नारा को यह बात पता थी। अन्य सिंहों ने उसे विस्मय से देखा था और उसे खुद पर गर्व महसूस हो रहा था।
'जी महाराज।'
‘क्या आप जानते हैं कि मैंने सोमा पत्थर आपके कबीले को क्यों दिए?’
'नहीं, मेरे स्वामी।'

इंद्र मुस्कुराया। उसने अपने सामने रखी मेज से धर्मग्रंथ का एक पुराना पृष्ठ उठाया और नारा की ओर देखा।
स्वर्ग द्वीप पर एक भविष्यवाणी है। प्रत्येक युग में एक धर्म और एक अधर्म होगा। अच्छा और बुरा। वे संसार के अस्तित्व के लिए लड़ेंगे। जो भी जीतेगा, वही ब्रह्मांड का भाग्य तय करेगा। ये भविष्यवाणियाँ सप्तऋषियों द्वारा लिखी गई थीं। कुछ लोग उन्हें मेरु पर्वत पर स्थित भगवान विष्णु के पुत्र कहते हैं, और मेरे पास इस भविष्यवाणी का एक चित्र है।
उसने वह पृष्ठ नारा को सौंप दिया, जिसने उस पर एक नज़र डाली। पृष्ठ पर उसने एक शेर के मुख वाले योद्धा की आकृतियाँ और शिलालेख देखे, जो एक राक्षस जैसे दिखने वाले व्यक्ति को पकड़े हुए उसकी रीढ़ तोड़ रहा था।
यह इस युग की भविष्यवाणी है। एक योद्धा, आधा शेर और आधा मनुष्य, आएगा। अधर्म, जो एक असुर है, को ही नायक के रूप में चित्रित किया जाता है। हमेशा असुरों को ही नायक के रूप में दर्शाया जाता है।
इंद्र ने समझाया, ‘सप्तऋषियों की भविष्यवाणियों में बुराई छिपी है।’ ‘मैं और अधिक जानने के लिए उत्सुक था, इसलिए मैं इन ऋषियों की खोज में मेरु पर्वत गया, यह पूछने के लिए कि मुझे कैसे पता चलेगा कि कोई व्यक्ति धर्मी है या नहीं। और उन्होंने कहा, मुझे तब पता चलेगा जब सोमस उन पर “पूर्णतापूर्वक” कार्य करेगा,’ इंद्र ने जोर देते हुए कहा। ‘सोमस को मूल रूप से सोमलता कहा जाता था, और ये स्वर्ग में उगने वाले पौधे थे। मुझे पता चला कि मेरे पिता द्येयुस इन बीजों को इल्लावर्ती लाए थे, जहाँ सोमस के कारण प्रथम धर्म, भगवान विष्णु के अवतार - भगवान मत्स्य - का जन्म हुआ था। फिर देवी मोहिनी और फिर, निश्चित रूप से... भगवान वराह।’
नारा मत्स्य के बारे में ज्यादा नहीं जानता था, लेकिन उसने मोहिनी के बारे में सुना था। मोहिनी ही वह कारण थी जिसके चलते मंथन हुआ था - सोमाओं का बड़ी मात्रा में हस्तनिर्मित निर्माण किया गया था ताकि उन्हें प्रचुर मात्रा में बांटा जा सके।
उन्होंने कहा, ‘सोम शिलाओं का सेवन करने पर एक धर्म या अधर्म सक्रिय हो जाएगा। और फिर इस भविष्यवाणी में अपनी भूमिका तय करने पर वे अवतार बन जाएंगे।’ उन्होंने आगे कहा, ‘मैं पहले से ही जानता था कि सिंहों को सोमा शिलाएं देकर मैं एक नायक, एक धर्म को उत्पन्न करूंगा, क्योंकि सिंह आधे मनुष्य और आधे शेर के समान हैं। मैं धर्म को इसलिए मंथन करना चाहता था ताकि

मैं वही कर सकूं जो मैंने पिछले युग में किया था – अधर्म का नाश। हिरण्यक्ष एक अत्याचारी था, ठीक वैसे ही जैसे उसका भाई अब है। और जैसे वराह ने हिरण्यक्ष का नाश किया था, मैं चाहता हूं कि तुम हिरण्यकश्यप का नाश करो।’ नारा ने असमंजस में पलकें झपकाईं। 'लेकिन मेरे स्वामी, क्या आपको यकीन है कि मैं एक अवतार हूँ?'
‘नहीं, तुम अवतार नहीं हो। अवतार भगवान विष्णु का एक सैनिक होता है, और उसका चयन तब होता है जब उसे श्रीवत्स का चिन्ह प्राप्त होता है, जब वह ऐसा कोई कार्य करता है जो उसे भगवान विष्णु का भक्त साबित करता है। तुम धर्म हो। तुम इसके सभी गुणों को दर्शाते हो, और तुम्हारे साथियों से कहीं अधिक शक्ति तुम्हारे पास है।’ इंद्र खड़े हुए और आगे आए। ‘धर्म होने को एक परीक्षा समझो। यदि तुम इस परीक्षा में उत्तीर्ण होते हो, तो तुम्हें भगवान विष्णु का चिन्ह प्राप्त होगा, जिस पर तुम उनके नाम का प्रतीक धारण करोगे और अवतार बनोगे। अवतार एक उपाधि है, लेकिन धर्म एक चुनाव है।’
‘किस बात का चुनाव? मुझे इस नियति के लिए चुना गया था, न कि मैंने इसे चुना था,’ नारा ने तर्क दिया।
इंद्र मुस्कुराए। ‘तुम धर्म हो। तुममें वे गुण हैं, लेकिन कल्पना करो कि यदि तुम अपना जीवन अत्याचार करते हुए बिताते, तो क्या तुम अवतार बनते?’ नहीं, क्योंकि तब मैं अधर्मी हो जाऊंगा।
‘बिल्कुल। तो क्या यह एक विकल्प नहीं है? आपका विकल्प ही तय करता है कि आप अवतार बनेंगे या अधर्मी। और इस युग में,’ उन्होंने कागज़ हाथ में पकड़े हुए समझाया, ‘आप हिरण्यकश्यप का वध करेंगे, जो संभवतः इस युग का अधर्मी है, क्योंकि उसका भाई पिछले युग में अधर्मी था।’
‘अगर मुझे प्रतीक चिन्ह नहीं मिला तो क्या होगा?’
इंद्र ने अपने जबड़े भींच लिए। ‘तब तो तुम असफल हो जाओगे। और एक और सिंह को धर्म के रूप में चुना जाएगा, ताकि वह परीक्षा उत्तीर्ण करके अवतार बन सके या शायद कोई धर्म ही न रहे, क्योंकि यह जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर है, और इस युग में केवल अधर्म ही प्रबल होगा। यही वह बात है जिससे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है,’ वह रुका और पृष्ठ को देखने लगा। ‘यह सब इतना अस्पष्ट और इतना जटिल है, हर प्रतीक का एक अलग अर्थ है।’

एक पीछे रुक गया और गुलेल से उस पर पत्थर फेंकने लगा, जो नारा के सिर पर जा लगा।
नकाबपोश लोगों ने उसकी छाती पर वार करना शुरू कर दिया। दर्द से कराहते हुए नारा जमीन पर गिर पड़ा। उसने हमलों को रोकने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ, क्योंकि दर्द के कारण उसकी आंखों की रोशनी लगभग थम गई थी।
‘तुम हीरो बनना चाहते थे, है ना? अब हीरो बनकर कैसा लग रहा है?’ नकाबपोशों में से एक ने उपहास उड़ाते हुए कहा। आवाज जानी-पहचानी थी। नारा को एहसास हुआ कि यह विराटा है, जिसने तलवार को अपने बाएं हाथ में पकड़ रखा था क्योंकि नारा ने उसका दाहिना हाथ मोड़ दिया था। ‘अब तुम्हें इसकी वजह से मौत मिलेगी,’ विराटा दहाड़ा।
नारा के भीतर क्रोध उबलने लगा। उसे अपने नुकीले दांत महसूस होने लगे और उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। वह उठा और उसने अपना डंडा घुमाकर नकाबपोश आदमियों में से एक के पैर पर वार किया, जिससे वह हवा में उछल गया। वह आदमी धड़ाम से ज़मीन पर गिरा और वहीं पड़ा रहा।
फिर नारा लुढ़क कर दूर हट गया और अपने दस्ताने उतार दिए जिससे उसके पंजे दिखाई दिए। नाखूनों की जगह उसके पास सिंह जैसे नुकीले पंजे थे जो किसी भी चीज को चीर सकते थे।
‘ये क्या…’ नकाबपोश व्यक्ति विराट ने हैरानी से कहा। ‘तुम सिंह हो!’
नारा ने मुंह बनाया। वह घायल था और कमजोर महसूस कर रहा था। लेकिन वह गुस्से में भी था। और जब वह गुस्से में होता है - तो कुछ न कुछ हो ही जाता है।
वह दहाड़ा, और उसकी आवाज़ जंगल में गूंज उठी। नारा अपनी जगह से उछला और उनमें से एक पर झपटा, उसके चेहरे पर पंजे मारे, जिससे सभी आदमी सहम गए।
लड़का लड़खड़ाता हुआ भाग गया और गिर पड़ा।
नारा ने फिर से दहाड़ मारी और नकाबपोश बेवकूफों में से दो और अपनी जान बचाकर भाग गए।
अब केवल दो ही बचे थे। उनमें से एक विराट था।
विराटा पीछे हट गया और अपने साथी को आगे धकेल दिया, जिसने अपना हथियार गिरा दिया और नारा से विनती करने लगा। नारा ने उसका गला पकड़ लिया और उसे ऊपर उठा लिया, उसके पंजे उसकी त्वचा में धंसते गए और फिर उसे ज़मीन पर पटक दिया। लड़के ने अपना गला पकड़ा और तुरंत भागने लगा।

इसके बाद नारा ने विराट की ओर ध्यान दिया, जिसने अपनी तलवार से सिंह पर हमला किया और उसकी चमड़ी को चीर दिया।
नारा कुछ क्षणों तक स्थिर खड़ी रही और हमले को जारी रहने दिया।
और फिर, जैसे ही विराट ने दोबारा तलवार चलाई, नारा ने अपने हाथ से तलवार की धार पकड़ ली और अपने दूसरे हाथ से विराट पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा... लेकिन फिर खुद को रोक लिया। नारा ने आह भरी, उसकी आँखों में खौफ था, और उसने लड़के को ज़मीन पर धकेल दिया।
‘भागो!’ उसने विराटा पर गरजते हुए कहा।
वह आदमी तेजी से भाग निकला और अपने दोस्तों की तरह अंधेरे में गायब हो गया।
नारा ने अपना हथियार गिरा दिया और भय एवं क्रोध से अपना सीना पीटते हुए दहाड़ने लगा। क्रोध उस पर हावी हो गया था, हालांकि उसने इसे रोकने की पूरी कोशिश की थी।
उसने मन ही मन कहा, यह आत्मरक्षा थी।
जैसे-जैसे गुस्सा कम होने लगा, अपराधबोध की एक गहरी छाया उस पर छा गई। उसे अपने किए का एहसास हुआ और वह ज़मीन पर गिर पड़ा।
नहीं। मैं इसी से भाग रहा था। मेरा गुस्सा...
अचानक, उसे एक और दिल की धड़कन सुनाई दी। कुल मिलाकर छह धड़कनें थीं…
ये कौन है? वह दहाड़ना चाहता था लेकिन उसने अपने गुस्से पर काबू पाया। जंगल से एक विशालकाय व्यक्ति निकला, जिसने मोटे कपड़े पहने हुए थे। वह बूढ़ा था, सिर के दोनों ओर सफेद बालों को छोड़कर उसका पूरा सिर गंजा था, और झुर्रीदार चेहरे पर घनी दाढ़ी थी। नारा उसे जानता था। वह उसे बहुत अच्छी तरह जानता था।
‘बुरा मत मानो, नर। उन्हें यही मिलना चाहिए था। तुमने उन्हें सबक सिखा दिया है, और अगली बार वे बेहतर जान लेंगे,’ देवों और देवलोक के राजा इंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘आखिरकार, मेरे प्रिय योद्धा, तुम तो मारने के लिए ही पैदा हुए हो।’

4

प्रहलाद

लड़ाई शुरू होने के कुछ ही मिनटों में, उसे एहसास हो गया कि वह इसके लिए तैयार नहीं था।
प्रहलाद घुड़सवारों और पैदल सैनिकों को पीछे छोड़ते हुए सीधे युद्ध के मैदान के केंद्र में घुस गया। घोड़े गिर पड़े; सैनिक छलनी हो गए। कुछ लोग चिकित्सा सहायता लेने के लिए भाग निकले, जबकि तीरंदाज अपने रथों से उन पर तीरों की बौछार कर रहे थे।
वहां इतनी सारी घटनाएं हो रही थीं कि प्रहलाद को यह पता लगाना मुश्किल हो रहा था कि कौन से सैनिक किस पक्ष के हैं।
उसने अनुहराद के ठिकाने के बारे में पूछने के लिए अपने एक सैनिक से संपर्क किया, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, सैनिक को एक तीर लग गया।
प्रहलाद अपने भाई का नाम चिल्लाने लगा।
‘अनुहराद! अनुहराद!’ वह चिल्लाया, लेकिन बड़ा लड़का कहीं नजर नहीं आया।
आकाश से तीरों की बौछार होने लगी। पल भर में प्रहलाद अपने घोड़े से कूदकर एक लावारिस ढाल की ओर भागा। उसने ढाल को ऊपर उठाया और तीर उस पर जा लगे। वह सुरक्षित बच गया।
फिलहाल के लिए।
एक शत्रु सैनिक अचानक प्रकट हुआ और प्रहलाद की ढाल को धक्का देकर उसे लात मारकर ज़मीन पर गिरा दिया। प्रहलाद की सेना का एक अन्य सैनिक दौड़कर राजकुमार के पास पहुँचा और उसके सामने खड़ा हो गया। जैसे ही उसने प्रहलाद को उठाने की कोशिश की, शत्रु की तलवार से उस पर वार हुआ। उसकी हड्डियाँ और मांस टुकड़े-टुकड़े हो गए और घावों से खून बहने लगा।
प्रहलाद लड़खड़ाते हुए घटनास्थल से दूर चला गया, तभी उसकी सेना के सैनिक दुश्मन की ओर बढ़े और बदला लेने के लिए उसकी बेरहमी से हत्या कर दी।
थोड़ी दूर जाकर उसने मृत सैनिक का खून अपने चेहरे से पोंछा और अपने गले में लटके लॉकेट को पकड़ लिया: वही लॉकेट जो उसकी मां ने उसे बचपन में दिया था।
मुझे जाना होगा। यह बहुत ज्यादा हो गया है।

लेकिन उसे अनुहराद की चिंता थी। और उसे अपने माता-पिता को निराश करने का भी डर था।
बहुत कुछ दांव पर लगा है।
इससे पहले कि वह कुछ फैसला कर पाता, उसे अचानक एहसास हुआ कि वह
शत्रु सैनिकों द्वारा घेर लिया गया।
मानव सैनिकों में से एक ने दूसरे से पूछा, 'क्या यह राक्षसों का बालक राजकुमार नहीं है?'
'क्या हमें उसे उसके प्यादों की तरह मार डालना चाहिए?' दूसरे ने खिलखिलाते हुए कहा।
सैनिकों ने तलवारें लेकर उस पर हमला कर दिया। प्रहलाद झुक गया, लुढ़क गया और पीछे गिर पड़ा। एक तलवार उस पर चली, लेकिन उसने अपनी तलवार से उसे रोक दिया। उसने अपनी तलवार दूसरे से टकराई और फिर से पीछे लुढ़क गया, धूल उड़ती हुई उसने अपनी तलवार आगे बढ़ाई, लेकिन उसकी भुजाएँ कमजोर थीं और सैनिक को कुछ भी महसूस नहीं हुआ।
इसके जवाब में सैनिक ने अपने धातु से ढके डंडों से उसे घूंसा मारा।
दांत पीसते हुए, आंखें बंद करके और उस क्रोध को अपने हाथ पर हावी होने देते हुए, प्रहलाद ने अपनी तलवार से दुश्मन पर वार करना शुरू कर दिया, क्रोध और दर्द ने उसके अंदर के किसी भी डर को दबा दिया।
क्रोध ही कुंजी है।
प्रहलाद को लोगों को मारने की आदत नहीं थी। लेकिन किसी कारणवश, इस युद्ध के बीच, उसे ऐसा करना उचित लगा।
सब कुछ उचित प्रतीत हुआ।
आकाश से तीरों की एक और बौछार हुई और वह अपनी ढाल की ओर दौड़ा... लेकिन इस बार बहुत देर हो चुकी थी।
जिस सैनिक को उसने घायल किया था, उसी के एक सैनिक ने उसका पैर पकड़ लिया और वह जमीन पर गिर पड़ा। अधिकांश तीर उसे नहीं लगे, लेकिन एक तीर उसकी पीठ में जा लगा।
प्रहलाद दर्द से चीख उठा और उसने तलवार घुमाकर जमीन पर तड़प रहे सिपाही का हाथ काट दिया। उसने उसकी पीठ से तीर निकाला और उसके पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ गई। आह भरकर वह जमीन पर गिर पड़ा और अपनी आँखें बंद कर लीं।

उसके चारों ओर भयंकर युद्ध चल रहा था। वह उठने की कोशिश कर रहा था कि अचानक उसके कान सुन्न हो गए और उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। वह चिल्लाया... वह अनुहराद के लिए रोया।
‘भाई!’ वह चिल्लाया।
दुश्मन उसके पास आए और उसने उनके हथियारों का पता लगाकर उन पर हमला कर दिया, जिससे खून बहने लगा।
एक और व्यक्ति उसके पीछे आया और प्रहलाद ने अपनी तलवार घुमाई, जिससे उस व्यक्ति का सिर धड़ से अलग हो गया।
लेकिन फिर भी उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। युद्ध की चीखें... घोड़ों के खुरों की आवाज़... भेड़ों की आवाज़...
राम!
उसे एहसास हुआ कि नुकीली ढालें उसके करीब आ रही हैं। वह देख सकता था कि उसके सैनिकों को उनसे वार करके घायल किया जा रहा था और उनमें से कुछ को तो ढाल से बांध दिया गया था, वे दर्द से चीखते हुए तड़प-तड़प कर मर रहे थे। प्रहलाद भेड़ से दूर लड़खड़ाते हुए एक सफेद कवचधारी सैनिक के रास्ते में जा गिरा, जिसकी तलवार से वह बाल-बाल बचा और चेहरे पर चोट लगने के कारण जमीन पर गिर गया।
जब सिपाही ने दोबारा उस पर हमला करने के लिए मुड़ा, तो प्रहलाद ने अपनी तलवार से उसकी तलवार को रोका और तलवार के मूठ से घोड़े के सिर पर प्रहार किया। घोड़ा बेकाबू होकर जोर से हिनहिनाया, जिससे सवार का संतुलन बिगड़ गया और वह काठी से गिर गया।
आह भरते हुए प्रहलाद ने युद्ध में अपने सैनिकों को देखा। असुर और पिशाच भी बड़ी लगन से लड़ रहे थे, हालांकि पिशाच तो बेहद क्रूर तरीके से लड़ रहे थे। हथियारों का इस्तेमाल करने के बजाय, वे दुश्मन पर झपट रहे थे और उसका सिर या हाथ खा रहे थे।
वे स्वभाव से वास्तव में राक्षसी थे।
प्रहलाद लॉकेट को पकड़े हुए आगे बढ़ता रहा – वह अक्सर ऐसा तब करता था जब वह कमजोर और हारा हुआ महसूस करता था। लेकिन वहाँ कोई लॉकेट नहीं था।
तीर से लगी चोट का दर्द भी उसे उतना नहीं पहुंचा पाया जितना इस खोज ने पहुंचाया।

उसकी आँखें जमीन पर पड़े लॉकेट को ढूँढ रही थीं, जो लाशों, सिरों, अंगों, खून और पसीने से लथपथ थी। उसकी साँसें तेज़ होती जा रही थीं और आँखें उसे ढूँढ रही थीं। तभी किसी ने उसका गला पकड़ लिया और उसे सिर से जकड़ लिया। प्रहलाद ने पलटवार करने की कोशिश की, लेकिन तभी एक और दुश्मन सैनिक उसके सामने आ गया।
उनमें से एक ने कहा, 'सच्चे पुरुषों में एक राजकुमार! कितना शर्मनाक है। भगवान जयंत तो तुम्हारा सिर अपने हवाले होते देखना चाहेंगे।'
दूसरा सिपाही उसके करीब आया और प्रहलाद ने इस मौके का फायदा उठाते हुए उसे पूरी ताकत से लात मारी और अपने पैरों की ताकत का इस्तेमाल करते हुए उसे पकड़े हुए व्यक्ति को धक्का दिया। दोनों जमीन पर गिर पड़े और प्रहलाद ने सिर की पकड़ तोड़कर उससे छुटकारा पाने की कोशिश की, लेकिन यह मुश्किल था। और इसलिए उसने वही किया जो उसे करना पड़ा।
उसने सिपाही के नंगे हाथ को काट लिया, जिससे वह दर्द से चीख उठा और उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। प्रहलाद ने जमीन पर पड़ी तलवार उठाई और उसे सिपाही के मुंह में घुसा दिया।
उठते ही उसने अपने किए पर हैरानी जताई। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने इतने सारे लोगों को मार डाला है। उसकी नज़र मैदान पर चारों ओर घूमी और उसे बीचोंबीच कुछ चमकदार दिखाई दिया।
वह चमकीली वस्तु की ओर तेजी से बढ़ा, तभी पीछे से एक घोड़ा आया और उसके बगल में आकर रुक गया। प्रहलाद ने ऊपर देखा तो उसे घोड़े पर एक मुस्कुराता हुआ, पीला पड़ा हुआ योद्धा, जिसके बाल सफ़ेद थे, आराम से बैठा हुआ दिखाई दिया; उस पर या उसके कवच पर धूल का एक कण भी नहीं था।
और उसने कवच पर ध्यान दिया – उस पर वज्र का चिन्ह बना हुआ था। सफेद बालों वाला सिपाही नीचे उतरा और अपनी हल्की आँखों से प्रहलाद को गौर से देखने लगा। वह किसी भूत की तरह लग रहा था। यह स्पष्ट था कि उसके चारों ओर हो रही मृत्यु और विनाश, यहाँ तक कि उस तबाही का भी उस पर कोई असर नहीं था। प्रहलाद ने अपनी तलवार की नोक पर खून देखा। सिपाही घुटनों के बल बैठा और प्रहलाद का लॉकेट उठाया। 'क्या तुम यहाँ होने के लिए बहुत छोटे नहीं हो, लड़के?' वह हँसा।
प्रहलाद जानता था कि यह कौन है - उसके रूप-रंग से वह आदिवासी नहीं लग रहा था। वास्तव में, वह शाही लग रहा था।

‘आप राजकुमार जयंत हैं, है ना?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘इंद्र के पुत्र, आपकी सेवा में हाजिर,’ उसने लॉकेट को देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा। ‘इस पर क्या लिखा है?’
‘यह मेरी मातृभाषा में है,’ प्रहलाद ने अपने मुंह से खून का धब्बा पोंछते हुए कहा। ‘मुझे दे दो।’
‘इसमें क्या लिखा है, लड़के?’ जयंत ने ठंडी आवाज में दोहराया।
प्रहलाद ने अपने जबड़े भींच लिए, लेकिन उसने शांत भाव से जवाब दिया, 'मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा।'
‘यह तो बहुत ही मार्मिक है। यह किसका था?’
'मेरी माँ,' प्रहलाद ने अनिच्छा से उत्तर दिया।
जयंत ने मुंह बनाया। ‘अरे बाप रे, ये तो बहुत दुखद है, क्योंकि मेरे पिता, तुम्हें पता ही है...’ और उसने ऐसा इशारा किया जिससे लगा कि इंद्र ने प्रहलाद की माता का सिर काट दिया था।
प्रहलाद के भीतर क्रोध उमड़ रहा था, लेकिन उसकी निगाहें लॉकेट पर टिकी हुई थीं। उसे अपनी माँ का लॉकेट वापस पाना ही था। प्रहलाद ने जयंत के हाथ में मौजूद दोधारी हथियार पर ध्यान दिया – जिसके दोनों ओर लंबी-लंबी धारें थीं। 'मैं आपको बताता हूं, आप मुझे लॉकेट रखने दें और मैं आपको जीने दूंगा, क्योंकि मुझे आप जैसे छोटे लड़के पर दया आती है।'
मैं लॉकेट लिए बिना नहीं जाऊंगी।
यह कहते हुए, प्रहलाद अपनी जगह से उछल पड़ा और जयंत की ओर दौड़ा, जिसने आसानी से हमले से बचते हुए प्रहलाद को जमीन पर गिरा दिया और उसकी ठोड़ी पर चोट लग गई।
‘अरे प्यारे, तुम तो काफी परेशान लग रहे हो। क्या युद्ध तुम्हें रास नहीं आ रहा?’ उसने लड़के का मजाक उड़ाते हुए कहा।
प्रहलाद ने दांत भींचे, लेकिन तभी उसकी नज़र किसी की तलवार पर पड़ी, जो उससे कुछ ही कदम दूर पड़ी थी। रेंगते हुए वह उसकी ओर बढ़ने लगा, तभी उसे अपनी पीठ पर, जहाँ उसे पहले चोट लगी थी, किसी के भारी पैर का आभास हुआ।
वह दर्द से चीख उठा।
‘तुम मुझे हरा नहीं सकते, राक्षस राजकुमार,’ जयंत ने ताना मारा।
प्रहलाद जानता था कि वह जयंत को हरा नहीं सकता – जयंत अपनी तेज और फुर्तीली चालों के लिए प्रसिद्ध था। वह एक जल्लाद था और उसके लिए प्रहलाद को मारना

बेहद आसान था। और वह एक देव था, जिसका अर्थ था कि यदि उसे मारा नहीं गया, तो वह अपने पिता की तरह तीन सौ वर्ष तक जीवित रहेगा। असुर भी लंबी आयु जीते थे, लेकिन देवों की लंबी आयु की कोई तुलना नहीं थी।
प्रहलाद ने देखा कि जयंत अपनी कमर पर लटके थैले से एक शीशी निकाल रहा है और उसमें से नीला तरल पी रहा है। ‘क्या तुम्हें इसकी ज़रूरत है, बालक? यह अमृत है, सोमस; कुछ ऐसा जो तुम्हारी जाति को बहुत चाहिए था, लेकिन मेरे पिता ने तुम्हें देना उचित नहीं समझा। तुम्हारा कमज़ोर, दयनीय मन इस पेय से भ्रष्ट हो जाता। सोमस शक्तिशाली है और देव जाति इसका उपयोग अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के लिए कर सकती है। और कुछ आदिवासी भी, जैसा कि हमने सीखा है, इसका उपयोग कर सकते हैं, लेकिन ज़्यादा नहीं। यह सही हाथों में होना चाहिए, अन्यथा हालात थोड़े बेकाबू हो सकते हैं,’ वह युद्ध के बीच में भी इस हल्की- फुल्की बातचीत का आनंद लेते हुए खुद से बुदबुदाया।
प्रहलाद को यह कहानी पता थी कि असुर अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए सोमों को पाना चाहते थे, लेकिन वे उन्हें प्राप्त नहीं कर सके। इंद्र ने उन्हें देवलोक स्थित अपने किले में छिपाकर रखा था, ताकि उनका उपयोग केवल उन्हीं लोगों द्वारा किया जा सके जिन्हें वे चुनते थे।
यह स्पष्ट था कि देवों की लंबी आयु का कारण क्या था: उनके पास सोमा था जो वृद्धावस्था की प्रक्रिया को धीमा कर देता था।
‘खैर, मैं तो बस समय बर्बाद कर रहा हूँ। कुछ और कहना है क्या, बेटा?’ जयंत ने पूछा।
प्रहलाद ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वह प्रार्थना करना चाहता था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि किससे प्रार्थना करे। असुर देवताओं की पूजा नहीं करते थे। वे बल, प्रेम, दया या क्रोध जैसे गुणों की पूजा करते थे।
और इसलिए प्रहलाद ने चमत्कार की उम्मीद में प्रार्थना की।
जयंत ने दोधारी भाला नीचे लाया और प्रहलाद के शरीर में उसे गहराई तक घुसाने ही वाला था कि...
अचानक कहीं से आए एक धक्के ने उसे झकझोर कर दूर फेंक दिया। प्रहलाद की पीठ को राहत मिली और उसने आँखें खोलीं तो देखा कि जयंत एक तरफ गिर पड़ा है। उसने अपना सिर घुमाकर अनुहरद को देखा, जो अपने भाई पर मुस्कुरा रहा था, लेकिन उसकी आँखों में चिंता झलक रही थी। 'मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम यहाँ

आओगे, बच्चे,' उसने कहा। 'लेकिन मुझे खुशी है कि तुम आए। हालांकि, अब जल्दी जाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी मौत हो।'
‘तुम कहाँ थे?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘अपने लोगों को बचाना।’
जयंत उठ खड़ा हुआ। ‘काश, मुझे भी ऐसा भाई-बहन का प्यार मिलता। मेरी जुड़वां बहन मुझसे नफरत करती है, इसलिए मैंने यह सुनिश्चित किया कि वह स्वर्ग से इलवर्ती आकर मुझे कभी परेशान न करे।’ और फिर उसने भाला इतनी तेज़ी से चलाया कि अनुहरद को उसे रोकने के लिए बहुत सतर्क रहना पड़ा।
लेकिन अनुहराद अपने हथियार चलाने में माहिर था। उसे पता था कि उसका इस्तेमाल कैसे करना है और वह पूरी तरह एकाग्र था। उसे पता था कि जयंत अगला हमला कहाँ करेगा।
मुझे लॉकेट लाना होगा।
प्रहलाद तलवार उठाने के लिए लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा, और जब उसने मुड़कर देखा तो उसने अनुहरद को जमीन पर पड़ा हुआ और जयंत को हाथ में भाला लिए उसके ऊपर खड़ा पाया। अनुहरद अपने खून से सने, ज़ख्मी हाथों से भाले की धार को खुद को भेदने से रोक रहा था।
मुझे उसे बचाना होगा।
उसने जयंत पर तलवार तानी और तलवार का मूठ सीधे देव के सिर पर जा लगा। वह दूसरी तरफ गिर पड़ा और उसी क्षण अनुहरद ने अपनी तलवार पकड़ी और तुरंत जयंत के कंधे में घोंप दी। एक चीख हवा में गूंज उठी।
प्रहलाद उठ खड़ा हुआ और जयंत से लॉकेट छीनने के लिए दौड़ा, जिसने उसे कसकर पकड़ रखा था। तभी अनुहराद ने जयंत के कंधे से चाकू निकाल लिया, जिससे जयंत फिर से चीख उठा और लॉकेट को छोड़ दिया।
प्रहलाद ने लॉकेट पहन लिया और उसे फिर से शांति मिल गई।
‘यह मत सोचो कि तुमने मुझे हरा दिया है,’ जयंत ने आह भरी, उसकी आँखें खून से लाल हो गई थीं। उसका सफेद कुर्ता गहरे लाल रंग का हो गया था।
‘मैं जहां खड़ा हूं, वहां से तो मैंने पहले ही कर दिया है।’ अनुहराद ने जयंत के सिर पर ध्यान केंद्रित किया और उसे धड़ से अलग करने के लिए आगे बढ़ा। उसी क्षण जयंत ने सीटी बजाई। प्रहलाद असमंजस में पड़ गया और उसने अनुहरद से नज़रें मिलाईं, लेकिन तभी उसने एक सफेद घोड़े को उनकी ओर सरपट दौड़ते

देखा और जयंत ने सहारे के लिए उसकी काठी पकड़ ली, क्योंकि घोड़ा उसे उस जगह से दूर ले गया।
‘जल्द मिलते हैं!’ जयंत ने युद्ध के मैदान में गायब होते हुए कहा।
अनुहरद ने आह भरते हुए कहा, ‘अगर हमने उसे मार डाला होता तो पिताजी बहुत खुश होते।’ फिर उसने प्रहलाद की ओर मुड़कर देखा। ‘मुझे बचाने के लिए धन्यवाद। मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे प्रति इतना कठोर हूँ…’
प्रहलाद के जवाब देने से पहले ही, उसे फिर से सुन्नपन महसूस होने लगा। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा और उसकी दृष्टि धुंधली हो गई।
‘क्या तुम ठीक हो?’ अनुहरद की आवाज़ मानो दूर से आई, और प्रहलाद का शरीर लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ा, उसका सिर खून से सनी मिट्टी से टकराया। उसे समझ आ गया कि क्या हो रहा है।
वह थका हुआ था। वह घायल था। और अब वह बेहोश हो रहा था।
जैसे ही अंधेरा उसे पूरी तरह से घेरने लगा, उसने अपने लॉकेट को कसकर पकड़ लिया।

5

नरसिंह

आग की लपटें चटक रही थीं।
इंद्र ने फर का कोट पहन रखा था और वह लकड़ियों को पानी में फेंक रहा था, फिर वह बैठ गया और अपने हाथों को सेंकने लगा।
नारा ने राजा को कुछ अरुचि के साथ देखा। इंद्र अपने साथ उसका अतीत ला रहे थे, जिससे नारा चौदह वर्षों से बचने की कोशिश कर रहे थे।
जब उसे पता चला कि वह एक धर्म है, और जब उसे इस युग का वह रहस्य पता चला जिसने उसे अंदर तक झकझोर दिया, तो वह भाग गया, और तब से उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।
अब तक तो ऐसा ही था।

इंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे बहुत निराशा हुई है। तुम अभी तक अवतार नहीं बन पाए हो।'
नारा ने आह भरी। उसके पास कोई प्रतीक नहीं था और वह इसके लिए आभारी था। 'शायद मैं कोई महत्वपूर्ण कार्य पूरा करने में असफल रहा?'
'सच है। इसके बजाय आप यहां युवा विद्रोहियों को डरा रहे हैं।'
यह सुनकर नारा को बहुत दुख हुआ। वह विराटा और उसके निकम्मे दोस्तों पर हमला नहीं करना चाहता था, लेकिन उन्होंने उसे कोई और विकल्प नहीं छोड़ा था।
नारा ने गर्म, नम कपड़े से अपने घावों को पोंछा और इंद्र की ओर देखते हुए पूछा, 'तुम यहाँ क्यों हो?'
‘माफी मांगने के लिए,’ इंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा।
‘अपनी सेना, अपने अंगरक्षकों, अपने हाथी के बिना? तुम एक आम नागरिक की तरह दिखते हो।’
‘मुझे ऐसा करना पड़ा। आप तक पहुँचने के लिए मुझे अपना वेश बदलना पड़ा और ज़ाहिर है, ऐरावत के साथ होने से मैं आसानी से पहचाना जा सकता था। मेरे जासूस लंबे समय से आपकी तलाश कर रहे थे, और आखिरकार, उनमें से एक ने एक सराय के पास आपकी हरकतों के बारे में सुना और मुझे बताया। मैं मंदार में भैरव से किसी बात पर चर्चा कर रहा था, तभी मुझे पता चला और मैं तुरंत यहाँ आ गया,’ इंद्र ने समझाया।
‘भैरव कैसे हैं?’ सेना में रहते हुए नारा इन सभी लोगों को जानता था। अब, इनमें से कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। भगवान भैरव शिव थे, ठीक वैसे ही जैसे मोहिनी युग में भगवान रुद्र थे। शिव तो पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले गण जनजाति के लोगों को दी जाने वाली युद्ध उपाधि थी।
‘और भी बुरा। अंधका ने तो मुसीबत खड़ी कर दी है,’ इंद्र ने आह भरी। ‘लेकिन उसकी तारीफ तो करनी ही पड़ेगी। अंधा होने के बावजूद, वह वाकई एक दमदार इंसान और योद्धा है।’
नारा ने सिर हिलाया। उन्होंने हिरण्याक्ष के प्रसिद्ध पुत्र अंधक के बारे में सुना था, जो पूर्व असुर राजा था। वह अंधा राजकुमार जिसे मारना लगभग असंभव था, क्योंकि उसकी युद्ध रणनीतियाँ इतनी उत्कृष्ट थीं।
चौदह साल बाद माफी मांगने के लिए आप यहां क्यों आए हैं?

‘क्योंकि…’ इंद्र उठ खड़े हुए, एक लकड़ी का लट्ठा उठाया और उसे आग में फेंकते हुए बोले, ‘मैंने तुमसे कुछ बेहद संदिग्ध काम करवाए हैं। मुझे पता है। मैं… उह…’ उन्होंने आह भरी, ‘मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, नर। सचमुच। जयंत जल्द ही मेरा सिंहासन छीन लेगा… अगर कोई सिंहासन बचा हो तो, वरना मैं उसे स्वर्ग भेज दूँगा। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि युद्ध के आवेश में, मैंने कुछ भयानक काम किए हैं। मैंने अनावश्यक फाँसी के आदेश दिए हैं और ऐसे युद्ध लड़े हैं जो…’
‘गलत,’ नारा ने उसकी बात पूरी करते हुए कहा। ‘मुझे पता है, वे थे। मैं भी उनमें से एक थी।’
'जी हां, आप और आपकी सिंह सेना। सिंहों ने हमेशा देवताओं का साथ दिया है और इसके लिए मैं आभारी हूं।'
‘आपने हमारे भरोसे का दुरुपयोग किया, महाराज।’ नारा ने अपनी नाक फुला ली। ‘हमने सोचा था कि आप हमें सही राह दिखाएंगे।’
‘मैं अब भी वही हूँ। बाकी सिंह अब भी मेरा साथ दे रहे हैं। वे अब मृगसिंह के अधीन हैं,’ उन्होंने मृगसिंह का जिक्र करते हुए कहा, जो कभी नारा के अधीन थे। ‘सिर्फ तुम ही चले गए। क्यों?’
‘तुम जानते हो क्यों। मैं थक गया था, तुम्हें व्यर्थ में मौतें होते देख। और फिर…’ उसने अपना सिर हिलाया, उस गाँव में हुई कई घटनाओं में से एक को याद करते हुए जहाँ कथित तौर पर असुर रहते थे, और बाद में पता चला कि वहाँ असुर नहीं, बल्कि मानवों का गाँव था, और उसे मानव महिलाओं और बच्चों पर हमला करने के लिए मजबूर किया गया था। ‘मैं और निर्दोषों का खून नहीं बहा सकता था। सिंहों को कभी निर्दोषों को नहीं मारना चाहिए था। शायद मृग को इससे कोई आपत्ति न हो, लेकिन मुझे नहीं।’
‘हर युद्ध में हताहत होते हैं, नार।’
नारा ने सिर हिलाया। ‘मुझे पता है। इसीलिए मैंने इसे छोड़ दिया। मैं युद्ध को रोक नहीं सकता, इसलिए मैंने इसे छोड़ने का फैसला किया।’ वह रुका। ‘तुमने खुद पर इतना लंबा युद्ध थोपा है। तुम्हें कश्यपुरी पर हमला नहीं करना चाहिए था। इसी से सब कुछ शुरू हुआ।’
और इसी वजह से आप पर मेरा भरोसा डगमगा गया।

इंद्र ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'क्या यही कारण है कि तुमने ऐसा किया? क्या यही कारण है कि तुमने युद्ध छोड़ दिया? क्योंकि मैंने युद्धविराम तोड़कर इसकी शुरुआत की थी?'
'मेरे पास कई कारण थे, और हां, यह उनमें से एक था।'
‘लेकिन वह युद्ध तो होना ही था…’ इंद्र ने बोलना शुरू किया, फिर रुक गए। उन्होंने आह भरी और सिर झुका लिया। ‘ठीक है, मुझे पता है मैं गलत था। मुझे यह उस दिन से पता था जब कयाधु मारा गया था। मैं गलत था और मेरा व्यवहार कठोर था। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन अब जो हो चुका है। युद्ध एक वास्तविकता है और हम इसमें शामिल हैं, लड़ रहे हैं। और इसमें से अधिकांश हार रहे हैं।’
नारा जानती थी कि बात किस ओर जा रही है। 'मैं आपकी मदद नहीं करने वाली, महाराज। किसी भी तरह की सहायता की अपेक्षा न करें।'
‘मुझे पता है,’ इंद्र ने सिर हिलाया। ‘लेकिन तुमने हमें छोड़ दिया, तुमने अपने लोगों को छोड़ दिया, तुमने उन निर्दोषों को छोड़ दिया जो अब मर रहे हैं। कम से कम उनकी मदद करो, अगर मेरी नहीं तो।’
नारा इस पर विचार कर रहा था। निर्दोष लोगों को मारना उसे जितना बुरा लगता था, उतना ही उसे युद्ध में आनंद आता था - दुश्मन की सीमाओं के पीछे लड़ना। उसे इसकी कमी खल रही थी, लेकिन उसने इसके नाम पर कई भयानक काम किए थे।
और आखिरकार, निर्दोषों को मारने का डर ही उसे पुनर्जन्म की दुनिया में वापस जाने से नहीं रोक रहा था, बल्कि वह रहस्य भी था जो उसने सीखा था, एक ऐसा रहस्य जिसे इंद्र भी नहीं जानते थे।
यह रहस्य उन्हें स्वयं भगवान रुद्र, जो कि पूर्व शिव थे, ने अपनी मृत्यु पूर्व घोषणा में बताया था।
“पुत्र, संसार को अपने ऊपर हावी मत होने दो। धर्म का पालन करना अच्छा लगता है, पर यह उससे कहीं अधिक है। और मैं जानता हूँ कि इस युग के अंत में क्या होगा, तुम्हारा क्या होगा। मैं बस जानता हूँ। तुम छुपे रहो और भविष्यवाणी कभी पूरी नहीं होगी। लेकिन अगर तुम बाहर निकले, तो संभावना है कि यह पूरी हो जाएगी…”
नारा ने इन विचारों को झटक दिया। 'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?' ‘अंधक। तुम्हें उसे हराने का कोई रास्ता ढूंढना होगा,’ इंद्र ने मित्रतापूर्ण लहजे में नारा की पीठ थपथपाते हुए कहा। ‘मंदारा में भगवान

भैरव से मिलो। मृग और तुम्हारे लोग भी वहीं हैं। अंधक स्थानीय गांवों को तबाह कर रहा है, उसने धमकी दी है कि जब तक हम पशुपतास्त्र नहीं सौंप देते, वह उन्हें जलाता रहेगा। वह लगातार भैरव के शिविर पर भी हमला कर रहा है और उनकी रक्षा व्यवस्था को तोड़ रहा है। उसे एक जासूस से इस हथियार के बारे में पता चला है। वह जानता है कि अगर वह इसे हासिल कर लेता है, तो असुरों की युद्ध जीत लगभग तय है।’
नारा ने पशुपतास्त्र के बारे में सुना था, जो भगवान रुद्र का हथियार था और जिसे उन्होंने भगवान ब्रह्मा के विज्ञान और ज्ञान से बनाया था। यह इतना शक्तिशाली हथियार था कि एक ही वार में पूरे गाँव को नष्ट कर सकता था। साथ ही, हमले के स्थान से लगभग 50 मील के दायरे में विकिरण उत्पन्न करने की क्षमता रखता था।
मैंने अपनी अधिकांश सेना वहाँ भेज दी है, लेकिन मुझे यक्षलोक और नागलोक में भी लड़ना होगा, जहाँ अग्नि और वरुण विराजमान हैं, और जहाँ मैं अब हमारी चर्चा के बाद जा रहा हूँ। यदि किसी भी तरह उस पागल अंधे व्यक्ति के हाथ पशुपतास्त्र लग गया, तो वह हिरण्य के साथ मिलकर उसका अंधाधुंध प्रयोग करेगा और लाखों निर्दोष मनुष्यों को मार डालेगा। और अंधक, हिरण्य के विपरीत, हमें, मुझे, हानि पहुँचाने के बड़े उद्देश्य के लिए निर्दोषों की बलि देने की परवाह नहीं करता।
नारा को अंधका द्वारा परमाणु हथियार प्राप्त करने के परिणामों का ज्ञान था। 'भैरव पशुपतास्त्र को नष्ट करके इस समस्या का अंत क्यों नहीं कर देते?' ‘और अपनी जान जोखिम में डालें?’ इंद्र ने कर्कश स्वर में कहा। ‘मेरे भाई, तुम लंबे समय से युद्ध से दूर रहे हो, लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि हर पक्ष के पास एक बैकअप होना चाहिए। पशुपतास्त्र हमारा बैकअप है, अगर हम पूरी तरह से असफल हो जाते हैं, तो हम इसका इस्तेमाल असुरों के खिलाफ आखिरी बार करेंगे, लेकिन केवल तभी जब कोई विकल्प न हो। मेरा विश्वास करो, मैं वादा करता हूँ कि जब तक कोई बेहतर विकल्प मौजूद होगा, मैं इसका इस्तेमाल नहीं करूँगा।’
नर जानते थे कि इंद्र एक कुशल रणनीतिकार थे जो कभी स्वयं को खतरे में नहीं डालते थे। देव ने कहा, 'सिंहों को भी समस्या हो रही है। वे... विचलित हैं।' ‘क्या सोमाओं द्वारा सिंहों की बेहतर मदद करना अधिक कारगर नहीं है?’ नारा ने पूछा।

‘सोमस सिंहों को भी भ्रष्ट कर देता है।’ इंद्र ने सिर हिलाया। ‘सिंह उन जनजातियों में से एक थे जिन्हें मैंने प्रचुर मात्रा में सोमस दिया था, क्योंकि वे इसे हम देवताओं की तरह ही नियंत्रित कर सकते थे। लेकिन मुझे लगता है कि वे इसकी शक्ति को संभाल नहीं पा रहे हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि उनके पास तुम्हारे जैसा कोई नेता नहीं है। मृग... खैर... वह कमजोर है,’ इंद्र ने मन ही मन सोचा।
‘और मैं आपकी मदद कैसे कर पाऊंगा जब आपकी पूरी सेना भी आपकी मदद नहीं कर सकती?’
इंद्र अपने आसन से उठे। वे हँसे। ‘तुम ही सबसे अच्छी तरह जानते हो कि तुम क्या कर सकते हो। बेशक, तुम अवतार या धर्मात्मा नहीं हो। मुझे अब इसकी परवाह नहीं है, मेरे भाई। मुझे अब इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम अधर्म को हराने के लिए नियत हो या हिरण्य अधर्मात्मा बनने की कतार में अगला है। मैं बस इस युद्ध को जीतना चाहता हूँ ताकि हम सब घर जा सकें। और मुझे इस बात की चिंता है कि कहीं दुश्मन के हाथ हमारा परमाणु हथियार न लग जाए। यह हमारे पास सुरक्षित है, लेकिन उनके हाथों में… इसलिए अभी तुम्हें अपने बारे में सोचने के बजाय दुनिया के बारे में सोचना शुरू करना होगा… या मेरे बारे में, या इस व्यर्थ युद्ध के बारे में जो मैंने मूर्खतापूर्ण ढंग से शुरू किया है। मुझे पता है मैंने किया है। लेकिन मेरे उद्धारकर्ता बनो, मेरे सिंह भाई, और अंधका को रोको।’ इतना कहकर इंद्र ने नारा की ओर हाथ बढ़ाया।
नारा ने एक पल सोचा और फिर सिर हिलाया। 'नहीं। मैं वापस नहीं जाऊंगा। अंधका इतना बड़ा खतरा नहीं है कि मुझे युद्ध में वापस खींच ले।'
इंद्र ने आह भरी और सिर हिलाया। 'ठीक है, अगर तुमने यही फैसला किया है।' देवों के राजा खड़े हुए, अपने कपड़ों से धूल झाड़ी और अपनी निराशा छिपाने के लिए मुस्कुराए। 'तो अब मुझे चलना चाहिए।'
नारा ने कुछ नहीं कहा, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
इंद्र बाहर निकला और जंगल की ओर चल पड़ा, लेकिन वह रुका और नारा को आखिरी बार देखने के लिए पीछे मुड़ा। 'क्या तुम निश्चित हो?'
नारा ने सिर हिलाया।
इंद्र मुस्कुराया, उसकी आंखें थोड़ी सिकुड़ गईं। 'आपसे मिलकर अच्छा लगा, भाई।'

नारा ने थोड़ा झुककर अभिवादन किया और देवों के राजा जंगल में चले गए, और चांदी जैसी चांदनी में ओझल हो गए।
क्या मुझे इसका पछतावा होगा?

6

नरसिंह

नारा रोने की आवाज़ सुनकर जाग उठी।
इंद्र के जाने के बाद वह सो गया था, लेकिन यादें उसे चैन से सोने नहीं दे रही थीं।
उसे लोगों के विलाप और चीखें सुनाई दे रही थीं। उसने अपने दस्ताने पकड़े और उन्हें पहनकर अपनी झोपड़ी से निकलकर ढलान से नीचे मुख्य गाँव की ओर दौड़ पड़ा। लेकिन गाँव अब अंधेरे में डूबा हुआ नहीं था। उसने देखा कि आग चारों ओर फैल रही है। उसने बच्चों और उनकी माताओं को मृतकों के जले हुए शवों के पास रोते हुए देखा, उनके काले पड़े हाथों में ऐसे हथियार थे जिन्हें उन्हें कभी नहीं उठाना चाहिए था।
क्या हो रहा है?
नारा के पैर ज़मीन में धंसते हुए आगे बढ़े और उसने निर्मल वातावरण के बीच राक्षसों की आकृतियाँ देखीं – विशाल, भारी-भरकम, काले रंग के मानव।
लंबे, उलझे बालों और गहरे लाल आँखों वाली आकृतियाँ। दाईं ओर मुड़कर उसने देखा
असुर, जो राक्षसों से भी लंबे थे, लेकिन उनके चेहरों पर एक क्रूर मुस्कान थी। नारा ने देखा कि असुर तीरंदाज भागते हुए नागरिकों पर निशाना साध रहे थे, और राक्षस उन आदमियों को घेरकर कोड़े और लात मार रहे थे।
घरों पर आग बरसाने वाले गुलेलों का इस्तेमाल किया जा रहा था। झोपड़ियाँ जलाई जा रही थीं। नारा की नाक में विस्फोटकों और जलती राख की दुर्गंध भर

गई। उसने देखा कि असुरों का एक समूह ग्रामीणों के चारों ओर इकट्ठा होकर उनसे पूछताछ कर रहा था।
नारा ने ध्यान से कान लगाकर सुना कि असुर आम नागरिकों से क्या पूछ रहे हैं। ‘इंद्र कहाँ है?’ असुरों में से एक ने पूछा। ‘हमारे जासूस उसका पीछा करते हुए यहाँ तक आए थे, लेकिन उसके तुरंत बाद उसका पता नहीं चला। वह कहाँ है?’ ‘कृपा कीजिए, कृपया…’ आवाज ने जवाब दिया और नारा ने उसे पहचान लिया। यह विराट की आवाज थी। नारा ने उसे हरा दिया था और अब उसकी हालत और भी खराब थी। ‘मैं कोई परेशानी नहीं चाहता। मुझे नहीं पता कि भगवान इंद्र कहाँ हैं।’ नारा ने अपने दांत दिखाए। वे देवों के राजा को ढूंढने के लिए निर्दोष लोगों पर हमला कर रहे थे।
एक व्यक्ति की तलाश में अंधाका सैकड़ों लोगों को नुकसान पहुंचा रहा था।
गांव को नष्ट करने का क्या मतलब था?
नारा कारण जानता था। यह श्रेष्ठता और प्रभुत्व प्रदर्शित करने के लिए था। एक सदियों पुराना दावा जिसे अंधका ने बहुत जल्दी सीख लिया था - कि इस भूमि पर केवल असुरों का ही शासन होना चाहिए, किसी और का नहीं।
लोगों के भागने के बाद नारा आगे बढ़ा। अब उसके चेहरे से घबराहट का कोई निशान नहीं बचा था। उसका सीना भारी था और सिर ऊंचा था। उसने विराट को उसकी नासमझी के लिए चोट पहुंचाई थी, लेकिन अब उस आदमी को उसकी मदद की ज़रूरत थी। नारा दहाड़ा।
उसकी दहाड़ इतनी ज़ोरदार थी कि आस-पास के सभी लोगों का ध्यान उसकी ओर गया। असुरों ने उसे देखा और विराट को वहीं छोड़कर ज़मीन पर पटक दिया। बाकी ग्रामीण युद्धक्षेत्र से भागने की कोशिश करने लगे, लेकिन राक्षसों ने उन्हें जाने नहीं दिया।
‘इन्हें छोड़ दो,’ नारा चिल्लाई। ‘तुम्हारे यहाँ रहने का कोई कारण नहीं है।’
एक राक्षस ने एक युवती के गले पर अपनी तलवार रखते हुए पूछा, 'तुम कौन हो?' नारा का इरादा उन्हें अपनी पहचान बताने का बिल्कुल नहीं था। उसने ज़मीन से एक पत्थर उठाया और उसे राक्षस की ओर फेंका, जिससे उसकी खोपड़ी का एक हिस्सा छिटक गया। पत्थर नीचे गिरा और राक्षस भी मर गया। टक्कर इतनी ज़ोरदार थी कि बाकी राक्षस पीछे हट गए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इस नए खतरे से कैसे निपटा जाए।

असुर घबरा गए और नागरिकों को छोड़कर नारा पर हमला करने के लिए दौड़ पड़े, वे पूरी ताकत से उसकी ओर बढ़े।
कुल मिलाकर उनमें से पाँच थे।
नारा को एक साथ उनके हमलों का सामना करने के बारे में सोचना पड़ा। वह अब वैसा नहीं रहा था जैसा युद्ध में लड़ने के दौरान था - फुर्तीला, तेज, अभिमानी, कठोर और बलवान। अब उसकी हड्डियाँ भारी हो गई थीं, घुटनों में दर्द था और सीने में एक अजीब सा दर्द हो रहा था, जिसे कुछ देर पहले विराटा के आदमियों ने छेद दिया था।
लेकिन उसे ऐसा करना ही पड़ा।
जैसे ही दो असुर आगे बढ़े, उनमें से एक ने उन्हें भेदने के प्रयास में अपनी तलवार से वार किया। नारा ने तलवार को पकड़ लिया और उसे हमलावर की ओर झुकाकर उसके माथे में घुसा दिया। उन्होंने तलवार को शत्रु के शरीर से बाहर निकाला और उसे आगे बढ़ते हुए एक अन्य असुर की ओर घुमाकर उसके माथे में भी वार कर दिया।
पलक झपकते ही वह लुढ़क गया और बाल-बाल बचे दूसरे असुर की तलवार से बच गया। उसने गिरे हुए असुर के माथे से तलवार निकाली और झट से दूसरे असुर के धड़ में वार कर दिया, इतनी ज़ोर से कि खून बहने लगा।
वह लड़खड़ाते हुए असुर के पास गया, उसके पीले चेहरे को अपनी पकड़ में जकड़ लिया और अपने पंजों से उस पर वार किया।
उसने अपनी जीत का ज़ोरदार जश्न मनाया। तीन आउट। दो बाकी।
नारा ने कुल्हाड़ी लिए दो असुरों का डटकर सामना किया, फिर पीछे लुढ़ककर जमीन से कुछ रेत खुरचकर असुरों के चेहरों पर फेंक दी। वे एक पल के लिए अंधे हो गए, क्योंकि नारा ने गिरी हुई तलवार को एक असुर के पैरों के पास घुमाया और उसके अंगों को काट डाला, जिसके बाद एक दर्दनाक चीख सुनाई दी।
एक और बाकी है।
अंतिम असुर ने धमकी भरे अंदाज़ में अपनी कुल्हाड़ी चलाई। उसने उसे नारा के कंधे पर दे मारा। नारा एक पल के लिए दर्द से कराह उठा, फिर उसने कुल्हाड़ी को अपने हाथ से निकाला और गुर्राया। असुर ने अविश्वास भरी निगाहों से नरसिम्हा की ओर देखा।
नारा ने अपने खाली हाथ से दस्ताना उतार दिया और फिर असुर के चेहरे पर अपने पंजे से वार किया। असुर सैनिक दर्द से कराहते हुए, अंधा होकर जमीन पर गिर

पड़ा और उसके शरीर से खून बहने लगा। नारा ने उसकी छाती पर तब तक बार-बार पैर से वार किया जब तक कि उसकी चीखें बंद नहीं हो गईं। उसने कुल्हाड़ी हटा ली। उसने देखा कि दूसरे असुर जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे हैं, तभी उसने कुल्हाड़ी से एक असुर की पीठ पर वार किया और उसकी रीढ़ की हड्डी को दो टुकड़ों में तोड़ दिया। वह गिर पड़ा, उसका क्षत-विक्षत शरीर जमीन पर बेजान पड़ा था।
नारा ने अपने घाव पर हाथ रखा हुआ था, जिससे बहुत खून बह रहा था, और वह ज़ोर से दहाड़ा। अब गाँव वाले भी अपने साथ बाँस की लाठियाँ और तलवारें लेकर आ गए थे। गाँव के धनुर्धर तब प्रकट हुए जब अन्य असुर और राक्षस अपने घोड़ों पर सवार होकर भागने की कोशिश कर रहे थे।
‘हमारी जानकारी गलत निकली। इंद्र यहाँ नहीं हैं। चलो यहाँ से निकल चलते हैं, इससे पहले कि हममें से और लोग मरें,’ असुरों में से एक चिल्लाया। नारा को पता था कि यह सब खबर फैल जाएगी, लेकिन फिलहाल बचे हुए असुर और राक्षस पीछे हट रहे थे। वे डरे हुए थे।
वह उनके डर को महसूस कर सकता था।
उसने उनका पीछा नहीं किया। इसके बजाय, नारा विराट के पास गया, जिसका सिर झुका हुआ था। 'अपने पिता की सहायता करो और सबके लिए चिकित्सा सहायता का इंतजाम करो।'
जी-जी।
डर के मारे छिपे हुए स्त्रियों और पुरुषों को देखकर नारा ने आह भरी। उनमें से कई घायल थे, और कई मृत। बच्चों के शव जमीन पर पड़े थे, साथ ही कुछ महिलाओं के शव भी।
गांव में बेवजह ही जानमाल का नुकसान हुआ था।
‘मैंने तुम पर हमला किया, लेकिन तुमने मेरी जान बचाई। तुमने ऐसा क्यों किया?’ विराट ने अपनी नज़रें नीचे कर लीं।
‘जो आपने पहले किया है उस पर ध्यान मत दीजिए। आगे क्या करना है उसके लिए खुद को तैयार कीजिए,’ नारा ने कहा।
“उन्हें हम पर हमला नहीं करना चाहिए था। इसका कोई कारण नहीं था,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “वैसे यह पहली बार नहीं है। वे आस-पास के गांवों को लूट रहे हैं ताकि भगवान इंद्र के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें, जो भेस बदलकर एक गांव से दूसरे गांव जा रहे हैं। अब हमारी बारी थी। अंधक की सेना द्वारा

उत्तर को तबाह कर दिया गया है, और भगवान शिव की सेना को दबा दिया गया है, इसलिए हमारी रक्षा करने वाला कोई नहीं है।”
नारा ने एक पल सोचा। उन्होंने इंद्र की सहायता की गुहार ठुकरा दी थी, लेकिन अब नारा चिंतित थे। यदि अंधक इतनी कम सेना के साथ इतने निर्दोषों का नरसंहार कर सकता है, तो पशुपतास्त्र उसके हाथ में होने पर वह क्या करेगा? मुझे कुछ करना होगा।
‘मुझे जाना होगा,’ नारा ने कहा और मुखिया के बेटे से लंगड़ाते हुए दूर चला गया, उसका हाथ उसके घायल कंधे पर था और वह लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहा था। ‘तुम कहाँ जा रहे हो?’ विराट ने पीछे हटते हुए नारा की आकृति को पुकारा।

पंद्रह साल बीत चुके थे। शायद भविष्यवाणी गलत थी। शायद नारा को जिस रहस्य के सच होने का डर था, उसका अब कोई महत्व नहीं रह गया था। शायद वह छिपने से बाहर आ सकता था।
भगवान रुद्र इस बात से नाराज होंगे, लेकिन फिर... काफी समय बीत चुका है।
शायद अब मेरा धर्म बनना भी नियत नहीं है।
शायद सब कुछ खत्म हो चुका था और वह वापस जा सकता था। लेकिन इस बार, वह निर्दोषों को बचाने के लिए जाएगा, न कि उन्हें मारने के लिए।
‘उत्तर की ओर। अंधका को रोकना होगा,’ नारा ने विराट के प्रश्न का उत्तर बिना पीछे मुड़े दिया।

7

प्रहलाद

मृत्यु उसे नहीं ले जा सकी।

आँखें खोलकर उसने पाया कि वह तकियों से ढके पलंग पर लेटा हुआ है। कमरे की छत पर जड़े कई मोतियों से रोशनी छलक रही थी; हवा में अगरबत्ती की खुशबू फैली हुई थी। कमरा एकदम शांत था। उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। एकदम शांति थी।
अंत में।
प्रहलाद ने उठते हुए पलकें झपकाईं, उसे एहसास हुआ कि वह वापस अपने कमरे में, कश्यपुरी स्थित अपने महल में आ गया है।
मैं कितनी देर तक बेहोश रहा?
उसके पूरे शरीर पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं, और आयुर्वेदिक मलहमों की गंध उसे परेशान कर रही थी। वह भूखा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसने हफ्तों से कुछ खाया ही न हो।
वह तुरंत बगल की मेज पर रखी फलों की प्लेट की ओर बढ़ा और एक सेब को काट कर खा लिया।
उसकी पीठ में अभी भी दर्द था, लेकिन घर के सुखों से सुकून पाकर उसने राहत की सांस ली। फिर उसे अपना लॉकेट याद आया और उसने उसे कसकर पकड़ लिया।
यह अभी भी वहीं है।
प्रहलाद मन ही मन मुस्कुराया। जब देवराज जयंत ने उससे यह लॉकेट छीन लिया था, तो उसका दिल बैठ गया था। यह मेरी माँ का था। यह किसी और का नहीं है। वह इस लॉकेट की बहुत रक्षा करता था, क्योंकि उसके भाई को उनकी माँ से ऐसा कोई लॉकेट नहीं मिला था।
उसने इसके लिए मुझे चुना।
कमरे का दरवाजा खुला और प्रहलाद की निगाहें अभी-अभी अंदर आए लंबे कद के व्यक्ति - अनुहराद - पर पड़ीं। वह अब सादे कपड़ों में था, ढीले पायजामे और एक भूरे रंग का कुर्ता पहने हुए, और उसकी कमर में एक कटार बंधी हुई थी। ‘तुम्हारी नींद कैसी रही?’ उसका भाई मुस्कुराते हुए शांति से प्रहलाद के कंबल के पास बिस्तर पर बैठ गया। प्रहलाद ने देखा कि अनुहरद के शरीर पर भी कुछ पट्टियाँ बंधी हुई थीं।
मैंने कितने घंटे नींद ली?
'कितने दिन लगेंगे?'
प्रहलाद हांफते हुए बोला, 'कितने?'

‘तीन।’ अनुहराद ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘कोई बात नहीं। ऐसा होता रहता है। जब मैंने पहली बार युद्ध में भाग लिया था, तो मैं एक हफ्ते के लिए बाहर रहा था।’
‘मुझे लगता है मेरा वजन कुछ कम हो गया है।’ प्रहलाद ने अपनी उभरी हुई पसलियों को छुआ। उसका शरीर सुन्न महसूस हो रहा था।
‘वजन कम करने के लिए पहले तो वजन होना जरूरी है।’ अनुहराद उठ खड़ा हुआ और अंगड़ाई ली।
‘कौन जीता?’ प्रहलाद ने उत्सुकता से पूछा।
‘हमने किया। एक तरह से, मेरा मतलब है। जयंत घायल हो गया था इसलिए उसने अग्नि की सेना को पीछे हटा लिया।’
प्रहलाद मुस्कुराया। युद्ध के मैदान में पहली बार लड़ने के हिसाब से बुरा नहीं था। आमतौर पर वह अनुहरद या अपने पिता की सहायता करता था।
यह दूसरा युद्ध था जिसका उन्होंने निरीक्षण किया था। पहले युद्ध में वे विजयी हुए थे। और अब भी, अनुहराद की सहायता से।
‘यह अच्छी बात है।’
‘अरे, सुनो…’ अनुहराद ने कहा।
प्रहलाद ने ऊपर देखा।
'हाँ?'
‘मुझे वहां बचाने के लिए धन्यवाद।’ उसने शांति के प्रतीक के रूप में अपना हाथ आगे बढ़ाया।
‘तुम मेरी जान बचाने के लिए मुझसे हाथ मिलाना चाहते हो?’ प्रहलाद हँसते हुए बोला। ‘ये थोड़ा अटपटा है। इतना औपचारिक मत बनो। मैं तुम्हारा भाई हूँ।’ मुझे नहीं पता कि यह कैसे करना है।
‘क्या करूँ?’ प्रहलाद अपने बड़े भाई को परेशान करने में खूब मज़ा ले रहा था। ऐसा रोज़-रोज़ नहीं होता था कि अनुहरद – उसका बदतमीज़ और स्वार्थी बड़ा भाई – अपना आभार व्यक्त करे।
‘अच्छा व्यवहार कैसे करें,’ अनुहराद ने आह भरी। ‘छोड़ो ये सब। जब तुम तैयार हो जाओ, तो ठीक से नाश्ता मंगवा लेना और फिर आकर पिताजी से मिलना। वो हमसे मिलना चाहते हैं और हम सबको कुछ बताना चाहते हैं।’
‘साथ में?’ इस सवाल ने प्रहलाद को असहज कर दिया। उसके पिता थोड़े रहस्यमय हो सकते थे…

‘जी हां।’ अनुहरद मुस्कुराया। ‘उम्मीद है कि वह अगले राजा का नाम घोषित करेगा।’ उसने आंख मारी। ‘लेकिन वह इतनी जल्दी सेवानिवृत्त नहीं होने वाला, जब तक इंद्र पराजित नहीं हो जाते।’
‘और हां, यह तुम ही होगे,’ प्रहलाद ने आह भरी। ‘तुम बड़े हो।’
अनुहराद ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे पता है। लेकिन शुक्रिया, बच्चे। तुम काम आए।'
प्रहलाद हँस पड़ा, क्योंकि वह जानता था कि अनुहरद वास्तव में आभारी था, हालाँकि वह असभ्य होने से खुद को रोक नहीं पाया। प्रहलाद को खुशी का एहसास हुआ। ऐसा लग रहा था मानो युद्ध ने उन्हें और करीब ला दिया हो।
अनुहराद दरवाजा बंद करके चला गया, और प्रहलाद कपड़े पहनने लगा, क्योंकि उसका एक हाथ अभी भी दुख रहा था। जब वह अपनी कमीज़ पहन रहा था, तो कपड़ा अटक गया और उसने उसे खींचने की कोशिश की, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ।
तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।
महान।
‘कौन है?’ उसने पुकारा।
‘राजकुमार अनुहराद ने आपके लिए नाश्ता भेजा है, महाराज,’ एक मासूम सी स्त्री की आवाज ने जवाब दिया।
‘मत प्रवेश करो—’
लेकिन दरवाजा खुल गया। लड़की अब उसका नग्न धड़ देखने ही वाली थी।
अरे नहीं …
‘ओह, मुझे माफ़ करना!’ वह चीख पड़ी। ‘मुझे नहीं पता था कि आप कपड़े पहन रहे हैं, महाराज।’
प्रहलाद नौकर को देख नहीं पा रहा था क्योंकि उसका कुर्ता उसके सिर पर आधा नीचे खिसका हुआ था। 'क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं, क्योंकि आप यहीं हैं?' ‘उह… उम…’
'प्लीज, मैं फंस गया हूँ। मेरी बांह में दर्द है, इसलिए मैं इसे खुद नहीं कर सकता।'
जी हाँ, बिल्कुल, महाराज।
प्रहलाद को अपने हाथों पर कोमल हाथों का स्पर्श महसूस हुआ जब लड़की ने उसका कुर्ता थोड़ा ऊपर उठाया और फिर धीरे से उसे वापस उसके ऊपर डाल दिया। अब कपड़े पहने हुए, उसने लड़की की ओर देखा और एक युवा चेहरा देखा जिसके

गर्दन तक लहराते हुए चमकीले लाल बाल थे। उसने पहले कभी ऐसे बाल नहीं देखे थे, लेकिन वे उसकी गोल आँखों, अंडाकार चेहरे, गुलाबी होंठों और सुंदर नाक पर बहुत जंच रहे थे।
‘तुम नई हो,’ प्रहलाद ने कहा। और सुंदर भी।
लड़की का चेहरा लाल हो गया। 'जी हां, मैं हूं, महाराज।'
‘कौन से क्वार्टर?’
‘खाना बनाओ। मैं मास्टर रवनीत की सहायता करता हूँ।’
मास्टर रवनीत? प्रहलाद को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि महल में कितने रसोइये काम करते हैं। आख़िरकार, वह एक राजकुमार था और हर दिन उसके आसपास एक नया नौकर, एक नया रसोइया, एक नया रक्षक होता था। लेकिन वह... वह बहुत सुंदर थी और वह चाहता था कि वह यहीं रहे।
‘तुम्हारा नाम क्या है?’ उसने पूछा।
‘धृति, मेरे स्वामी।’
'इसका क्या मतलब है?'
'ताकत।'
प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारा नाम रखा?'
उसने सिर हिलाया। 'मैं अनाथ हूँ। अनाथालय की नर्सों ने ही मुझे मेरा नाम दिया है।'
‘अच्छा समझ गया। क्या आप खुद भी खाना बनाना जानते हैं?’
मैं सीख रहा हूँ।
‘आह।’
प्रहलाद मुस्कुराते हुए बैठ गया और खाना खाने लगा। उसने धृति को जाते हुए देखा, उसके मन में उस कमीज़ वाली घटना से एक अजीब लेकिन सुखद एहसास बना हुआ था। उसे धृति अच्छी लगती थी; वह प्यारी और मासूम थी।
लेकिन साथ ही साथ एक नौकर भी।
वह निम्न कुल की थी और देखने में मानव जनजाति की लगती थी, क्योंकि उसमें किसी अन्य जनजाति के लक्षण नहीं थे। वैसे भी राजधानी में ज्यादा आदिवासी नहीं थे।
प्रहलाद अपने महल के गलियारों में धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरते हुए चल रहा था। जब वह सुनहरे मैदानों में पहुँचा तो बाहर सूरज चमक रहा था। उसके पिता

को हमेशा से सोना पसंद था, दरअसल पूरा महल छत से फर्श तक सोने से सजा हुआ था, जिसमें मोती और क्रिस्टल जड़े हुए थे।
उद्यान क्षेत्र भव्य था, जिसमें प्रहलाद के मामा हिरण्यक्ष की प्रतिमा, हिरण्यकश्यप की स्वयं की पत्थर की प्रतिमा के बगल में खड़ी थी। जब भाइयों ने इस महल का निर्माण करवाया, तो उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनकी प्रतिमाएँ सबसे पहले स्थापित की जाएँ, ताकि वे अपनी उपलब्धियों पर गर्व कर सकें।
मैदान चारों ओर से वनभूमि से घिरा हुआ था और एक तरफ एक छोटा सा फव्वारा था। कोनों पर बनी दीवारों पर कंटीले कांटे और बाड़ लगे थे और काले कवचधारी पहरेदार पहरा दे रहे थे। महल में दानव वंश के लोग नहीं थे, और यह अच्छा ही था, क्योंकि उन्हें ठहराना मुश्किल था – ज़रा सोचिए, बीस फुट लंबे जीव ऊबकर बस बैठे अपने दांत खुजा रहे हों। उन्हीं के लिए प्रहलाद के पिता ने काश्यपुर के पश्चिम में हिरण्यपुर नगर बसाया था, जहाँ कालकेय और पौलामो वंश सुख-सुविधाओं से रहते थे। वहाँ के सभी महल, उद्यान और किले इतने विशाल थे कि उनके सामने दानव वंश के लोग बौने लगते थे। यहीं से उन्हें युद्ध के लिए बुलाया जाता था।
प्रहलाद ने मैदान के बीच में दो मंत्रियों को खड़े देखा। वह उन्हें जानता था। शांड और अमरका। शांड वित्त मंत्री थे, नगर के कोषाध्यक्ष, जिनकी पतली मूंछें थीं, गेंद जैसा बड़ा गोल सिर था और छोटे बाल थे। दूसरी ओर, अमरका सांस्कृतिक मामलों के मंत्री थे, जो दिखने में शांड से बिल्कुल विपरीत थे, लंबे और दुबले-पतले, हालांकि उनकी भी पतली मूंछें थीं।
अनुहराद उनके बीच में खड़ा था और वे मैदान में दूर किसी चीज़ को देख रहे थे। जैसे-जैसे प्रहलाद उनके पास पहुँचा, उसकी दृष्टि स्पष्ट होती गई और उसे समझ आ गया कि वे किस चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।
वे राजा हिरण्यकश्यप को देख रहे थे, उनकी आंखें विस्मय और प्रशंसा से चौड़ी हो गई थीं।
हिरण्यकश्यप सात फुट लंबा, चौड़े कंधों वाला और गदा के समान मजबूत, उभरी हुई मांसपेशियों वाला था। उसके बाल तेल लगाकर पीछे की ओर बंधे हुए थे और उसकी घनी मूंछें उसके मुंह के ऊपर शान से फैली हुई थीं। उसकी सुनहरी आंखें, जो उसके चेहरे की सबसे आकर्षक विशेषता थीं, अब भूरी प्रतीत होती थीं और अपने द्वारा देखे गए सभी कष्टों के कारण गहरी धंसी हुई थीं।

वह अपनी शाही सुनहरी धोती पहने हुए, दो पहलवानों के बीच खड़ा था।
लड़ाई की मुद्राएँ।
प्रहलाद के पिता को सुबह जल्दी उठने और शहर के कुछ बेहतरीन पहलवानों के साथ कुश्ती लड़कर खुद को तैयार करने की आदत थी।
दोनों पहलवान उस पर टूट पड़े। हिरण्य ने उस स्थिति में प्रहलाद की तरह उनके रास्ते से हटकर खुद को नहीं बचाया। बल्कि, उसने पहलवानों का गला पकड़कर उन्हें हवा में उठा लिया। फिर उनके सिर आपस में टकराए और उन्हें ज़मीन पर पटक दिया।
‘तुम दोनों को क्या हो गया है?’ राजा हिरण्य ने कर्कश स्वर में कहा। ‘मेरी समझ से तो तुम दोनों कोशिश भी नहीं कर रहे हो।’ वह अखाड़े के पास बिछी चटाई से एक गीला कपड़ा लेने गया और अपना पसीना पोंछने लगा, जबकि दोनों पहलवान उलझन में अपना सिर खुजाते रहे।
अनुहराद ने अत्यंत आदर के साथ कहा, 'पिताजी, यदि यही आपकी प्रतिस्पर्धा बनी रहेगी, तो आप हमारे चचेरे भाइयों, दानवों से ही क्यों न लड़ लें।'
हिरण्य ने अनुहरद को गले लगाते हुए हँसते हुए कोने में खड़े प्रहलाद की ओर देखा। ‘मेरे पुत्र।’ उसने मुस्कुराते हुए प्रहलाद को गले लगाया और उसके नन्हे शरीर को अपने विशाल, पसीने से तर शरीर से सटा लिया।
प्रहलाद पीछे हट गया और अपना चेहरा पोंछा। 'आपको नहाना चाहिए, पिताजी।' ‘हाँ, मैं ऐसा करूँगा,’ उसने हँसते हुए प्रहलाद के बालों को सहलाया। ‘लेकिन मुझे तुमसे और अनुहरद से कुछ बात करनी है। शंद, अमरका,’ उसने असुर मंत्रियों की ओर मुड़कर कहा, ‘मुझे अपने बेटों से बात करने के लिए थोड़ा समय दीजिए।’
दोनों ने सिर हिलाया और एक तरफ हट गए।
‘क्या बात है पिताजी?’ अनुहरद ने पूछा।
हिरण्य ने आह भरी और जवाब देने के बजाय प्रहलाद और फिर अनुहरद के घावों की जाँच करने लगा। “मुझे ये निशान बहुत अच्छे लगते हैं, बच्चों। तुमने मुझे गर्व महसूस कराया है।” वह मुस्कुराया। लेकिन प्रहलाद को यह बात परेशान करने वाली लगी कि एक पिता अपने बच्चे को घायल देखकर खुशी महसूस कर सकता है। उसने पिताओं को अपने बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करते देखा था, और उसने यह अक्सर अपने बचपन में अपने नौकरों और उनके बच्चों के बीच देखा था। “प्रहलाद, मुझे खुशी है कि तुम इस कठिन परीक्षा से बच गए। जब भी मैं

तुम्हें बाहर भेजता हूँ, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता है। अनुहरद अपना ख्याल रख सकता है, लेकिन तुम, तुम हमेशा कमज़ोर रहे हो। लेकिन जिस तरह से तुमने यह युद्ध जीता है, वह तुम्हारी शक्ति का प्रमाण है। अब मुझे डर नहीं लगेगा,” राजा ने कहा।
ये मेरे पिता हैं – एक ही समय में प्रशंसा करने वाले और तिरस्कारपूर्ण। उन्होंने आगे कहा, 'मेरे पास कुछ बुरी खबर है।'
हिरण्यकश्यप के लिए किसी बात को बुरा कहना निश्चित रूप से भयानक खबर का संकेत था। वे शायद ही कभी अतिशयोक्ति करते थे।
“मुझे यक्षलोक के बाहरी इलाके के लिए निकलना होगा,” उसने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “विज्ञसा अग्नि को हराने के करीब है, और उसे मेरी और मेरे आदमियों की ज़रूरत है। मुझे जाकर उसकी मदद करनी होगी।”
प्रहलाद की विग्यासा से कभी मुलाकात नहीं हुई थी, क्योंकि वह युद्ध के बाहरी इलाके में तैनात था, हालांकि कहा जाता था कि वह धूर्त और निर्दयी था
- इस युद्ध के लिए एकदम सही।
‘तुम्हें जाना क्यों है? मैं चलता हूँ,’ अनुहरद ने स्वेच्छा से कहा। ‘मैंने यहाँ अग्नि की सेना को परास्त किया है।’ और फिर उसने प्रहलाद की ओर देखा। ‘प्रहलाद के साथ, बिल्कुल। हमने जयंत को भी घायल कर दिया।’
“हाँ, और जैसा कि खबरों में बताया गया है, जयंत देवलोक में आराम करने के लिए चले गए हैं। यहाँ तक कि मूर्ख, निकम्मे सोम भी उनकी मदद नहीं कर सके।” हिरण्य रुका। “मुझे पता था कि किसी जादुई नीले तरल से कहीं ज़्यादा, हमारी इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प ही हमें विजय दिलाएगा। बस कुछ और दिनों की मेहनत और हम तुम्हारी माँ का बदला ले लेंगे।” उसने अपने भारी हाथ प्रहलाद और अनुह्राद पर रखे। “और,” उसने प्रहलाद के बड़े भाई की ओर देखते हुए कहा, “तुम यक्षलोक नहीं जा सकते क्योंकि तुम्हारी ज़रूरत कहीं और है।” कश्यपपुरी में – कार्यवाहक राजा के रूप में। बिल्कुल।
प्रहलाद अनुहरद के लिए खुश होना चाहता था, लेकिन उसे ईर्ष्या भी हो रही थी। भला अनुहरद से ईर्ष्या क्यों न हो? अपने अहंकार को छोड़कर, वह एक अच्छा इंसान था।
मुझे यकीन नहीं है कि आप इसे संभाल पाएंगे।
अनुहराद ने विनती करते हुए कहा, 'नहीं, पिताजी। मैं कर सकता हूँ। मुझे पता है मैं कर सकता हूँ।'

‘तुम और अंधका कभी एकमत नहीं होते,’ हिरण्य ने मन ही मन सोचा।
इस पर प्रहलाद ने अनुहरद के साथ असमंजस भरी निगाहों का आदान-प्रदान किया। ‘कैसा है…’ अनुहराद ने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, मानो वह चीजों को समझने की कोशिश कर रहा हो, ‘… इस मामले में अंधका की क्या भूमिका है?’
हिरण्य ने ऊपर देखा और उसकी निगाहें चौड़ी हो गईं। 'ओह, मैंने संदर्भ नहीं समझाया। मैं चाहता हूं कि तुम मंदारा पहाड़ियों पर जाओ, सटीक रूप से सोनितपुर जाओ।'
‘सोनीतपुर?’ प्रहलाद ने अपनी भौंहें उठाईं। यहीं पर अंधका ने अपनी सेना तैनात की थी।
‘अनुह्राद, मुझे पता है कि तुम अंधका को पसंद नहीं करते, लेकिन उसे समर्थन की जरूरत है और उसने विशेष रूप से तुम्हें बुलाया है।’ हिरण्य ने आखिरी शब्द पर जोर दिया।
प्रहलाद जानता था कि अनुहरद को क्यों चुना गया था। वह एक बेहतर योद्धा और रणनीतिकार था।
‘कुछ भाड़े के सैनिकों को अपने साथ ले जाओ, विशेषकर पिशाच को। तुम जानते हो कि उन्हें कैसे काबू में करना है और उत्तर में अंधका की सहायता कैसे करनी है। सिंह उसे पराजित कर रहे हैं। और हमें पशुपतास्त्र प्राप्त करना है। इससे हमें बहुत लाभ होगा यदि हमें देवलोक पर आक्रमण करके उनसे सोम छीनने पड़ें, साथ ही साथ खूनी देवेंद्र को मार गिराना पड़े। यही एकमात्र तरीका है। अंधका ने हमारी सहायता करने की कृपा की है क्योंकि वह अपने पिता, तुम्हारे चाचा का बदला ले रहा है। उसने वर्षों तक भैरव की सेनाओं से लड़ते हुए उत्तर की रक्षा की है।’ वह रुका। ‘अनुहरद, खाली हाथ मत लौटना। मैं चाहता हूँ कि तुम उत्तर में तब तक लड़ो जब तक तुम्हें पशुपतास्त्र प्राप्त न हो जाए, और मुझे पता है कि तुम सफल हो सकते हो। मुझसे वादा करो, ठीक है?’ ‘जी पिताजी, मैं वादा करता हूँ,’ अनुहराद ने सामान्य से अधिक मधुर स्वर में कहा।
‘अंधाका को आपकी ताकत की वाकई जरूरत है। बेचारा लड़का बहुत मेहनत कर रहा है।’
और सोनितपुर के कार्यवाहक शासक के रूप में अपनी स्वतंत्रता का आनंद भी ले रहे थे।

‘उसकी मदद करो।’ उसने अनुहरद के कंधे पर थपथपाया। अनुहरद ने बिना कुछ कहे सिर हिलाया। प्रहलाद समझ गया कि वह निराश है। उसे कश्यपुरी का सिंहासन तो जल्द मिलने की उम्मीद नहीं थी, ऊपर से उसे एक निर्जन, बर्फ से ढके राज्य में भेजा जा रहा था, जहाँ एक अत्याचारी शासक का राज था। ‘और तुम, प्रहलाद, तुम अभी युद्ध में किसी की मदद करने को तैयार नहीं हो। तुम अभी कमज़ोर हो… फिलहाल। तुमने वीरता दिखाई, लेकिन तुम शारीरिक बल से ज़्यादा बुद्धि के धनी हो। और मैं जानता हूँ कि तुम्हारी बुद्धि का सबसे अच्छा उपयोग कहाँ करना है।’ हिरण्य ने मुड़कर अपने मंत्रियों को आवाज़ दी, जो आपस में किसी बात पर चर्चा कर रहे थे।
मंत्री दौड़कर हिरण्य के विशालकाय शरीर के पास खड़े हो गए, जब उसने अनुह्रद के सामने उनसे कहा, “मेरे प्रिय सलाहकारों, मैं औपचारिक रूप से आप सभी का कश्यपुरी के कार्यवाहक शासक… राजकुमार प्रहलाद से परिचय कराना चाहता हूँ। यक्षलोक से मेरी वापसी तक वह आपका राजा रहेगा। अब आप उसकी सेवा करेंगे।”
प्रहलाद का दिल डूबने लगा... नहीं। उसका दिल नहीं।
उसने अनुहराद की ओर मुड़कर देखा।
उसके भाई का।

8

नरसिंह

नारा घोड़े पर सवार होकर नाले तक गई।
मैं पिछले एक हफ्ते से यात्रा कर रहा हूँ।
वह मंदारा पहाड़ियों के घुमावदार रास्ते पर पहुँच गया था, जहाँ से उसे इलवर्ती का कुछ हिस्सा दिखाई दे रहा था – और वह बेहद भव्य था। तेज़ हवा उसके चेहरे से टकरा रही थी, जिसका ज़्यादातर हिस्सा मफलर से ढका हुआ था। मौसम के असर से वह अब उतना अप्रभावित नहीं था, क्योंकि बहुत समय पहले ग्रहण किए गए सोमास से मिली शक्ति कुछ कम हो गई थी। उसने अपने सामने की ज़मीन,

उसकी घाटियों, नदियों और पहाड़ों, जंगलों और ज्वालामुखियों को देखा। यह चमकीले रंगों का एक सुंदर नज़ारा था, और सूरज कोहरे की चादर में छिपा हुआ था।
नारा उस घुमावदार रास्ते पर सवार होकर सोनितपुर के स्वर्ण नगर की ओर बढ़े। दूर से ही वह नगर चमक रहा था। इंद्र के अनुसार, इस पर अंधक की सेना का कब्जा था और यह एक अभेद्य किला था। घोड़े पर सवार नारा को लोहे और इस्पात की दीवारें तथा कांसे के बुर्ज दिखाई दे रहे थे। अंधक के सैनिक किसी भी आने वाले खतरे को भांप लेते थे और दीवारों पर तैनात धनुर्धारी किसी भी शत्रु से रक्षा करने के लिए तैयार प्रतीत होते थे।
अंधका ने इस जगह को बिल्कुल अभेद्य बना दिया है।
नारा ने अपने घोड़े को सोनितपुर से विपरीत दिशा में मोड़ा और पथरीले इलाके से नीचे उतरने लगा। वह जल्द ही उस परिचित भूमि पर पहुँच गया जहाँ प्रथम शिव ने अपना निवास स्थान बनाया था। वहाँ भगवान भैरव का विशाल किला खड़ा था, मानो एक छोटा सा राज्य हो, और किले को आसानी से पहचाना जा सकता था, क्योंकि एक मीनार से ध्वज फहराया जा रहा था - जिस पर त्रिशूल का चिन्ह बना हुआ था। यह सभी शिवों का विशिष्ट चिन्ह था।
शिव मानव या आदिवासियों में से नहीं थे, हालांकि दोनों समूहों के लोग अक्सर शिव की सेवा करते थे – उनके अनुयायी स्वभाव से विविध थे। प्रथम शिव, भगवान नटराज ने इस प्रथा की शुरुआत भगवान मत्स्य, प्रथम विष्णु अवतार के समय में की थी। शिव और उनकी सेना धर्म का पालन करने वाले योद्धा थे। भगवान भैरव ने देवताओं का साथ दिया क्योंकि वे असुरों की तुलना में धर्म के अधिक निकट थे, जो बुराई की प्रथाओं का पालन करते थे।
शिव एक नेता थे, लोकप्रिय और अत्यंत सम्मानित। वे किसी के अधीन नहीं थे, यहाँ तक कि इंद्र के भी नहीं, बल्कि भगवान महादेव का अनुसरण करते थे। वास्तव में, इंद्र उनके अधीन थे क्योंकि यदि शिव क्रोधित हो जाते, तो उनके अनुयायी विद्रोह कर सकते थे।
लेकिन अभी किले की हालत देखकर नारा को शिव की धुंधली छवि दिखाई दी – पराजित, लगभग मरणासन्न। दीवारों में दरारें थीं, बर्फ धूसर और खूनी थी, और आग झुलसी हुई थी। जब नारा पहले रुद्र के समय में यहाँ आया था, तब यह स्थान अत्यंत सुंदर था।
और अब, यह एक भयावह दृश्य था।

लेकिन इसमें भगवान भैरव की कोई गलती नहीं थी। अंधका उनके घर के बहुत करीब आ गया था, उसने अपना किला बना लिया था और लगातार उन पर हमले करता रहता था। इस तरह के निरंतर और बेरहम हमले के बाद कोई भी घायल और जख्मी हो जाता।
सबसे दूर कोने पर, नारा ने युद्धक्षेत्र देखा। यह बर्फीले पहाड़ों में छिपा हुआ था - एक विशाल, फैला हुआ भूभाग - अनगिनत लाशों से भरा हुआ। गिद्ध ऊपर मंडरा रहे थे, और उन पर चोंच मारने के लिए नीचे झपट्टा मार रहे थे। कंटीले तारों की बाड़ से भूमि को घेरा गया था, ताकि कोई भी एक-दूसरे के क्षेत्र में प्रवेश न कर सके।
नारा ने सोचा था कि वह यह सब फिर कभी नहीं देखेगा... लेकिन वह यहाँ था। वह निराश होकर भौंहें चढ़ा रहा था कि इतना समय और ऊर्जा अभी भी युद्ध में बर्बाद हो रही है। किसलिए? एक परमाणु हथियार के लिए, जिससे और भी युद्ध छिड़ेंगे।
यदि पशुपतास्त्र के लिए लड़ने का कोई कारण न होता तो यह युद्ध समाप्त हो जाता।
नारा किले के द्वार की ओर बढ़ा ही था कि तभी एक तेज़ घंटी बजने लगी। उसने देखा कि किले की पहली मंजिल पर तीरंदाज कतार में खड़े हैं और एक दर्जन पहरेदार द्वार से बाहर निकलकर अपने जूतों से बर्फ को पीटते हुए दिखाई दिए। नारा ने आत्मसमर्पण करते हुए अपने हाथ ऊपर उठा लिए, हालांकि उसे यह देखकर थोड़ा अजीब लगा कि वे उसके साथ एक उच्च स्तरीय खतरे की तरह व्यवहार कर रहे थे।
लेकिन इससे महल की सुरक्षा के बारे में भी बहुत कुछ पता चलता है। पहरेदारों के पीछे से एक चौड़ा, भारी-भरकम आदमी निकला। वह कद में छोटा था, उसके बाल उलझे हुए थे और सीने पर त्रिशूल का टैटू बना हुआ था। ठंड से बचने के लिए उसने अपने शरीर पर तेंदुए की खाल ओढ़ रखी थी। उसकी आँखें थकी हुई थीं और उनके चारों ओर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। उसकी कमर से एक कुल्हाड़ी लटक रही थी।
‘अपनी पहचान बताओ!’ उस आदमी ने चिल्लाकर कहा।
नारा सहजता से अपने घोड़े से उतर गया।
'हैलो, भैरव,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।
भैरव के चेहरे के भाव बदल गए। 'भगवान महादेव की कृपा से, क्या तुम ही हो, नर?'

नारा ने सिर हिलाया। भैरव ने सैनिकों को हथियार नीचे रखने का इशारा किया। वह आगे बढ़कर नारा को गले लगा लिया।
‘मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम वापस आने के लिए राजी हो गए, मेरे मित्र।’ भैरव ने नारा की पीठ थपथपाई। ‘इंद्र ने कहा था कि वह तुम्हें मनाने की कोशिश करेंगे। और यह कारगर साबित हुआ!’ नारा को लगा जैसे भैरव की आँखें आँसुओं से नम थीं।
पंद्रह वर्ष पूर्व, जब नारा भगवान रुद्र की सेवा करते थे, भैरव उनके द्वितीय-कप्तान थे। उस समय वे अधेड़ आयु के थे, लेकिन अब वे उम्रदराज हो चुके थे और यह बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। वे ऐसे दिखते थे मानो नरक से होकर लौटे हों।
‘यह तुम्हारे लिए था, इसलिए मुझे करना पड़ा,’ नारा ने अपने मित्र की पीठ थपथपाते हुए कहा, और याद किया कि कैसे एक दिन भैरव को रोते हुए देखकर दोनों की दोस्ती हुई थी। जब नारा ने उससे पूछा कि क्या हुआ है, तो भैरव ने अपने बेटे के बारे में बताया, जिसे हिरण्यक्ष ने अपने शासनकाल में अगवा कर लिया था। हिरण्यक्ष की मृत्यु के बाद, भैरव ने अपने बेटे को खोजने की कोशिश की, लेकिन वह उसे नहीं ढूंढ पाया। तब उसे पता चला कि उसके बेटे की हिरण्यक्ष ने बेरहमी से हत्या कर दी थी।
‘तुम बिलकुल नहीं बदले। अब भी बुरे झूठे हो, है ना?’ भैरव ने अब अपने चेहरे पर एक शरारती मुस्कान के साथ कहा।
नारा मुस्कुराया। उसने भैरव की पत्नी पार्वती से पूछा, 'पार्वती कैसी हैं?'
‘ओह, वो आ गई है,’ उसने कहा। ‘अंदर आओ, बूढ़े आदमी, मैं तुम्हारे लिए दावत तैयार करवाऊंगा।’
‘बूढ़ा? देखो कौन बोल रहा है!’ नारा ने उपहास उड़ाया।
'मेरे गौरवशाली दिन अभी आने बाकी हैं,' भैरव ने चुटकी लेते हुए कहा, और नारा ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया, हालांकि वह देख सकता था कि उसका दोस्त काफी मुरझाया हुआ, कमजोर और हारा हुआ लग रहा था।
जैसे ही नारा महल से गुजरा, पहरेदार उसे विस्मय से देखते रहे। वह एक प्रसिद्ध नायक था, और अब वह लौट आया था। कुछ लोग युद्ध छोड़कर जाने के कारण उससे नफरत कर सकते थे; अन्य लोग उसके प्रति श्रद्धा से भर सकते थे। लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी।

वह यहाँ था। खोया हुआ बेटा लौट आया था।
किले के अंदर, मांस, सब्जियों और फलों से लदी गाड़ियाँ, शस्त्रागार और अस्तबल, ज़मीन, सब कुछ बर्फ की पतली परत से ढका हुआ था। मानवों सहित विभिन्न जनजातियों के पुरुष, महिलाएं और बच्चे वहाँ मौजूद थे। सभी कमज़ोर और थके हुए लग रहे थे, यहाँ तक कि सैनिक भी। उनमें से अधिकांश नाग और यक्ष थे, जबकि कुछ सिंह थे - जिन्होंने उनकी खाल पहनी हुई थी, उनके सिर के चारों ओर बड़े-बड़े अयाल हेलमेट का काम कर रहे थे, और उनके दस्ताने मरे हुए शेरों की खाल से बने थे।
सिंह जनजाति शेरों की पूजा करती थी क्योंकि शेर शक्ति और आक्रामकता का प्रतीक थे। वे अपने मृत शेर की खाल धारण करते थे, जो कभी उनका साथी रहा था। यह उनकी संस्कृति का हिस्सा था - जनजाति में जन्म लेने वाले प्रत्येक युवा सिंह को एक शेर का बच्चा साथी के रूप में मिलता था। दोनों साथ-साथ बड़े होते और एक-दूसरे से सीखते। और जब वह शेर अपना जीवन चक्र पूरा करके मर जाता, तो सिंह उसकी खाल धारण करते थे। इस तरह, उनकी आत्माएं एक हो जातीं और वे एक-दूसरे में हमेशा के लिए जीवित रहते। और इस खाल को सड़ने से बचाने के लिए, हर दूसरे दिन इस पर साबुन, अंडे और नमक का एक विशेष मिश्रण रगड़ा जाता था।
मैंने तो बहुत पहले ही इसे पहनना बंद कर दिया था।
सिम्हा भाले और तलवारों का इस्तेमाल करते थे, जो अधिकतर हाथ में पकड़ने वाले हथियार थे और जिनके लिए उन्हें दूर से हमला करने की आवश्यकता नहीं होती थी। वे आक्रामक थे और हर युद्ध में सबसे आगे रहते थे। लेकिन सबसे बढ़कर, उनके प्रमुख हथियार उनके वंशानुगत और घातक रूप से तेज पंजे थे। सिम्ही जनजाति की महिलाएं भी योद्धा थीं, जिनका उपयोग मुख्य रूप से जासूसी और शिकार के लिए किया जाता था।
नारा ने अपने कबीले के विचारों को नकारते हुए सिर हिलाया और किले के बीचोंबीच खड़ी चांदी की विशाल बैल की मूर्ति पर ध्यान केंद्रित किया। यह नंदी की मूर्ति थी, जो भगवान नटराज, प्रथम शिव के वाहन हैं। यहाँ नंदी को शक्ति के देवता के रूप में पूजा जाता था।
‘सब कैसा चल रहा है?’ नारा ने भैरव से पूछा।
भैरव ने आह भरते हुए कहा, ‘क्या सोचते हो?’ ‘हमारे पास सर्दियों के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है, और हम भोजन के लिए शिकार पर निर्भर हैं, हालांकि

इंद्र ने हमें आपूर्ति भेजने का वादा किया है। हमें अपने परिवारों का भरण-पोषण करना है, सैनिकों को भोजन देना है। हर दूसरे दिन, अंधका अपनी सेना को मैदान में भेजता है और अगर हम उनसे लड़कर जवाबी कार्रवाई नहीं करते हैं, तो वे किले के करीब आ जाते हैं,’ उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा।
नारा ने अपने जबड़े भींच लिए और भैरव ने यह बात नोटिस की।
‘लेकिन सकारात्मक पक्ष देखो!’ उसने अपने मेहमान का मूड हल्का करने की कोशिश करते हुए कहा। ‘भले ही ये मुश्किल दिन हैं, लेकिन लगता है हम जीत रहे हैं। हम बच रहे हैं। और यही सबसे महत्वपूर्ण है,’ उसने मुस्कुराते हुए नारा की पीठ थपथपाई।
जीत? जीवित रहना? नारा ने अपने आसपास के अस्वस्थ, भूखे पुरुषों और महिलाओं को देखा।
उन्होंने कहा, 'अंधका को कभी न कभी तो रुकना ही होगा।'
भैरव ने कहा, ‘हमने यही सोचा था। हम यही उम्मीद कर रहे थे कि ऐसा ही होगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसके बजाय, वह लगातार अपने काम में लगा रहा। हिरण्यकश्यप द्वारा उसकी सेनाओं को निरंतर आपूर्ति की जा रही है।’
नारा ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'हम पशुपतास्त्र को किसी अधिक गुप्त स्थान पर क्यों नहीं ले जा सकते?'
भैरव ने सिर हिलाया। ‘काश हम ऐसा कर पाते, लेकिन भगवान रुद्र ने इसे यहीं रखने की योजना बनाई है। मैं उनके वचनों के विरुद्ध नहीं जा सकता। जब तक मेरी सांसें जीवित हैं, मैं यहीं रहकर इसे उन शक्तियों से बचाऊंगा जो इसका दुरुपयोग करना चाहती हैं।’ उनके शब्द साहसी और वीरतापूर्ण थे, और नारा अपने मित्र को बीच में रोककर यह कहना चाहता था कि इस संसार में वीर अक्सर मर जाते हैं।
‘अगर इंद्र भी इसका गलत इस्तेमाल करे तो क्या होगा?’ उसने इसके बजाय पूछा। भैरव ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'अब भी उसे पसंद नहीं करते, है ना?'
नारा ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'कौन करता है? क्या तुम करते हो?' ‘उन्होंने हमारी बहुत मदद की है। वे हमें आर्थिक सहायता दे रहे हैं, और मेरे लिए यह एक आशीर्वाद है। जब तक मैं शिव हूं, मुझे इस भूमि की रक्षा करनी है, जो मुझे भगवान रुद्र से विरासत में मिली है, इससे पहले कि मैं इसे किसी और को सौंप दूं।’

नारा ने सिर हिलाया। वह और कुछ कहना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, दाढ़ी और लंबे, लहराते बालों वाला एक लंबा, हट्टा-कट्टा आदमी, जो भैरव जैसा ही था, प्रकट हुआ। उसने भैरव के कान में कुछ फुसफुसाया, जिसकी आँखों में चिंता झलक रही थी और वह नारा की ओर मुड़ा। 'मेरे प्रिय मित्र, मुझे खेद है कि भोज में देरी करनी पड़ेगी। मुझे कुछ काम निपटाना है।' 'बिल्कुल।'
‘यह वीरभद्र हैं,’ भैरव ने नारा से उस व्यक्ति का परिचय कराया। नारा ने देखा कि वीरभद्र की भौहों पर एक बड़ा निशान था। ‘यह मेरे सेनापति हैं और जल्द ही शिव बनने वाले हैं,’ भैरव ने आगे कहा।
वीरभद्र ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और नारा को प्रणाम किया।
‘चलो चलते हैं,’ भैरव ने वीरभद्र से कहा और नारा से विदा लेकर वे मुड़े और मुख्य द्वार से बाहर निकल गए।
नारा अकेले ही आगे बढ़ता रहा, उसका घोड़ा उसके बगल में सरपट दौड़ रहा था।
आगे जाकर वह गहनों से भरी गाड़ी लिए एक विक्रेता के पास रुका। उसने अन्य वस्तुओं के बीच एक शेर की मूर्ति देखी और मुस्कुराया।
'देखो कौन आया है!' उसके पीछे से एक आवाज आई।
नारा ने मुड़कर देखा तो उसे एक सिंह दिखाई दिया जिसके चेहरे के चारों ओर काले बाल थे और शरीर पर धूसर त्वचा थी। उसके चारों ओर अन्य धूसर त्वचा वाले सिंह खड़े थे। नारा उस आवाज़ को जानता था, और भले ही कई साल बीत गए थे, फिर भी उसे देखने वाला चेहरा भी अजीब तरह से पहचाना हुआ लग रहा था।
‘मृग,’ नारा ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘तुम बड़े हो गए हो।’
'हम सबको ऐसा करना पड़ा, बूढ़े आदमी,' मृग ने अपनी बाहों को अपनी छाती पर बांधते हुए कहा, जबकि अन्य सिम्हा उसके साथ हंस रहे थे, 'क्योंकि तुमने हम सबको अकेला छोड़ दिया था।'
नारा ने आह भरी। 'मुझे खेद है।'
‘माफी मांगना छोड़ो।’ मृग आगे बढ़ा और नारा के करीब झुक गया। नारा देख सकता था कि वह कितना बड़ा हो गया था। ‘मुझे कुछ बताओ, तुम्हारी छुट्टियां कैसी रहीं?’ मृग से शराब की बदबू आ रही थी। दरअसल, वे सभी नशे में लग रहे थे। लेकिन सिंह जाति के लोग कभी शराब नहीं पीते।
‘यह कोई छुट्टी नहीं थी,’ नारा ने गंभीर स्वर में कहा।

‘अगर यह सेवानिवृत्ति थी, बूढ़े, तो तुम वापस क्यों लौटे? इस युद्ध में तुम्हारे जैसे कायरों की युद्धभूमि पर कोई ज़रूरत नहीं है। सिंहों का एक ही सम्मान का नियम है – अपने गौरव को कभी न छोड़ना,’ मृग ने तिरस्कार भरे स्वर में कहा।
एक ऐसी चीज जिसका मैं सम्मान नहीं करता था।
‘हम कैसे…’ मृग नारा के चारों ओर घूमते हुए बोला, ‘विश्वास करें कि आप युद्ध के दौरान हमें फिर से छोड़कर नहीं जाएंगे? कृपया मुझे बताएं। मेरा मतलब है, हमें क्या पता, जब हमें आपकी ज़रूरत होगी, तब आप फिर से भाग जाएंगे।’
‘इस बार मैं ऐसा नहीं करूंगी,’ नारा ने कहा।
‘शब्द खोखले होते हैं, बूढ़े आदमी। यह बात समझ लो।’ मृग अपने समूह के बगल में खड़ा था। ‘तुम तो अपनी चमड़ी भी नहीं पहने हो। तुम एक हारे हुए, एक कायर हो।’
नारा ने उसे अनसुना कर दिया। अपमान का दर्द उसे चुभ रहा था, लेकिन उसने फैसला किया कि शिविर में अपने क्वार्टर की तलाश में निकल जाना ही बेहतर होगा। जैसे ही वह मुड़ने लगा, उसने वह आवाज़ सुनी। उन सभी ने सुनी - घंटियाँ और फिर तुरही।
किसी ने चिल्लाकर कहा, 'अंधक की सेना युद्ध के मैदान में लौट आई है!'
मृग द्वार की ओर दौड़ा, लेकिन बाहर निकलने से ठीक पहले, वह मुड़ा और नारा को पुकार कर बोला, 'देखते हैं कि तुम कायर हो या अब भी पहले जैसे ही हो!' और इतना कहकर वह अन्य सिंहों के साथ युद्ध में शामिल होने के लिए निकल पड़ा। नारा एक पल के लिए झिझका। उसे इतनी जल्दी लड़ाई शुरू होने की उम्मीद नहीं थी।
उसने घोड़े की काठी से थैला उठाया। वह इधर-उधर भागते पुरुषों और महिलाओं, भाले, तलवारें और ढालें उठाए सैनिकों और मुख्य द्वार पर लाए जा रहे भेड़ों की अनदेखी करते हुए एक सुनसान जगह की ओर चल पड़ा।
मुझे जल्दी से काम करना होगा।
नारा ने अपना थैला खोला, जिसमें उसके सुनहरे बाल, सुनहरे दस्ताने और उसके आगे-पीछे कवच की तरह लिपटी हुई पूरी चमड़ी दिखाई दी। उसने अपनी चमड़ी देखी। उसने उसे पहना, पहले बालों को अपने सिर के चारों ओर लपेटा, फिर चमड़ी

[illegible]

9

[illegible]

[illegible]

उसके निकट उपवन और सुंदर युवतियाँ, रंग-बिरंगे पेड़ों से उगे हुए शानदार रत्न।
देवताओं ने पाताल को नरक के रूप में वर्णित किया - वह स्थान जहाँ से राक्षस आते थे, लेकिन यदि उन्हें इन चित्रों को देखने का अवसर मिलता, तो वे जान पाते कि यह वास्तव में कितना सुंदर था।
वह दूसरी पेंटिंग के पास गया और देखा कि उसमें दर्शाई गई पृष्ठभूमि काले, सफेद, बैंगनी और नीले रंगों से बनी थी। प्रहलाद को एहसास हुआ कि पाताल के प्रकाश में कितने सारे रंग खेल रहे थे।
उन्हें अपने बचपन में अपने पिता के साथ हुई एक बातचीत याद आई।
‘पिताजी, हम सीधे पाताल क्यों नहीं चले जाते?’ युवा प्रहलाद ने पूछा। हिरण्य ने मुस्कुराते हुए लड़के के सिर पर थपथपाया। प्रहलाद कुछ लकड़ी के टुकड़ों से खेल रहा था और उनसे एक किला बना रहा था। 'मैं यही करना चाहता था, बेटा। मेरे भाई का सपना था इस भूमि, इल्लावर्ती को जीतना। मैं हमेशा सोचता था कि हम पाताल में खुश और संतुष्ट थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अगर संधि का पालन किया गया होता तो मैं अपने वतन में ही रहता। अब मैं यहाँ रुका हूँ, अपने भाई के लिए नहीं, भूमि को जीतने के लिए नहीं, बल्कि तुम्हारी माँ के लिए। मैं पाताल नहीं जाऊँगा, न ही तुम जाओगे, जब तक हम अपना बदला नहीं ले लेते।'
प्रहलाद ने उदास भाव से सिर हिलाया। 'क्या सभी असुर मेरे मामा की तरह हैं? क्या वे भी दूसरे देशों पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं?'
‘नहीं। वास्तव में, वे वहाँ बहुत खुश हैं। यही तो हमारे साथ समस्या है, मेरे बच्चे,’ वह रुका। ‘हम हमेशा और अधिक पाने की चाह रखते हैं, जबकि हमें जो हमारे पास है उसी में संतुष्ट रहना चाहिए।’ उसने आह भरी। ‘मेरा भाई कभी ऐसा नहीं था। वह वह करना चाहता था जो भगवान हरिग्रीव नहीं कर सके।’ प्रहलाद को याद आया कि हरिग्रीव, भगवान मत्स्य के समय के असुरों में से एक थे। ‘और महानता के लालच ने ही उनका पतन किया।’
क्या आपको इस बात की चिंता है कि आप भी वही गलती दोहराएंगे?
राजा मुस्कुराया और प्रहलाद उस मुस्कान के पीछे गहरे दुख को महसूस कर सका। 'तुम्हारी माता के देहांत से पहले मैं भी ऐसा ही था, मेरे बच्चे। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि युद्ध नेक उद्देश्यों के लिए लड़ने चाहिए, न कि पापपूर्ण उद्देश्यों के लिए।'

एक खूबसूरत चित्र ने प्रहलाद को अतीत की यादों से बाहर खींच लिया। चित्र में पाताल द्वीप का पूरा दृश्य दिखाया गया था। उस पर विचित्र और जटिल नक्काशी थी और सूर्य का कोई निशान नहीं था, केवल अंधेरा आकाश था। लेकिन प्रहलाद को याद आया कि उसके पिता ने उसे बताया था कि पाताल में मौजूद रत्नों की प्रचुरता के कारण वह ऊर्जा और प्रकाश से जगमगाता रहता है। सूर्य का प्रकाश पाताल द्वीप, असुरों को कभी प्राप्त नहीं था। लेकिन वे पाताल से निकाले गए रत्नों से अपनी सड़कों को रोशन करते थे।
और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि प्रकाश कभी उनसे दूर न हो।
अपने पिता के कमरे में चारों ओर देखते हुए प्रहलाद ने पाया कि हिरण्यकश्यप भी वही कर रहा था। रात में भी, उसके पिता का कमरा रत्नों से जगमगाता रहता था, जिनका उपयोग उसने कमरे के निर्माण में किया था।
'तुम्हारे पिता कला और संस्कृति के हमेशा प्रेमी थे,' एक आवाज ने उसके विचारों को भंग करते हुए कहा।
प्रहलाद ने मुड़कर देखा तो एक गंजा, बूढ़ा आदमी किताबों और ग्रंथों के ढेर लेकर कमरे में दाखिल हुआ। उसके सीने पर सफेद कपड़ा लिपटा हुआ था।
नारद, उनके गुरु और मार्गदर्शक, जिन्होंने उन्हें बचपन से ही सब कुछ सिखाया था।
प्रहलाद तुरंत नारद की मदद करने के लिए गया और किताबें मेज पर रख दीं। 'गुरुजी, आपको मुझे बताना चाहिए था। मैं आकर आपकी मदद कर सकता था।'
‘हेह,’ बूढ़ा व्यक्ति मुस्कुराते हुए कुर्सी की ओर बढ़ा, उसकी मुद्रा सीधी और व्यवहार ऊर्जावान था। ‘अब आप शासक हैं, भगवान प्रहलाद। आपको ऐसी छोटी- मोटी बातों की चिंता नहीं करनी चाहिए, मेरे प्रिय।’
'हाँ, गुरुजी,' प्रह्लाद ने कहा।
‘आपको इन चित्रों के बारे में क्या लगता है?’ नारदा ने पूछा।
‘मुझे वे अच्छे लगे।’ प्रहलाद अपनी कुर्सी पर बैठ गया।
‘आपकी मां उनके बारे में खुलकर बोलती थीं। क्या आपको पता है कि अमरका से पहले वह संस्कृति मंत्री थीं?’
'मुझे इस बारे में पता नहीं था।'
‘उन्होंने ही आपके पिता को कला से परिचित कराया था। वाकई बहुत बुद्धिमान महिला थीं।’
‘मेरे पिता उसे बहुत प्यार करते थे, है ना?’

‘उसने उसके साथ हुए अन्याय को सुधारने को अपना मिशन बना लिया है। महाराज, आपकी माता के प्रति उसके मन में जो प्रेम था, वह तो बस एक छोटा सा शब्द है,’ नारद ने मुस्कुराते हुए मेज पर रखे दस्तावेजों को अपनी ओर खींच लिया। ‘लेकिन एक राजा होने के नाते, आपको कुछ दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने होंगे,’ उन्होंने उन्हें प्रहलाद को सौंप दिया।
‘ये क्या हैं?’ प्रहलाद ने उन ग्रंथों को पढ़ा और पाया कि वे विक्रेताओं, बाज़ार के वित्तपोषकों और व्यापारियों के लिए आपूर्ति सूचियाँ थीं।
उनमें बहुत सारे अंक और गणनाएँ थीं, और उसे उनमें से अधिकांश समझ में नहीं आ रही थीं।
‘क्या मुझे इनके अर्थों की बारीकियों से आपका दिमाग सुस्त कर देना चाहिए?’ नारदा ने मुस्कुराते हुए पूछा।
प्रहलाद मुस्कुराया। 'नहीं, मुझे आप पर भरोसा है।' और उसने एक-एक करके ग्रंथों पर हस्ताक्षर करने शुरू कर दिए। ऐसा करते हुए उसने पूछा, 'गुरुजी, मुझे एक बात बताइए, कश्यपुरी के बनने से पहले, दक्षिणी के असुर साम्राज्य बनने से पहले... लोग किसकी पूजा करते थे?'
‘आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं, मेरे स्वामी?’
‘मैं बस…’ प्रहलाद ने आह भरी, युद्ध में प्रवेश करने से पहले की अपनी अनुभूति को याद करते हुए। ‘जब मैं युद्ध में था और मुझे लग रहा था कि मैं हार रहा हूँ, तो मेरी इच्छा हुई कि कोई ऐसा हो जिसकी मैं प्रार्थना कर सकूँ। असुर मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते। वे देवताओं में नहीं, बल्कि गुणों में विश्वास करते हैं। काश मेरे पास भी कोई देवता होता जिसकी मैं पूजा कर सकूँ। आप गुरु हैं, है ना? आप किसकी पूजा करते थे?’
‘यह तो बहुत दार्शनिक बात है, महाराज,’ नारद ने विचारपूर्वक कहा। ‘हम केवल एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं – भगवान विष्णु की।’
प्रहलाद ने वराह अवतार के बारे में सुना था, जो भगवान विष्णु का वह सैनिक था जिसने उसके मामा का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु अच्छाई और धर्म का पक्ष लेते हैं।
‘ब्रह्मा के बारे में क्या?’
ब्रह्मा की पूजा उनके आविष्कारों के लिए की जाती थी।
‘और शिव?’

‘यह तो युद्ध से जुड़ा नाम है। आपका मतलब भगवान महादेव से था। मैं समझाता हूँ। इलवर्ती की सृष्टि के दौरान, तीन देवता शून्य से उत्पन्न हुए। विष्णु संरक्षक थे। उन्हें बुराई से लड़ने के लिए चुना गया था। ब्रह्मा प्रथम प्रजापति थे, मनु से भी पहले मनुष्य। हमारे आस-पास दिखने वाले कई आविष्कारों के पीछे उनका हाथ था, इसलिए उनके नाम पर कभी कोई मंदिर नहीं बना क्योंकि वे हमेशा खुद को पहले मनुष्य मानते थे। फिर भगवान महादेव आए। उत्तर के गण उनकी पूजा करते हैं। गणों का एक नेता है जिसे भगवान शिव कहते हैं, जो एक युद्ध उपाधि है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है, और माना जाता है कि भगवान महादेव द्वारा एक शिव का चयन किया जाता है।’
और क्या भगवान विष्णु शिव की तरह योद्धा हैं?
'यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे देखते हैं। मेरे लिए, वह वीर देवता थे, और उन्होंने हर युग में अपने शत्रु से लड़ने के लिए लौटने का वादा किया था।'
‘शत्रु?’ प्रहलाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
'जी हां। अधर्म। उनके युग में, जब वे कथित तौर पर जीवित थे, तो उनका शत्रु दुष्ट कालियान के अलावा और कोई नहीं था। और वे एक असुर थे।'
प्रहलाद के रोंगटे खड़े हो गए। वह कालियान के बारे में जानता था। उसके पिता ने उसके बारे में बताया था - वह पहला असुर था। 'अरे, इसीलिए तो असुरों से नफरत की जाती है।'
'बिल्कुल।'
प्रहलाद ने अपने गुरु की आँखों में सीधे देखते हुए कहा, 'लेकिन आपने जवाब नहीं दिया। आप किस पर विश्वास करते हैं?'
उन्होंने कहा, 'भगवान विष्णु अपनी अच्छाई के लिए, भगवान ब्रह्मा अपनी रचनात्मकता के लिए और भगवान महादेव अपनी शक्ति के लिए।'
प्रहलाद को नारद से ईर्ष्या होती थी क्योंकि उन्हें एक ऐसे देवता को अपना आदर्श मानने का सौभाग्य प्राप्त था। 'आस्था महत्वपूर्ण है, है ना?'
‘सबसे महत्वपूर्ण। आस्था हमें मजबूत बनाती है और हमें विश्वास करने की शक्ति देती है,’ नारद ने कहा।
'क्या विश्वास?'
‘एक बेहतर इंसान बनने में।’ गुरुजी मुस्कुराए।

और फिर कमरे के अंदर एक आवाज गूंजी, 'लेकिन हमारी सरकार की नींव को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला विश्वास आतंकवाद है।'
प्रहलाद ने मुड़कर देखा तो वित्त मंत्री शांड और दुबले-पतले संस्कृति मंत्री अमरका कमरे में प्रवेश कर रहे थे।
‘महाराज,’ दोनों मंत्रियों ने प्रहलाद के सामने आदरपूर्वक सिर झुकाया। ‘तुम ऐसा क्यों कहते हो?’ प्रहलाद ने शांड से पूछा।
‘क्या तुमने नहीं सुना?’ अमरका ने नारदा को घूरते हुए अपनी काली आँखों से पतली नज़रों से कहा। ‘तुम्हें हमारे राजा को बताना चाहिए था कि इस समाज को क्या परेशान कर रहा है।’
प्रहलाद ने नारद की ओर देखा, जिन्होंने कहा, 'मैंने सोचा था कि मैं पहले दिन उस पर बोझ नहीं डालूंगा।'
‘वह एक राजा है, मेरे प्रिय!’ शांड ने नारद पर झल्लाते हुए कहा। ‘उस पर तो बोझ होना ही चाहिए।’
‘क्या बात है?’ प्रहलाद खड़ा हो गया, उसकी आवाज पहले से कहीं अधिक ऊंची और बेचैन थी।
“हे स्वामी, कश्यपपुरी में एक आतंकवादी संगठन सक्रिय है,” अमरका ने अपनी बात जारी रखते हुए नथुने फुलाते हुए समझाया। “वे खुद को विष्णुसेना कहते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है विष्णु भक्तों की सेना। वे हमारी असुर सरकार को उखाड़ फेंकना चाहते हैं और कश्यपपुरी को असुरों से वापस लेकर उसे धार्मिक जीवन शैली में पुनर्स्थापित करना चाहते हैं।”
प्रहलाद ने जवाब दिया, 'कश्यपुरी कभी किसी चीज पर नहीं बनी थी।'
‘यह मानव राज्य पर बना था, महाराज,’ शांड ने कहा। ‘यह उन मनुष्यों का राज्य था जो भगवान विष्णु के अनुयायी थे। और अब वे दुखी हैं और अपनी भूमि वापस चाहते हैं।’
प्रहलाद ने नारद की ओर देखते हुए अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'हम उनके बारे में क्या कर सकते हैं?'
“हे प्रभु, वे संगठित नहीं हैं,” नारद ने कहा। “हमें नहीं पता कि वे कब और कैसे हमला करते हैं। उनका आखिरी अपराध तब हुआ था जब उन्होंने व्यापारियों को मारकर और उनके सिर प्रदर्शित करके काला बाजार को ध्वस्त कर दिया था। साथ ही उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि अब कोई काला बाजार नहीं चलेगा क्योंकि यह धार्मिक प्रथाओं के विरुद्ध है।” उन्होंने आगे कहा, “अन्य समय

में, उन्होंने साहूकारी रैकेट, वेश्यालय और कई अनैतिक प्रथाओं का अंत किया।”
शांड ने कराहते हुए कहा, 'गुरु नारद, ये अनैतिक गतिविधियाँ हमारे खजाने का 50 प्रतिशत हिस्सा बनाती हैं।'
क्या कश्यपुरी में काला बाजार था? प्रहलाद को तो इसके बारे में पता भी नहीं था। 'हमारे यहाँ काला बाजार क्यों है?'
वित्त मंत्री शांड ने आगे कहा, 'भगवान हिरण्यकश्यप आय के कई स्रोतों में विश्वास करते हैं, महाराज। काला बाजार में व्यापारी अच्छी रिश्वत देते हैं और बदले में वे चाहते हैं कि जब वे नशीले पदार्थ, अवैध हथियार और महिलाओं का व्यापार करें तो सरकार का कोई हस्तक्षेप न हो।'
‘और मेरे पिता ने इसकी अनुमति दी?’
“ये ऐसी वस्तुएं हैं जिनका उपभोग और खरीद आम नागरिक करना चाहते हैं। बदले में, व्यापारी हमें साठ प्रतिशत कमीशन देते हैं, बशर्ते हम इन अवैध गतिविधियों में हस्तक्षेप न करें और आंखें मूंद लें, और हम ऐसा ही करते हैं। इससे हमारा खजाना भर गया है और व्यापारी भी खुश हैं, क्योंकि ये गतिविधियां, भले ही संदिग्ध हों, लाभदायक हैं और इन पर कानून के अनुसार कर नहीं लगाया जा सकता,” शैन्ड ने समझाया।
‘लेकिन औरतें कोई वस्तु नहीं हैं!’ प्रहलाद ने मेज पर हाथ पटकते हुए कहा। ‘यह गलत है। मुझे अपने बैंक में खून का पैसा नहीं चाहिए। हम कर बढ़ा सकते हैं, लेकिन शासन करने का यह तरीका नहीं है।’
‘मध्यम या निम्न वर्ग के व्यक्ति के लिए कर बोझिल होते हैं। आपके पिता जानते थे कि हर क्षेत्र में लाभप्रदता बढ़ाने और सभी को खुश रखने के लिए नैतिकता और मूल्यों का कुछ त्याग करना पड़ता है,’ अमरका ने आगे कहा। ‘लेकिन क्या यह उचित है?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘यह दुनिया निष्पक्ष नहीं है, महाराज,’ शैन्ड ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘यह आपके पिता का निर्णय था, महाराज। यदि यह आपको चिंतित करता है, तो आप उनके लौटने पर उनसे इस बारे में बात कर सकते हैं।’
प्रहलाद ने कुर्सी पर पीछे झुकते हुए आह भरी। क्या महिलाओं को बेचा जाता था? क्या नशीली दवाओं की तस्करी होती थी? क्या हथियार किसी को भी दिए जाते थे?

‘हालाँकि…’ नारद ने बातचीत में दखल देते हुए कहा, ‘अब काला बाजार नहीं रहेगा, क्योंकि व्यापारी विष्णुसेना के कृत्य से भयभीत हैं। वे फिलहाल कुछ समय के लिए अपनी दुकानें नहीं खोलेंगे।’
‘यह सच है,’ शैन्ड ने आत्मसंतुष्ट होकर सहमति जताई।
प्रहलाद इन सब बातों से दुखी था। वह गहरी सोच में डूबा बैठा रहा। ‘महाराज, कार्यवाहक राजा होने के नाते, आपको विष्णुसेना और उनके कृत्यों की निंदा करनी चाहिए और उन्हें संरक्षण प्रदान करना चाहिए,’ शांड ने कहा। ‘अन्यथा बाजार बंद रहेगा और हमें नुकसान उठाना पड़ेगा।’
‘तो क्या हुआ?’ प्रहलाद ने मंत्री को चुनौती दी। उसे लगा कि शांड की बातें उसे सचमुच परेशान कर रही थीं।
‘तो क्या हुआ, महाराज?’ शांड हँसते हुए बोला। ‘यह वही पैसा है जिससे इस युद्ध में लगी सेना का खर्च चलता है, सैनिकों को वेतन मिलता है, पिशाचों और राक्षसों को भत्ता दिया जाता है। यह पैसा हमें युद्ध जीतने में मदद करेगा। अगर यह पैसा हमारे पास नहीं होगा, तो हम देवताओं के खिलाफ युद्ध हार जाएँगे।’
तो काला बाजार से मिलने वाला पैसा उसके बदले के लिए है। लेकिन क्या मेरी माँ इसे मंज़ूर करेंगी? प्रहलाद को एहसास हुआ कि वह अपनी माँ को इतना अच्छी तरह से नहीं जानता था कि इस सवाल का जवाब दे सके।
प्रहलाद को अपने कर्तव्य का ज्ञान था, लेकिन कहीं न कहीं वह यह भी जानता था कि विष्णुसेना ने जो किया वह सही था। उसने इस विचार को मन से निकालने की कोशिश की और इसके बजाय पूछा, 'मेरे पिता का निर्णय क्या था?'
अमरका ने कहा, 'उसने जनरल होलिका को उन्हें एक-एक करके ढूंढ निकालने का आदेश दिया था।'
उनका पीछा करो?
‘तो मेरी चाची उनके पीछे पड़ी हैं।’ और यह सुनकर उन्हें यकीन हो गया कि उन्हें ढूंढ निकाला जाएगा, क्योंकि उनकी चाची जासूसी गतिविधियों में माहिर थीं और एक अदम्य योद्धा थीं।
लेकिन क्या मैं चाहता हूँ कि उनका पीछा किया जाए? उन्हीं की वजह से एक अवैध बाजार बंद हो गया था, उसके बुरे व्यापारी डर गए थे।
“बहुत बढ़िया,” उन्होंने कहा, लेकिन उनकी आवाज़ में थोड़ी अनिश्चितता थी।
वे विष्णुसेना के बारे में और अधिक जानना चाहते थे। “आप सभी का धन्यवाद,”

उन्होंने अपने कमरे में उपस्थित लोगों की ओर मुस्कुराते हुए कहा। “आज के लिए आप जा सकते हैं।”
वे सबने सिर हिलाया और चले गए, जबकि प्रहलाद कुछ मिनटों तक वहीं खड़ा रहा। फिर वह खिड़की के पास गया, जहाँ से उसने भव्य फव्वारे, मैदान में फैले घुमावदार रास्तों और महल के चारों ओर खूबसूरती से लगे चेरी के पेड़ों को देखा।
विष्णुसेना का अगला कदम क्या होगा? और क्या वे सही हैं या गलत?
प्रहलाद अपने पिता की इंद्र को हराने की आवश्यकता और न्याय के लिए अपनी शक्ति के अनुरूप सब कुछ करने की अपनी सहज प्रवृत्ति के बीच दुविधा में फंसा हुआ था।
उसे नहीं पता था कि उसे ऐसा क्यों लग रहा था; इसका कोई कारण या तर्क नहीं था, लेकिन वह जानता था कि उसे उन्हें ढूंढना ही होगा।
और होलिका से पहले ही उन्होंने ऐसा कर दिया।
प्रहलाद ने अपने राजरक्षक दल, राजा के निजी सैनिकों को बुलाया। सेनापति विपरिचित उपस्थित हुए। प्रहलाद उन्हें बचपन से जानते थे। विपरिचित प्रहलाद से थोड़े बड़े थे, लगभग अनुहरद की उम्र के, और वे काफी बलवान थे।
वे सब साथ खेलते थे, जब तक कि असुर वंश में निम्न कुल के विपरिचित ने राजा की सेवा करने के लिए सेना में भर्ती नहीं हो गए।
‘महाराज,’ उसने झुककर अभिवादन किया।
‘कृपया,’ प्रहलाद ने कहा। ‘मैंने आपको पहले भी बताया है। आप मेरे मित्र हैं। कोई औपचारिकता नहीं।’
‘जब तुम्हारे सिर पर ताज हो तब नहीं,’ विपरिचित हँसा। वह एक शरारती लड़का था, जिसके गालों पर डिंपल थे और उसके बाल गहरे रंग के थे जो कांटों की तरह खड़े थे।
'मज़ेदार।'
'मैं किस चीज़ में आपकी मदद करूं?'
‘आप विष्णुसेना के बारे में क्या जानते हैं?’
‘यह एक आतंकवादी समूह है। तुम्हारे पिता और तुम्हारी चाची उनसे नफरत करते हैं,’ विपरिचित ने कहा।
लेकिन क्या आप उनके उद्देश्य में विश्वास करते हैं?

सरकारें एक उद्देश्य के लिए बनाई जाती हैं। वे उस उद्देश्य को नष्ट कर रही हैं। यह सही है या गलत, यह तय करना हमारा काम नहीं है। हमें सरकार की सेवा करनी होगी, चाहे कुछ भी हो जाए। भले ही वह गलत हो।
प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'आप सही कह रहे हैं।' और वह सही था। आखिरकार, चाहे उन्होंने कितना भी अच्छा काम किया हो, वे एक संस्था को चुनौती दे रहे थे और उसका अपमान कर रहे थे। वे उसके सिंहासन और उसके पिता के सिंहासन को चुनौती दे रहे थे और यह गलत था। 'हमें उन्हें ढूंढना होगा।'
लेकिन तुम्हारी चाची पहले से ही तलाश में हैं।
मुझे पता है, लेकिन वह दया नहीं दिखाएगी। इन लोगों को मारा नहीं जा सकता। इन्हें कैद करके मुकदमा चलाना होगा; मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मेरी चाची... मैं उन्हें जानती हूँ। वह जेल में विश्वास नहीं करतीं। वह उन्हें मार डालेंगी और उनके पेट चीर देंगी, और मैं अपनी निगरानी में ऐसा नहीं होने दे सकती। वे भगवान विष्णु के भक्त हैं। अगर मेरी चाची उन्हें मार डालती हैं, तो भगवान विष्णु के अन्य अनुयायी विद्रोह कर देंगे, और मैं ऐसा नहीं होने दे सकती। हर चीज का अंत हिंसा से नहीं होना चाहिए। विपरिचित प्रभावित प्रतीत हुआ। 'तुम्हारे मन में क्या है?'
प्रहलाद मुस्कुराया। उसके पास एक योजना थी।

10

नरसिंह

नारा युद्ध के मैदान में आगे आया।
और उसके सामने शत्रु दिखाई दिए। वे सैकड़ों की संख्या में थे और लंबी-लंबी बाण लिए खड़े थे। घुड़सवार सेना आगे थी और पैदल सेना पीछे, बड़े-बड़े ढाल लिए हुए। उनमें से अधिकतर राक्षस थे और नाग दूसरे छोर पर थे, जिनमें कुछ मानव भी शामिल थे। वे स्थिर खड़े थे और नारा ने बीच में एक आकृति देखी - एक काला घोड़ा, जो उसने अब तक देखे किसी भी घोड़े से बड़ा था, जिस पर एक युवक बैठा था।

वह कद में छोटा और गंजा था, उसकी त्वचा पीली पड़ गई थी, और उसकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी।
अंधका।
भैरव युद्धक्षेत्र में नहीं, बल्कि उसके निकट स्थित बैंगनी तंबू में थे।
उनका शिविर उनकी सेना के निकट ही था, जिसके बाहर पाँच हज़ार से अधिक पैदल सैनिक भैरव के आदेश की मौन प्रतीक्षा में खड़े थे।
नारा ने पास ही में मृग को सिंहों के गौरव से बात करते देखा। वहाँ सैकड़ों की संख्या में लोग एक साथ huddled होकर उसकी बातें सुन रहे थे।
यह सब उत्तर के बादलों से घिरे आसमान के नीचे हुआ, अखाड़े के चारों ओर के पहाड़ों ने दृश्य में घुटन का एहसास पैदा कर दिया।
नारा ठीक समय पर शिविर में पहुंचा और उसने भैरव की आवाज सुनी।
‘मुझे समझ नहीं आ रहा!’ शिव ने मेज पर हाथ पटका। वह वीरभद्र के साथ युद्ध की रणनीति बना रहे थे। ‘आप कह रहे हैं कि हमारे पास अपनी तोपें नहीं हैं?’ 'हमारे पास जंगली गधों से चलने वाले यंत्र हैं, महाराज,' वीरभद्र ने कहा, और उस विशालकाय यंत्र की ओर इशारा किया जो गुलेल की तरह काम करता था और बड़े- बड़े पत्थरों को फेंक सकता था।
और उनके पास उन्हें रोकने के लिए ढालें हैं।
वहाँ लगातार कानाफूसी की आवाज़ें आ रही थीं, तभी नारा का ध्यान उन नर्सों पर गया जो सैनिकों को ऊर्जा देने के लिए रोटियाँ और सूप खिला रही थीं। कुछ अन्य नर्सें घायल सैनिकों के घावों की देखभाल कर रही थीं। चारों ओर इतना तनाव और दहशत का माहौल था कि नारा को लगा मानो वह युद्ध से कभी बाहर ही न आया हो।
वह भैरव से दूर चला गया और मृग की ओर ध्यान देने लगा, क्योंकि वह सिंह सेना का हिस्सा था, लेकिन जब मृग ने नारा को देखा, तो उसने कंधे उचका दिए। 'बूढ़े, तुम्हें अभिमान से लड़ने की अनुमति नहीं है।'
नारा विरोध करना चाहता था, लेकिन उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। इसलिए वह इस युद्ध में अकेला था। लेकिन युद्ध तो अकेले ही लड़ते हैं।
एक तुरही बजी, उसके बाद ढोल बजने लगे।
‘वह तो शुरू ही कर रहा है!’ भैरव ने तम्बू से चिल्लाकर कहा। ‘सब लोग अपने भाले इकट्ठा करो! तीरंदाजों, अपनी बौछार तैयार करो! ढालें ऊपर रखो, ताकि उनके हमलों को रोका जा सके। क्या युद्ध के मेढ़े तैयार हैं?’

नारा ने गहरी सांस ली और अपनी मांसपेशियों को फैलाकर उन्हें युद्ध के लिए तैयार किया।
‘नाग – घुड़सवार सेना! सिंह – सबसे आगे, किसी को मत छोड़ना, मेरे जवानों। और यक्ष – धनुर्धर!’ भैरव ने आदेश दिया, और सभी आक्रमण के लिए तैयार हो गए। शिव नारा के पास आए। 'क्या तुम तैयार हो?'
नारा ने आह भरी। वह... उम्मीद कर रहा था।
और फिर ढोल की थाप तेज़ हो गई। और उसने उसे सुना, जितनी तेज़ आवाज़ में कोई सुन सकता है:
'आक्रमण करना!'
यह आदेश अंधक से आया, जिसने अपना भाला उठाकर भैरव की सेना की ओर इशारा किया। भयंकर रूप धारण किए राक्षस अपने स्थान से उछलकर उनकी ओर दौड़े। उनका मुकाबला करने के लिए सिंह आगे बढ़े।
नारा उनके पीछे-पीछे गया, और उसके पीछे नाग अपने घोड़ों पर सवार होकर हमला करते हुए आए।
और यह शुरू हो गया।
जब सेनाएं आपस में भिड़ीं, तो ढालें टूट गईं, अंग छिन्न-भिन्न हो गए और लोग मारे गए।
एक पल के लिए, नारा धुंध और बर्फ से, तलवारों और ढालों के तूफान से स्तब्ध रह गया। उसने अपने बालों को झटकते हुए खुद को वापस युद्ध में शामिल किया।
अचानक कहीं से एक आदमी उसके सामने प्रकट हुआ, और नारा चकमा देते हुए अपने पंजों से उसकी पीठ पर खरोंचें मारने लगा। वह आदमी उसके सिर के बल नीचे गिर पड़ा।
एक अन्य विशालकाय और काले रंग के राक्षस ने नारा पर हमला किया।
एक राक्षस!
नारा के कंधे पर कुल्हाड़ी से वार किया गया, जो उसमें धंस गई। दर्द से चीखते हुए उसने अपने पंजों से लकड़ी का हैंडल काटा और फिर ब्लेड से राक्षस के सिर पर वार किया, जिससे वह सिर में घुस गया और बर्फ में जा गिरा।
नारा जमीन पर गिर पड़ा; उसका सिर चकरा रहा था और उसके कंधे पर लगे गहरे घाव से बहुत खून बह रहा था।
मुझे उठना होगा।

तभी एक तीर उसकी बांह में जा लगा। उसने बांह निकाली और मुड़कर देखा तो एक स्त्री काले लबादे में खड़ी थी। वह एक नाग थी।
किसी कारणवश, नारा वहीं असमंजस में खड़ी रही।
मैं उसे मार नहीं सकता। उसका परिवार होगा। उसका बच्चा होगा।
उसने उस पर एक और तीर चलाया, और यह तीर उसकी छाती में जा लगा। वह ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गया, आह भरते हुए, दर्द को कम करने की कोशिश कर रहा था और सोच रहा था।
क्या मुझे उसे मार देना चाहिए या नहीं?
किसी तरह उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसे बांध दिया गया हो और वह हिल-डुल न सके।
और फिर अचानक, एक राक्षस ने नागा महिला पर झपट्टा मारा, उसे जमीन पर धकेल दिया और अपने लंबे, घातक पंजों से उसके सिर और बालों से खाल नोच डाली।
यह मृग था।
वह खड़ा हुआ और नारा की ओर हाथ बढ़ाया, जिसने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन मृग ने उसे पीछे खींच लिया। 'तुम बहुत सुस्त हो गए हो, बूढ़े आदमी।' इतना कहकर वह मुड़ा और युद्ध में गायब हो गया।
नारा को हार का एहसास हुआ। उसने अपने जबड़े भींचे, अपना हाथ ज़मीन पर पटका और गुस्से से दहाड़ा। वह खड़ा हुआ और आत्मविश्वास दिखाने की कोशिश करते हुए अपने सामने प्रकट हुए मानव पर हमला कर दिया। मानव पीछे गिर पड़ा और ज़मीन पर गिरते हुए बोला, 'मेरी एक बेटी थी। तुमने उसे अनाथ कर दिया।'
यह एक सपने जैसा लग रहा था। क्या सच में ऐसा था? नारा हांफते हुए बोला। युद्ध का उस पर असर हो रहा था। शारीरिक रूप से नहीं। उसके घाव ठीक हो जाएंगे।
लेकिन भावनात्मक रूप से वह कमजोर और दुविधा में फंसा हुआ महसूस कर रहा था। गांव की रक्षा करते हुए, अपनी रक्षा करते हुए, उसने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। लेकिन अब, उसके चारों ओर फैली भयावहता उसे उस कारण की याद दिला रही थी जिसके लिए उसने यह सब कुछ पीछे छोड़ दिया था।
दो राक्षस अपने भाले लेकर उसकी ओर बढ़े, तभी नारा ने अपने हाथों से उनके वारों को रोकना शुरू कर दिया।
जैसे ही वह पलटी मारकर पीछे हटा और उन पर हमला करने का फैसला किया, दोनों राक्षस वहीं रुक गए और उससे कहा, 'हम निर्दोष हैं।'

नारा ने अपना सिर हिलाया और उसे एहसास हुआ कि यह सब उसके दिमाग की उपज थी। राक्षस आगे बढ़े और नारा के चेहरे पर अपने डंडे से वार किया, फिर उसकी तलवार का इस्तेमाल करते हुए, उसे पेट में घोंप दिया, जिससे नारा दर्द से कांप उठा।
‘क्या तुम सचमुच सिंह हो?’ राक्षस ने उससे पूछा, उसके चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान थी। उसके बाल तैलीय थे और त्वचा सख्त और चमड़े जैसी थी। ‘ऐसा लगता नहीं है।’
और फिर… नारा को सच्चाई का पता चला।
उसे गुस्सा आया क्योंकि अब वह जान गया था कि वे निर्दोष नहीं थे। इस लड़ाई में उनमें से कोई भी निर्दोष नहीं था। उसका दिमाग उसे धोखा दे रहा था।
बस यही है।
नारा ने अपने शरीर में घुसी तलवार को पकड़ लिया और उसकी मूठ को थामे रखा, जबकि राक्षस उसे और गहराई तक धकेलता जा रहा था।
लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका।
नारा ने अपने पेट से तलवार निकाली और उसे एक तरफ फेंक दिया। राक्षस अचंभित होकर देखने लगा, उसकी आँखों में भय था।
इतना काफी है।
नारा दहाड़ते हुए अपनी जगह से उछल पड़ा, सर्दियों की धूप में उसके सुनहरे बाल चमक रहे थे, और उसने झट से दोनों राक्षसों को एक ही झटके में नोंच डाला। तीसरा राक्षस ढाल और तलवार लिए उनकी ओर बढ़ा।
जब नारा लगातार कवच को खरोंच रहा था, तब उसने ढाल का इस्तेमाल किया, और फिर सिंह ने ढाल के आर-पार अपने हाथों से वार किया, राक्षस की गर्दन पकड़ ली और उसका गला घोंट दिया।
उसने फिर से दहाड़ लगाई और अपनी छाती पीटी।
उसकी रीढ़ की हड्डी में एक तेज दर्द दौड़ गया, जो उसे चक्कर दिलाता हुआ और फूलता हुआ महसूस हुआ, और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसने देखा कि दर्द कहाँ से आ रहा था। उसकी पीठ में एक भाला घुस गया था। यह भाला अंधका का था।
अंधका ने भाला निकाला और नारा का सामना करने के लिए उसके चारों ओर घूम गया, और हथियार की धार को नारा की गर्दन के करीब ले आया।
नारा ने भाला पकड़ लिया, घायल और बुरी तरह पिटा हुआ था, लेकिन अपनी आखिरी ताकत लगाकर उसने अंधका को जमीन पर गिरा दिया। फिर उसने अंधे योद्धा के

भाले से उसी पर वार किया, लेकिन अंधका ने अपनी अंधता के बावजूद वार से खुद को बचा लिया। उसके होठों पर मुस्कान थी और वह एक तरफ लुढ़क गया। उसने अपने कोट के नीचे छिपी म्यान से दो लंबे खंजर निकाले और नारा को आगे आने का इशारा किया।
नारा ने अंधका पर हमला किया और अपनी पूरी ताकत और बल का प्रयोग करते हुए उस पर चढ़ गया और उसका गला पकड़ लिया।
नारा के पंजे अंधे राजकुमार की त्वचा में धंस गए और अंधका दर्द और भय से तड़प उठा। उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। नारा ने उसे नीचे दबाए रखा, उसे दंडित किया, उसे यातना दी।
जल्द ही, अंधका ने संघर्ष करना बंद कर दिया।
अंधा राजकुमार मर गया है।
नारा मुस्कुराते हुए जमीन पर गिर पड़ा, उसके घावों से खून बह रहा था, थकावट उस पर हावी हो रही थी और अंधेरा उसकी दृष्टि को धुंधला रहा था।

11

प्रहलाद

प्रहलाद को इस बात का बुरा आभास हो रहा था।
लेकिन कोई बात नहीं।
उसने खुद को याद दिलाया कि बदलाव लाने के लिए उसे कुछ साहसिक कदम उठाने होंगे। वह जानता था कि विष्णुसेना के सदस्य मूल रूप से अच्छे लोग थे, लेकिन वह यह भी जानता था कि उन्हें रोकना और कैद करना जरूरी था।
मारा नहीं गया।
कुछ समय पहले ही उसने अपनी चाची होलिका के कारनामों के बारे में सुना था।
उसने गाँव के संदिग्धों को छाँटकर विष्णुसेना के बारे में सच उगलने के लिए मजबूर किया था। जब किसी ने कुछ नहीं बताया, तो उसने उनके सिर काट दिए थे।
उसके पिता द्वारा राज्य के कल्याण की जिम्मेदारी सौंपे जाने के बाद से ही

होलिका बेहद क्रूर और निर्मम हो गई थी। और वह स्वतंत्र रूप से काम करती थी।
वह लंबी, काले बालों वाली, सुनहरी आँखों वाली और पतले मुँह वाली थी। वह शान से चलती थी और अपने खास हथियार, दो तलवारों को बेरहमी और निर्दयता से चलाती थी।
और वह एक ऐसी शख्सियत थीं जिनसे मुकाबला करना आसान नहीं था।
राजा होने के नाते, प्रहलाद होलिका को रोकना चाहता था, लेकिन वह स्वतंत्र रूप से काम करती थी और उस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। उसके पास असुरों की अपनी अर्धसैनिक सेना थी - जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों शामिल थे - जिनके साथ मिलकर वह इंद्र और अन्य विद्रोही ताकतों के जासूसों से लड़ती और उन्हें मार डालती थी।
प्रहलाद, मफलर और लबादे में लिपटा हुआ, अपने महल के पिछले द्वार से बाहर निकलकर अपने आंगन में आया और गलियों में पहुंचा, जहां विपरीतित स्वयं एक लबादे में खड़ा था और कुछ चमकदार चीज पकड़े हुए कुछ बुदबुदा रहा था।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ प्रहलाद ने अपने दोस्त के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा। ‘ओह,’ विपरिचित ने तुरंत मुस्कुराते हुए उस वस्तु को छिपा लिया, ‘कुछ नहीं, मेरे स्वामी।’
प्रहलाद ने अपनी भौंहें उठाईं और विपरीतित के हाथ में रखी वस्तु को पकड़ लिया।
यह एक अंगूठी थी।
‘क्या तुम किसी को शादी का प्रस्ताव देने की योजना बना रहे हो?’ प्रहलाद मुस्कुराया।
विपरिचित शरमा गया। 'अह, मैं... उह... हाँ,'
‘इतने शर्मा क्यों रहे हो? बधाई हो भाई,’ प्रहलाद ने उलझन में पड़े विपरिचित को गले लगा लिया, जिसने भी उसे गले लगा लिया।
‘धन्यवाद,’ विपरिचित मुस्कुराया। राजरक्षक होने के नाते, वह अक्सर घबराया हुआ रहता था। ‘मैं आपको उसके जवाब देने के बाद बताता। दरअसल, मैं अभी... अभ्यास कर रहा था कि मैं उससे क्या कहूँगा।’
प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'बेशक। वो भाग्यशाली लड़की कौन है?'
वह वेश्यालयों में से एक में काम करती है।
प्रहलाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

‘नहीं, नहीं।’ विपरिचित ने सिर हिलाया। ‘वह एस्कॉर्ट नहीं है। वह वहाँ मदद करती है।’
‘राजकक्ष का एक अंगरक्षक वेश्यालय की सहायिका से विवाह कर रहा है?’ प्रहलाद को वेश्यालयों का विचार शुरू से ही पसंद नहीं था, लेकिन शांड ने उसे बताया था कि वेश्यालय अच्छा कर देते हैं और साथ ही उन सरदारों को भी प्रसन्न करते हैं जिन्होंने हिरण्यकश्यप द्वारा लड़े गए युद्धों को प्रायोजित किया था।
अंततः सब कुछ पैसे पर ही निर्भर करता है। लेकिन फिर भी, यह एक साम्राज्य है और हर साम्राज्य काले धन से ही चलता है।
'शादी के बाद मैं उससे नौकरी छोड़ने के लिए कहने की योजना बना रहा हूं।' और कहाँ जाएँगे?
‘महल के पास किसी अच्छे घर में उसे बसा दो, उसे एक अच्छी ज़िंदगी दो। वो भी नीच कुल की है और बचपन में अपनी माँ के साथ पाताल से भागकर आई थी।’ विपरिचित ने अपनी नज़रें झुका लीं। ‘वो कहती है कि वो अपनी नौकरी नहीं छोड़ेगी क्योंकि वो उस वेश्यालय से भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई है। उसकी माँ भी वहीं काम करती थी, तुम्हें पता है।’
प्रहलाद ने गर्मजोशी से मुस्कुराया। उसके मित्र के चेहरे पर गंभीरता झलक रही थी। असुर संस्कृति में निम्न वर्ग के लोगों को दास, नौकर, सफाईकर्मी, वेश्या और न जाने क्या-क्या काम दिए जाते थे। विपरिचित अधिकांश लोगों से अधिक भाग्यशाली था और संभवतः प्रहलाद और अनुह्राद के साथ अच्छी मित्रता के कारण वह राजा के रक्षक के रूप में बड़ा हुआ। वह राजमहल परिसर में ही रहता था।
और अब वह शादी करने की सोच रहा था। इससे प्रहलाद का दिल खुश हो गया। लेकिन अब काम की बात पर आते हैं।
‘क्या मैं राजा जैसा दिखता हूँ?’ प्रहलाद ने पूछा।
विपरिचित ने सिर हिलाया। 'हमें चलना चाहिए। समय हो गया है।'
आप मुझे सबसे पहले कहाँ ले जाने की योजना बना रहे हैं?
‘एक व्यापारी है जिसे मैंने काला बाजार की घटना के बारे में बोलने के लिए अच्छी खासी रकम दी है। चलिए वहीं से शुरू करते हैं।’
प्रहलाद ने सिर हिलाया और भीड़भाड़ वाली नगरी की गलियों से होते हुए विपरिचित के पीछे चलने लगा। वह राजधानी के संकरे-नुक्कड़ों में नहीं गया

था, क्योंकि सड़कों पर यात्रा करते समय वह हमेशा अपने रथ के सुरक्षित घेरे में रहता था।
उसने भीड़ को देखा, दोपहर की ठंड से बचने के लिए लोग इकट्ठा हुए थे, हर जनजाति के लोग आपस में बातें कर रहे थे, खाने-पीने की गाड़ियाँ और काफिले चल रहे थे, थिएटर और संगीत कार्यक्रमों की घोषणाएँ हो रही थीं। कश्यपपुरी की हवा में मांस, चिकन और अन्य व्यंजनों की खुशबू फैली हुई थी।
उसने कभी-कभार होलिका की सेना के सदस्यों को घोड़ों पर सवार होकर सड़कों से गुजरते हुए देखा, जो लोगों से रुककर उनसे बात करते और जानकारी हासिल करते थे। लेकिन वह अपनी चाची को नहीं देख सका।
और उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा। अगर उसने उन्हें पकड़ लिया तो...
प्रहलाद यह सोचना भी नहीं चाहता था कि अगर उसकी सख्त चाची को उसकी योजना का पता चल गया तो वह उसके साथ क्या करेगी।
‘महाराज, आपकी असल योजना क्या है?’ विपरिचित ने प्रहलाद के मन की बात पढ़ते हुए पूछा।
प्रहलाद को स्वयं इसका कोई अंदाजा नहीं था। 'जैसे ही मुझे उनका ठिकाना पता चलेगा, मैं पहरेदारों को भेजकर विष्णुसेना को पकड़वाऊंगा और उन्हें कैद करवा दूंगा।'
और इससे लेडी होलिका को उन्हें मारने से कैसे रोका जा सकता है?
‘वे तब मेरी निगरानी में होंगे और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मुकदमा चले। वह जानती है कि अगर कोई जेल में है तो वह बिना मुकदमे के सार्वजनिक रूप से उसकी हत्या नहीं कर सकती। वह सड़कों पर ऐसा कर सकती है, लेकिन एक बार जब उन्हें आधिकारिक तौर पर जेल में डाल दिया गया हो तो नहीं।’
‘उम्मीद है आप सही हों,’ विपरिचित ने कहा और आगे बोला, ‘हे प्रभु, क्या मैं खुलकर बोल सकता हूँ?’
'बिल्कुल, मेरे दोस्त।'
कृपया मेरी बातों का बुरा न मानें।
प्रहलाद ने फुफकारा, 'कोई बात नहीं। बोलो। मैं कैसा अंतरिम राजा हूँ, अगर मैं अपनी प्रजा की बात नहीं सुनता और भय को उनके विचारों पर हावी होने देता हूँ?'

‘महाराज, आप अन्य शासकों की तरह नहीं बोलते,’ विपरिचित ने प्रभावित होकर उत्तर दिया। ‘लेकिन मैं जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि मुझे लगता है कि आपका असली कारण यही है।’
विष्णुसेना को ढूंढना इसलिए नहीं है कि आप उन्हें कैद कर सकें, बल्कि इसलिए कि
आप उनसे मिलने और उनके बारे में जानने के तरीके ढूंढ रहे हैं, क्योंकि वे आपको आकर्षित करते हैं।'
वे मेहराबदार इमारतों के बीच स्थित अंधेरी गली में पहुँच चुके थे। प्रहलाद ने आह भरी। वह दुविधा में था। विपरिचित की बात में सच्चाई थी। उसके मन का एक छोटा सा हिस्सा उससे सहमत भी था, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा हुआ था। 'विपरिचित, मैं हमेशा से जिज्ञासु बच्चा रहा हूँ। और मैं यह जानना चाहता हूँ कि आखिर ऐसी क्या वजह है जो लोगों के एक समूह को एक ऐसे ईश्वर के लिए सरकार के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करती है जिसे उन्होंने कभी देखा या सुना ही नहीं।'
'यदि आपको लगता है कि उनका विश्वास सही है, तो क्या आप उन्हें क्षमा कर देंगे?'
प्रहलाद जानता था कि अगर उसने ऐसा किया तो होलिका उसे पकड़ लेगी और शायद उस पर राजद्रोह का मुकदमा भी चलेगा। वह ऐसा होने नहीं दे सकता था। फिलहाल, उसने खुद से कहा कि वह सिर्फ यह पता लगाना चाहता है कि ये लोग कौन हैं और उनके मन में क्या चल रहा है। क्या वे नायक हैं या खलनायक?
जैसे ही वे गलियों में पहुँचे, उन्होंने गाड़ियाँ और छोटी दुकानें देखीं जिनमें विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और सामान रखे हुए थे - कपड़े, गहने, हथियार, दवाइयाँ जो स्थानीय तांत्रिकों के पास नहीं बिकती थीं, और भी बहुत कुछ।
‘तो यह काला बाजार है?’ उसने विपरिचित से पूछा।
'हाँ, एक कम स्पष्ट दुकान।' विपरिचित उसे एक संकरी गली में ले गया जहाँ एक छोटी सी दुकान थी।
उसने व्यापारी को देखा - एक गंजा आदमी, जिसका पेट बड़ा था और दाढ़ी पतली थी, अपने एक ग्राहक से बात कर रहा था, 'ओह, इस उम्र के लिए क्या मांग है? मेरे पास एक दस साल का है, एक बारह साल का और एक आठ साल का भी है।'
वह किस बारे में बात कर रहा है?

[illegible]
[illegible]!
[illegible]
[illegible]
[illegible]
‘[illegible]
[illegible]
[illegible]

व्यापारी उस विचार पर चिंतन करने लगा। 'खैर, एक व्यापारी और एक लड़की के बीच झड़प हुई, एक लड़ाई हुई, वह लड़की कट्टरपंथियों में से एक थी। व्यापारी ने उसके चेहरे से नकाब हटाया और मुझे एक झलक मिल गई।'
'और?'
उसके बाल लाल थे। चमकीले लाल। एकदम अलग। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था।
लाल?
प्रहलाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। वह जानता था कि व्यापारी किसके बारे में बात कर रहा है। पूरी राजधानी में केवल उसी के बाल इतने विशिष्ट लाल रंग के थे। ये बाल किसी का भी ध्यान खींच लेते। प्रहलाद का भी ध्यान इन बालों पर गया था।
व्यापारी ने आगे कहा, “काश मैंने उसे पकड़ लिया होता, तो मैं उसे एक दर्जन आदमियों से इस्तेमाल करवाता। हम सब मिलकर उसके लिए दावत उड़ाते।” और वह हँस पड़ा, यह सोचकर उसे अच्छा लगा। प्रहलाद ने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया, मानो वह अप्रभावित दिख रहा हो।
लेकिन वह प्रभावित हुआ था।
‘चलो चलते हैं,’ विपरिचित ने व्यापारी को चांदी के सिक्कों से भरी थैली देते हुए प्रहलाद से कहा।
जैसे ही वे जाने के लिए मुड़े, मुस्तफा ने प्रहलाद से कहा, 'लड़के, क्या तुम अपने लिए कोई लड़की चाहते हो? मेरे पास हर उम्र की लड़कियाँ हैं। थोड़ा मज़ा करो, इससे तुम्हारी सख्ती दूर हो जाएगी।'
विपरिचित ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'हमें कुछ नहीं चाहिए। मुस्तफा, आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद।'
'लड़की जितनी छोटी होगी, कीमत उतनी ही ज्यादा होगी!' व्यापारी ने अपनी जांघ पर हाथ मारते हुए और एक अश्लील इशारा करते हुए कहा।
प्रहलाद ने उसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन उसके भीतर कुछ हलचल हुई। उसे लगा जैसे वह जाग रहा हो—जैसे अचानक उसे कोई मकसद मिल गया हो। यह एक अल्पकालिक मकसद था, लेकिन इस मकसद के पीछे एक अर्थ छिपा था। पहले, जब वह युद्ध में था, वह लड़ तो रहा था, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी। लेकिन अब... उसे उम्मीद की किरण दिखाई दी।
इस दुनिया में नहीं, बल्कि स्वयं में।

मेरा एक उद्देश्य है। लेकिन वह क्या है?
वह रुका, मुड़ा और व्यापारी की दुकान की ओर चल पड़ा। दुकान के सामने खड़े होकर उसने अपना लबादा और मफलर उतार दिया, जिससे उसके शाही चेहरे का नजारा सामने आ गया और व्यापारी ने उसे तुरंत पहचान लिया।
‘राजकुमार प्रहलाद!’ उसने विपरिचित की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘आपकी हिम्मत कैसे हुई महाराज को यहाँ लाने की? महाराज, आपको कुछ भी भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है। आप किसी को भी मुफ्त में ले जा सकते हैं और अपने लिए एक हरम बना सकते हैं।’
प्रहलाद ने दांत पीसे, अपनी मुट्ठियां भींचीं और फिर...
यही उसका उद्देश्य था।
उसने चालाक व्यापारी की गर्दन पकड़कर उसे दुकान से बाहर खींच लिया। मुस्तफा उठकर भागने की कोशिश करने लगा, लेकिन प्रहलाद ने उसे पकड़कर फिर से जमीन पर पटक दिया।
मुस्तफा रेंगते हुए आगे बढ़ने लगा, लेकिन प्रहलाद ने तुरंत उसकी पीठ पर लात मार दी। विपरिचित आगे दौड़ा और प्रहलाद का हाथ पकड़ लिया, लेकिन प्रहलाद ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया और म्यान से कटार निकालकर मुस्तफा के बाल खींचने लगा। 'क्या तुम्हारी कोई बेटियाँ हैं? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई औरतों को बेचने की!'
‘मेरे स्वामी…’ व्यापारी असहनीय दर्द से कराह रहा था, ‘मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा… मैं नहीं करूँगा… मैं वादा करता हूँ।’
प्रहलाद ने दांत पीस लिए। उसे नहीं पता था कि उसका गुस्सा कहाँ से आ रहा है। शायद इसलिए कि पहली बार उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि वह
किसी ऐसी चीज़ के लिए लड़ना जो सही थी। जो न्यायसंगत थी। और किसी स्वार्थ के लिए नहीं।
किसी राजा को प्रसन्न करना, अपने पिता को प्रसन्न करना या बदला लेना। यह लड़ाई उसने अपने लिए लड़ी थी।
‘अच्छा,’ उसने सिर हिलाते हुए कहा, ‘क्योंकि अब तुम ऐसा नहीं कर पाओगे।’ फिर उसने व्यापारी का गला काट दिया, मुस्तफा के शरीर से जान निकलते देख खून उसके चेहरे पर फैल गया। फिर उसने मृत व्यापारी को जमीन पर छोड़ दिया, अपने चेहरे से खून पोंछा और विपरिचित की ओर मुड़ गया।

‘पहरेदारों को बुलाओ और उनसे उसका काम तमाम करवा दो। किसी को इसके बारे में पता नहीं चलना चाहिए,’ प्रहलाद ने विपरिचित से कहा, जिसने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया और प्रहलाद को अपनी आँखों में नए आदर और भय के साथ देखा। प्रहलाद ने राजरक्षक दल के चेहरे पर भय देखा – वही भय जो वह अपने प्रजाजनों को अपने लिए महसूस नहीं कराना चाहता था, लेकिन वह जानता था कि वह सही के लिए लड़ रहा है। यह भय जायज़ था।
इसका जन्म एक दुष्ट व्यक्ति की हत्या करने के उसके कृत्य से हुआ था।
क्या मुझे इस पर गर्व है?
उन्होंने वही सवाल पूछा जो उन्होंने युद्ध के मैदान में खुद से पूछा था।
हां। मैं हूं। ओह हां, मैं हूं।
उसे पता था कि उसे आगे क्या करना है।
उसे लाल बालों वाली धृति को ढूंढना था।

12

हिरण्यकश्यप

रेगिस्तान उसे मार रहा था।
वह अपने साथियों के साथ यक्षलोक के बाहरी इलाके में कुछ समय से यात्रा कर रहा था – यक्षों का नगर, जो भीषण गर्मी और रेत से ढका हुआ था। सूखी ज़मीन पर छिपकलियाँ घूमती थीं और लाल मिट्टी उन्हें निगल जाती थी। हिरण्य को तीव्र गर्मी कभी पसंद नहीं थी, वह हमेशा उत्तर-पश्चिम या दक्षिण में रहना पसंद करता था, जहाँ हल्की गर्मी और सहनीय ठंडक होती थी। उत्तर की ठंड भी उसे सताती थी और यह आश्चर्य की बात थी कि अंधक जैसा एक युवा लड़का इतने लंबे समय तक वहाँ शासन कर सका।
हिरण्य का अधिक बलवान और मजबूत पुत्र अनुहरद उत्तर की ओर भेज दिया गया था और हिरण्य को उसकी कोई चिंता नहीं थी, लेकिन वह प्रहलाद के लिए चिंतित था।
मुझे उम्मीद है कि वह अच्छा शासन करेगा।

हिरण्य अपने घोड़े से उतरा और उसका एक आदमी उसे अस्तबल की ओर ले जाने के लिए उसके पास आया। किला विशाल था और जलती हुई मशालों से जगमगा रहा था।
गर्मी से बचने के लिए सभी पहरेदार हल्के रंग की वर्दी पहने हुए थे। किले की विशाल रसोई में सूप और मांस पकाया जा रहा था। किले के दोनों ओर गुंबदनुमा दो अन्य संरचनाएं आंतरिक परिसर के रूप में काम कर रही थीं।
‘विज्ञसा कहाँ है?’ हिरण्य ने एक पहरेदार से पूछा।
'माई लॉर्ड, वह किनारे पर है,' गार्ड ने पास के समुद्र की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया।
हिरण्य रक्षक के पीछे-पीछे चला, जो उसे किले के एक गलियारे से होते हुए बाहरी मैदान की ओर ले गया। बाहरी मैदान यक्षलोक की खानाबदोश जनजातियों के कारवां और रथों से भरा हुआ था, जो इन वाहनों को चलाते थे। इन सभी वाहनों को यक्ष और यक्षिणियां चला रहे थे - एक छोटे कद के, उभरी हुई आंखों वाले, पीले चेहरे वाले प्राणी।
‘यहाँ के व्यापारियों को लगा कि वे हमारी मदद कर सकते हैं, इसलिए हमने उन्हें इसकी अनुमति दे दी,’ गार्ड ने कहा। ‘हालाँकि वे यक्षलोक की असली भूमि से नहीं हैं। वे बाहरी हैं और कब्जे वाले यक्षलोक में विश्वास नहीं करते।’
‘उन्हें हमारे सैनिकों के साथ होना चाहिए,’ हिरण्य की आवाज गूंज उठी। ‘आखिरकार, यहाँ ऊपर बहुत अकेलापन होता है।’
गार्ड मुस्कुराया और सिर हिलाया।
कठोर रेत पर कदम रखते हुए हिरण्य आगे बढ़ा और तट देखा: समुद्र के किनारे, जो भूमि के दूसरे भाग तक फैला हुआ था, जहाँ विशाल शंकुकार मीनारों और किलों वाली गुंबदनुमा इमारतें खड़ी थीं, जो लाल चूना पत्थर की झोपड़ियों से घिरी हुई थीं। वह इसे लंबे समय बाद देख रहा था - आखिरकार, यह यक्षलोक था, जो एक चित्र की तरह विस्तृत और विशाल रूप से फैला हुआ था। हिरण्य की इच्छा थी कि वह किसी कलाकार के हाथों से इस परिदृश्य का चित्र स्वयं बनाए।
यक्षलोक पर अब देव सेनापति अग्नि का शासन था। इंद्र ने सुनियोजित तरीके से यक्षों के मुखिया का सिंहासन हथिया लिया था, और चूंकि यक्ष अपने राजाओं को देवता मानते थे, इसलिए उन्होंने अग्नि को अग्नि का देवता बना दिया ताकि वे उससे भयभीत हों। हिरण्य ने अग्नि के बारे में कहानियां सुनी थीं कि वह रसायनों को मिलाकर अग्नि का जादू करता था - ऐसा जादू जो कोई भी कर सकता था,

लेकिन यक्ष निरक्षर थे, और वे इसे अग्नि की दैवीय शक्तियों का प्रमाण मानते थे।
वह तट की ओर बढ़ा, जहाँ हिरण्य के सैनिकों द्वारा संरक्षित झोपड़ियों में यक्ष और यक्षिणियाँ दिखाई दे रही थीं। एक मस्तूल वाले जहाज, जिन्हें वे धौ कहते थे, तट पर खड़े थे। उनमें से कुछ में दो मस्तूल थे। कुछ मछली पकड़ने वाली नावें थीं, साथ ही कुछ ऐसे युद्धपोत भी थे जो समुद्र में यात्रा कर सकते थे।
हिरण्य अपने लेफ्टिनेंट विग्यासा से मिलने आगे बढ़ा। विग्यासा कुछ कदम दूर खड़ा था और एक नाविक से सांकेतिक भाषा में बात कर रहा था। विग्यासा ने छोटी उम्र में ही अपनी जीभ खो दी थी, क्योंकि वह पाताल में खनिकों में से एक था। खनिकों को जीभ रखने की अनुमति नहीं थी ताकि वे किसी बाहरी व्यक्ति को पाताल के रत्नों के स्रोत का रहस्य न बता सकें। विग्यासा जल्दी ही हिरण्य के प्रिय व्यक्तियों में से एक बन गया था। वह हिरण्य के उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित था और एक साधारण सैनिक से उच्च पद तक पहुंचा था। जैसे ही विग्यासा ने हिरण्य को देखा, उसने नाविक को इशारे करना बंद कर दिया और राजा की ओर दौड़ पड़ा, पास पहुँचते ही उसने राजा को प्रणाम किया। हिरण्य ने मुस्कुराते हुए उससे पूछा, ‘विज्ञसा, आपकी क्या स्थिति है?’ राजा ने बहुत पहले ही सांकेतिक भाषा सीख ली थी, क्योंकि उनके पिता भी पाताल में खनिक थे।
‘हम अपने जहाजों में बदलाव करवाने के लिए स्थानीय व्यापारियों को काम पर रख रहे हैं। अग्नि की नौसेना तेजी से बढ़ रही है, इसलिए हमें भी उसके बराबर आना होगा,’ विग्यासा ने अपने संदेश में कहा।
उंगलियां तेजी से हिल रही हैं।
‘जी हां,’ हिरण्य ने उत्तर दिया। यह एक नौसैनिक युद्ध था और असुर समुद्र का उपयोग यात्रा के लिए करते थे, युद्ध के लिए नहीं।
विग्यासा ने आगे कहा, 'हे स्वामी, आपको यहाँ नहीं होना चाहिए। यदि अग्नि के जासूस आपको देख लेंगे, तो उन्हें पता चल जाएगा।'
'क्या मैं परवाह करता हुआ दिखता हूँ?' हिरण्य ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
विग्यासा ने अपना सिर हिलाया।

‘हमारी रणनीति क्या है? आपने मुझे यहां क्यों बुलाया? हमें कितना नुकसान हो रहा है?’
विग्यासा ने क्षमाप्रार्थी चेहरा बनाया। 'बहुत कुछ। महाराज, वह अपनी नौसैनिक रणनीति से हमें चौंका देता है। मैंने अब अपने युद्धपोतों में गुलेलें लगा दी हैं। उम्मीद है कि इस बार हम उसके लिए तैयार हैं।' ‘चिंता मत करो, मैं यहाँ हूँ और मैं अपने साथ एक हजार सैनिक लेकर आया हूँ। हम जल्द ही अग्नि के शासन का अंत देखेंगे।’
विग्यासा की आँखों में आत्मविश्वास की एक चमक थी। 'और एक और बात भी है,' उसने कहा।
'यह क्या है?'
‘जैसा कि आप जानते हैं, राजा हिरण्यक्ष, आपके भाई, अपनी दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु से पहले सबसे लंबे समय तक यहाँ रहे थे। उनके पास राजसी कक्ष थे, जिनका उनकी मृत्यु के बाद किसी ने उपयोग नहीं किया। उनके सम्मान में, मैंने यह सुनिश्चित किया कि सफाईकर्मियों के अलावा कोई भी उसमें प्रवेश न करे, जो गंदगी और धूल साफ करते थे।’ विग्यासा का भाव बदल गया और वह इशारे करते रहे। ‘एक सफाईकर्मी ने एक छिपकली देखी, जो उसे भगाने की कोशिश में बिस्तर के नीचे रेंग गई। उसने बिस्तर उठाया, तो छिपकली गायब थी। तब उसे एहसास हुआ कि बिस्तर के नीचे एक छेद है, जो एक गुप्त दरवाजे से ढका हुआ है। उसने उसे ऊपर खींचा और वह एक छोटे से रास्ते से तहखाने में जाता था।’ तहखाना?
हिरण्य ने अपने भाई से इस बारे में कभी नहीं सुना था।
क्या उसने मुझसे कोई राज छिपाया था?
विग्यासा ने आगे कहा, “सफाईकर्मी तो अंदर नहीं गया, और मैं भी नहीं गया। मैंने अब उसके कमरे के बाहर पहरेदार लगा दिए हैं, ताकि कोई तहखाने में न जा सके। मेरा मानना है कि यह जगह कुछ खास हो सकती है क्योंकि भगवान हिरण्यक्ष ने इसे छुपाने में अतिरिक्त सावधानी बरती थी। मुझे लगता है कि आप इसे स्वयं देखना चाहेंगे।”
'वह एक पाठक थे। शायद यह सिर्फ उनकी किताबों का ही शौक हो।'
‘पुस्तकालय के लिए यह एक अजीब जगह है, महाराज,’ यह सुनकर विग्यासा मुस्कुराया।
हिरण्य ने जवाब देने के लिए अपना मुंह खोला ही था कि: एक धमाका हो गया।

हिरण्य के कान एक पल के लिए सुन्न हो गए और वह जमीन पर गिर पड़ा। वह रेंगता हुआ विग्यासा को ढूंढने लगा, लेकिन सब कुछ धुंधला दिखाई दे रहा था।
उसे महसूस हुआ कि किसी ने उसकी पीठ को छुआ है। उसने मुड़कर देखा तो उसे विग्यासा दिखाई दी, जिसके सिर से खून बह रहा था और वह हिरण्य को ज़मीन छोड़ने का इशारा कर रही थी।
हिरण्य किसी तरह उठ खड़ा हुआ और अपने सैनिकों पर मची अफरा-तफरी को देखने लगा। लाल रंग की झोपड़ियाँ आग की लपटों में घिरकर लोग बेतहाशा भाग रहे थे। भीषण गर्मी उसके सैनिकों की ऊर्जा और शक्ति को खत्म कर रही थी।
और उसके सामने, उसे इस सब का कारण दिखाई दिया। वहाँ एक छोटा सा जंगली गधा था, जिससे सफेद कवच पहने पुरुषों के एक समूह ने किनारे के पास एक विस्फोटक दागा था, जिससे उसके आसपास के लोग उड़ गए थे।
हिरण्य ने शोरगुल भरे कोलाहल के बीच एक आदमी को खड़े देखा – उसने गहरे लाल रंग की शेरवानी, खुले कॉलर वाला कुर्ता और गहरे लाल रंग की धोती पहन रखी थी। उसके सारे कपड़े लाल रंग के अलग-अलग शेड्स के थे। उसके बाल चमकीले थे जिनमें लाल रंग की धारियाँ थीं, और उसके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान थी। उसके कानों में बालियाँ लटक रही थीं और वह आगे बढ़ रहा था, उसके दोनों ओर धनुषधारी सैनिक खड़े थे।
कोई भी उसे पहचान सकता है।
अग्नि।
‘मुझे यहाँ आना ही था,’ यक्षलोक के तथाकथित स्वामी ने हंसते हुए कहा। ‘मुझे आना ही पड़ा। बिलकुल आना ही था।’ वह बहुत खुश था। ‘मेरे आदमियों ने मुझे बताया कि तुम यहाँ आए हो, मूर्खतावश, लेकिन मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैंने सोचा था कि इंद्र ही तुम्हें मारेंगे, लेकिन अफसोस, लगता है कि अब यह सौभाग्य उनसे छिन जाएगा और मुझे मिल जाएगा।’
उसके चारों ओर धुआँ उठने लगा और हिरण्य के भीतर भी जलन की लहर दौड़ गई। वह काँप रहा था जब उसने अपनी तलवार निकाली, और विग्यासा की तरह ही उसने भी तलवार की मूठ को दोनों हाथों से पकड़ने की कोशिश की। कुछ असुर रक्षक उनके पीछे खड़े थे, आक्रमण के लिए तैयार।
‘तुम्हारे अंदर हमेशा से ही अग्नि तत्व था, है ना?’ अग्नि मुस्कुराया। उस व्यक्ति में कुछ रहस्यमय सा था। ‘इल्लावर्ती हमारी है, मेरे प्रिय असुर भाई,’ उसने कहा, उस प्रचलित मिथक का जिक्र करते हुए कि एक ही पिता असुरों और

देवों का जनक था। ‘तुम्हें पता है,’ उसने अपने हाथ पीठ पीछे बांध लिए, ‘इंद्र ने तुम्हारी पत्नी को मारकर सबसे अच्छा काम किया। मतलब, उस युद्ध की शुरुआत करना? बहुत हिम्मत का काम था। और अब, हम सब इस खूबसूरत अराजकता का लाभ उठा रहे हैं, है ना?’ और उसने अपने आदमियों की ओर इशारा किया, जिन्होंने उनकी ओर गोले बरसाए।
जैसे ही विस्फोटक उनकी ओर तेज़ी से आने लगे, हिरण्य अपनी जगह से उछलकर ज़मीन पर लुढ़क गया और झोपड़ी के पीछे छिप गया। गोले ज़मीन से टकराए और और अधिक धुएँ और आग में बदल गए।
‘तुम निर्दोष नागरिकों को मार रहे हो! रुको!’ हिरण्य चिल्लाया जब उसने यक्षों द्वारा मारे गए बच्चों और महिलाओं के सिर कटे शवों को अपने चारों ओर दौड़ते हुए देखा।
‘मैं उनका देवता हूँ, हिरण्य। मुझे उन्हें मारने का अधिकार है,’ अग्नि हँसते हुए बोला।
हिरण्य ने विग्यासा को भी झोपड़ियों के पीछे छिपा हुआ देखा और उसे इशारा किया, 'भाग जाओ। हम यह लड़ाई नहीं जीत सकते।' उनके साथ पर्याप्त पहरेदार नहीं थे और यह बात मानना कितना भी कठिन क्यों न हो, सच्चाई यही थी कि वह यह लड़ाई हार रहा था।
'बाहर आओ! अगर तुम इस तरह छिपते रहोगे तो यह कोई चुनौती नहीं है।'
हिरण्य ने इशारा करते हुए कहा, 'एक... दो... तीन...'
वह खुले में कूद गया और उसने देखा कि कुछ ही कदम की दूरी पर अग्नि अपने हाथ पीठ के पीछे बांधकर खड़ा था।
अग्नि का ध्यान हिरण्य की ओर गया, जिसने अचानक चिल्लाकर कहा, 'जाओ!' विग्यासा तुरंत भागने लगा, उसके पीछे अन्य असुर रक्षक भी भागे, और वे सभी अपने किले की ओर बढ़ गए।
अग्नि ने जो कुछ हो रहा था उसे देखा और अपने आदमियों से चिल्लाकर कहा, 'गोली चलाओ!'
अग्नि के धनुर्धारियों ने विग्यासा और अन्य असुरों पर अपने धनुषों से बाण चलाने शुरू कर दिए। उनमें से अधिकतर बच निकले, लेकिन कुछ को बाण लग गए और हिरण्य ने उन्हें घायल अवस्था में जमीन पर गिरते देखा।
अब उसके लिए कदम उठाने का समय आ गया था।
वह भी भागा, लेकिन अग्नि से दूर नहीं, बल्कि उसकी ओर।

तथाकथित रे के देवता पर हमला करते हुए, हिरण्य ने उसके करीब आते ही उस पर झपट्टा मारा, उसकी तलवार तनी हुई थी।
अग्नि ने अपने पैरों की एक ही फुर्तीली हरकत से वार को चकमा दिया। हिरण्य ने सुना था कि देव एक कुशल नर्तक थे। जैसे ही वह नाचते हुए हमले से दूर हटे, उन्होंने अपने सैनिकों को धनुष नीचे करने का इशारा किया। वह स्वयं हिरण्य को मारना चाहते थे।
उसने अपनी आस्तीन के अंदर से एक ब्लेड निकाला और हिरण्य के पेट पर वार किया, जिससे गहरा घाव हो गया।
हिरण्य पीछे हट गया और फिर दहाड़ते हुए पलटवार किया। अग्नि ने आसानी से उस हमले को नाकाम कर दिया और फिर हिरण्य की पीठ में दो बार वार किया।
हिरण्य घुटनों के बल गिर पड़ा।
‘तुम्हारा भाई कम से कम एक बेहतर योद्धा तो था।’ अग्नि हिरण्य के पास घुटनों के बल बैठ गया और उसकी आँखों में सीधे देखते हुए फुसफुसाया, ‘कायधु का निधन एक त्रासदी है। मैं उसके साथ कुछ मौज-मस्ती करना चाहता था।’ हिरण्य क्रोध से दहाड़ते हुए खड़ा हुआ और अग्नि का गला पकड़कर उसे जमीन से ऊपर उठाकर उसका गला घोंटने लगा। अग्नि का चेहरा छटपटाते हुए लाल हो गया और उसकी आँखों में खून भर आया। हिरण्य का क्रोध उसे अंधा कर रहा था और वह देवता का प्राण समाप्त करने ही वाला था कि तभी—
कई तीर उसके सीने में जा लगे।
पीछे गिरते समय उसे असहनीय दर्द हुआ। अग्नि हांफते हुए और सांस लेने की कोशिश करते हुए जमीन पर गिर पड़ा।
पांच और तीर लगने से हिरण्य लड़खड़ा गया। एक घोड़ा उसकी ओर सरपट दौड़ा और उस पर सवार था...
विग्यासा!
असुर सेनापति ने तीरों से बचते हुए हिरण्य का हाथ पकड़ लिया और उसे खींचकर उसके घोड़े पर बिठा लिया।
अग्नि के मानव सैनिकों द्वारा धनुषों से एक और हमला करने की तैयारी करते ही हिरण्य घोड़े पर ही गिर पड़ा। अग्नि खांसते हुए उठा।
विग्यासा घोड़े को लेकर किले की ओर दौड़ा, जहाँ उन्हें सुरक्षा मिलेगी।
हिरण्य बेहोश हो रहा था और उसका बहुत खून बह रहा था, और उसकी दृष्टि तेजी से धुंधली हो रही थी।

मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।
‘भागो!’ हिरण्य ने अग्नि को उनके पीछे चिल्लाते हुए सुना, ‘भागो, हे कूड़ा बीनने वाले। हमारी कहानी तो अभी शुरू हुई है!’
और फिर असुरों के राजा ने हार मानकर अपनी आंखें बंद कर लीं।

13

नरसिंह

मैंने अंधका को मार डाला है।
नारा नींद में कुछ बुदबुदा रहा था। तभी अचानक उसकी आंखें खुलीं और उसने खुद को एक अंधेरे कमरे में पाया।
कोने में एक अकेली आग जल रही थी, जिसमें लकड़ियाँ धधक रही थीं। हवा में तेज़ ठंड थी जिससे उसके पैरों में सिहरन दौड़ गई, सीधे पैर की उंगलियों तक। वह एक सपाट, सख्त सतह पर लेटा हुआ था। उसने अपना सिर आग की ओर घुमाया और तेज़ दर्द ने उसे वास्तविकता में वापस ला दिया। उसकी नज़रें अंततः एक महिला पर टिकीं जो उसके घावों का इलाज कर रही थी।
उसने एक लंबा गाउन पहना हुआ था। उसकी आँखें भव्य थीं और उसका छोटा, सुस्पष्ट होंठ था। उसके गहरे भूरे और चमकदार बाल जूड़े में बंधे हुए थे। लेकिन सबसे खास बात यह थी कि नारा ने उसके गाल पर एक छोटा सा तिल देखा, जो उसे एक अलग पहचान देता था और उसे उन सभी महिलाओं से अलग करता था जिनसे वह पहले मिल चुका था।
और वह जानी-पहचानी लग रही थी। अजीब तरह से जानी-पहचानी।
वह उसके घावों पर आयुर्वेदिक क्रीम लगा रही थी, मालिश कर रही थी और फिर गीले कपड़े से घाव पर पट्टी बांध रही थी। उसने देखा कि नारा जाग गया था और उसे देख रहा था।
'तुम्हे कैसी नींद आयी?'
'आप कौन हैं?'
‘मैं एक नर्स हूं,’ उसने कहा।

‘नहीं। तुम नहीं हो।’ नारा ने अपना ध्यान उसके चेहरे पर केंद्रित किया। वह उसे बहुत जानी-पहचानी लग रही थी। ‘मैंने तुम्हें कहीं देखा है।’ उसे बोलने में कठिनाई महसूस हो रही थी। थकान फिर से उसके शरीर पर हावी होने लगी थी। ‘मैं एक नर्स हूँ,’ उसने उसके सवाल को टालते हुए जोर देकर कहा। ‘और आप एक अजीब आदमी हैं, जो मेरे पूरे दिन आपके घावों की देखभाल करने के बाद मुझसे इस तरह बात कर रहे हैं।’
नारा को एहसास हुआ कि वह असभ्य व्यवहार कर रहा है और उसने आह भरी। माफी मांगने के बजाय, उसने उससे एक और सवाल पूछा: 'मेरी त्वचा कहाँ है?'
‘कोने में सुरक्षित रखा है। चिंता मत करो, मैंने इसे धोकर तुम्हारे लिए रखा है,’ उसने कहा। ‘लेकिन मुझे आश्चर्य है, तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि तुम मुझे जानते हो?’
नारा को पता नहीं क्यों, लेकिन उसे वह गाँव याद आ गया जिस पर उसने इंद्र के आदेश पर हमला किया था और तब उसे पता चला कि वह एक मानव गुरुकुल था। वहाँ कई मानव परिवार रहते थे। हिरण्य ने उन्हें बहकाकर निर्दोषों पर हमला करवाया था और तब से नारा युद्ध के विचार पर ही सवाल उठाने लगा था। और उस गाँव में एक लड़की थी - एक छोटी लड़की, जिसके गाल पर तिल था।
‘क्योंकि…’ उसने कहा और रुक गया। ‘आप किस गाँव से हैं?’ वह जानता था कि इस सवाल से वह घिर जाएगी।
उसने उसकी देखभाल करना बंद कर दिया और भावहीन चेहरे से उसकी ओर देखा। 'मैं समझ गई,' उसने कोमल स्वर में कहा।
नारा इंतजार करती रही। जब उसने कुछ नहीं कहा, तो उसने पूछा, 'क्या?'
‘मुझे लगता है कि आपको याद है।’ उसने सिर हिलाया। ‘मैं बहुत समय पहले एक गाँव में थी, एक ऐसा गाँव जिस पर आपने और आपके गिरोह ने हमला किया था।’ नारा के मन में अपराधबोध छा गया। 'मैं... उह...' उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जिस लड़की के गाँव को उसने तबाह किया था, वही अब उस सेना का समर्थन कर रही थी जिसने उसके परिवार को मार डाला था; वही उस सेना के नेता के घावों पर मरहम लगा रही थी।
‘हम निषाद थे,’ उसने नारा को पट्टी बांधते हुए कहा। ‘वनवासी, जिन्होंने कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। और फिर अचानक, हमने देखा कि सिंहों ने हमारे गांव को घेर लिया, यह सोचकर कि यह असुरों का ठिकाना है। तुमने हम पर

हमला किया और तबाही मचाई, जब तक कि तुमने अंततः हमारी आंखें नहीं देखीं और यह महसूस नहीं किया कि हममें से कोई भी असुर नहीं था।’
नारा ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे वह दिन ऐसे याद था जैसे कल ही हुआ हो। 'मुझे माफ़ कर दो। मुझे पता नहीं था... मैं... मैं उस दिन से खुद को सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ।'
महिला ने सिर हिलाया। 'मैं समझ गई।'
'तुम सच में करना?'
‘हाँ, मुझे पता है। आपको क्या लगता है मैं यहाँ क्यों हूँ? क्योंकि मुझे समझ आ गया है कि हिरण्य ने इंद्र और उसकी सेना को कैसे धोखा दिया,’ उसने कहा। ‘उसने सारी योजना बनाई थी, और आप उसके जल्लाद थे। आपको कुछ पता नहीं था। और इसीलिए मैं यहाँ हूँ, ताकि यह सुनिश्चित कर सकूँ कि ऐसा दोबारा न हो।’
‘और एक नर्स के तौर पर आप यह कैसे करती हैं?’
उन्होंने कहा, 'उत्तरी इलाका हमें एक ही उद्देश्य के लिए कई काम करने पर मजबूर करता है। मैं एक नर्स हूं, लेकिन मैं अन्य नर्सों के साथ गांवों का दौरा भी करती हूं ताकि पता चल सके कि वहां कुछ है या यह निर्दोषों को मारने की एक और साजिश है।'
‘हम सभी त्रासदियों से सीखते हैं।’ नारा शिलाखंड से उठा और संघर्ष करते हुए दोबारा की ओर चलने लगा। कमर से नीचे वह एक ढीले चिथड़े में लिपटा हुआ था, और उसकी छाती पर पड़े बालों पर चमक पड़ रही थी।
“लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें उनका सामना करना ही चाहिए। दुखी होने का हक किसी को नहीं है,” महिला ने पानी के कटोरे में हाथ धोते हुए कहा। “दुख का कोई हकदार नहीं है। मैंने अपनी त्रासदी को एक सकारात्मक जीवन जीने और दूसरों की मदद करने की प्रेरणा बनाया है। हर कोई ऐसा नहीं करता। कभी-कभी, त्रासदी से बुराई जन्म लेती है। और यही सबसे बुरी बुराई है,” उसने अपनी बात समाप्त की।
नारा को महसूस हुआ कि उसके शब्दों में कोई विशेष अर्थ छिपा है। 'तुम ऐसा क्यों कह रही हो?'
‘अंधका,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा और अपने हाथों को गर्म करते हुए उसके करीब आ गई। वे दोनों पास-पास खड़े होकर नृत्य देख रहे थे। ‘बचपन में उसके साथ दुर्व्यवहार हुआ था।’

‘दुर्व्यवहार किया गया?’ नारा ने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए उस आदमी के बारे में सोचा जिसे उसने मारा था। ‘तुम्हें यह कैसे पता चला?’
उन्होंने कहा, ‘जैसा कि मैंने आपको बताया, मैं कई गांवों का दौरा करती हूं ताकि वहां के परिवारों की मदद कर सकूं और युद्ध में होने वाली मौतों को रोक सकूं।’ ‘ऐसे ही एक गांव में मेरी मुलाकात एक चिकित्सक से हुई। उन्होंने अंधे राजकुमार अंधका की देखभाल की थी जब वह एक युद्ध में घायल हो गए थे। चिकित्सक ने मुझे बताया कि अंधका अक्सर कहानियां सुनाते थे कि कैसे उनके पिता उन्हें ताकत सिखाने के लिए पीटते, कोड़े मारते और पिंजरे में बंद कर देते थे।’
नारा का दिल तेजी से धड़कने लगा। वह लगभग उन भयानक दृश्यों की कल्पना कर सकता था। 'किस तरह का राक्षस अपने ही बेटे के साथ ऐसा कर सकता है?' उसने मन ही मन सोचा।
‘हिरण्यक्ष पागल था।’ स्त्री ने आह भरी। ‘अंधक उसके पागलपन का ही परिणाम था। लेकिन बचपन में हुए दुर्व्यवहार ने ही उसे आज का योद्धा बनाया है, और अब कोई नहीं जानता कि उसे कैसे हराया जाए।’
नारा ने हैरानी से अपनी भौहें उठाईं। 'लेकिन मैंने उसे युद्ध में मार डाला था।'
नहीं, तुमने ऐसा नहीं किया। वह अभी भी बाहर है।
उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
‘तुम किस बारे में बात कर रहे हो? बेहोश होने से ठीक पहले, मैंने उसका गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी। मुझे याद है।’
महिला ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'अगर ऐसा था, तो आज सुबह किले पर किए गए हमले में अंधका को फिर से क्यों देखा गया?'
वह कैसे संभव है?
‘लेकिन…’ नारा ने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। उसने पास पड़ी शॉल उठाई और मेडिकल क्वार्टर से बाहर भागा। बाहर उसने देखा कि उसका कमरा एक छोटे से अस्पताल जैसे परिसर का हिस्सा था, जहाँ नर्सें अन्य घायल सैनिकों की देखभाल कर रही थीं।
नारा बाहर निकला। वह नंगे पैर था और बर्फ से उसके पैर सुन्न हो गए थे। वह भैरव के शिविर की ओर चल पड़ा। अंदर, शिव नाग सरदार, वीरभद्र और मृग से किसी

बात पर चर्चा कर रहे थे। नारा को देखकर भैरव ने चिंता से ऊपर देखा। उन्होंने पूछा, 'अब तुम ठीक हो?'
‘मैंने अंधका को मार डाला,’ नारा ने घोषणा की। बाकी सब लोग हैरानी से उसकी ओर देखने लगे। मृग को छोड़कर, जो मुस्कुरा रहा था।
‘ठीक है,’ मृग की आंखें खुशी से चमक उठीं, ‘और फिर तुमने परियों के साथ प्रेम किया। हम तुम्हारी बात पर विश्वास करते हैं।’
‘नहीं, नहीं।’ नारा ने सिर हिलाया। ‘मैंने उसे अपने हाथों से मारा था। मुझे यह बात साफ-साफ याद है।’
भैरव ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मैं तुम्हारी बात मानता हूँ, नारा। लेकिन फिर यह कैसे संभव है कि वह सुबह के हमले के समय यहाँ मौजूद था?'
‘कुछ तो है वहाँ।’ नारा हाँफते हुए शॉल को कसकर लपेट रही थी। ‘मुझे नहीं पता क्या है, लेकिन उसमें कुछ तो खास है। कुछ ऐसा जो सिर्फ वही कर सकता है। यह असंभव है कि जिस आदमी को मैंने पिछली लड़ाई में मारा था, वह आज पुनर्जन्म लेकर आया हो।’
‘बकवास बंद करो, बूढ़े!’ मृग ने डांटते हुए कहा। ‘तुमने सपने में ही अंधका को मार डाला, बस इतना ही।’
नाग प्रमुख ने ध्यान आकर्षित करने के लिए खांसा। ‘मुझे नहीं लगा था कि यह बात उठेगी, लेकिन मेरे एक सैनिक ने भी एक बार उसकी रीढ़ की हड्डी में भाला मारा था। उसे यह भी लगता था कि उसने अंधका को मार डाला है। मैं आपको बताने ही वाला था, भगवान भैरव, लेकिन... एक और हमला हुआ और वह वहाँ था और मुझे लगा कि मेरा सैनिक झूठ बोल रहा है, दिखावा कर रहा है। मुझे लगा कि वह सिर्फ पदोन्नति चाहता है, इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा।’
‘हम्फ!’ नारा मुस्कुराया। यह इस बात का कुछ सबूत था कि वह भ्रम में नहीं था। कम से कम यह तसल्ली की बात थी।
‘यह तो बेतुका है। क्या वह विद्याधरों का प्रयोग कर रहा होगा?’ भगवान भैरव ने पूछा, उनके लंबे बाल उनके सिर के चारों ओर लहरा रहे थे।
वीरभद्र ने अपनी कर्कश आवाज में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'नहीं, महाराज। विद्याधर प्रकृति की शक्तियों को नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन वे मृतकों को जीवित नहीं कर सकते। साथ ही, वे जो कुछ भी करते हैं वह पूरी तरह से एक भ्रम है।'
भैरव ने सिर हिलाया। 'हम इसका हल निकाल लेंगे।'

‘हे भैरव, इस बकवास पर विश्वास करना बंद करो,’ मृग ने ऊँचे स्वर में कहा। ‘नारा आपके सामने झूठ बोल रहा है। उसमें अंधका को मारने का साहस या बल नहीं है। वह बूढ़ा है, कमज़ोर है और अब वह भ्रम में है। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि उसे पदमुक्त कर दें और उसे वहीं वापस भेज दें जहाँ से वह आया है।’ यह घोर और पूर्ण दुस्साहस है…
'मृगसिम्हा, तुम्हें मुझसे सम्मानपूर्वक बात करनी चाहिए,' नारा ने दांत पीसते हुए कहा।
मृग व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ आगे बढ़ा और नारा के बगल में, नाक से नाक मिलाकर खड़ा हो गया। 'और अगर मैं ऐसा नहीं करता तो तुम क्या करोगे?'
नारा ने निर्जीव निगाहों से उसकी ओर देखा, उसके भीतर शिकारी की प्रवृत्ति उमड़ रही थी। उसने अपने दांत दिखाए, उसकी मांसपेशियां तन गईं।
‘सज्जनों!’ भगवान भैरव उनके बीच आ गए। ‘यह कोई मायने नहीं रखता। हम आपस में नहीं लड़ सकते। हमारा शत्रु बाहर है और वह जादू का इस्तेमाल करके हमसे लड़ रहा है। हमें आपस में झगड़ने के बजाय उसे हराने के तरीके खोजने चाहिए।’ मृग ने भगवान भैरव की ओर देखते हुए कहा, ‘मेरे पास एक विचार है। क्यों न हम वही हथियार इस्तेमाल करें जिसे अंधका छीनने की कोशिश कर रहा है? उसे पशुपतास्त्र से उड़ा दें। मेरा मतलब है, हम एक ऐसे हथियार की रक्षा में अपने इतने संसाधन बर्बाद कर रहे हैं जिसका इस्तेमाल हम अपने फायदे के लिए कर सकते हैं।’
नारा ने बीच में ही टोकते हुए कहा: 'और क्या हम निर्दोष ग्रामीणों को सूली पर चढ़ाकर मरने दें? सोनितपुर एक हथियाया हुआ शहर है और वहां मानव और आदिवासी भी रहते हैं।'
मृग ने कहा, ‘इस युद्ध में फंसे हुए वे लोग किस तरह का जीवन जी रहे हैं?’ ‘हे भगवान भैरव, मेरी बात मानिए। आइए, हम इस हथियार का प्रयोग करें।’
भगवान भैरव ने दोनों सिंहों की ओर देखते हुए अपनी भौंहें उठाईं। ‘मैं ऐसा नहीं कर सकता। भगवान रुद्र ने मुझे एक बात बताई थी – कि यदि एक भी निर्दोष का जीवन खतरे में हो तो पशुपतास्त्र का प्रयोग न करना। और हम पहले ही उस बात को मानने में असफल हो चुके हैं जब हमने उस हथियार का प्रयोग किया था और… खैर, मैं ऐसा दोबारा नहीं होने दे सकता।’
नारा भैरव के कहने का मतलब नहीं समझ पा रहा था, लेकिन उसे जिज्ञासा हो रही थी। पर इससे पहले कि वह कुछ और पूछ पाता, मृग खड़ा हो गया, नारा को घूरकर

देखा और अपने समूह में शामिल होने के लिए मेज छोड़कर चला गया। भैरव ने नाग सरदार और वीरभद्र के साथ अपनी चर्चा फिर से शुरू कर दी।
नारा भी वहां से चला गया। वह आराम करना चाहता था और अपने दिमाग को तरोताजा करना चाहता था। शिविर से निकलते ही उसने नर्स को अपनी ओर आते देखा।
'उन्होंने क्या कहा?' उसने पूछा।
नारा ने उसे बताया कि नागा प्रमुख ने क्या कहा था।
‘तो फिर यह सच है।’ उसने आह भरी और नारा को खुशी हुई कि एक और व्यक्ति है जो उस पर विश्वास करता है।
‘तुम्हारा नाम क्या है?’ उसने उससे पूछा।
‘चेनचेन,’ उसने कहा। ‘तुम्हें आराम की जरूरत है। चलो मैं तुम्हें कमरे तक ले चलती हूँ।’
नारा ने सिर हिलाते हुए अपना हाथ उसे दिया और वह उसे चिकित्सा कक्ष की ओर ले गई। चलते-चलते उसने पीछे से वही जानी-पहचानी, चिढ़ाने वाली आवाज़ सुनी। 'क्या तुम्हें किसी औरत की ज़रूरत है? बूढ़े आदमी, मैं तुम्हारी सुरक्षा के लिए कह रही हूँ, तुम्हारी यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है। मैं सच कह रही हूँ, यहाँ से चले जाओ। वरना तुम्हें मार दिया जाएगा।'
नारा ने मुड़कर देखा तो मृग और झुंड हंस रहे थे, और उसने अपनी नाक सिकोड़ ली। चेनचेन ने उन्हें अनदेखा कर दिया।
‘वह उनके लिए सही नेता नहीं है,’ नारा ने फुसफुसाते हुए उससे कहा। 'तुम्हें लगता है कि तुम हो?'
उसने अपने होंठ सिकोड़े। 'मैं पहले ऐसा था। अब मुझे बिल की चिंता नहीं है। लेकिन अब उसे देखकर मुझे लगता है कि मैं शायद उससे बेहतर हूं, कम से कम।' उसने सिर हिलाया। 'तो फिर आप इसके बारे में कुछ क्यों नहीं करते?'
उसके शब्द उसे ईंट की तरह लगे।
मैं इसके बारे में कुछ क्यों नहीं करता?
‘बूढ़े आदमी! अपनी दासी हमें क्यों नहीं दे देते? वह बहुत ही आकर्षक लगती है, और हम सभी उसका स्वाद चखना चाहेंगे,’ मृग की आवाज फिर गूंज उठी।
चेनचेन ने अपनी भौहें उठाईं और बदले में मृग को गुस्से भरी नजरों से देखा।
‘ओह, कितना भयानक!’ मृग हँस पड़ा, और बाकी सिंह भी हँस पड़े।
नारा ने सिर हिलाया। 'मुझे उसे रोकना होगा।'
‘उसे नजरअंदाज करो,’ चेनचेन ने फुसफुसाते हुए कहा।

नारा को लगा कि भैरव को इस सब के बारे में कुछ करना चाहिए था, लेकिन वह अपने सैनिकों के साथ युद्ध की रणनीति बनाने में व्यस्त था। वह यहाँ मौजूद नहीं था यह सब देखने के लिए।
‘अरे वेश्या, क्यों न तुम अपने दादाजी को सुला दो और फिर यहाँ आकर मजे करो?’ मृग हँसा।
‘तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?’ नारा मुड़ा, उसकी आँखों में गुस्से की लाली थी। अब उसे मृग से बहुत चिढ़ होने लगी थी, खासकर इसलिए क्योंकि वह अपना सारा गुस्सा चेनचेन पर निकाल रहा था।
‘मैं तुम्हें यहाँ नहीं चाहता,’ मृग का चेहरा भावहीन हो गया। ‘चले जाओ।’ 'क्यों?'
‘क्योंकि मैंने आप पर भरोसा किया था, बूढ़े आदमी। जब मैं जवान था, तो मैंने आपके पदचिन्हों का अनुसरण किया, महान नरसिम्हा के बारे में सुना – वह अभिमानी योद्धा जिसने सबसे युद्ध किया। और अब आपको देखिए, टूटे-फूटे और मुरझाए हुए, एक दुखी पागल जिसे बिस्तर तक ले जाने और शौच व पेशाब करने के लिए एक औरत की ज़रूरत है।’ मृग ने ज़मीन पर थूका। ‘मैंने सचमुच आपको अपना आदर्श माना था, और आपने मेरे भरोसे को धोखा दिया।’
‘पर मैं अब यहाँ हूँ,’ नारा ने कहा। उसके पेट में दर्द होने लगा था, लेकिन फिर भी वह चेंचेन के साथ मृग तक चलने में कामयाब रहा। ‘मैं मदद कर रहा हूँ। क्या तुम नहीं देख रहे?’
'सिंह शक्ति की पूजा करते हैं, और मुझे तुममें कोई शक्ति शेष नहीं दिखती।' 'तुम हो …'
इससे पहले कि वह अपना वाक्य पूरा कर पाता, मृग ने अचानक उसे एक घूंसा मार दिया। नारा चौंक गया और ज़मीन पर गिर पड़ा, बर्फ उसके चेहरे पर लगी। उसे अपने टूटे और खून से सने दांत ज़मीन पर महसूस हुए। चेनचेन ने उसका हाथ पकड़ा और उसे उठाने की कोशिश की।
‘देखो! मैं इसी की बात कर रहा था। तुममें बुनियादी समझ की कमी है। मेरा मतलब है, तुम इस युद्ध के लिए तैयार नहीं हो। क्यों न तुम यहाँ से चले जाओ और इस औरत को हमारे साथ छोड़ दो ताकि हम थोड़ा मज़ा कर सकें?’ मृग मुस्कुराया।

नारा बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसने अपने गुस्से पर काबू पाया। वे एक ही टीम के सदस्य थे, दुश्मन नहीं। उसने अपनी नाक सिकोड़ी और चेनचेन के साथ जाने के लिए मुड़ गया।
‘मुझे अच्छा नहीं लगता जिस तरह से वे तुम्हारे बारे में बात करते हैं,’ उसने चेनचेन से कहा।
'छोड़ो इसे। यह नया है। वह तुम्हें गुस्सा दिलाने के लिए मुझे परेशान कर रहा है।'
‘अच्छा, यह काम कर रहा है।’ नारा ने अपना सिर हिलाया।
‘मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि दो तरह के लोग होते हैं। एक वो जो काम करते हैं और दूसरे वो जो उसके बारे में डींग मारते हैं।’
'आप क्या कह रहे हैं?'
‘वह तुम्हें बूढ़ा और कमजोर कहता रहता है। तुम उसे क्यों नहीं दिखा देती कि तुम न तो बूढ़ी हो और न ही कमजोर?’
नारा ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। उसने चेनचेन की बातों पर विचार किया, और फिर उसके हाथों पर अपनी पकड़ ढीली करते हुए, वह पीछे मुड़ा और मृग के पास चला गया, जो अभी भी अपनी टीम के साथ हंस रहा था।
‘मृगसिंह!’ नारा ने अपने पट्टी बंधे धड़ को पकड़ते हुए पुकारा।
मृग ने ऊबते हुए ऊपर देखा। 'क्या बात है, बूढ़े आदमी?'
नारा ऐसा नहीं करना चाहता था, लेकिन उसने चारों ओर देखा और पाया कि सभी लोग
- सैनिक और ग्रामीण - उत्सुकता से उन्हें घूर रहे थे। भैरव अभी भी अपने शिविर में था, बाहर क्या हो रहा था, उसे इसकी कोई जानकारी नहीं थी। उम्मीद है, वह वहीं रहेगा। उसे और भी बड़ी चिंताओं का सामना करना था। यह नारा की समस्या थी, और केवल उसकी ही समस्या थी।
‘मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ,’ नारा ने घोषणा की। ‘तुम जानना चाहते थे कि मैं अब भी ताकतवर हूँ या नहीं। चलो पता लगाते हैं। अगर मैं जीतता हूँ, तो मैं यहाँ से प्राइड का नेतृत्व करूँगा। अगर तुम जीतते हो, तो मैं यह जगह छोड़ दूँगा।’
मृग की मुस्कान थोड़ी डगमगा गई, मानो वह इस स्थिति का आदर्श जवाब देने की कोशिश कर रहा हो।
कुछ क्षण बाद, छोटे सिम्हा ने सिर हिलाया।

‘ठीक है,’ उसने कहा। ‘लेकिन मैं तुम्हारी शर्त में एक चीज़ बदलना चाहता हूँ। अगर मैं जीत गया, तो मुझे सबके सामने तुम्हें जान से मारने का अधिकार होगा।’
एक पल का विराम आया, फिर नारा ने सिर हिलाया। 'ठीक है। मैं तुम्हारी शर्त मान लेती हूँ।'

14

अनुह्राद

अब अनुहराद अपने पिता से नफरत करने लगा था।
ऐसे बहुत कम मौके थे जब वह उससे नफरत करता था। वास्तव में, ज्यादातर समय वह उस पर काफी गर्व करता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है।
इस खूनी एकांत कारावास के लिए प्रहलाद को यहाँ भेजा जाना था। मुझे नहीं।
वह हमेशा बेहतर था। वह हमेशा बेहतर योद्धा, बेहतर रणनीतिकार था। और वह आदर्श पुत्र था।
और फिर भी उसे यहाँ भेजा गया था – इस कालकोठरी में।
वह पिशाचों के साथ था, जो सोनितपुर के मुख्य शहर में तैनात थे। वह अपने पहरेदारों के साथ अपने चचेरे भाई अंधका के महल में अकेला चल रहा था। चलते- चलते उसने अपने चारों ओर सूखे पेड़ देखे, एक लंबा, सुनसान रास्ता जो महल के चारों ओर बने बुर्जों तक जाता था। यह एक किला था, लेकिन आंशिक रूप से टूटा हुआ, मानो हाल ही में क्षतिग्रस्त हुआ हो।
सोनितपुर एक वीरान शहर था। बेशक, आसपास लोग थे, लेकिन वह उनके भावहीन चेहरे और निराशा को स्पष्ट देख सकता था। ऐसा लग रहा था मानो अंधका ने उनकी सारी जान चूस ली हो।
बचपन में अनुहरद की मुलाकात अंधका से अक्सर नहीं होती थी। जब भी उनकी मुलाकात हुई, अंधका का व्यवहार… अजीब सा था। अक्सर वह लड़कियों जैसी आवाज़ में कुछ शब्द बुदबुदाता था। वह एल्बिनो था, उसकी त्वचा हल्की थी और

आँखों की पुतलियाँ लाल थीं, जो उसकी आँखों पर बंधी पट्टी के नीचे छिपी रहती थीं। वह जन्म से अंधा था… या कम से कम अनुहरद यही मानता था।
अपने विचारों में खोए हुए अनुहराद ने एक बार फिर सोनितपुर शहर की ओर देखा।
पूरा शहर बर्फ से ढका हुआ था।
उसने पेड़ों में छिपे हुए नुकीले दांतों वाले जीवों को देखा - भेड़िये। अनुहराद ने मोटा कवच पहन रखा था जो उसके सीने और पेट के निचले हिस्से को ढके हुए था। यह कवच उसे हमले की स्थिति में सुरक्षा प्रदान करता था। उसने फर का लबादा ओढ़ा हुआ था और सिर पर एक हुड था जिसे उसने पीछे खींच रखा था ताकि पहरेदार उसे पहचान सकें। उसके सीने पर कांसे का कवच था और उसकी बाईं जांघ पर एक तलवार म्यान में रखी हुई थी।
भेड़िये मीनार से निकलकर उसकी ओर दौड़ते हुए आए। पास आकर उन्होंने उसे सूंघा, जबकि वह स्थिर खड़ा रहा। उसने कहीं पढ़ा था कि भेड़िये डर को सूंघ सकते हैं, और अगर उन्हें डर का पता चल जाए तो वे हमला कर देते हैं।
मुझे उनसे डर नहीं लगता।
वे सफेद और भूरे रंग के थे, उनके कान लंबे थे और उनके दांतों पर खून लगा हुआ था।
उन्होंने कुछ देर तक उसे सूंघा और फिर पेड़ों के पीछे लौट गए।
अनुहराद ने गहरी सांस ली और आगे बढ़ गया। आगे उसे भेड़ियों द्वारा नोंच-नोंच कर दिया गया एक शव दिखाई दिया। सफेद बर्फ पर खून जमा हुआ था और किसी कारणवश, वह दृश्य किसी कलाकृति जैसा लग रहा था, न कि खून-खराबे जैसा। उसने किले के बाहर द्वार के पास पहरेदारों को देखा। अनुहरद को देखते ही उन्होंने अपने भाले निकाल लिए। वे राक्षस मूल के थे और अनुहरद को जानते थे। उन्होंने अनुहरद को प्रणाम किया और द्वार खोल दिया।
अनुहराद महल में दाखिल हुआ, जहाँ मेहराबदार दरवाज़ों और घुमावदार लंबी सीढ़ियों ने उसका स्वागत किया। वहाँ छत नहीं थी और आसमान से सीढ़ियाँ गिर रही थीं। लकड़ी का फर्श चरमराया और अनुहराद को कुछ अजीब सी गंध आई... मौत और सड़न की दुर्गंध।
उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह दुनिया से अलग-थलग पड़ गया हो। उसे पृष्ठभूमि में उल्लुओं की आवाज सुनाई दे रही थी।
‘क्या यहाँ कोई है?’ अनुहराद ने पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

वह बाहर तैनात पहरेदारों से रास्ता पूछने की सोच ही रहा था कि तभी उसका पैर किसी चीज पर पड़ा और वह चटक गई। उसने नीचे देखा तो पाया कि वह एक खोपड़ी थी।
एक मानव खोपड़ी।
इस जगह क्या है?
‘क्या आप ही हैं, राजकुमार अनुहराद?’ एक आवाज ने पुकारा।
उसने मुड़कर देखा तो थोड़ी दूरी पर एक छोटा, झुका हुआ आदमी खड़ा था।
‘तुम कौन हो?’ अनुहराद ने पूछा।
‘आपका विनम्र सेवक,’ उस व्यक्ति ने अपनी उंगलियाँ सामने की ओर सटाकर कहा। उसकी आवाज़ भारी थी, मानो उसे सर्दी लगी हो। ‘मैं कलानेमी हूँ। स्वामी जी, हम भोजन कक्ष में मिलेंगे।’
अनुहराद ने सिर हिलाया। वह भूखा था, लेकिन साथ ही बेचैन भी। 'क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप इस गंदी जगह को कब साफ़ करने की योजना बना रहे हैं?' वह उस आदमी की ओर बढ़ा और पास जाकर उसने देखा कि कलानेमी का चेहरा फोड़ों से भरा हुआ था। उसकी त्वचा लाल थी और उस पर गंदगी के निशान थे। उसके पतले बाल कागज़ की तरह उसके कंधों पर लटके हुए थे।
‘तुम्हें क्या हुआ?’ अनुहराद ने पूछा।
‘मुझे एक बीमारी है,’ उस आदमी ने कहा। ‘कृपया अंदर आइए, राजकुमार।’
कालनेमी का पीछा करते हुए जिस कमरे में वह गया था, उसे देखकर अनुहराद ने आह भरी। एक कोने में एक छोटी सी लाइब्रेरी थी, और लटकती हुई मशालें थीं जिनसे गर्माहट और रोशनी निकल रही थी। इस कमरे की छत पर सुंदर नक्काशी थी और एक लंबी मेज पर कई कुर्सियाँ रखी थीं। खिड़कियों और प्रवेश द्वारों के पास पहरेदार खड़े थे, और वे भावहीन बने रहे।
अनुहराद मेज पर गया और अपनी तलवार रखकर बैठ गया। उसने मेज पर रखा खाना देखा
– भुना हुआ चिकन और रोटियाँ। उसे इतनी भूख लगी थी कि वह अपने चचेरे भाई के बिना ही खाना शुरू करना चाहता था।
‘गुरुजी कहाँ हैं?’ अनुहराद ने हंसते हुए पूछा। ‘आप उन्हें गुरुजी क्यों कहते हैं?’
कलानेमी ने अनुहराद को ऐसे देखा मानो वह किसी दूसरे ग्रह से आया हो। और इससे पहले कि कलानेमी कुछ बोल पाता –
एक लड़की की आवाज सुनाई दी, 'क्योंकि मैंने उससे ऐसा करने को कहा था।'

अनुहराद ने मुड़कर देखा तो उसे बर्फ जैसी सफेद त्वचा वाला एक अपेक्षाकृत छोटा आदमी दिखाई दिया। उसने गहरे लाल रंग की पट्टी बांधी हुई थी और वह बिल्कुल गंजा लग रहा था। उसने अजीबोगरीब कपड़े पहने हुए थे - एक काला कुर्ता और काली पतलून, जिसके ऊपर उसने गले तक बटन वाला कोट पहना हुआ था। वह धीरे-धीरे मेज की ओर बढ़ा और अनुहराद के बगल में बैठ गया, मानो वह देख सकता हो, मानो उसका अंधापन सिर्फ एक धोखा हो।
‘अंधका,’ अगर अनुहरद यह कहता कि वह अपने चचेरे भाई को देखकर खुश है, तो वह खुद से झूठ बोल रहा होता। ‘तुम्हें देखकर अच्छा लगा।’
'ह्म्म्म...' अंधका ने आह भरी।
‘क्या हम खाना शुरू करें?’ अनुहराद ने पूछा।
अंधका पीछे की ओर झुका हुआ था, उसकी पीली उंगलियाँ बेचैनी से हिल रही थीं।
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
‘क्या हुआ?’ अनुहराद ने खाना शुरू करने की उत्सुकता से पूछा।
‘आपने मुझसे प्रगति के बारे में नहीं पूछा,’ अंधका ने नरमी से कहा।
‘किस बात में प्रगति? युद्ध में?’
अंधका ने सिर हिलाया।
‘खैर, अपनी यात्रा के दौरान मैंने सुना कि आपकी युद्ध में मृत्यु हो गई।
मुझे उन पर विश्वास नहीं हुआ। मुझे पता था कि वे सिर्फ अफवाहें थीं।’ अंधका ने अपना चेहरा अपने चचेरे भाई की ओर घुमाया। 'मैं मर गया था।'
एक पल के लिए अनुहरद को लगा कि अंधका मजाक कर रहा है।
लेकिन क्या यह घटिया आदमी मजाक करने में भी सक्षम है?
‘तो फिर मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि आज मुझे तुम्हारा बदसूरत चेहरा देखने को मिल रहा है?’ अनुहराद हँसा।
‘यह अच्छा नहीं है,’ अंधका ने कहा। ‘मैं बीमार थी… मैं बीमार हूँ… मैं बीमार हूँ।’
‘मुझे पता है तुम्हें वो त्वचा रोग है, लेकिन मेरी प्यारी, तुम बहुत बुरी लग रही हो। अगर तुम्हारी योजना अपने दुश्मनों को डराकर मार डालने की है, तो मुझे यकीन है कि यह काम करेगी,’ अनुहराद ने मजाक में कहा।
'मेरा इरादा उन्हें अपने चेहरे से डराने का नहीं है,' अंधका ने अपने गाल को छूते हुए कहा, मानो वह अपने शरीर की गर्मी को निचोड़ रहा हो।
‘तुम मौत के मुंह से कैसे वापस आए, चचेरे भाई?’ अनुहराद ने पूछा।

अंततः उसने हार मान ली और खाना शुरू कर दिया, रोटियों के टुकड़ों को भरकर खाने लगा।
उसने अपने मुंह में चिकन डाला।
‘हर किसी के अपने रहस्य होते हैं। मैं कई बार मौत के मुंह से वापस आया हूँ। और हर बार जब मैं वापस आता हूँ, तो मेरी संख्या कई गुना बढ़ जाती है,’ अंधका ने कहा, उसकी आवाज़ इतनी दृढ़ और डरावनी थी कि अनुहरद की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई। ‘शुरू में मैंने सोचा था कि मेरी संख्या नहीं बढ़ेगी, लेकिन अब मुझे खुशी है कि मेरे कई रूप हैं।’
‘क्या तुम हमेशा इसी तरह बोलते हो?’
‘क्या इससे तुम्हें परेशानी होती है?’ अंधका ने पूछा। और फिर, जब अनुहरद ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उसने कहा, ‘मुझे महसूस हो रहा है कि इससे तुम्हें परेशानी होती है।’
‘क्या आपको गंध आ रही है…?’
‘मैं भावों और भावनाओं को सूंघ सकती हूँ, क्योंकि मैं उन्हें देख नहीं सकती,’ अंधका ने कहा। ‘मैं दिल की धड़कनें सुन सकती हूँ और जान सकती हूँ कि कोई झूठ बोल रहा है या कुछ छिपा रहा है।’
बहुत खूब, इस आदमी के साथ कोई निजता नहीं है।
अनुहराद ने गले में अटकी हुई बात को दबाते हुए कहा, 'पिताजी ने कहा, तुम अच्छा काम कर रहे हो। सच कहूँ तो, तुम्हें मुझसे किस मदद की ज़रूरत है? लगता है तुमने यहाँ सब कुछ संभाल लिया है।'
अंधका ने उस बात को अनसुना कर दिया और कलानेमी की ओर मुड़ा, जो कमरे के एक कोने में अंधेरे में आधी छिपी खड़ी थी। 'कृपया मेरा भोजन लाओ।'
‘जी मालिक,’ कलानेमी ने कहा और कमरे से बाहर निकल गया।
‘तुम यह खाना नहीं खा रहे हो?’ अनुहराद ने पूछा।
‘मुझे सामान्य खाना पसंद नहीं है,’ अंधाका ने कहा, तभी कलानेमी अपने हाथों में एक सिर लिए कमरे में वापस आया… एक मानव सिर, जिसका ऊपरी आधा हिस्सा कटा हुआ था, जिससे मस्तिष्क दिखाई दे रहा था।
घिनौना।
अंधका ने अपना हाथ खोपड़ी के अंदर डाला और दिमाग को नोंच डाला। वह उसे खाने लगा, खून उसके कपड़ों और त्वचा पर टपक रहा था।

अनुहराद ने अपनी कुर्सी पीछे धकेली और अपनी थाली लेकर मेज के दूसरे छोर पर चला गया। अगर वह अंधका के पास बैठा रहता तो उसकी भूख मर जाती। उसने अपने चचेरे भाई से पूछा, 'तुम ये सब क्यों खा रहे हो?'
'हम्म?'
‘क्यों… अरे छोड़ो,’ अनुहराद ने अपना सिर सहलाते हुए कहा। ‘मैं शहर में ही कोई सराय ले लूंगा।’
लेकिन मैंने यहां एक कमरा तैयार रखा है।
हाँ, जैसे कि मैं इस पागल जगह पर रहने जा रहा हूँ।
‘नहीं, मैं कोई परेशानी नहीं खड़ी करना चाहता। मैं सराय में ठहर जाऊंगा,’ उसने कहा, अपने चचेरे भाई को मानव मस्तिष्क खाते देख उसकी नाक सिकुड़ गई। अंधका ने सिर हिलाया। उसने खोपड़ी को एक तरफ रख दिया और एक तौलिये से अपनी उंगलियों से खून पोंछा। 'तुम मेरे खान-पान को लेकर परेशान हो।'
‘तुम्हारी गंध ठीक नहीं थी, चचेरे भाई। नाराज़ होना सही भावना नहीं है। मुझे तो घोर घृणा महसूस हो रही है।’
‘हम्म, ठीक है। बात बस इतनी सी है कि बचपन में मैंने मारे गए आदमियों के अलावा कुछ नहीं खाया।’ उसने अपना सिर हिलाया, मानो कोई दुखद, दिल दहला देने वाली याद को याद करने की कोशिश कर रहा हो।
‘चाचा ने इसकी इजाज़त दी?’ अनुहराद ने हैरानी से पूछा।
‘पिताजी ने इसका समर्थन किया था,’ अंधका ने जवाब दिया। ‘उनका हमेशा से मानना था कि शिकार को खाना चाहिए।’
‘ये शिकार के लिए है, चचेरे भाई। तुम जानवरों का शिकार इसलिए करते हो ताकि उन्हें पकाकर खा सको।’
‘मुझे कभी जानवरों का शिकार करने का सौभाग्य नहीं मिला। पता नहीं क्यों, वे मुझे कभी दिलचस्प नहीं लगे। वे तो पवित्र आत्माएं थीं। क्या आप भेड़ियों के उस झुंड से मिले हैं जिसे मैं बाहर पालता हूँ?’ वह बच्चे की तरह मुस्कुराया। ‘मेरे पास हमेशा जानवर रहे हैं, लेकिन पिताजी मुझे पालतू जानवर रखने की अनुमति नहीं देते थे, इसलिए मैं उन्हें छुपकर रखता था। एक बार, वह मेरे कमरे में आने ही वाले थे कि मेरा कुत्ता भौंकता रहा। पिताजी ने उसकी आवाज़ सुनी और मैं डर गया। मुझे पता था कि अगर उन्हें पता चल गया, तो वे उसके साथ बहुत बुरा करेंगे। इसलिए मैंने उसे मार डाला। यह दुखद था। बहुत दुखद।’ उसने अपना सिर नीचे कर लिया, उसके होंठ सिकुड़ गए।

अनुहरद को याद नहीं था कि उसके चाचा ने कभी ऐसा व्यवहार किया हो। वे हमेशा से ही हंसमुख, हंसमुख और मिलनसार थे। अंधका से उनके बारे में मिली यह कहानी उसे अविश्वसनीय, लगभग अवास्तविक लग रही थी।
‘क्या तुम अब भी यूटी (छोटी ट्रक) चलाते हो?’ अंधाका ने पूछा।
अनुहराद ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मेरे पास समय नहीं है।'
'हो सकता है कि आप इसे बाद में कर सकें, जब आप वहां व्यवस्थित हो जाएं।' अनुहराद ने सिर हिलाया। 'ज़रूर। लेकिन आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। आपको मेरी ज़रूरत क्यों पड़ी? मैं क्या कर सकता हूँ? आपके पास दो कालकेया भी हैं, तो मुझ जैसे नौजवान से आपको क्या मिल सकता है?' उसने दानवों की ओर इशारा करते हुए कहा, जो कहीं नज़र नहीं आ रहे थे, लेकिन वह जानता था कि बाहर के टावर उन्हीं के थे।
‘मुझे उनका इस्तेमाल करना पसंद नहीं है। वे बहुत खाते हैं और युद्ध के मैदान में जाने के समय को लेकर उनका मिजाज बदलता रहता है,’ अंधाका ने कहा। ‘खैर, वे दानव हैं। आप उनसे और क्या उम्मीद करते हैं?’ अनुहरद ने अपने पिता हिरण्य के कालकेयों और पौलामोओं के साथ संबंधों के बारे में सोचा। स्वभाव से दानव आलसी होते थे। उन्हें काम करने के लिए मजबूर करना पड़ता था और बदले में उन्हें भरपूर भोजन देना पड़ता था। उनके पिता उनका उपयोग तभी करते थे जब बिलकुल आवश्यक होता था, इसलिए उनमें से अधिकांश हिरण्यपुर में तैनात थे, जहाँ वे मोटे हो गए, खर्राटे लेते और शराब पीते थे। अधिकांश दानव इलवर्ती नहीं आना चाहते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि इसका मतलब बहुत अधिक काम होगा।
‘मुझे किसी का साथ चाहिए था। मैं यहाँ अकेली थी,’ अंधका ने अनुहरद के पहले पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा। ‘मुझे अकेलेपन से डर लगता है। तुम्हें किस बात से डर लगता है?’
‘मेरे प्यारे अजीब चचेरे भाई, मैं यहाँ तुम्हारी तन्हाई दूर करने के लिए नहीं आई हूँ। अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं है, तो मैं अभी जा रही हूँ,’ उसने कहा और मेज पर अपना हाथ पटका, कुर्सी पीछे धकेली और उठने की कोशिश की। ‘नहीं,’ अंधका ने खुद मेज पर थपथपाया और लकड़ी चरमरा उठी। ‘नहीं, कृपया। मुझे आपकी ज़रूरत है…’
'कहना आसान है, करना मुश्किल।'

‘तुम समझते नहीं, नहीं, हम्म… तुम नहीं समझते।’ अंधका अपना सिर हिलाता रहा। ‘मुझे पशुपतास्त्र की परवाह नहीं है। अगर मुझे वह मिल गया, तो मैं उसे अपने चाचा को सौंप दूंगा। लेकिन मैं इस वजह से यह युद्ध नहीं लड़ रहा हूँ। नहीं। मैं यहाँ स्वेच्छा से आया हूँ क्योंकि मेरे पास एक रहस्य है।’ अनुहराद ने अपने जबड़े भींच लिए। उसने अपने चचेरे भाई की ओर देखा। उसे उस पर दया आई, लेकिन साथ ही उसे यह भी लगा कि अंधका अपना समय बर्बाद कर रहा है। 'तुम मुझे यहाँ यह बताने के लिए बुला रहे हो कि तुम्हें इस युद्ध की परवाह नहीं है? अगर मेरे पिता को पता चल गया तो? वो तुम्हें यहाँ से निकाल देंगे।'
‘पर मैं उसे पता नहीं चलने दूंगी। वही यहाँ सेना को आर्थिक सहायता देता है। यह मददगार तो है, लेकिन… पर आपको मुझे समझना होगा,’ अंधका ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘कृपया, मुझे समझिए और बैठ जाइए। हम हमेशा से अलग रहे हैं। लेकिन मुझे पता है कि हम सब कुछ सुलझा सकते हैं। कृपया बैठ जाइए।’
अनुहरद ने ऐसा ही किया।
‘अनुहरद, तुम एक अच्छे इंसान हो।’ अंधका ने मन ही मन सिर हिलाया। ‘इसलिए मैं तुम्हें अपना एक रहस्य बताता हूँ। मैं यह लड़ाई अपने चाचा की वजह से नहीं लड़ रहा हूँ। मैं यह लड़ाई अपने लिए, एक उद्देश्य के लिए लड़ रहा हूँ, और मैं चाहता हूँ कि तुम उस उद्देश्य को प्राप्त करने में मेरी मदद करो, क्योंकि मैं इसे अकेले नहीं कर सकता। तुम मेरी जीत की कुंजी होगे। तुम एक महान रणनीतिकार हो और अच्छे श्रोता भी। इसलिए कृपया, कृपया ऐसा करो।’ अनुहराद ने राहत की सांस ली, अंततः उसे एहसास हुआ कि शायद उसकी उपस्थिति का कोई कारण हो सकता है।
यहां आने में मेरा समय व्यर्थ नहीं गया।
‘अगर वह लक्ष्य पशुपतास्त्र नहीं है तो और क्या है? आपको पता है कि हमें देवताओं को निरस्त्र करने के लिए उस हथियार की आवश्यकता है…’
‘मुझे परवाह नहीं। मैंने तुमसे कहा था, अगर तुम इस लक्ष्य को हासिल करने में मेरी मदद करोगे, तो तुम्हें अस्त्र मिल जाएगा। लेकिन तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। मैं तुमसे दिल से विनती करता हूँ। क्या तुम करोगे?’
क्या मुझे अंत में वाकई एस्ट्रा मिल जाएगा?
‘मैं इसे किसी और तरीके से नहीं होने दूंगा,’ अंधाका ने कहा।

अनुहराद मान गया। 'ठीक है, मैं आपके लक्ष्य तक पहुँचने में आपकी मदद करूँगा। आपका लक्ष्य क्या है? आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'
‘भैरव को मारने में मेरी सहायता करो। शिव को मारने में। हम्म... इससे पहले कि हमें हथियार मिल जाए।’
‘क्यों? तुम उससे इतनी नफरत क्यों करते हो?’
अनुहराद ने देखा कि अंधका हिचकिचा रहा है, उसकी उंगलियाँ काँप रही हैं। फिर उसने कहा, 'क्योंकि वह मेरा जैविक पिता है।' उसने अपना चेहरा छत की ओर उठाया, उसके चेहरे पर एक गंभीर मुस्कान थी। 'और उसने मेरे साथ जो किया है, उसके लिए मैं उसे कभी माफ नहीं करूँगा।'

15

प्रहलाद

प्रहलाद ने उसे दूर से देखा।
वह शाही उद्यानों के पास खड़ा था, जहाँ धृति पौधों को पानी दे रही थी। उसने धृति को देखा - वह इतनी प्यारी, मासूम लड़की थी कि यह सोचना असंभव लग रहा था कि वह विष्णुसेना की सदस्य हो सकती है।
शायद वह कोई और लाल बालों वाली लड़की थी...
लेकिन प्रहलाद की अंतरात्मा ने उसे कुछ और ही बताया। उसने देखा कि धृति ने पौधे को पानी देना बंद कर दिया और चारों ओर देखने लगी। उसने एक फूल तोड़ा और उसे अपने कान के पीछे लगा लिया।
प्रहलाद उसकी मासूमियत पर हँसे बिना नहीं रह सका।
यह बहुत ही अच्छा था…
हो सकता है कि मैं उसके बारे में गलत सोच रहा हूँ।
फिर अचानक, उसने उसे देखा और तुरंत सीधी खड़ी हो गई, फूल को ज़मीन पर फेंक दिया और घबराकर उसकी ओर देखकर मुस्कुराई। प्रहलाद उसके पास गया, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, वह बोल पड़ी।

‘मुझे बहुत खेद है, महाराज। मुझे बहुत खेद है,’ उसने चिंतित स्वर में कहा। ‘मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था…’
नहीं, यह नया है। आपको फूल पसंद हैं?
‘ओह…’ उसने सिर हिलाया। ‘मुझे ये सब पसंद हैं। मुझे लैवेंडर, गुलाब, ट्यूलिप… पसंद हैं… देखो, मेरे बाल गुलाब जैसे हैं।’
प्रहलाद ने उसे ध्यान से देखा, इस अवसर का लाभ उठाते हुए उसके शरीर पर किसी निशान या घाव की तलाश की, जिससे यह पता चल सके कि वह किसी आतंकवादी समूह से संबंधित है, लेकिन वहां ऐसा कुछ भी नहीं था।
शायद मैं गलत हूँ…
‘धृति, मुझे अपने बारे में और बताओ,’ उसने कहा।
वह चुपचाप निगलती और कांपती रही।
‘क्या हुआ?’ उसने पूछा।
‘नहीं, बात ये है कि आप कश्यपुरी के राजकुमार हैं और आप मेरे बारे में पूछ रहे हैं। ये तो… खैर… बहुत ही आश्चर्यजनक है,’ उसने खुद पर हंसते हुए कहा। प्रहलाद मुस्कुराया। 'कोई बात नहीं। मैं तुमसे दोस्ती करने की कोशिश कर रहा हूँ।'
‘लेकिन मैं तो नीच कुल की हूं!’ उसने अपने होंठ सिकोड़ते हुए कहा। ‘हम दोस्त नहीं बन सकते।’
'मैं जाति को हमारे रिश्तों का आधार मानने में विश्वास नहीं करता। क्या आप मेरे साथ दोस्ती करना चाहेंगे?'
‘बिल्कुल!’ उसने उत्साह से कहा, लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि शायद उसकी आवाज़ कुछ ज़्यादा ही उत्साहित लग रही थी। ‘मतलब, नहीं, मतलब हाँ, मतलब, ओह, मेरी प्यारी…’ उसने अपना माथा पीट लिया।
प्रहलाद के मन में एक विचार आया जिससे उसे पता चल सकता था कि वह केवल मासूमियत का नाटक कर रही है या वास्तव में विष्णुसेना का हिस्सा है। 'क्या तुम देवताओं में विश्वास करती हो?'
उसने अपना सिर हिलाया।
‘क्या तुम यह बात सिर्फ इसलिए कह रहे हो क्योंकि मैं यहाँ हूँ?’ उसने पूछा। 'नहीं, मेरे स्वामी। महल ने यह सुनिश्चित किया कि यहाँ काम शुरू करने से पहले मैं नास्तिक हूँ।'

प्रहलाद ने अपने पिता की उस सख्त नीति के बारे में सुना था जिसके तहत वे भक्तों को अपने, अपने बेटों और अपने मंत्रियों के निकट काम करने की अनुमति नहीं देते थे। गुरु नारद एक अपवाद थे, क्योंकि वे अपने काम में बहुत कुशल थे और राजा हिरण्य अपने बच्चों को उचित शिक्षा से वंचित नहीं करना चाहते थे।
या फिर कोई और कारण था?
‘लेकिन आप यह क्यों पूछ रहे हैं, मेरे स्वामी?’ उसने गंभीर आँखों से उनकी ओर देखा।
'क्योंकि मैं किसी एक पर विश्वास करना चाहता हूं,' उसने जवाब दिया, और अपनी ईमानदारी से खुद भी आश्चर्यचकित हो गया।
उसने उसकी ओर देखा और सिर हिलाया। 'मुझे पता है। आस्था महत्वपूर्ण है, हालांकि इसने कभी मेरा साथ नहीं दिया।'
'ऐसा क्यों?'
उसने अपने जबड़े भींच लिए और प्रहलाद समझ गया कि यह एक ऐसा प्रश्न था जिसका उत्तर देना उसके लिए कठिन था।
'शायद यह कहानी किसी और समय के लिए है,' उसने अंत में जवाब दिया।
प्रहलाद ने माहौल को हल्का-फुल्का बनाए रखने की कोशिश करते हुए मुस्कुराया।
‘मुझे अब जाना चाहिए, महाराज। महल में बहुत काम है,’ उसने झुककर विदा लेते हुए कहा।
‘बिल्कुल,’ उन्होंने कहा। ‘आप आगे बढ़ सकते हैं।’
फिर उसने अपनी योजना पर अमल किया। जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ी, उसने लापरवाही से अपना पैर उसके आगे रख दिया। लड़की को पता भी नहीं चला और उसका पैर उस पर पड़ गया और वह तुरंत लड़खड़ा गई। प्रहलाद ने उसे गिरने नहीं दिया, बल्कि उसे पकड़ लिया। लड़की ने धीरे से कहा, 'भगवान विष्णु की कृपा से! मैं गिरने ही वाली थी...'
प्रहलाद ने उसे पकड़ रखा था, एक हाथ उसकी कमर पर था और वह उसे ध्यान से देख रहा था। एक पल के लिए, वह भूल गया कि उसने ऐसा क्यों किया था। उसमें कुछ तो खास था, और जिस तरह से उसने उसे देखा, उससे स्पष्ट था कि वह भी उसके लिए कुछ महसूस करती थी।
योजना पर ध्यान केंद्रित करें…

'मुझे लगा था कि तुम नास्तिक हो,' प्रहलाद ने मुस्कुराते हुए उससे कहा। ‘मैं…उम…’ वह सीधी हुई और उसकी पकड़ से खुद को छुड़ाते हुए बोली, ‘यह सहज प्रवृत्ति थी। मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था… मतलब, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। क्या आपने जानबूझकर ऐसा किया, महाराज?’
प्रहलाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'क्या आपका मतलब यह है कि आपका राजकुमार जानबूझकर लड़कियों को गिराता है?'
‘अरे! नहीं, नहीं,’ उसने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा, उसे एहसास हुआ कि उसने अभी-अभी क्या इशारा किया है। ‘मेरा मतलब है… मैं… नहीं हूँ।’
प्रहलाद भी शर्म से लाल हो गया और उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया। उसे महसूस हो रहा था कि उसके गाल जल रहे हैं। ‘देखो, अगर तुम भगवान विष्णु में विश्वास करते हो तो कोई बात नहीं। इसे छुपाने की जरूरत नहीं है। मैं इसके लिए तुम्हें फांसी नहीं दूंगा। मैं अपने पिता जैसा नहीं हूं,’ उसने कहा। उसने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।
और कृपया, यदि आप कर सकते हैं, तो भगवान विष्णु के बारे में अधिक जानने में मेरी मदद करें। मैं अपने विश्वास को खोजना चाहता हूँ, क्योंकि मेरा कोई विश्वास नहीं है। मेरी संस्कृति इसकी अनुमति नहीं देती। लेकिन मेरी सोच अलग है।
उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसके चेहरे पर संदेह के भाव झलक रहे थे। प्रहलाद समझ गया कि वह बोलने से पहले सोच-विचार कर रही है, उसे कुछ बताना है या नहीं।
अंत में उसने कहा, 'मुझे जाना होगा। लेकिन अगर मैं आपकी किसी भी तरह से मदद कर सकती हूं, तो मैं आपको जल्द ही बता दूंगी।'
धन्यवाद।
उसने सिर हिलाया और धीरे से चलने लगी। उसे जाते हुए देखकर प्रहलाद का दिल बैठ गया। उसे उसे गले लगाना कितना अच्छा लगता था।
मुझे नहीं पता क्या हो रहा है।
जैसे ही वह उसे देख रहा था, वह रुक गई और पीछे मुड़कर उसकी ओर देखा, उसके चेहरे पर लाल बालों की कुछ लटें बिखरी हुई थीं।
वह मुस्कुराई।
और उसने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।
भगवान विष्णु की कृपा से, उनकी मुस्कान मनमोहक है।

'क्या आपका प्रेम प्रसंग समाप्त हो गया है, महाराज?' पीछे से एक हंसती हुई आवाज आई और प्रहलाद विपरिचित की ओर देखने के लिए मुड़ गया।
जब उसने दोबारा मुड़कर देखा, तो धृति पहले ही रसोइए के कमरे में प्रवेश कर रही थी।
‘महाराज, आप उससे क्या बात कर रहे थे?’ विपरिचित ने पूछा।
प्रहलाद ने ज्यादा कुछ नहीं कहा। उसने निर्देश दिया, 'बस उस पर नजर रखना।
और जब वह कुछ संदिग्ध हरकत करे तो मुझे सूचित करना।'
विपरिचित ने सिर हिलाया। 'ठीक है, महाराज।'

रात के समय उसने अपने दरवाजे पर दस्तक सुनी।
‘अंदर आओ,’ उसने अपनी आंखें मलते हुए पुकारा।
विपरिचित कमरे में दाखिल हुआ। 'मेरे स्वामी?'
‘विपरिचित? कितना समय हुआ है?’
‘हे प्रभु, धृति का अनुसरण करने का समय आ गया है।’
प्रहलाद एकदम सतर्क होकर उठ बैठा। 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
'मैंने आपकी सलाह के अनुसार उस पर नजर रखी थी, और हालांकि कर्फ्यू का समय बीत चुका है, मैंने अभी-अभी उसे अपने कमरे से प्रशासनिक विंग की ओर जाते हुए देखा, इसलिए मैंने सोचा कि मैं आपको अपडेट दे दूं।'
प्रहलाद पलंग से कूदकर उठा और अपना लबादा पकड़ लिया। 'चलो चलते हैं।' ‘तुम उसके साथ क्या करने की योजना बना रहे हो?’ विपरिचित ने बाहर निकलते हुए पूछा।
प्रहलाद ने कोई जवाब नहीं दिया और अपनी गति तेज करते हुए दरवाजे की ओर बढ़ गया।
‘क्या हमें उसे गिरफ्तार नहीं कर लेना चाहिए, महाराज?’ विपरिचित ने प्रहलाद के साथ कदम मिलाने के लिए अपनी गति तेज करते हुए कहा।
'जब तक हमें यह निश्चित रूप से पता न हो कि वह दोषी है, तब तक हम उसे गिरफ्तार नहीं कर सकते।'

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम पहले उसे गिरफ्तार कर सकते हैं, और फिर तब तक उसे यातना दे सकते हैं जब तक वह अपना मुंह न खोल दे।'
प्रहलाद ने अपनी निगाहें सिकोड़कर विपरिचित की ओर देखा। 'मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा कि इस पर क्या कहूँ।' उसने सिर हिलाया। 'मुझे यकीन है कि वह एक अच्छी इंसान है।'
'अगर वह विष्णुसेना का हिस्सा है, तो मुझे उसकी अच्छाई पर यकीन नहीं है, महाराज।'
वे प्रशासनिक विंग की ओर सीढ़ियों की एक रात नीचे उतरे।
‘क्या आपको यकीन है कि वह यहीं है?’ प्रहलाद ने पूछा।
नहीं, हो सकता है वह चली गई हो, लेकिन मुझे लगता है कि वह यहां किसी से मिल रही है। किसी ऐसे व्यक्ति से जिसके लिए वह काम करती है।
वे सीढ़ियों के निचले हिस्से तक पहुंचे, उस चौराहे पर जो विपरीत दिशाओं में दो गलियारों की ओर जाता था।
‘तुम बाईं ओर वाली को पकड़ो और अगर वह मिल जाए तो उस पर हमला मत करना। बस यह देखो कि क्या वह कुछ संदिग्ध कर रही है और अगर नहीं, तो उसे छोड़ दो,’ प्रहलाद ने निर्देश दिया।
‘क्या आपको लगता है कि इस समय उसका बाहर आना विष्णुसेना से संबंधित है?’ विपरिचित ने पूछा।
‘मुझे नहीं पता। वो अपने कमरे से ऐसे समय निकल रही है जब उसे नहीं निकलना चाहिए, और ऐसी जगह जा रही है जहाँ उसे नहीं जाना चाहिए,’ प्रहलाद ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा। ‘कारण चाहे जो भी हो, हमें सच्चाई का पता लगाना होगा, और मुझे विश्वास है कि हम पता लगा लेंगे।’
आखिरकार, वह मंत्रियों के कार्यालयों वाले विंग में क्यों जाएगी?
‘ठीक है, महाराज। मैं जाकर जाँच करता हूँ और आपको जानकारी देता हूँ।’ और वह चला गया।
प्रहलाद धीरे-धीरे दूसरे गलियारे में चला गया। चूंकि यह पुराना हिस्सा था, इसलिए यहां ज्यादा पहरेदार तैनात नहीं थे। खाली दफ्तरों से गुजरते हुए वह अमरका के दफ्तर के पास पहुंचा और शांड के दफ्तर में आ गया। दरवाजा खुला था। क्या धृति यहीं थी?
क्या शांड विष्णुसेना का हिस्सा है?
लेकिन उन्होंने तो इसका पुरजोर विरोध जताया था। क्या यह उनकी कोई चाल थी?

प्रहलाद दीवार के सहारे खड़ा होकर कमरे के अंदर से आ रही आवाजों को सुनने लगा।
‘मुखिया, उसे हमारी जासूसी का पता चल गया है।’ यह धृति की आवाज थी, लेकिन अब वह किसी घबराई हुई बच्ची जैसी नहीं लग रही थी।
‘क्या आप निश्चित हैं?’ एक आवाज ने जवाब दिया – एक जानी-पहचानी आवाज। शैंड?
'आज वो मुझसे मेरे धर्म के बारे में पूछ रहा था। मुझे यकीन है। वो हमारी जांच कर रहा है और उसने इशारा किया कि वो हमारे साथ जुड़ना चाहता है।' ‘हमें नहीं पता कि हम उस पर भरोसा कर सकते हैं या नहीं,’ आवाज ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। ‘अभी के लिए, हमें वही करते रहना चाहिए जो हम कर रहे हैं।’ 'जी हां, मुखिया जी। लेकिन हम यहां क्यों मिल रहे हैं?' उसने पूछा।
'आज की बैठक के लिए मेरा कार्यालय बिल्कुल अनुपलब्ध था। होलिका के गार्ड मेरे कार्यालय के गलियारों में जमा हो गए थे।'
‘मैं समझ गई। यह किसका कार्यालय है?’ धृति ने पूछा।
यह शांड नहीं है।
प्रहलाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। वह थोड़ा और झुका और कमरे में झाँका।
अंदर उसने एक बूढ़े व्यक्ति की झुकी हुई, गंजी आकृति देखी, जो धृति के सामने खड़ा था, जिसकी पीठ दरवाजे की ओर थी।
बिल्कुल। प्रहलाद ने निगलने की कोशिश की, उसका गला सूख गया था।
नारद।

16

होलिका

होलिका ने संदिग्ध को पशुओं को भगाने वाली छड़ी से धक्का दिया।

तुम्हारी वफादारी तुम्हें नहीं बचाएगी। लेकिन मेरे प्रति वफादारी बहुत काम आएगी।’
पसीने से तरबतर वह आदमी, उसे ध्यान से देख रहा था, मानो प्रस्ताव पर विचार कर रहा हो। 'मैं...'
'हा बता।'
मैं उनमें से नहीं हूं।
'ठीक है,'
मैं कसम खाता हूँ कि मैं नहीं हूँ।
'ठीक है।'
मैंने अभी-अभी उनके साथ कुछ व्यापार किया है।
'किस लिए?'
‘हथियार। मैंने उन्हें हथियार मुहैया कराए।’
‘तो मूलतः,’ होलिका ने दबी आवाज़ में हंसते हुए कहा, ‘अवैध हथियारों की आपूर्ति करने वाले काले बाजार को नष्ट करने के लिए, उन्होंने उसी बाजार से अवैध हथियार खरीदे?’
‘जो हथियार मैं लाया था, वे अवैध नहीं थे। वे कश्यपपुरी के बाहर से आए थे। मैंने उन्हें रियायती दरों पर खरीदा था क्योंकि वे स्थानीय कस्बों में बने थे। विष्णुसेना ने उनके लिए भुगतान किया, लेकिन मैंने उन्हें छूट दी।’ ‘ठीक है, और?’ होलिका ने विष्णुसेना के दिखावटी निष्ठापूर्ण व्यवहार से चिढ़कर पूछा।
बस इतना ही।
‘क्या आपको इसके अलावा कुछ और पता है? क्या आप चेहरे का कोई विवरण दे सकते हैं?’
उसने पलकें झपकाईं। 'एक बार मैंने उस आदमी को देखा था जिसने मेरा काम संभाला था... यहीं... कश्यपपुरी में।'
'कहाँ?'
'सौदे के बाद, वह आपके महल के लिए रवाना हो गया।'
होलिका ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। क्या मंत्रियों के बीच कोई जासूस था, या महल के लोगों में से कोई?
'वह किसकी तरह दिखता था?'
वह बूढ़ा था।

महल में कई बुजुर्ग लोग काम करते हैं। और कुछ?
‘वह बस बूढ़े थे और उनके बाल सफेद थे, आप जानते ही हैं। और वे काफी बुद्धिमान प्रतीत होते थे, उन्हें पता था कि किस प्रकार की तलवारें और धनुष चाहिए। वे आचार्य या शायद गुरु हो सकते थे।’
यह पर्याप्त जानकारी नहीं थी, लेकिन इससे उसे कुछ लोगों को संदेह की श्रेणी से बाहर करने में मदद मिली। 'तुम यह बात क्यों छिपा रही थी?'
मैं अपने ग्राहकों के प्रति वफादार हूं। लेकिन मैं उनके लिए अपनी जान जोखिम में नहीं डालूंगा।
'अच्छा,' उसने शरारत भरे अंदाज़ में उसके गाल पर एक थप्पड़ मारा और पीछे झुककर अपनी बाहों को फैला लिया।
‘क्या अब तुम मुझे जाने दोगी?’ उस आदमी ने पूछा, लेकिन होलिका ने उसकी बात अनसुनी कर दी और आगे बढ़ गई। पहरेदारों के पास से गुजरते हुए उसने फुसफुसाकर उनसे कहा, ‘इसे शहर से बाहर ले जाओ और मार डालो।’
उनमें से एक ने कहा, 'महामहिम, क्या उन्होंने अभी-अभी महत्वपूर्ण जानकारी का खुलासा नहीं किया?'
‘और इसीलिए मैं उसे मरवाना चाहती हूँ,’ उसने काजल से सने चौड़े-चौड़े आँखों में आग लिए कहा, और उस उद्दंड सिपाही को घूरती रही जिसने उसके आदेशों पर सवाल उठाने की हिम्मत की थी। ‘अगर गलती से भी उसने अपना मुँह खोला, तो वह इस मिशन को खतरे में डाल सकता है।’
‘ठीक है, मेरी मालकिन,’ गार्ड हिलने लगा तभी होलिका ने उसकी गर्दन पकड़ ली। 'मेरे फैसले पर दोबारा सवाल मत उठाना।'
उसने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया।
होलिका आह भरते हुए उसे छोड़कर जेल से बाहर चली गई। उसके और भी पहरेदार जेल के बाहर तैनात थे।
उनमें से एक ने आगे आकर कहा, 'महामहिम, जेल के द्वार के बाहर एक अतिथि आपका इंतजार कर रहा है।'
'कौन?'
‘सिम्हिका।’
‘ठीक है, धन्यवाद।’
हे भगवान, मैं तो इसके बारे में पूरी तरह से भूल ही गया था।

होलिका द्वार से बाहर निकली। उसने सामने जगमगाती शहर की रोशनी देखी और मंत्रमुग्ध होकर उसे निहारने लगी। उसने मुड़कर देखा तो उसके बगल में गोल आँखों वाली, सरल मुस्कान वाली और कोहनी तक चूड़ियाँ पहने एक युवती खड़ी थी।
सिम्हीका।
‘उह,’ होलिका ने झिझकते हुए अपनी बाहें फैलाकर गले लगाने की पेशकश की।
सिम्हीका ने कंधे उचकाए और पीछे हट गई।
'मां, आपको ढूंढने में मुझे बहुत समय लग गया।'
मुझे माफ करना। मैं... मैं व्यस्त था।
‘क्या आज भी?’
सिम्हीका असल में होलिका की बेटी नहीं थी, लेकिन दोनों ने साथ में इतना समय बिताया था कि एक-दूसरे को परिवार का हिस्सा मानने लगी थीं। बहुत समय पहले, होलिका ने सिम्हीका को वेश्यालय में काम करते देखा था। उस लड़की पर दया करके उसने उसे पढ़ने में मदद करने की पेशकश की, जिसके बाद दोनों करीब आ गईं। सिम्हीका अब भी वेश्यालय में काम करती थी, लेकिन वेश्या के रूप में नहीं - वह सफाईकर्मी थी।
होलिका को यह काम मंज़ूर नहीं था। वह चाहती थी कि सिम्हीका महल में वार्डन या कोई और काम करे, लेकिन सिम्हीका ने मना कर दिया। उसने कहा कि वेश्यालय वह जगह थी जहाँ उसकी सगी माँ अपनी हिंसक मृत्यु तक काम करती थी। और सिम्हीका वहीं रहना और काम करना चाहती थी जहाँ उसकी माँ काम करती थी। बेशक, आम लोगों के अनुसार वह रहने के लिए एक घृणित जगह थी, लेकिन वेश्यालय ही वह जगह थी जहाँ महिलाओं को कमाने की आज़ादी होती थी, खासकर निम्न वर्ग की महिलाओं को जिन्हें कोई और काम नहीं मिलता था।
होलिका को यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं था कि सिम्हीका ऐसी जगह काम करे जहां महिलाएं पुरुषों की अनुयायी हों, लेकिन उसने सिम्हीका के फैसलों का सम्मान किया और उसे काम जारी रखने दिया।
‘मुझे पता है आज तुम्हारा जन्मदिन है, और इसके लिए मैं बहुत माफी मांगती हूं। मैं तुम्हारा उपहार लाई थी।’ होलिका आगे आई, अपनी बेटी का हाथ पकड़े हुए और प्यार से उसकी ओर देखते हुए।
सिम्हीका मुस्कुराई। 'सच में?'
'हां। यह मेरे कमरे में है। चलो जाकर इसे ले आते हैं, ठीक है?'

'ज़रूर।'
होलिका ने अपनी उंगलियां चटकाईं और उसके रक्षक उसके पीछे जाने के लिए तैयार होकर पास आ गए।
‘क्या उन्हें हमारे साथ आना ही होगा?’ सिम्हीका ने पूछा।
होलिका ने एक पल सोचा। सिम्हीका के अलावा शहर में उसे कोई प्यार नहीं करता था, और उसे सुरक्षा की ज़रूरत थी।
लेकिन आज का दिन खास था।
क्या आपको उनसे परेशानी होती है?
'कुछ हद तक, हाँ। मैं तुम्हारे साथ कुछ अच्छा समय बिताना चाहता हूँ... अकेले में।'
होलिका मुस्कुराई। उसने अपने पहरेदारों को जाने का इशारा किया और वे तुरंत तितर-बितर हो गए। वे चलने लगे और होलिका ने सिम्हीका के कंधे पर हाथ रख दिया। लेकिन वह महल के उस बूढ़े आदमी के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थी जिसका ज़िक्र कालाबाज़ार के व्यापारी ने किया था। वह कौन हो सकता है? महल में कई बूढ़े मंत्री थे। नारद के बाल भी सफ़ेद थे, है ना?
मुझे नारदा से बात करनी चाहिए, उनसे कुछ सवाल पूछने चाहिए।
सिम्हीका ने होलिका का ध्यान वापस आकर्षित करने के लिए खांसा।
यह बाद में भी हो सकता है। मुझे आज सिम्हीका पर ध्यान देना चाहिए।
‘मुझे तुम्हें कुछ बताना है,’ सिम्हिका ने कहा।
'ज़रूर।'
'मुझे लगता है की मुझे प्यार हो गया है।'
‘सच में?’ होलिका हंस पड़ी, हालांकि उसे डर था कि वह आदमी कौन है। वह नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी किसी और पुरुषवादी, पतित व्यक्ति के साथ रहे। ‘कौन है?’
वह मुस्कुराई, उसका चेहरा लाल हो गया। 'वह महल में काम करता है। उसका नाम विपरीतित है और वह राजकुमार का... मतलब... राजा प्रहलाद का राजरक्षक है।' होलिका ने मुंह बनाया। वह नहीं चाहती थी कि सिम्हीका की शादी एक नीच कुल के लड़के से हो। लेकिन उसने अपनी नापसंदगी भी ज़ाहिर नहीं की। इसके बजाय, उसने कहा, 'मैं इस सज्जन से मिलने के लिए उत्सुक हूं।'

17

नरसिंह

‘तुम्हें तो सबसे अच्छी तरह पता होना चाहिए कि यह गलत है।’ भैरव नारा के सामने खड़ा था, जो अपनी धोती के ऊपर अपनी चमड़ी पहन रहा था।
‘मेरे स्वामी,’ नारा ने आह भरी। उसकी पसलियों में दर्द हो रहा था। पिछले युद्ध के कारण उसका पूरा शरीर पीड़ा से भरा हुआ था। ‘यही सही काम है। मुझे अपने स्वाम का सम्मान वापस जीतना होगा।’
भैरव ने सिर हिलाया। 'किसलिए?'
‘ताकि मैं उनका नेतृत्व कर सकूँ। मुझे पता है कि मैं मृग से बेहतर कर सकता हूँ। मुझे डर है कि वह समूह को कैसे संभालता है, वे कितनी शराब पीते हैं, वे कितनी मात्रा में सोमा लेते हैं और भगवान विष्णु की कृपा से, मृग के कुछ बेहद बुरे विचार हैं,’ नारा ने समझाया। ‘वह नेता नहीं है।’
'क्या आप?'
नारा को इसका जवाब देना नहीं आता था। 'मुझे नहीं पता। लेकिन मुझे इतना जरूर पता है कि मैं उससे बेहतर हूं।'
‘अगर अंधका फिर से हमला कर दे तो क्या होगा और अगर उस समय आप हमारी मदद करने के लिए जीवित न रहें तो क्या होगा?’
नारा खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'तो क्या तुम्हें इतना यकीन है कि मैं हार जाऊंगी?'
‘नारा, खुद को देखो।’ भैरव ने नारा के कंधे पर हाथ रखा। ‘ऐसा मत करो। मैं इसे रोक नहीं पाऊंगा। यह आत्महत्या है। भगवान विष्णु की कृपा से, मुझे आशा है कि वे तुम्हारी रक्षा करेंगे।’
नारा मुस्कुराई। 'क्या वह अच्छाई की रक्षा नहीं करता?'
‘आपको ऐसा क्यों लगता है कि आप अच्छे इंसान नहीं हैं?’
नारा इस बात पर विचार कर रहा था। उसे पता नहीं था। उसने इस जीवन में कई भयानक काम किए थे। चेंचेन के गांव वालों को मारना। विराट को चोट पहुंचाना। शांतनु को चोट पहुंचाना। इतने सारे निर्दोषों को चोट पहुंचाना – सब कुछ

युद्ध के नाम पर। लेकिन उसने तो अच्छाई की तरफ से ही लड़ाई लड़ी थी, है ना? 'मैं हार नहीं मानूंगा,' उसने भैरव से कहा।
भैरव ने निराशा से अपने जबड़े भींच लिए। फिर उसने अपना सिर नीचे किया और झोपड़ी से बाहर चला गया।
‘वह सही कह रहा है,’ चेनचेन ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। ‘मैंने उसकी बात सुनी, और यह आत्महत्या है।’
‘तुम्हें खुश होना चाहिए कि तुम्हारे गांव पर हमला करने वाला व्यक्ति अब मारा जाने वाला है,’ उसने आह भरते हुए कहा।
उसने उसकी ओर देखा, उसकी आँखों में भावहीनता थी।
उसने उससे पूछा, 'उस दिन तुमने अपनी जान कैसे बचाई?'
‘मैं बाकी लड़कियों के साथ कुएं में छिप गई थी। दुर्भाग्य से, सबसे ज्यादा नुकसान बुजुर्गों को हुआ।’
‘क्या आपके माता-पिता नहीं थे?’
उसने सिर हिलाया। 'मेरे पिता ने मेरी माँ को बहुत जल्दी छोड़ दिया था और फिर हमले से कुछ साल पहले एक बीमारी से उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें पर्याप्त चिकित्सा देखभाल नहीं मिली। और यही कई कारणों में से एक है कि मैं आज एक नर्स हूँ।'
‘क्या तुम मुझसे नफरत करते हो?’ उसने पूछा।
उसने ऊपर देखा। वह इतनी करीब थी कि नारा उसकी खुशबू महसूस कर सकती थी। उससे ताज़ी लैवेंडर की खुशबू आ रही थी।
'नहीं।'
'क्यों नहीं?'
‘मैं ऐसा क्यों करूँ?’ वह रुकी, उसकी उंगलियाँ उसकी छाती पर थीं। ‘तुम्हारी पसलियाँ टूटी हुई हैं।’
‘मैं सिंह जाति का हूं। मैं उपचार करता हूं।’ उनकी जनजाति तेजी से ठीक हो गई। ‘तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया,’ उसने उससे पूछा।
चेनचेन पीछे हट गई और दीवार से टेक लगाकर खड़ी हो गई, अपनी बाहें मोड़ते हुए। ‘मैं तुमसे नफरत नहीं करती क्योंकि…’ उसने झुंझलाहट भरे लहजे में कहा, ‘मुझे नहीं पता! उस समय तो करती थी। लेकिन अब, मैं तुम्हें दुश्मन नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान के रूप में देखती हूँ। तुम्हारा अतीत तुम्हें

परिभाषित नहीं करता। तुम्हारा वर्तमान तुम्हें परिभाषित करता है। तुम अभी जो करोगे, वही तय करेगा कि तुम भविष्य में कैसे इंसान बनोगे।’
‘क्या तुम्हें लगता है कि मैं जीतूंगा?’ उसने उससे पूछा।
क्या आपको खुद पर विश्वास है?
नारा ने एक पल सोचा और फिर सिर हिलाया। 'हाँ।'
'अच्छा। तो मुझे विश्वास है कि तुम जीतोगे।'
नारा मुस्कुराई और उसने भी मुस्कुरा दिया। 'क्या तुम मेरे लिए कुछ कर सकती हो?' उसने पूछा।
'हां,' उसने बिना झिझक के कहा।
क्या आप अपना माथा मेरे माथे से छू सकते हैं?
'क्यों?'
'यह हमारी सिम्हा संस्कृति में प्रार्थना की अभिव्यक्ति है - समर्थन की अभिव्यक्ति।'
उसने पलकें झपकाईं और फिर आगे बढ़ी। वह झुकी और नारा भी झुक गया। उनके माथे एक दूसरे से छू गए और एक पल के लिए नारा को उसकी गर्माहट, उसकी त्वचा, उसकी आत्मा और उसके जीवन का एहसास हुआ। वह मुस्कुराते हुए पीछे हट गया। 'धन्यवाद।'
उसने सिर हिलाया और वह झोपड़ी से बाहर निकल गया, अपनी मांसपेशियों को फैलाते हुए, लेकिन इस हद तक नहीं कि उसके शरीर को चोट लगे।
बाहर, उसने देखा कि हर तरह के लोग घात लगाकर बैठे थे। मृग एक छोटे से गड्ढे में खड़ा था। वह भी अपनी ही त्वचा में था।
नारा और मृग एक-दूसरे को घूरते रहे, और फिर नारा ने भैरव की ओर देखा, जो असहमति में अपना सिर हिला रहा था।
फिर उसने अपने उन साथियों को देखा, जिन्होंने उस पर से विश्वास खो दिया था।
वे सब आसपास खड़े होकर मुस्कुरा रहे थे। स्पष्ट रूप से वे सभी मृग का समर्थन कर रहे थे।
नारा ने मृग को नीले रंग के तरल पदार्थ से भरी एक शीशी निकालते हुए देखा।
यह सोमा था। और इसका अत्यधिक उपयोग करना गलत था। हालांकि यह शरीर की आंतरिक शक्ति को बढ़ाता है, लेकिन इसकी अधिक मात्रा हानिकारक हो सकती है और आपको पागल कर सकती है।

‘मुझे लगा था कि तुम भाग जाओगे, बूढ़े आदमी,’ मृग मुस्कुराया, और झुंड ने समर्थन में दहाड़ मारी। ‘चिंता मत करो। मैं तुम्हारी मौत जल्दी कर दूंगा,’ मृग ने आगे कहा। ‘आखिरकार, तुम कभी हमारे राजा थे। मुझे कम से कम तुम्हें कुछ सम्मान तो देना ही होगा।’
नारा ने सिर हिलाया। ‘जानते हो, मैं इतना बूढ़ा नहीं हूँ और मुझे बहुत बुरा लगता है कि तुम मुझे बार-बार बूढ़ा कहते हो, बेटे।’ उसने चेनचेन की ओर देखा, जो उसकी बात सुनकर मुस्कुराया। ‘और तुम अपनी उम्र से काफी बूढ़े दिखते भी हो।’
मृग ने गुस्से से नाक सिकोड़ी। 'आज तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, बूढ़े आदमी।'
‘बहुत हो गई मजाक-मस्ती, लड़के। मुझे दिखाओ कि तुम क्या कर सकते हो।’
मृग ने जरा भी संकोच नहीं किया। वह नारा की ओर दौड़ा, जिसने अपने हाथ आगे कर लिए। मृग ने उसे दो बार मुक्का मारा, लेकिन नारा उसके वारों को रोकता रहा और पलटवार करने के सही मौके का इंतजार करता रहा...
जैसे ही उसने यह देखा, उसने मुक्का मारा और मृग के चेहरे पर जा लगा। मृग बर्फ पर गिर पड़ा, खून थूकते हुए, और फिर से खड़ा हो गया।
उसकी नज़र नारा की पट्टियों से लिपटी पसलियों पर पड़ी और वह मुस्कुराया। वह दौड़ा और अपने सिर से नारा की छाती पर ज़ोरदार प्रहार किया।
मृग के आगे बढ़ने पर नारा पीछे गिर गया और मृग ने उसके चेहरे पर वार करने के बजाय, अपने पंजों से नारा की पसलियों पर वार करना शुरू कर दिया।
उसके शरीर में दर्द की लहरें उठने लगीं। नारा की आँखों में लगभग आँसू आ गए थे। उसने चेनचेन की ओर देखा, जो चिंता से स्तब्ध लग रही थी।
नारा ने गहरी सांस ली और अपनी पूरी ताकत लगाकर मृग का गला पकड़कर उसे पीछे धकेल दिया। नारा अपने पैरों पर खड़ा हुआ, उसका एक हाथ उसकी पसलियों पर टिका हुआ था।
‘तुम कमजोर हो, नारा। तुम अब सिंह नहीं रहे,’ मृग ने उपहास किया।
‘तुम्हें समझ नहीं आ रहा।’ नारा आगे बढ़ा, अपने पंजे फैलाए हुए। ‘यह सिर्फ एक चुनौती नहीं है। यह मेरा हक वापस लेने का मौका है।’ वह रुका। ‘तुम्हारे लिए, मैं मृत्यु का देवता हूँ और मेरे पंजे ही मेरी दरांती हैं।’
फिर नारा ने मृग पर झपट्टा मारा और उसके चेहरे पर पंजे गड़ा दिए। एक पल के लिए मृग अचंभित सा लग रहा था, फिर वह अपने पंजों का इस्तेमाल करने की

उम्मीद में आगे बढ़ा, तभी नारा तेज़ी से मुड़ा और अपनी पसलियों के आसपास की मांसपेशियों पर ज़ोर डालते हुए मृग की बांह को पकड़कर मरोड़ दिया। उसने मृग को रिंग के पार घसीटा, लेकिन मृग खड़ा हो गया और हंसने लगा।
'वह किसके बारे में था?'
नारा मुस्कुराई। 'मैंने तुम्हारी ब्राचियोरेडियलिस मांसपेशी को मरोड़ दिया है।'
‘यह क्या है?’
'कुछ समय के लिए आप अपना हाथ नहीं हिला पाएंगे,' नारा ने कहा, उनके पिछले जीवन में एक चिकित्सक के रूप में प्राप्त शिक्षा यहाँ काम आ रही थी। जैसे ही मृग को नारा की करतूत का एहसास हुआ, नारा उसकी ओर दौड़ा और इस बार मृग की पसली पर जोरदार प्रहार किया। इस प्रहार से मृग पीछे गिर पड़ा। अगले ही पल, नारा ने उसे हवा में उछालकर भीड़ के बीच से उस झोपड़ी तक पहुँचा दिया, जहाँ एक मशाल नीचे लटकी हुई थी।
‘मैं बूढ़ा नहीं हूँ, मृगसिंह,’ नारा ने दांत पीसते हुए कहा। ‘मैं अनुभवी हूँ।’
वह मृग के पास गया और अपना हाथ आगे बढ़ाया।
उन्होंने कहा, 'अब मुझे प्राइड का नेतृत्व करने दो।'
मृग ने नारा को घोर भय से देखा। किसी को भी विश्वास नहीं होता कि नारा का पलड़ा भारी हो सकता है। लेकिन उसने तुरंत खुद को संभाला और अपना सिर हिलाया।
‘कभी नहीं!’ वह दहाड़ा, और फिर उसने लटकती हुई मशाल को अपने पंजों से पकड़कर नारा पर फेंक दिया।
नारा उससे बच निकली, अंगारे फटे और धुआं छोड़ते हुए बर्फ में मिल गए।
एक तीर हवा में तेजी से आया और मृग के सिर में जा लगा।
नारा ने मुड़कर देखा कि तीर कहाँ से आया था और भैरव को देखा... लेकिन शिव का इससे कोई लेना-देना नहीं लग रहा था। फिर उसकी नज़र चेनचेन पर पड़ी, जिसने अपने बगल में खड़े एक हैरान नाग रक्षक से धनुष छीन लिया था। नारा मुस्कुराया और चेनचेन ने कंधे उचका दिए।
‘उसने नियमों का उल्लंघन किया। बाहरी हथियार ले जाने की अनुमति नहीं थी,’ उसने चिल्लाकर कहा।

नारा ने मृग का बेजान शरीर वहाँ पड़ा देखा। उसने कामना की कि उसके कबीले का कोई सदस्य अपनी जान न गंवाए, लेकिन अंततः मृग के हठ ने ही उसकी जान ले ली। वह चेनचेन को धन्यवाद देना चाहता था और समय आने पर ज़रूर देगा। अब वह अपने झुंड की ओर चल पड़ा, जो सैकड़ों की संख्या में अपनी खाल पहने खड़ा था। नारा दर्द में था, उसकी त्वचा बालों से भरी और तैलीय थी। और उसके बाल अब पहले जैसे शाही सुनहरे रंग के नहीं थे। लेकिन फिर भी उसमें सिंह की आत्मा समाई हुई थी।
‘मैं अपने लोगों से क्षमा चाहता हूँ कि मैंने युद्ध बीच में ही छोड़ दिया। लेकिन मैं अपनी गलतियों को स्वीकार करता हूँ। मैं यहाँ आपको और खुद को यह साबित करने आया हूँ कि मैं शक्तिशाली हूँ। मुझमें अभी भी जोश बाकी है। और अब, मुझे आपकी वफादारी की ज़रूरत है। आपको इस मुश्किल समय में मार्गदर्शन करने के लिए एक बेहतर नेता की ज़रूरत है। भगवान भैरव…’ उन्होंने शिव की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘उन्हें हमारी मदद चाहिए और हमें पूरी वफादारी और अनुशासन के साथ उनकी मदद करनी चाहिए।’
इसके बाद गहरी खामोशी छा गई।
नारा ने चेनचेन की ओर देखा, जो अपने धनुष के साथ अनिश्चित लग रही थी। लेकिन तभी उसने एक धमाका सुना... एक जोरदार आवाज।
यह सीने पर जोर से गिरने की आवाज थी।
और धीरे-धीरे, उसके झुंड का हर सदस्य अपनी छाती पीटने लगा। शोर बढ़ता गया और गूंजने लगा, साथ ही दहाड़ें और चीखें भी सुनाई देने लगीं।
नारा समझ गया कि इसका क्या मतलब है। यह स्वीकृति का संकेत था। उसने भी अपनी छाती थपथपाई और दहाड़ मारी। उसने भैरव को देखा, जो मुस्कुराते हुए खड़ा था।
जब शोर और धमाकों की आवाजें थम गईं, तो वह पीछे हट गया और चेनचेन की ओर चल पड़ा।
‘धन्यवाद,’ उसने उससे कहा।
चेनचेन ने कुछ नहीं कहा। उसने अपना सिर आगे झुकाया। नारा समझ गया कि वह क्या कर रही है, इसलिए वह भी आगे झुक गया। वह एक बार फिर उसकी आत्मा को महसूस कर सकता था और इस बार, उसे उम्मीद थी कि वह भी उसकी आत्मा को महसूस कर सकती है। शायद उसने किया भी, क्योंकि जब वे एक-दूसरे के करीब खड़े थे, तो उसके हाथों ने उसके हाथों को जकड़ लिया।

और लंबे समय बाद पहली बार...
नारा को हीरो जैसा महसूस हुआ।

18

हिरण्यकश्यप

उसने कयाधु को देखा।
वह वहां खड़ी थी, अपने बच्चे को गोद में लिए हुए।
हिरण्य मुस्कुराते हुए आगे बढ़ा। यह एक बगीचा था, और उसे याद आया कि यह बगीचा उसके महल का ही हिस्सा था। कयाधु के घुंघराले बाल कंधों पर लहरा रहे थे और जब उसने ऊपर देखा, तो उसने अपने पति की मुस्कान का जवाब दिया।
‘क्या हुआ?’ उसने पूछा।
हिरण्य कुछ कहना नहीं चाहता था। उसकी चुप्पी ही उसके सामने के सुंदर दृश्य को बयां कर रही थी। उसने कहा, 'तुम्हारा प्रसव बहुत कठिन था, मेरी प्रिय। महल में घूमने के बजाय तुम्हें आराम करना चाहिए।' प्रहलाद का जन्म कुछ ही दिन पहले हुआ था।
‘मेरे प्यारे बंजन,’ उसने हिरण्य के बचपन के नाम का जिक्र करते हुए कहा, ‘तुम्हें मेरे बारे में चिंता करना बंद करना होगा। यह मत भूलो कि मैं भी तुम्हारी तरह ही मजबूत हूं।’
हिरण्य मुस्कुराया और आगे झुककर अपनी पत्नी के होंठों को धीरे से चूमा। 'मुझे पता है तुम हो। मुझे आज भी याद है जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था।'
‘मैं उच्च कुल का था और तुम निम्न कुल के थे। हमारी मुलाकात तब हुई जब मैं अपने पिता के साथ बाजार आया था,’ कायधु ने कहा। ‘मुझे वह सब अच्छी तरह याद है। मैंने तुम्हें थके हुए चेहरे के साथ हमें फल बेचते देखा था। तुम लगभग मरणासन्न लग रहे थे।’

उन्होंने पाताल में असुरों की जीवनशैली का जिक्र करते हुए कहा, “शुक्र है कि हमारी संस्कृति में, किसी व्यक्ति का कर्म उसे उसकी जन्मजात जाति से ऊपर उठा सकता है और उसे कुलीन या गुलाम बना सकता है। अन्यथा मैं एक खनिक का बेटा या फल विक्रेता ही बना रहता।”
‘और देखो तुमने कितनी सारी उपलब्धियां हासिल की हैं। तुम वाकई खास हो,’ उसने कहा।
हिरण्य मुस्कुराया। 'तुम तो बड़े ही अच्छे वक्ता हो।'
‘तुम्हें मुझमें क्या पसंद आया?’ कायाधु ने पूछा। ‘मैंने तुमसे यह सवाल कभी नहीं पूछा।’
‘मैं…उम…’ हिरण्य के होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई। ‘मुझे याद है कि एक बार आपने कुछ गुंडों की पिटाई की थी जिन्होंने आपको लूटने की कोशिश की थी।’
तो आपको यह बात पसंद आई कि मैं एक मर्द की तरह लड़ रहा था?
हिरण्य ने सिर हिलाया। 'लड़ने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को ही नहीं है। महिलाओं को भी अपनी मर्जी से कुछ भी करने का पूरा अधिकार है। और तुमने उस दिन मुझे यह साबित कर दिया कि तुम्हें पीछे हटने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।'
कयाधु ने सिर झुकाकर शिशु प्रहलाद की ओर देखते हुए सहमति में सिर हिलाया। ‘मैं चाहती हूँ कि वह एक अच्छे परिवार में पले-बढ़े, जहाँ वह स्त्रियों का आदर करे, संस्कृति का आदर करे और सत्य का साथ दे।’
'मेरे अंदर जितने भी गुण हैं,' हिरण्य मुस्कुराया और कायाधु ने उसे कोहनी से धक्का दिया।
और फिर अचानक कहीं से एक चाकू आया और उसने उसका गला काट दिया। खून हिरण्य पर बहने लगा, उसने अपनी बेजान पत्नी और खून से लथपथ शिशु को गले लगाया।
हिरण्य ने क्रोध से चीख मारी और चारों ओर देखा, तभी उसे हमलावर दिखाई दिया।
वह इंद्र था, जिसके हाथ में खून से सना चाकू था।
हिरण्य की आंखें अचानक खुल गईं और वह पसीने से तरबतर होकर उठ बैठा, उसने अपनी मुट्ठियां भींचीं और गुस्से में दीवार पर घूंसा मारा।
उस पर एक पतली सी दरार पड़ गई।
उसके भीतर क्रोध उबल रहा था, और वह खुद को शांत करने की कोशिश करते हुए अपने बिस्तर से कूद गया।

मैंने उसे एक मौका दिया, लेकिन इसके बजाय उसने मुझे धोखा दिया, समझौता तोड़ा और उसकी हत्या कर दी।
दांत पीसते हुए हिरण्य खिड़की तक गया और उसने सामने फैले अद्भुत रेगिस्तानी किले को देखा। विग्यासा एक मीनार में अपने कक्ष में तैनात था। किला विशाल था, उसका अपना क्षेत्र था और वह पहरेदारों से भरा हुआ था, पहरेदारों को प्रसन्न करने के लिए कई अप्सराएँ थीं और गंधर्व भोजन और पेय पदार्थ परोस रहे थे।
फिर उसने दानवों को देखा। उसने विशेष रूप से विग्यासा को दोनों दानवों को जगाने और किले के दोनों मुख्य द्वारों की रक्षा करने के लिए कहा था। पंद्रह फीट ऊंचे, हाथों में विशेष रूप से निर्मित गदाएं पकड़े हुए। उनके पास एक छोटा सा
उनके साथ राक्षसों की सेना तैनात की गई थी।
दानवों का रूप ही भयावह था - बिखरे बालों वाले, उभरी हुई नाक और झुकी हुई आँखों वाले; वे असाधारण रूप से मोटे थे, लेकिन उनके डंडों के एक ही वार से दुश्मन का चेहरा चूर-चूर हो जाता था।
दरवाजे पर दस्तक हुई।
‘अंदर आओ,’ हिरण्य ने कहा। वह नंगे बदन था, उसके घने बालों में से मांसपेशियां उभरी हुई थीं। उसकी मूंछें और लहराते बाल पसीने से भीगे हुए थे।
एक परिचित चेहरा अंदर झाँका।
‘मेरे आदमियों ने कुछ सुना,’ विग्यासा ने आह भरी और अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया। ‘उन्हें लगा कि भूकंप आया है। मुझे पूरा यकीन था कि यह तुम ही थे।
क्या तुम्हें बुरे सपने आ रहे हैं?’
हिरण्य ने बहुत समय पहले विज्ञान से अपने दुःस्वप्न के बारे में बात की थी।
‘मैं हमेशा करता हूँ। क्या बात है?’ उसने लेफ्टिनेंट से कहा।
‘पिछले हमले के बाद सब कुछ अच्छी तरह से सुरक्षित कर लिया गया है। मुझे यकीन है कि वे कुछ समय तक हमला करने के बारे में नहीं सोचेंगे,’ विग्यासा ने हस्ताक्षर किए।
‘आपको पहले भी पूरा यकीन था कि वे हमला नहीं करेंगे। लेकिन उन्होंने किया।
हम हार रहे हैं। अग्नि के पास हथियार हैं, और हम उसका मुकाबला नहीं कर

सकते। हमारे पास दानव थे, लेकिन अब भोजन और पेय पदार्थों की कमी के कारण वे हमारा मुकाबला करने में असमर्थ हैं।
युद्ध लड़ना।'
हिरण्य ने सिर हिलाया और विग्यासा की ओर देखा। “अब जब आप यहाँ हैं, तो मुझे मेरे भाई का कमरा दिखाइए। मैं तहखाना देखना चाहता हूँ,” उसने विग्यासा की कही बात याद करते हुए कहा।
विग्यासा ने सिर हिलाया। उन्होंने अपने होंठ सिकोड़े और हिरण्य को अपने पीछे आने का इशारा किया। हिरण्य उनके पीछे-पीछे मीनार के सुनसान गलियारों में चलने लगा, कमरों और भाले लिए खड़े पहरेदारों को पार करते हुए। अंत में, हिरण्य एक ऐसे दरवाजे पर पहुँचा जहाँ दो पहरेदार खड़े थे। हिरण्य को देखते ही उन्होंने झुककर प्रणाम किया और दरवाजे से मुँह मोड़ लिया।
विग्यासा ने हिरण्य को कमरे में प्रवेश करने का इशारा किया।
उन्होंने इशारों में कहा, 'मैं बाहर रहूंगा।'
हिरण्य ने सिर हिलाया और दरवाजा खोलकर एक बड़े कमरे में प्रवेश किया, जिसमें एक पलंग, एक चटाई जिस पर चिलम बिछी थी और बड़े-बड़े रैक पर किताबों के ढेर लगे थे। पूरा कमरा किताबों और पांडुलिपियों से भरा हुआ था, क्योंकि हिरण्यकश्यप को कला में हमेशा से रुचि थी, जबकि हिरण्यक्ष को किताबों में रुचि थी।
हिरण्य ने पलंग की ओर ध्यान दिया और एक हाथ से उसे उठा लिया। उसकी नज़र एक कालीन पर पड़ी। उसने पलंग को एक तरफ़ रख दिया और फिर कालीन को उठाया। वहीं वह छेद था जिसके बारे में विग्यासा ने बात की थी। उसका ढक्कन उठाते ही उसने नीचे जाने वाली सीढ़ी देखी।
हिरण्य ने पास पड़ी टॉर्च उठाई और सीढ़ियों से नीचे उतर गया। टॉर्च की रोशनी के अलावा चारों ओर घोर अंधेरा था। चारों ओर ग्रेनाइट की दीवारें थीं। हिरण्य को इस तरह का अंधेरा बिल्कुल पसंद नहीं था, लेकिन उसे हिम्मत जुटानी ही थी और गले में अटकी गांठ को निगलते हुए वह आगे बढ़ता रहा, उसका दिल तेजी से धड़क रहा था।
मेरे भाई के बिस्तर के नीचे एक गुप्त कमरा क्यों होगा?
यह सवाल उसे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा था, लेकिन उसे जल्द ही इसका जवाब मिल जाएगा। सीढ़ियों के नीचे पहुँचते ही उसने जो नजारा देखा, उससे वह

रोमांचित हो उठा। वह एक ऐसे कमरे में था जहाँ एक छोटी सी मेज थी जिस पर कागजों के ढेर लगे थे। दीवार पर भी कागज चिपके हुए थे।
मेरा भाई किस विषय पर शोध कर रहा था?
हिरण्य ने दीपक को मेज पर रखा और अखबार पढ़ने लगा।
ब्रह्माशास्त्र… वह भगवान ब्रह्मा के अजेय कवच का अध्ययन कर रहे थे… हिरण्य ने एक कागज पर बने कवच का चित्र देखा। यह निश्चित रूप से उसके भाई का ही चित्र था – बेतरतीब और देखने में बिल्कुल भी सुंदर नहीं, लेकिन सारी बारीकियां मौजूद थीं। कवच के केंद्र में एक रत्न जड़ा हुआ था। चित्र के नीचे एक पंक्ति लिखी थी, 'यह कौस्तभ मणि है जो भगवान ब्रह्मा के कवच को ऊर्जा प्रदान करती है।'
हिरण्य को एक और कागज मिला जिस पर लिखा था, 'इसमें मणि के समान संरचनात्मक शक्तियां हैं, जिसका उपयोग पशुपतास्त्र के लिए किया जाता था।'
हिरण्य ने सोचा, मोहिनी की कहानी।
यह कहानी भगवान भस्मासुर के समय की है, हिरण्य बंधुओं के आने और तबाही मचाने से कुछ साल पहले की। कहा जाता है कि असुर सोम चाहते थे – वह दिव्य पेय। देवताओं ने उनसे अनगिनत बार पराजित होने के बाद सोम का त्याग कर दिया था। उन्होंने मोहिनी को, जो एक अप्सरा और भगवान विष्णु का अवतार थीं, ठीक उसी नीच वराह की तरह जिसने अपने भाई की हत्या की थी, देवताओं और असुरों के बीच सेतु बनाया। उन्होंने कहा कि मोहिनी मंथन करेंगी जिससे असुर सबसे पहले सोम का पेय पिएंगे। दुर्भाग्य से, यह एक चाल थी। मंथन नकली था और उससे कुछ भी सार्थक नहीं निकला। यह सभी असुरों को एक जगह इकट्ठा करने का एक तरीका था, ताकि उन्हें जिंदा जलाया जा सके।
दुर्भाग्यवश, मोहिनी असुरों के साथ गृहस्थी में फंस गई और उसकी भी मृत्यु हो गई। उसकी अस्थियों से, मोहिनी के प्रेमी और मित्र भगवान रुद्र ने पांच शक्तिशाली मणि रत्नों का निर्माण किया। अवतार की अस्थियों से निर्मित होने के कारण, इन मणि रत्नों में साधारण हथियारों को ऊर्जा प्रदान करने की शक्ति थी। ऐसा ही एक हथियार पशुपतास्त्र था।
जैसे-जैसे हिरण्य पढ़ता गया, उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे ऐसा लगा मानो उसका भाई उससे बात कर रहा हो।

ब्रह्मास्त्र की रक्षा एक वीर आत्मा करती है जो मंदिर की रक्षा करती है। वह आत्मा यह सुनिश्चित करने के लिए वहां मौजूद है कि केवल सही व्यक्ति ही इस कवच को प्राप्त कर सके।
मैं हार गया क्योंकि इस जादुई कवच और उसकी सर्वोच्च शक्ति वाली तलवार को पाने के लिए, उस आत्मा द्वारा निर्धारित परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। ये परीक्षाएं आपकी मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्थिति को परखती हैं। यदि आप इन्हें पार कर लेते हैं, तो आपको कवच मिल जाएगा, अन्यथा आपको घर वापस भेज दिया जाएगा।
मैंने कई बार कोशिश की है, लेकिन यह मुश्किल है। यह एक चुनौती है। मुझे नहीं पता कि मैं अगली बार कब कोशिश करूँगा, लेकिन एमूशा (वराहा, वह सूअर!) को हराने के लिए मुझे यह कवच ढूंढना होगा जो मुझे किसी भी हमले से अजेय बना देगा।
दुर्भाग्यवश, यह केवल योग्य लोगों को ही प्राप्त है। और मैंने हर बार खुद को अयोग्य साबित किया है।
और यह गलत है क्योंकि यह कवच, यह तलवार ब्रह्मा द्वारा दानवों और असुरों के लिए छोड़ी गई थी।
हिरण्य ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
उसका क्या मतलब है? कवच असुरों के लिए क्यों छोड़ा गया था?
हिरण्य ने पन्ने पलटने शुरू किए और उसे एक और संदूक मिला जिसमें लिखे हुए कागज थे – ब्रह्मा का वर्णन – इल्लावर्ती के प्रथम पुरुष का एक अस्पष्ट चरित्र चित्रण, जिसने एक आदर्श जनजाति का नेतृत्व किया जिससे हर जनजाति विकसित हुई और आज जो है वह बनी। वहाँ एक वंशावली चार्ट भी था –
‘ब्रह्मा
इसके बाद मारियाची (पाताल में सप्तऋषि, धर्म/अधर्म की भविष्यवाणी के मूल प्रवर्तकों में से एक) ने पदभार संभाला।
इसके बाद कश्यप का स्थान लिया गया…
हिरण्य की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
इसके बाद …
हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप।'
हिरण्य ने कागज़ मेज पर फेंक दिए। सच्चाई उसे बुरी तरह से धराशायी कर गई।
अतः ब्रह्मा मेरे पूर्वज हैं।

हिरण्य ने कागज़ उठाए और खुद को हिम्मत देते हुए दोबारा पढ़ना शुरू कर दिया।
ब्रह्मा ने अपने प्रिय असुरों (मूल रूप से दैत्य कहलाते थे) के लिए कवच और तलवार छोड़ दी थी। सब कुछ तब बदल गया जब ब्रह्मा के दूसरे वंश, देव, इल्लावर्ती के उत्तर में स्थित स्वर्ग द्वीप पर चले गए और असुर पाताल लोक चले गए। वे अपने-अपने सप्तऋषियों के साथ चले गए और उनकी संतान बहुतायत में उत्पन्न हुई।
लेकिन मूलतः ब्रह्मा की मृत्यु के समय उन्होंने हमसे वादा किया था कि वे अपना कवच हमारे लिए छोड़ जाएंगे, और अब उस रहस्यमय आत्मा के कारण हम वह प्राप्त करने में असमर्थ हैं जो वास्तव में हमारा है।
मैं दोबारा ट्रायल्स में भाग लेने की कोशिश करता हूं, लेकिन हर बार जब मैं ऐसा करता हूं, तो पहेलियां बदल जाती हैं, और खेल मुझे भ्रमित कर देते हैं। मुझे उस दुष्ट आत्मा से जो कुछ भी सीखने को मिला, वह सब पता है। वह आत्मा प्राचीन है और हम नहीं जानते कि वह कहाँ से आई है, लेकिन उसका कुछ गहरा महत्व है। मैं जल्द ही उसकी पहचान जानना चाहता हूँ।
लेकिन अभी के लिए, मैं जाकर एक और कोशिश करूंगा। लेकिन अगर मैं ऐसा नहीं कर पाया, या अगर मैं ऐसा करने में असमर्थ रहा या ऐसा करने से पहले मुझे कुछ हो गया, तो मैं चाहता हूं कि मेरा भाई हिरण्यकश्यप कोशिश करे क्योंकि वह एक अच्छा आदमी है, एक अच्छा पिता है, एक अच्छा पति है। मुझे उम्मीद है कि वह ऐसा करेगा। मुझे उम्मीद है कि मैं जल्द ही उसे कवच की अपनी खोज के बारे में बताऊंगा।
और डायरी यहीं समाप्त हो गई।
हिरण्य ने दीपक उठाया और मेज से दूर हट गया। उसने ब्रह्मा मंदिर के नक्शे समेत ज़रूरी कागज़ात अपने साथ लिए और सीढ़ियों की ओर चल पड़ा, उसके मन में विचारों का बवंडर चल रहा था। वह युद्ध हार रहा था। और उसके पास असंभव को करने के अलावा कोई चारा नहीं था – वह काम जो उसका भाई नहीं कर पाया था। अगर मेरा भाई कवच तक नहीं पहुंच सका, तो मैं कैसे पहुंच पाऊंगा?
लेकिन फिर, वह कोशिश किए बिना हार नहीं मान सकता था।
आखिरकार, उसका अंतिम लक्ष्य इंद्र को मारना था। और अब उसे पता था कि यह कैसे करना है। वह कवच को खोजने जा रहा था।

और वह यह सुनिश्चित करने जा रहा था कि वह ब्रह्मा की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाए!

19

प्रहलाद

उसे धोखा महसूस हुआ।
मैं इसके बारे में कुछ करूंगा।
प्रहलाद अपने कमरे में बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि जिस गुरु ने उसे शिक्षा दी और पाला-पोसा, वही एक आतंकवादी संगठन का हिस्सा है, इस बात पर उसे कैसा महसूस करना चाहिए।
लेकिन क्या वे सचमुच आतंकवादी हैं?
वे एक तरह से कानून अपने हाथ में लेने वाले लोगों की तरह थे – जनता की भलाई करते थे और लालची व अभिजात वर्ग को दंडित करते थे। लेकिन इसका मतलब यह भी था कि वह भी उनके निशाने पर होगा, क्योंकि वह राजा का पुत्र था और वर्तमान में कार्यवाहक राजा था।
अपनी इस खोज के बारे में वह क्या कर सकता था? वह दुविधा में था। वह विष्णुसेना के उद्देश्य में विश्वास रखता था। अब उसे यह बात अच्छी तरह समझ आ गई थी। और उनके काम के नैतिक पहलू को समझने का एक कारण उसके पिता की शिक्षाएँ भी थीं।
उन्होंने उस समय की एक घटना को याद किया जब वे अदालत की आंतरिक कार्यप्रणाली को समझने लायक उम्र के हो गए थे।
पिता और प्रहलाद उस हॉल में थे, जहाँ सोने और नीलम का सिंहासन विराजमान था। हिरण्य के हाथ प्रहलाद के कंधों पर थे। 'तुम जल्द ही राजा बनोगे।'
‘मुझे पता है। अनुहरद के बाद, बेशक,’ प्रहलाद ने जवाब दिया।
‘अनुहराद बहुत उद्दंड है, मेरा बच्चा। वह मुझसे बड़ा है, लेकिन फिर भी उद्दंड है। मैं उसे एक मौका दे सकता हूँ, लेकिन अभी नहीं।’
लेकिन मुझे लगा था कि हम पाताल के लिए रवाना होंगे।

‘हम करेंगे।’ हिरण्य अपने पुत्र को देखते हुए घुटनों के बल बैठ गया, जबकि पृष्ठभूमि में सिंहासन कमरे पर अपना प्रभुत्व जमाए खड़ा था। ‘तुम्हारी माता अब हमारे साथ नहीं हैं, इसलिए मेरे पास यहाँ रहने का कोई कारण नहीं है। लेकिन इस देश को एक योग्य शासक की आवश्यकता है। यदि देवताओं के हाथ इस पर लग गए, तो वे इसे नष्ट कर देंगे।’
लेकिन हम असुर हैं। वे हमें राक्षस कहते हैं।
“मेरे बच्चे, किसी राक्षस को उसके मूल स्थान के कारण नहीं, बल्कि उसके कर्मों, उसके कार्यों और उसकी पसंद के कारण राक्षस कहा जाता है। कोई कह सकता है कि तुम्हारी माता की हत्या करके इंद्र भी अब राक्षस बन गया है।” वह मुस्कुराया। “याद रखना, एक अच्छा इंसान हमेशा अपने आसपास बुराई को पहचान लेता है। अब, वह इसके खिलाफ कुछ करता है या नहीं, यह उस पर निर्भर करता है।” क्या तुम अच्छे आदमी हो?
हिरण्य ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'शायद तुम मुझे कुलीन कह सकते हो, मेरे बच्चे। तुम्हारी माँ की मृत्यु ने मेरे भीतर की सबसे बुरी प्रवृत्ति को उजागर कर दिया है। मुझे इस साम्राज्य के लिए, इस सिंहासन के लिए ऐसे काम करने पड़ते हैं जिन पर मुझे गर्व नहीं है। लेकिन तुम्हें नहीं। तुम्हारे पास ऐसा करने का कोई कारण नहीं है। मैं पाताल की गलियों का एक अशिक्षित, उद्दंड व्यक्ति हूँ, लेकिन तुम... तुम्हारी परवरिश अलग तरह से हुई है।' क्या मुझे साम्राज्य के लिए नियमों को तोड़ना होगा? क्या मुझे जीवित रहने के लिए अच्छे को नुकसान पहुंचाना होगा?
‘यह एक कठिन प्रश्न है। मेरा मानना है कि सही होना व्यक्तिपरक होता है। मुझे यकीन है कि एक दिन ऐसा आएगा जब आपको एक दुविधा का सामना करना पड़ेगा – साम्राज्य को चुनना या सही को चुनना। और मैं आपको यह नहीं बता सकता कि आपको क्या चुनना है। मैंने बहुत सारी लड़ाइयाँ देखी हैं। आप भी देखेंगे और आपको उससे निपटना होगा।’
आप क्या चुनते?
‘मेरा साम्राज्य किसी भी दिन जीत जाएगा। हमें यहाँ तक पहुँचने में वर्षों लग गए। लेकिन तुम एक अलग शासक बनोगे।’
‘लेकिन पिताजी,’ प्रहलाद ने धीमी आवाज़ में कहा, ‘मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं अच्छा हूँ?’

‘तुम नहीं करोगे। दूसरे तुम्हारे लिए यह तय करेंगे। लेकिन अच्छाई, मेरे बच्चे, ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम सीखते हो या जन्म से पाते हो, बल्कि यह ऐसी चीज है जिसे तुम चुनते हो।’
प्रहलाद वास्तविकता में लौट आया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि दुष्टों को दंड देने की यह तीव्र इच्छा कहाँ से उत्पन्न हुई। उसने उस व्यापारी को मार डाला था, लेकिन उस व्यापारी का भी परिवार हो सकता था।
मैंने एक बच्चे को पिताविहीन कर दिया।
और अब, अपराध करने के बाद, उसे नारद के विश्वासघात से चोट पहुंची।
और धृति ने उसे चोट पहुंचाई थी।
लेकिन वे सही काम कर रहे हैं... और मेरे लोग, मेरे सैनिक... वे गलत हैं।
असुर साम्राज्य महत्वपूर्ण था। सिंहासन महत्वपूर्ण था। लेकिन क्या यह सही होने, अच्छाई और दयालुता से भी अधिक महत्वपूर्ण था? प्रहलाद को नहीं पता था। उसके पास इन सवालों के जवाब नहीं थे।
उसके दरवाजे पर दस्तक हुई और उसने देखा। माथे को सहलाते हुए उसने अंदर आने वाले व्यक्ति को इशारा किया।
यह नारद थे। प्रहलाद ने उन्हें बुलाया था, और वे आखिरकार आ गए थे।
‘मेरे स्वामी, जी हाँ, क्या बात है?’
प्रह्लाद ने दांत पीसते हुए नारद को इशारे से कुर्सी की ओर इशारा किया। नारद आगे बढ़े और हमेशा की तरह विनम्रता से बैठ गए, और मासूमियत भरे भाव से प्रह्लाद को देखने लगे। प्रह्लाद को नहीं पता था कि उनका यह बूढ़ा, झुका हुआ शरीर विष्णुसेना की गतिविधियों के पीछे के मास्टरमाइंड का छल था या नहीं।
मैं आपसे यही पूछना चाह रहा था।
‘क्या, मेरे स्वामी?’
प्रहलाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। 'क्यों?'
‘तुम्हारा मतलब क्या है, क्यों?’
‘तुम अपने आदमियों के साथ मिलकर सरकार के खिलाफ साजिश क्यों रच रहे हो?’ नारद का चेहरा भावहीन बना रहा। 'मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं, महाराज।'
‘मैं जानता हूँ कि मेरे पिता परिपूर्ण नहीं हैं। मैं जानता हूँ कि यह साम्राज्य परिपूर्ण नहीं है। लेकिन कृपया, हम इस पर चर्चा कर सकते हैं, हम

मिलकर मेरे पिता द्वारा किए गए कार्यों को सुधार सकते हैं। अराजकता फैलाकर आप मेरे पिता द्वारा स्थापित और मेरे द्वारा आगे बनाए जाने वाले कार्यों का अपमान कर रहे हैं।’
नारद स्तब्ध रह गए। 'लेकिन हे प्रभु! मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं।'
‘मैंने तुम्हें और धृति को देखा। मैं तुम दोनों के बारे में जानता हूँ। और मैंने तुम्हें यहाँ विष्णुसेना के साथ सुलह का प्रस्ताव रखने के लिए बुलाया था। मैं नहीं चाहता था कि होलिका तुम्हें पकड़ ले, क्योंकि वह तुम्हें और तुम्हारे अनुयायियों को मार डालेगी। पहले तो मैंने तुम सबको जेल में डालने का सोचा था, लेकिन होलिका तुम्हें भी वहाँ पहुँचा देगी, और मैं नहीं चाहता... चाहे तुमने कितनी भी गद्दारी की हो, मैं नहीं चाहता कि तुम्हें चोट लगे। या धृति को चोट लगे।’ वह चुप हो गया।
नारद ने अपनी सफेद भौंहें ऊपर उठाईं। 'युवक राजा, आपके मन में क्या है?' उन्होंने पूछा, उनके शब्दों में उनके अपराधबोध की अनकही स्वीकारोक्ति थी। एक क्षण के लिए, प्रहलाद यह देखकर अचंभित रह गया कि नारद ने कितनी आसानी से अपना व्यवहार एक अनाड़ी बूढ़े व्यक्ति से एक दृढ़ निश्चयी और एकाग्र व्यक्ति में बदल लिया था।
‘क्यों? ऐसा क्यों कर रहे हो?’ प्रहलाद ने फिर पूछा।
‘मेरे अपने कारण हैं। मैं आपको यह नहीं बताने वाला कि मैं ऐसा क्यों करता हूँ और मैंने पहले क्या किया है। लेकिन यह व्यक्तिगत मामला है और मेरे इसमें शामिल होने का एक बड़ा कारण है। अगर आप मेरे बारे में, हमारे बारे में जानते हैं, तो आपने हमें अभी तक फांसी क्यों नहीं दी?’
क्योंकि मैं अन्य शासकों जैसा नहीं हूँ। मैं आपके साथ काम करना चाहता हूँ, लेकिन साम्राज्य का अनादर किए बिना।
“इस साम्राज्य का अपमान करना ही होगा। क्या तुम जानते हो कि यह किस आधार पर टिका है? उन निर्दोष मानवों के शवों पर, जिन्हें मारकर और यातना देकर तुम्हारे इस छोटे, ढाँचेहीन साम्राज्य को बनाया गया है, जिसका नेतृत्व एक विकलांग शासक कर रहा है, जिसे अपनी पत्नी को लेकर भावनात्मक समस्याएँ हैं,” नारद ने मुट्ठी भींचते हुए कहा। “हम दमनकारी युग में जी रहे हैं और विष्णुसेना ही मुक्ति की क्रांति लाएँगे।”

उसने कहा, 'मैं तुम्हें ही ढूंढ रही थी।'
‘मैं यहीं था।’ प्रहलाद मुस्कुराया। ‘आंटी।’
‘तुम नहीं।’ होलिका ने नारद की ओर देखा। ‘वो।’
'यह क्या है?'
‘मैं उसे पूछताछ के लिए ले जाना चाहती हूं,’ उसने अपने गार्डों को बुलाते हुए कहा।
‘किसलिए?’ नारद ने जोर से पुकार कर कहा। ‘मैंने कुछ नहीं किया।’
'जी हां, ठीक है, हम देखेंगे।' उसने सिर हिलाया। 'मुझे उम्मीद है कि आपको कोई आपत्ति नहीं होगी, महाराज, इस बात से कि आपके गुरु को ले जाया जा रहा है।' तब तक, असुर रक्षकों ने नारद की बांह पकड़ ली थी, क्योंकि वह खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह इतना मजबूत नहीं था।
'मैं जानना चाहता हूं क्यों,' प्रहलाद ने अपनी चाची से आदरपूर्वक पूछा। हमें जानकारी मिली है कि इस महल के अंदर एक जासूस काम कर रहा है और हमारा मानना है कि वह नारद है, और वह विष्णुसेना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
प्रह्लाद ने नारद की ओर देखा, जिनकी आँखों में प्रह्लाद से कुछ करने की विनती थी।
लेकिन क्या करता …
नारद ने स्पष्ट कर दिया था कि वह अपने पिता के साम्राज्य को नष्ट कर देगा। और यद्यपि प्रहलाद अपने पिता को नापसंद करने लगा था, फिर भी वह जानता था कि वह उनके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता।
“क्या आपके पास यह मानने का कोई कारण है कि नारद विष्णुसेना का हिस्सा नहीं हैं, और हमारी जानकारी गलत है?” होलिका ने पूछा। “चूंकि आप इस महल में किसी और से बेहतर गुरुजी को जानती हैं, इसलिए आपकी गवाही उनकी निर्दोषता साबित करने में सहायक हो सकती है।”
प्रहलाद चुप रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सही है – होलिका का साथ देना या नारद की मदद करना।
अंततः उसने अपना सिर हिलाया। होलिका ने सहमति में सिर हिलाया। उसने अपने पहरेदारों से कहा, 'इस आदमी को यहाँ से ले जाओ।'
प्रहलाद ने नारद को कमरे से घसीटते हुए देखा। होलिका उसके साथ चली गई और दरवाजा बंद कर दिया, अपने भतीजे को कमरे में अकेला छोड़कर।

मैंने वही किया जो मेरे पिता करते - साम्राज्य को बचाया।
लेकिन उसने वह नहीं किया जो वह वास्तव में करना चाहता था।
शायद, मैं आखिरकार एक अच्छा आदमी नहीं हूँ।

20

अनुह्राद

उसने अंधका को खून जैसे लाल पेड़ के नीचे पाया।
भैरव के पिता होने के रहस्य के खुलने के कुछ दिनों बाद अंधका ने अनुहृद को बुलाया था। अनुहृद अवाक रह गया था, क्योंकि उसने सपने में भी इसकी कल्पना नहीं की थी। वास्तव में, वह हमेशा अंधका को अपना सगा चचेरा भाई मानता था, लेकिन वह नहीं था। वह मानव था, शिव का पुत्र।
सेना ने फिर कभी युद्ध नहीं लड़ा, लेकिन जासूस दुश्मन की रक्षा तैयारियों की नियमित खबरें लाते रहे। भैरव के शिविर के पास मौजूद एक जासूस ने तो यहाँ तक बताया कि सिंह वंश का एक नया नेता, नारा, एक छोटे से गाँव से लौटकर अंधका को चुनौती देने आया है।
पेड़ के पास, अनुहरद ने अंधका को एक बच्चे की तरह बैठे हुए देखा, उसकी बाहें मुड़ी हुई थीं और पैर क्रॉस किए हुए थे, जबकि उसके चारों ओर खून जैसे लाल पत्ते गिर रहे थे।
आस-पास कोई पहरेदार नहीं था और अंधका अपने काले कपड़ों में कमजोर और नाजुक दिख रहा था। जिसे मारा नहीं जा सकता था, वह निश्चित रूप से अजेय नहीं लग रहा था।
‘तुम यहाँ हो,’ अंधका ने आह भरी।
‘क्या बात है? आपने मुझे क्यों बुलाया?’
‘तुमने मेरे लिए वो यूटी (छोटी ट्रक) कभी नहीं चलाई।’
मैं अब इसे नहीं खेलता।
'क्यों?'

‘क्योंकि… यह कुछ ऐसा था जो कोई चाहता था कि मैं उसके लिए करूं, और जब से वह चली गई है, मुझे किसी और के लिए इसे करने का मन नहीं करता। मैंने इसे सिर्फ उसके लिए किया था,’ अनुहराद ने कहा।
‘मैं समझ गई,’ अंधका ने कहा। ‘हम्म, मेरे एक पिता की मृत्यु हो चुकी है और दूसरे जीवित हैं। आपने मुझे कभी नहीं बताया कि आप इसके बारे में कैसा महसूस करती हैं।’
‘ये तुम्हारा निजी मामला है, यार। मैं तो बस अपने पिता को परमाणु हथियार हासिल करने में मदद कर रहा हूँ।’
'जी हां, हम्म।'
अनुहरद बेचैनी से इधर-उधर हिल रहा था, वहां से जाना चाहता था, लेकिन उसने वह सवाल पूछना अपना फर्ज समझा जो उसने पहले नहीं पूछा था। 'भैरव का पुत्र होने के बारे में आपको कैसा लगता है?'
अंधका एक बच्चे की तरह शांति से पत्ते से खेल रहा था। उसने कहा, 'मुझे कुछ महसूस नहीं होता। मुझे वह दिन याद है जब मेरे दत्तक पिता ने मुझे सच्चाई बताई थी। मैं बस उसे मार डालना चाहता हूँ।'
'क्यों?'
अंधका ने अनुहरद की ओर सिर उठाया। उसका चेहरा शांत था। 'क्योंकि उसने मुझे राक्षस के हाथों में सौंप दिया था।'
'आपका क्या मतलब है?'
‘तुम्हारा चाचा, हम्म, कोई बहुत अच्छा आदमी नहीं था, अनुहराद।’
अनुहराद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मुझे नहीं पता कि मुझे तुम्हारी बातों पर भरोसा करना चाहिए या नहीं, सनकी। मेरा मतलब है, तुम्हारी अजीब आदतों को देखते हुए, तुम झूठ भी बोल सकते हो और सच कहूँ तो, मेरे चाचा के साथ तुमने जो कुछ भी झेला है, मुझे उसकी ज़रा भी परवाह नहीं है। जब तक तुम यहाँ बैठकर सोचते रहोगे, हमें आगे बढ़कर वह हथियार हासिल करना होगा।'
मैंने तुम्हें यहाँ एक खास वजह से बुलाया था। और वो वजह उस हथियार को हासिल करना नहीं थी।'
मुझे पता है। तुम भैरव को मारने में मेरी मदद चाहते हो।
‘हम्म, अभी और भी रहस्य उजागर होने बाकी हैं, अनुहराद। अभी तक तो बस कुछ ही रहस्यों का जिक्र हुआ है।’

अनुहराद को समझ नहीं आ रहा था कि अंधका क्या छुपा रहा है या सचमुच कुछ छुपा भी रहा है या नहीं। 'मुझे तुम पर भरोसा नहीं है, अंधे लड़के। चलो अपना काम करते हैं।'
‘तुम अलग हो, हम्म। कोशिश करो, लेकिन तुम अलग हो।’
'जिस से?'
‘अन्य राक्षसों से।’
और राक्षसों से उनका तात्पर्य असुरों से था, जिन्हें देव और मानव इसी नाम से पुकारते थे।
‘तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है। प्रहलाद मेरी मदद करने के लिए बहुत छोटा है। तुम्हारा दिल... तुम्हारा दिल दूसरों से बिल्कुल अलग है।’
क्या इसीलिए तुमने मुझे बुलाया था?
अंधक ने सिर हिलाया। ‘अधीरता एक गुण है। अधीरता के बिना, हम शायद कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएंगे। अब… हम्म… मैंने तुम्हें हिरण्यक्ष के बारे में नहीं बताया।’
‘मैं जानना नहीं चाहता।’ और सच कहूँ तो, अंधका को डर था कि कहीं उसे कुछ ऐसा पता न चल जाए जिससे उसके चाचा की छवि और खराब हो जाए।
‘ठीक है, मैं परेशान नहीं करूंगा। तुम जा सकते हो।’ अंधका ने अपना चेहरा पेड़ की ओर मोड़ लिया और अनुहरद को विदा कर दिया।
अनुहरद ने दांत पीस लिए। वह अंधका पर क्रोधित नहीं था। वह खुद पर क्रोधित था कि आगे वह क्या करने वाला है, लेकिन अब उसकी जिज्ञासा बढ़ गई थी। 'ठीक है, बताओ।'
‘इसमें जानने जैसी कोई बात नहीं है, अनुहराद। यह बहुत सरल है। उसने मुझे इतना नुकसान पहुंचाया है... कि मैं उस आदमी को जान से मारना चाहती हूं जिसने उसे मुझे नुकसान पहुंचाने दिया।’
लेकिन मेरे चाचा ने कभी कुछ नहीं दिखाया…
‘हम्म, वह इसे छुपाने में माहिर था। सामाजिक समारोहों में तो वह एकदम सही रहता था, लेकिन घर के अंदर नहीं। देखिए, मैं हमेशा से अंधा नहीं था,’ उसने कहा।
‘क्या… लेकिन… कैसे?’ अनुहराद ने हैरानी से पूछा।
'हम्म्म्म,' अंधका ने आह भरी। 'गर्म, जलते कोयले।'

अनुहराद कांप उठा, अंधका को बचपन में इस तरह प्रताड़ित किए जाने का दृश्य कल्पना से परे भयावह था। उसने पूछा, 'मेरे चाचा ऐसा क्यों करेंगे?'
‘मुझे मेरी दूसरी इंद्रियों के प्रति जागरूक करने के लिए। उन्होंने कहा कि गंध या श्रवण की किसी को परवाह नहीं होती। वे केवल वही देखते हैं जो उन्हें दिखाई देता है, और देखना धोखा है, हम्म,’ उन्होंने कहा, और फिर रुककर आगे बोले, ‘बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी… उन्होंने… मुझे इन कामों में लगाया, मुझे शेरों के सामने खड़ा किया जब तक कि मैं उनसे बुरी तरह घायल नहीं हो गया और फिर… एक दिन उन्होंने मुझे जला दिया, और कहा कि अब मैं आग से सुरक्षित हो जाऊंगा।’ और अंधका ने अपनी आस्तीन ऊपर करके अपनी त्वचा दिखाई
– त्वचा का वह झुर्रीदार, जला हुआ धब्बा अभी भी वहीं था। ‘क्या आप जानते हैं कि इतनी कम उम्र में हर दिन दर्द और मौत का सामना करने का क्या मतलब होता है?’
‘उसने मुझे सच-सच बताया कि असल में क्या हुआ था। कैसे उसने मुझे बचपन में भैरव से अगवा कर लिया था और भैरव ने उसे रोकने के लिए कुछ नहीं किया, क्योंकि वह रुद्र के निर्देशों का पालन करते हुए असुर सेना को हराने में व्यस्त था। उसे मेरी जान की कोई परवाह नहीं थी। हिरण्याक्ष ने मुझे सब कुछ इसलिए बताया क्योंकि उसने कहा कि वह चाहता था कि मैं बलवान बनूँ,’ उसने मन ही मन सिर हिलाया। ‘जानते हो मैं किस बात पर विश्वास करता हूँ?’
'क्या?'
'यह मुझे बड़े-बड़े सबक सिखाने के बारे में नहीं था, हम्म। यह तो बस यातना देने के बारे में था। हमेशा। हर बार। उसे इसमें मजा आता था। उसे मुझे चोट पहुँचाने में मजा आता था।'
अनुहरद अंधका के करीब आया। उसे अपराधबोध हुआ। 'मुझे माफ कर दो,' उसने अंधका के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। उसे महसूस हुआ कि अंधका कांप रहा है, मानो उन यादों को याद करके उसे शारीरिक पीड़ा हो रही हो।
‘तुम्हारा पिता अच्छा था,’ अंधका ने कहा। ‘लेकिन तुम्हारी माँ ने उसे बुरा बना दिया।’
'आपका क्या मतलब है?'
‘बेकार के युद्ध,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
अनुहराद ने अपना हाथ छुड़ा लिया। 'मेरी माँ उस नीच व्यक्ति की वजह से मरी। यह युद्ध व्यर्थ नहीं है, सनकी।'

‘हम्म,’ अंधका ने सिर हिलाते हुए सहमति जताई। ‘मैं चाची कयाधु के जीवन का अपमान नहीं करना चाहता। वह एक सुंदर और मजबूत महिला थीं। लेकिन क्या आपको लगता है कि देवताओं से लड़ने से आपको कुछ हासिल होगा?’
इससे हमें बदला और जीत मिलेगी।
‘फिर क्या?’
‘तब…’ अनुहराद चुप हो गया। ‘तब हम जीतेंगे, राज करेंगे और…’ वह एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया। ‘ठीक है, मैं तुम्हारी बात समझ गया, लेकिन यह माँ के लिए है।’
‘ऐसा ही होना चाहिए।’ अंधका उठ खड़ा हुआ।
‘तुम्हारे साथ जो हुआ उसके लिए मुझे खेद है। तुम इसके हकदार नहीं थे,’ अनुहराद ने कहा, उसे लग रहा था कि वह अपने चचेरे भाई के साथ कुछ ज्यादा ही कठोर हो गया था, जिसने पहले ही बहुत कुछ सहा था।
अंधका ने कोई जवाब नहीं दिया और इसके बजाय विषय बदल दिया। 'मेरे साथ आओ।' अनुहरद, अंधका के पीछे-पीछे चल पड़ा, जो उस रास्ते की ओर बढ़ रहा था जो दानवों के विश्राम स्थल की ओर जाने वाले दो मीनारों तक जाता था। अंधका अपनी नाक फैलाए बैठा था और अनुहरद ने गौर किया कि वह उस स्थान की गंध से निर्देशित होकर उस ओर बढ़ रहा था।
‘उसने मुझे पिंजरे में बंद कर दिया,’ उसने तीखी और ऊंची आवाज में कहा। ‘उसने मुझे पिंजरे में बंद करके छड़ियों से मारा। उसके दानव मेरी पीठ कुचलते थे और मैं हर दिन तांत्रिक के साथ बैठता था। वह हर दिन मेरी खोपड़ी पर वार करके मुझे चोट पहुँचाता था। जाहिर तौर पर, वह मुझे मजबूत बनाने के लिए यह सब करता था!’ उसके पैर बर्फ पर पड़े। ‘मैं सिर्फ पंद्रह साल का था! मैं छोटा था! मुझे पता नहीं था कि क्या करना है!’
अनुहराद उसे शांत करना चाहता था, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका क्योंकि उसे इस स्थिति को संभालने का तरीका नहीं पता था। तभी अंधका रुक गया और उन पहरेदारों को देखने लगा जो अचानक कहीं से प्रकट हुए और दानवों के बुर्जों के चारों ओर खड़े हो गए। उनके पास अजीब से नीले पौधे थे।
‘ये क्या हैं, अंधका?’ अनुहरद ने अपने चेहरे पर भय के भाव लिए पूछा।
'हम्म, मैंने कुछ किया... मेरे एक जासूस ने शिविर से सोमालाटा पौधों का एक डिब्बा चुराया और मुझे दे दिया।'
पहरेदारों ने टावरों के आसपास पौधे बोना शुरू कर दिया।

‘आपने मुझे क्यों नहीं बताया?’ अनुहराद ने पूछा। ‘पिताजी ने हमें कहा था कि सोमा को अपने रक्षकों को शक्ति के लिए दे दें।’
‘हमें रसायनों से नुकसान नहीं चाहिए, हम्म,’ उसने अपनी नाक फुलाते हुए कहा। ‘हम देव नहीं हैं। हम असुर नहीं हैं। हम प्रकाश से निर्देशित मनुष्य हैं।’ और फिर पहरेदारों ने मशाल की रोशनी से लताओं पर आग बरसाई, जिससे मीनारों के चारों ओर एक घूमती हुई आग उग आई - जिससे सोमालाटा के पौधे फट गए।
दानव लोग अंदर थे!
‘तुम दिग्गजों को क्यों चोट पहुँचा रहे हो?’
‘क्योंकि वह राक्षस,’ उसने गुर्राते हुए कहा, ‘उन पर गर्व करता था। और अब मैं उसे दिखाना चाहता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ। और अब, मेरे पास तुम हो जो यह काम करोगे।’
मीनार के द्वार बंद थे और अनुहराद दानवों को मीनार से भागने की कोशिश करते हुए सुन सकता था, लेकिन वे असफल रहे। मीनारें फट गईं और आग और धुआं हवा के साथ ऊपर उठने लगा। अनुहराद इस पागलपन को रोकना चाहता था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे। वह जानता था कि दानवों को मरने देने के लिए उसका पिता उसे मार डालेगा।
वह आगे आए अंधका की ओर मुड़े और अनुहरद का चेहरा पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया। ‘याद रखो, यह दानवों, असुरों या देवताओं का युद्ध नहीं है। यह हमारा युद्ध है। हम उनसे श्रेष्ठ हैं। हम दुख और पीड़ा से बने अच्छे और महत्वपूर्ण लोग हैं, और पीड़ा ही हमारे शासन का कारण होगी।’
‘क्यों? इससे तुम्हें क्या मिलेगा?’
मैं उन्हें गलत साबित करना चाहती हूँ। यह साबित करना चाहती हूँ कि हम कमजोर नहीं हैं, कि हमारी त्रासदी हमें कमजोर नहीं बनाती। उन्हें यह साबित करना चाहती हूँ कि हम किसी से भी ज्यादा मजबूत हैं। लेकिन सबसे बढ़कर, एक बार फिर उस जगह पर रहना अच्छा लगेगा जहाँ हमारा एकाधिकार है। उसने मुझे कमजोर कहा था। मैं थी, हाँ। लेकिन अब नहीं हूँ।
अनुहराद ने अपने चारों ओर खड़े पहरेदारों की ओर देखा, जो मीनारों को जलते हुए देख रहे थे।
‘तुम्हारे असुर रक्षक तुम्हें क्यों नहीं रोक रहे हैं?’
‘क्योंकि वे मुझसे डरते हैं, मेरे प्यारे भाई।’ उसकी हथेलियाँ अनुहराद के गालों पर और कस गईं। ‘वे इस बात से डरते हैं कि वे मुझे मार नहीं सकते। कोई

भी नहीं मार सकता। और इसलिए भी, क्योंकि वे मेरे उद्देश्य में विश्वास करते हैं।’
‘तुम्हारा मकसद?’ उनके सामने आग बढ़ती गई, और अनुहराद को उसकी गर्मी से अपनी त्वचा जलने का एहसास हुआ। दानवों के पतन के साथ ही उसे हवा में भय का अनुभव होने लगा।
‘भैरव को मारने और हमारे लिए पशुपतास्त्र लेने के बाद, मैं सिंहासन पर आऊंगा।’ और फिर पहली बार, उसने सचमुच एक उज्ज्वल मुस्कान बिखेरी। ‘और मैं असुर साम्राज्य का अंत करने जा रहा हूँ, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ जो किया… और तुम्हारे साथ भी जो किया।’
अनुहराद चौंक गया। 'उन्होंने मेरे साथ क्या किया?'
‘ओह। तुम्हें नहीं पता,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘खैर, मुझे पता है। ओह, मुझे काफी समय से पता है।’

21

नरसिंह

फिलहाल सब ठीक था…
प्राइड नारा के पीछे-पीछे चल रहा था, और उनके मार्गदर्शन में उनकी बातें सुन रहा था। नारा जानता था कि अंधका को हराने के बाद उसे अंततः उन्हें फिर से छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि मंदार पहाड़ियों में आने का उसका उद्देश्य पशुपतास्त्र को अंधे राजकुमार के हाथों में जाने से रोकना था। लेकिन उसे जाने की इच्छा नहीं थी। उसे यह जगह और चेन्चेन दोनों पसंद आने लगे थे। वह … स्नेहशील थी। यही सही शब्द था। और वह उसका साथ देती थी; वह उसे समझती थी। वह उसके आसपास रहना चाहता था।
उसने उसे पहचान लिया, भले ही वह खुद इसे नहीं जानता था।
भैरव मुख्य रूप से अपनी रक्षा व्यवस्था को मजबूत कर रहे थे और उन गांवों से मदद मांग रहे थे जो और अधिक लोगों को भेज सकते थे। वे हमले की तैयारी में इंद्र को और अधिक सैनिकों और रसद के लिए कौवे भी भेज रहे थे।

एक दिन, जब नारा अपने साथियों को सोमास का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना सिखा रहा था - यानी उन्हें शराब या किसी भी तंबाकू उत्पाद के साथ नहीं मिलाना था - तभी उन्होंने सोनितपुर के ऊपर आकाश में धुएं का एक बड़ा बादल देखा। शहर आग की लपटों में घिरा हुआ था।
भैरव नारा के बगल में खड़ा था। उसने पूछा, 'अब वह क्या कर रहा है?'
‘यह टावरों से आ रही है,’ नारा ने जवाब दिया।
‘वह इन्हें क्यों जला रहा है?’ भैरव ने सोचा। ‘वह हमेशा से ही अप्रत्याशित रहा है। एक बार उसने आस-पास के गांवों पर छापा मारा और युवा लड़कों और पुरुषों को उठा ले गया।’
'क्यों?'
भैरव ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं।' उन्होंने सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए ताली बजाई और उन्हें अपने काम में लग जाने का इशारा किया। 'सुनो, नारा। चूंकि मृग यहां नहीं है, इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम आज चेनचेन की टीम की मदद करो। वे गांवों का दौरा कर रहे हैं।'
नारा प्रसन्न तो था, लेकिन उसने अपने चेहरे पर भावहीनता का भाव बनाए रखा। हमें गांवों से दान की आवश्यकता है। बदले में, हम उन्हें चिकित्सा सहायता प्रदान करते हैं और उनके बीमारों की देखभाल करते हैं। चेनचेन की टीम दान - भोजन, आपूर्ति और अन्य आवश्यक वस्तुएं - एकत्र करती है जो युद्ध में हमारी सहायता करती हैं। मैं चाहता हूं कि आप सुरक्षा के लिए उसके साथ जाएं। दुश्मन नर्सों को निशाना बनाने के लिए जाना जाता है।
नारा ने सिर हिलाया। 'यह हो जाएगा, भैरव। लेकिन हमें अपनी रणनीति खुद बनानी होगी, नहीं तो हम सिर्फ अपना बचाव करते रहेंगे। हमें सोनितपुर पर हमला करने और अंधका को मारने का कोई रास्ता ढूंढना होगा।'
‘हम ऐसा करेंगे,’ भैरव ने गंभीर स्वर में कहा। ‘मैं भी इस युद्ध को समाप्त करना चाहता हूँ, तुमसे कहीं अधिक। और हम करेंगे।’
नारा मुस्कुराया। जैसे ही वह जाने लगा, भैरव ने धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं पशुपतास्त्र का प्रयोग करने के बारे में सोच रहा था।'
नारा जम गया। उसने भैरव के चेहरे की ओर देखा, जो चिंता और अपराधबोध से भरा हुआ था। 'क्या तुम सच कह रहे हो?'
‘बस… हम सबको मरने से पहले कुछ करना होगा। हम अंधका को किसी सुनसान जगह पर ले जाकर उस हथियार का इस्तेमाल कर सकते हैं। शायद इस बार निर्दोषों को

मरना न पड़े,’ भैरव ने सिंहों के नेता की ओर विनती भरी निगाहों से देखते हुए कहा। ‘हम हार रहे हैं, नर।’
नारा ने अपने जबड़े भींच लिए।
यह बुरा है।
लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं कहा, बल्कि कंधे उचका दिए। उन्होंने कहा, 'गांवों से लौटने के बाद हम और बात करेंगे,' और नर्सों की ओर चल दिए।
दूर से उसने देखा कि चेनचेन और अन्य नर्सों ने अपना सामान पैक कर लिया था और घोड़ों पर सवार हो गई थीं। नारा ने भी अपना घोड़ा पकड़ा और दो सिंहों को अपने पीछे आने को कहा। अब वह अपने गंदे, मैले शरीर में नहीं था। उसका शरीर चमक उठा था और अब सुनहरा चमक रहा था। वह एक सच्चे सिंह नेता की तरह लग रहा था।
नारा ने अपने घोड़े को चेनचेन की ओर मोड़ा और उसके दल के पीछे चलने लगा। ‘क्या तुम हमेशा मेरा पीछा करोगे?’ उसने होठों पर हल्की सी मुस्कान लिए पूछा।
नारा ने आह भरी। वह उसकी मुस्कान का जवाब नहीं दे सका; भैरव के गांव में मंडरा रहे खतरे के बारे में कहे शब्दों ने उसे चिंतित कर दिया था, और उसके साथ आने का उसका कारण भी गंभीर था। 'मुझे तुम्हारी और तुम्हारी टीम की रक्षा करनी है।'
‘सच में? मुझे सुरक्षा की ज़रूरत है?’ उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। वह समझ गया कि वह उस समय की बात कर रही है जब उसने उसे मृग से बचाया था।
नारा मुस्कुराई। वे ऊपर की ओर चढ़ने लगे, नर्सें और दोनों सिंह उनके पीछे- पीछे चल रहे थे।
‘ओह, तो वो मुस्कुराता भी है?’ चेनचेन हँसी, और नारा का दिल खुशी से भर उठा। चेनचेन ने उन्हें बर्फीले इलाकों से रास्ता दिखाया, घोड़ों के खुर बर्फ में धंसते जा रहे थे। जब वे अंततः एक छोटे से गाँव पहुँचे, तो आसमान में भयंकर बादल गरज रहे थे – गाँव के कुछ हिस्सों में घेराबंदी की गई थी। जगह-जगह गाड़ियाँ और कारवां खड़े थे, और सड़कों के किनारे कुछ झोपड़ियाँ थीं, जिन पर ठंड से बचने के लिए भालू की खाल बिछाई गई थी। जलती हुई लकड़ियों पर बर्तन रखे थे, जिनमें खाना पकाया जा रहा था, और छोटे-छोटे कुंड थे जिनके चारों ओर स्थानीय लोग ठंड से बचने के लिए huddled होकर बैठे थे।

चेनचेन और उनकी टीम ने अपना काम शुरू किया, जबकि नारा और उनके सिंह अलग-अलग जगहों पर तैनात होकर पहरा देने लगे। चेनचेन ग्रामीणों से बातचीत करने लगीं और उन्हें आयुर्वेदिक मलहम और क्रीम से भरे थैले देने लगीं। नारा ने देखा कि चेनचेन कितनी आकर्षक थीं, मानो उन्होंने कोई कोशिश ही न की हो। जैसे ही नर्सें सामान इकट्ठा करने के लिए इधर-उधर गईं, नारा ने ग्रामीणों को देखा। उनमें से अधिकांश ने बर्फ से बचने के लिए अपने चेहरे ढके हुए थे, और उनमें से कुछ की आंखें उभरी हुई थीं और मुंह टेढ़े-मेढ़े थे।
चेनचेन ने उसे घूरते हुए देखा और पूछा, 'उन्हें देखकर आपको कैसा लगता है?' ‘ये ऐसे क्यों दिखते हैं?’ नारा ने भौंहें चढ़ाते हुए सोचा।
चेनचेन एक थैला लोगों को दे रही थी, जिनमें सेब, कच्चा मांस और अन्य खाद्य सामग्री डाली जा रही थी। ‘इनकी विकृतियाँ परमाणु हथियार का परिणाम हैं। कुछ साल पहले, इंद्र ने पशुपतास्त्र का प्रयोग करना चाहा और उसने किया भी, एक विशेष क्षेत्र पर विस्फोट किया, हालाँकि वह क्षेत्र एकांत था। लेकिन, कुछ ही मील दूर एक गाँव था। पशुपतास्त्र से निकलने वाली विकिरण…’ उसने एक महिला से कुछ सेब लिए, जिसे देखकर नारा को लगा कि उसकी नाक नहीं है। उसके बगल में, पूरी तरह से काली त्वचा पर सफेद धब्बों वाली एक और महिला कतार में खड़ी थी।
चेनचेन ने कहा, 'उस हथियार की वजह से इन निर्दोष लोगों में उत्परिवर्तन हुए।'
नारा के मन में इंद्र के प्रति घृणा उबल रही थी। अब वह समझ गया था कि भैरव का पशुपतास्त्र के प्रयोग के उस एक अवसर का क्या अर्थ था।
चेनचेन ने कहा, 'उसके बाद, इंद्र और भैरव ने हथियार को बंद करने की कोशिश की, यह मानते हुए कि यह देवताओं या असुरों के लिए किसी काम का नहीं था, सिवाय एक चरम स्थिति में अंतिम उपाय के रूप में।'
नारा को पता था कि भैरव को पशुपतास्त्र का प्रयोग करने और अनजाने में नागरिकों को हानि पहुँचाने का गहरा अपराधबोध था। शायद शिव भी इसके परिणामों को जानते तो इसका प्रयोग करने के लिए सहमत नहीं होते।
नारा उस बच्चे को देखकर एकदम सहम गया जो आगे आया और चेनचेन के थैले में एक रोटी डाल दी। लड़का पूरी तरह गंजा था, उसकी भौंहों तक बाल नहीं थे, और उसकी आँखें एकदम लाल थीं।

‘मेरा मानना है,’ चेनचेन ने लड़के से दान स्वीकार करते हुए मुस्कुराते हुए कहा, ‘मेरा मानना है कि हमें इस हथियार की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है, यहां तक कि किसी भी विकट परिस्थिति में भी नहीं। मेरा मानना है कि वे इसे रोकने के लिए चाहे कितनी भी कोशिश करें, अंततः इससे निर्दोषों को ही नुकसान पहुंचेगा।’
नारा जानती थी कि वह सही थी। क्या उसने अपनी पूरी कोशिश के बावजूद निर्दोष नागरिकों को चोट नहीं पहुँचाई थी? क्या यही कारण नहीं था कि उसने युद्ध छोड़ दिया था... कम से कम यह एक कारण तो था ही, उस रहस्य के अलावा जो उसे सता रहा था। उसने अपना सिर हिलाया और इसे भूलने की कोशिश की। वह याद नहीं करना चाहता था, नहीं चाहता था कि उसका अतीत उसका पीछा करे। अगर उसने ऐसा किया, तो भविष्यवाणी का चक्र फिर से शुरू हो जाएगा।
जैसे कि यकीन करने के लिए, नारा ने अपनी छाती पर नज़र डाली। उस पर विष्णु का चिन्ह नहीं था। सब ठीक था।
‘क्या वे क्रोधित नहीं हैं?’ उसने चेनचेन से पूछा। ‘इंद्र ने उनके साथ जो किया, उसके लिए? यह आश्चर्यजनक है कि वे अभी भी दान दे रहे हैं।’
आपको जवाब पसंद नहीं आएगा।
नारा उसकी बात समझ गई। उसने कहा, 'उन्हें नहीं पता कि हथियार का इस्तेमाल हमने किया था।'
चेनचेन ने सिर हिलाया। 'नहीं, ऐसा नहीं है। इंद्र ने उन्हें बताया था कि यह असुरों ने किया है, विशेषकर अंधका ने, और उन्होंने उनकी बात मान ली। इंद्र ने कहा कि अंधका को मारने और बदला लेने के लिए उन्हें ग्रामीणों की मदद की ज़रूरत है। इसीलिए चंदा इकट्ठा किया जाता है।'
‘भैरव ने इस बात को कैसे मान लिया?’ नारा भैरव को न्यायप्रिय और निष्पक्ष जानता था, और उसे विश्वास था कि वह कभी भी जानबूझकर ग्रामीणों को धोखा नहीं देगा।
उन्हें ऐसा करना ही पड़ा, क्योंकि उन्हें और उनके लोगों को इंद्र की ज़रूरत इंद्र को उनकी ज़रूरत से कहीं ज़्यादा थी। साथ ही, इंद्र ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि सच बोलने से विद्रोह भड़क उठेगा, और कभी-कभी झूठ सच से भी श्रेष्ठ होता है। भैरव के पास गाँव वालों को चिकित्सा सहायता भेजकर अपने अंतरात्मा को हल्का करने के अलावा कोई चारा नहीं था। हम...’ उन्होंने

नर्सों की ओर देखा, ‘हम तो उनकी कठपुतली की तरह हैं, उनके उद्धार के लिए काम कर रही हैं।’
नारा के जवाब देने से पहले ही, एक चीख हवा में गूंज उठी। उसने आँखें बंद कर लीं और आवाज़ की दिशा का पता लगाने की कोशिश की। आवाज़ पूरब से आ रही थी। और इससे पहले कि वह हिल पाता, तीरों की बौछार उनकी ओर आ पड़ी।
तुरंत ही नारा चेनचेन और लोगों के सामने आ गया और तीरों को उनकी त्वचा में धंसा दिया। उसने दहाड़ लगाई और तीरों को बाहर निकालकर घोड़ों पर सवार होकर उनकी ओर बढ़ रहे काले कवचधारी तीरंदाजों की ओर वापस फेंक दिया।
एक तीर सवारों में से एक को लगा और वह गिर गया, लेकिन बाकी सभी ने हमले से बचते हुए ग्रामीणों के करीब आना जारी रखा और पास आते हुए तीर चलाते रहे। नारा आगे बढ़ा और अपने हाथों से तीरों को रोकने लगा। पास आए एक घुड़सवार पर झपटा और उसे नोंचने और नोंचने लगा। जैसे ही तीरंदाज गिरा, घोड़ा हिनहिनाया और गुर्राया।
मेरे सिंह कहाँ हैं?
उसने मुड़कर देखा तो पाया कि वे दूसरे धनुर्धारियों से लड़ रहे थे। उनमें से एक घायल था जबकि दूसरा अपनी तलवार से पलटवार कर रहा था। नारा उनकी सहायता के लिए दौड़ा और असुरों पर अपने पंजे गड़ाकर उन्हें चीर डाला।
जब उन्होंने सभी हमलावरों का सफाया कर दिया, तो उसने चारों ओर देखा और पाया कि ग्रामीण भय से सहमे हुए थे।
वह हांफते हुए चेनचेन की ओर बढ़ा। 'हमें यहां से निकलना होगा। मेरे एक सिंह का बहुत खून बह रहा है और अगर वे वापस लौटे तो वह मुकाबला नहीं कर पाएगा।' चेनचेन ने जिस लड़के को सुरक्षात्मक ढंग से गोद में लिया हुआ था, उसने कहा, 'वे लौट आएंगे।'
नारा ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं, उसका खून जम गया। 'तुम्हारा क्या मतलब है?' वह लड़के के सामने घुटनों के बल बैठ गया।
लड़के ने कहा, ‘वे पास ही तैनात रहते हैं और नर्सों के आने का इंतजार करते हैं। उन्हें पता चल जाता है कि आप लोग दान के लिए कब आएंगे और वे ठीक उसी समय हमला कर देते हैं और आप सब पर टूट पड़ते हैं।’
नारा ने सिर हिलाया। 'क्यों?'
“वे हथियार की तलाश कर रहे हैं, महोदय,” लड़का कांपते हुए बोला। “मैंने उन्हें एक बार सुना था। मैं चुपके से उनके ठिकाने तक गया था। वे आपके पास

मौजूद हथियार के बारे में बात कर रहे थे। उन्हें हथियार ढूंढने के लिए कहा गया है और जब तक वे उसे ढूंढ नहीं लेते, तब तक वे हार नहीं मानेंगे।”
नारा ने लड़के के सिर को छुआ और मुस्कुराई। 'मुझे बताने के लिए धन्यवाद, बच्चे।' लड़के ने नम आँखों से मुस्कुराते हुए जवाब दिया और अपनी झोपड़ी की ओर चल दिया।
‘चलो चलते हैं,’ उसने चेनचेन से कहा।
‘क्या तुम उस ठिकाने को ढूंढने जा रहे हो?’ उसने पूछा।
कोई फायदा नहीं। उन्हें पता है कि हम यही करेंगे, क्योंकि हमने उनके हमले का पता लगा लिया है। अब वे हम पर हमला करने का कोई दूसरा तरीका ढूंढ लेंगे। चेनचेन ने सिर हिलाया, सामान उठाया और अपने घोड़ों की ओर चल पड़ी। नारा ने उसे घोड़े पर चढ़ने में मदद की, जबकि ग्रामीण उन्हें देखते रहे। उसने देखा कि औरतें अपने बच्चों को गोद में लिए खड़ी थीं, पुरुष अपनी शारीरिक विकृतियों को छिपाने के लिए पगड़ी और कपड़े से ढके हुए थे, अनाथ बच्चे बर्फ की तरह पीले पड़ गए थे और जर्जर झोपड़ियाँ चारों ओर बिखरी हुई थीं।
वापस लौटते समय नारा चुप था। चेनचेन उसके बगल में बैठी थी। उसने पूछा, 'क्या तुम ठीक हो?'
'इंद्र जिस तरह से अपने आसपास के लोगों के साथ व्यवहार कर रहा है, उससे मैं संतुष्ट नहीं हूं। मुझे यकीन नहीं है कि हम अब भी अच्छाई की तरफ हैं या नहीं।'
चेनचेन ने कहा, 'हम नारा की सेवा करते हैं, जो कम बुराई है।'
नारा ने सिर हिलाया, लेकिन उसके दिमाग में हजारों विचार चल रहे थे। सबसे ज्यादा, वह इंद्र से नाराज था।
उसने उन्हें चोट पहुंचाई और फिर इसका दोष किसी और पर डाल दिया। वह कायर अपनी गलतियों को स्वीकार तक नहीं कर सकता।
जब तक उन्हें हथियार नहीं मिल जाता, वे रुकेंगे नहीं।
‘तुम क्या सोच रहे हो?’ चेनचेन की आवाज ने उसके विचारों को भंग कर दिया।
‘यह हथियार ही मूल कारण है। मुझे लगता था कि संकट के समय इसका इस्तेमाल बड़े हित के लिए किया जा सकता है, लेकिन इन ग्रामीणों को देखकर और जिस तरह से इसने उनकी जिंदगी तबाह कर दी है, उसके बाद मेरा यह विश्वास नहीं रहा। यह शुद्ध जहर है। और इस्तेमाल न होने पर भी यह हमें नुकसान पहुंचा रहा है।

मुझे इसके बारे में कुछ करना होगा। अगर मैंने कुछ नहीं किया तो अंधका इसे ढूंढना बंद नहीं करेगा।’
और भैरव इतना हताश हो रहा है कि वह इसे दोबारा इस्तेमाल करने पर विचार कर रहा है।
चेनचेन ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'तुम्हें क्या लगता है कि तुम क्या कर सकते हो?'
‘तुम्हें क्या लगता है मुझे क्या करना चाहिए?’ नारा ने उससे पूछा।
‘आप दुविधा में लग रहे हैं,’ उसने कहा।
‘मैं हूँ। मेरे पास और क्या विकल्प है?’ नारा ने सिर हिलाया। ‘मैं एक नेता का अनुसरण करता हूँ – हम एक नेता का अनुसरण करते हैं – जिस पर हम भरोसा भी नहीं कर सकते। हम इतने आश्वस्त कैसे हो सकते हैं कि वह एक दिन हमारे खिलाफ पशुपतास्त्र का प्रयोग नहीं करेगा?’
चेनचेन ने आह भरी। 'मैं बस इतना ही कह सकती हूं कि इंसान के पास हमेशा विकल्प होता है।'
मुझे पता है। इसीलिए मैंने छोड़ा। मेरा चुनाव इसका हिस्सा न बनने का था। ‘और कायर बनूँ?’ वह खिलखिलाकर हंसी। ‘तुम कायर नहीं हो, नारा। तुम उससे कहीं बढ़कर हो। यह तुम्हारे पास विकल्प ही नहीं था।’
'तो क्या?'
उसने कहा, 'भैरव से, इंद्र से, और किसी से भी बेहतर बनना।'
नारा चुपचाप अपनी कही बातों पर विचार कर रही थी। वह सही थी।
हम सभी को ऐसे विकल्प चुनने पड़ते हैं जो हमें परिभाषित करते हैं।
'मुझे पता है क्या करना है,' उसने आखिरकार चुप्पी तोड़ते हुए कहा, और उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई।
‘क्या?’ उसने उसकी ओर देखते हुए पूछा।
नारा ने भैरव के किले की ओर देखा; उस पर विराजमान विशाल स्वर्णिम बैल नंदा की ओर।
‘मुझे पशुपतास्त्र को नष्ट करना होगा। असुर इसके लायक नहीं हैं…’ उसने चेनचेन की ओर देखा। ‘और न ही देव।’

22

हिरण्यकश्यप

वह चिलचिलाती धूप में घोड़े पर सवार होकर निकला।
नक्शा उसे कहीं नहीं ले जा रहा था, लेकिन हिरण्य उस मंदिर को ढूंढने के लिए दृढ़ संकल्पित था - जिसे यक्षलोक क्षेत्र में स्थित ब्रह्मा का मंदिर कहा जाता था। वह क्षेत्र धूल भरा और बंजर था, और सूर्य की नारंगी किरणें परिदृश्य पर फैल रही थीं।
हिरण्य बुरी तरह थक चुका था। उसे प्यास लग रही थी, उसे अपने पास मौजूद पानी को यथासंभव बचाकर रखना था। उसके जोड़ों में दर्द था और पैरों में भी तकलीफ थी। वह दिन भर घोड़े पर सवार रहता था और रात में, जब मौसम ठंडा होता था, तो गुफाओं के पास अपने घोड़े के साथ आराम करता था।
आज चलते-चलते उसे अपने बुरे सपनों का अंधेरा दिखाई दिया – उसकी पत्नी। वह कुछ ही गज की दूरी पर खड़ी थी। वह उसे देख सकता था। वह इतनी वास्तविक लग रही थी कि वह अपने घोड़े से कूदकर उसकी ओर दौड़ पड़ा। जैसे ही वह करीब पहुँचा, वह धुएँ के एक झटके में गायब हो गई और उसे एहसास हुआ कि वह महज़ एक भ्रम थी।
उसके भीतर क्रोध उबल रहा था, और वह जलती हुई रेत पर गिर पड़ा, उसे मुक्कों से पीटने लगा। वह मरना चाहता था। उसके होंठ सूख गए थे और उसे लग रहा था कि उसे हार मान लेनी चाहिए।
मुझे अकेले नहीं आना चाहिए था।
लेकिन उसके भाई ने डायरी में लिखा था कि इस जगह के बारे में किसी और को पता नहीं चलना चाहिए। इसलिए हिरण्य अकेला आया था, और अब वह एक ऐसे रेगिस्तान के बीच में था जो धीरे-धीरे उसकी जान ले रहा था।
आखिरकार वह उठा, और उठते ही उसने चारों ओर देखा और कुछ ऐसा देखा जिसने उसे स्तब्ध कर दिया - कुछ दूरी पर, एक विशाल गुफा थी जिसके ऊपर एक विशाल मूर्ति खड़ी थी, टूटी-फूटी और जर्जर, जिसका दाढ़ी वाला सिर एक युद्ध मीनार जितना बड़ा था।

उसने झटपट नक्शा खोला और महसूस किया कि किसी तरह वह अपने गंतव्य तक पहुंच गया है।
क्या यही वह जगह है?
उसने अपनी पूरी ताकत जुटाई और अपने घोड़े पर वापस चढ़कर मूर्ति की ओर चल पड़ा।
वह वहाँ पहुँचा और अपने घोड़े से उतर गया। मूर्ति की छाया में चलते हुए उसने देखा कि गुफा के अंदर, दीवार के किनारे जलती हुई मशालें लगी हुई थीं। गिद्ध खोपड़ियों और हड्डियों जैसी दिखने वाली आकृतियों पर बैठे उन्हें चोंच मार रहे थे।
यहां लोग आए और भयानक मौत मरे।
आगे बढ़ते हुए उसने गुफा में चमगादड़ और छिपकलियाँ देखीं। अंत में, वह एक दरवाजे जैसी जगह पर पहुँचा और उसे खोलकर नीली दीवारों वाले एक कमरे में प्रवेश किया, जिसके बीचोंबीच एक मजबूत कवच रखा था और उसके सहारे एक तलवार टिकी हुई थी, दोनों ही चीजें प्रकाश की एक किरण से जगमगा रही थीं। और कवच के बीचोंबीच एक रत्न जड़ा हुआ था - मणि।
बस यही है।
हिरण्य ने देखा कि कवच के चारों ओर पत्थर की तीन शिलाएँ थीं, जिन पर अजीबोगरीब प्रतीक खुदे हुए थे। उसने उन्हें अनदेखा किया और कवच को छूने के लिए आगे बढ़ा। प्रकाश की एक किरण उसके हाथ पर पड़ी और उसने दर्द से कराहते हुए अपना हाथ पीछे खींच लिया।
इससे उसका हाथ जल गया था!
दर्द से उसकी आँखों में आँसू भर आए और उसने ऊपर देखा तो उसके सामने एक धुंधली आकृति प्रकट हुई। एक भूत जैसी आकृति, सिर पर हुड पहने, हवा में लटकी हुई।
'यह इतना आसान नहीं है,' गुर ने फुफकारते हुए सांप जैसी आवाज में कहा। हिरण्य ने देखा कि उस प्रेत का चेहरा पीला था, नाक नहीं थी और आँखें लाल थीं। उसके मुँह में एक अजीब, विषैले साँप जैसी जीभ थी।
‘तुम कौन हो?’ हिरण्य ने पूछा।
'हम वही आत्मा हैं जिसके बारे में तुम्हारे भाई ने तुम्हें बताया होगा।' बिल्कुल। तो वह सचमुच एक आत्मा है। बहुत बढ़िया।

हिरण्य ने अपने जले हुए हाथ की मालिश की। 'तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ होऊँगा?'
हमें पता है। हमें सब कुछ पता है।
‘ये “हम” कौन हैं?’
‘हम ही मैं हूँ,’ आत्मा ने अपने पतले, कागज़ जैसे हाथों से इशारा करते हुए कहा। ‘तुम हथियार लाने के लिए भेजे गए स्वयंसेवक हो? है ना यह कितना सुंदर है?’ वह कवच के चारों ओर घूमते हुए एक भयानक मुस्कान बिखेरने लगा। ‘हम इसकी अत्यंत सावधानी और प्रेम से रक्षा करते हैं। लेकिन सबसे बढ़कर, हम जानते हैं कि यह किसी योग्य व्यक्ति को ही दिया जाना चाहिए।’
‘योग्यता का आकलन कैसे किया जाता है?’
आत्मा ने हिरण्य की ओर देखते हुए फुफकारा, “हमारे साथ अज्ञानता का नाटक मत करो। हम जानते हैं कि तुम परीक्षाओं के बारे में जानते हो। सवाल यह है कि क्या तुम उन्हें स्वीकारने के लिए तैयार हो?”
हिरण्य के मन में भय की एक लहर दौड़ गई, लेकिन जवाब देने के बजाय उसने एक सवाल पूछा। 'तुम कौन हो?'
‘हम स्वयं भगवान ब्रह्मा द्वारा नियुक्त कवच के रक्षक हैं।’
‘मैं समझ गया। और भगवान ब्रह्मा ने अपना कवच यहाँ क्यों छोड़ा है?’
‘यह योग्य व्यक्ति को दिया जाना चाहिए। वर्षों से कोई भी इसके योग्य नहीं रहा है। यहां तक कि तुम्हारा भाई भी नहीं।’
हिरण्य भावहीन बना रहा। वह जानता था कि यही उसका अंतिम लक्ष्य है। वह महानता प्राप्त करने, स्वयं को योग्य सिद्ध करने के लिए इस स्थान पर आया था ताकि वह कवच धारण कर सके, इंद्र से लड़ सके और युद्ध जीत सके। 'यदि मैं ऐसा करूँ, यदि मुझे कवच मिल जाए, तो मुझे कोई नहीं मार सकता?'
‘सिर्फ…’ आवाज लड़खड़ाकर फिर उठी, जैसे ही नीली रोशनी ने एक सिंह-मानव की आकृति बनाई। यह सिर्फ एक आकृति थी, लेकिन गर्जना – हिरण्य अपने हृदय में उस गर्जना को महसूस कर सकता था। ‘भगवान विष्णु के अवतार के अलावा।’
‘एक सिंह?’ हिरण्य पिछले अवतार के बारे में जानता था – एक साधारण मानव, जिसने सूअर का प्रतीक धारण किया था और अपने पिता की हत्या की थी। सप्तऋषियों की भविष्यवाणी में कहा गया था कि ब्रह्मास्त्र धारण करने वाले को केवल अवतार ही पराजित और मार सकते हैं - चाहे अवतार इस युग में उदय हों या नहीं, यह स्वयं अवतार पर निर्भर करता है।

हिरण्य को यह जोखिम उठाना ही था। 'लेकिन क्या मैं उसे मारने से पहले मार सकता हूँ?'
‘भविष्यवाणी को तोड़-मरोड़कर पेश करने के कई तरीके हैं। भविष्यवाणी यह गारंटी नहीं देती कि अवतार ब्रह्मास्त्र धारण करने वाले को मार डालेगा। यह केवल उसे मारने में सक्षम है,’ आत्मा हँसी। ‘तो क्या तुम तैयार हो, कश्यप के पुत्र?’
हिरण्य ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं और दाँत पीस लिए। वह जानता था कि उसे यह करना ही होगा। और वह यह भी जानता था कि अगर अवतार कभी प्रकट हुआ, तो वह, हिरण्य, उसे मार सकता है। उसे यह जोखिम उठाना ही था और वह जानता था कि यह जोखिम इनाम के लायक होगा।
‘मुझे क्या करना होगा?’ उसने पूछा।
‘अपना पहला ट्रायल चुनें।’
और अचानक, शिलाखंड ऊपर उठने लगे, चबूतरे में बदल गए, और उन पर बने प्रतीक तेज़ी से चमकने लगे।
पहला प्रतीक एक आदमी का दूसरे से बड़े आदमी से लड़ते हुए था। आत्मा ने कहा, 'ताकत की, शारीरिक क्षमता की परीक्षा।'
दूसरे चबूतरे पर एक व्यक्ति पद्मासन में बैठकर ध्यान कर रहा था। 'मानसिक जागरूकता की परीक्षा, संघर्ष के समय में आप अपने मस्तिष्क का उपयोग कैसे करते हैं।'
तीसरे चबूतरे की डिजाइन विचित्र थी जिसे हिरण्य समझ नहीं सका।
‘यह क्या है?’ उसने पूछा।
‘जब तुम पहले दो परीक्षणों में सफल हो जाओगे, तभी तुम्हें तीसरे परीक्षण का अर्थ पता चलेगा, क्योंकि वह सबसे कठिन है। तो हे कश्यप पुत्र, तुम्हें कौन सा मार्ग चुनना है?’
हिरण्य ने सोचा।
‘यह तुम्हारी पसंद है,’ आत्मा ने फुफकारते हुए कहा। ‘और तुम जिस भी चबूतरे को चुनो, तुम्हें परीक्षा शुरू करने के लिए उस पर कदम रखना होगा।’
हिरण्य को पता था कि वह किस चीज में सबसे अच्छा है, इसलिए वह पहले चबूतरे पर चढ़ गया।
देखते हैं मुझे अपनी ताकत साबित करने के लिए किससे लड़ना पड़ेगा।

‘अच्छा चुनाव,’ आत्मा ने कहा। ‘और अब शुरू करने के लिए, आपको यह चाहिए।’ उसने अचानक कहीं से एक छोटी सी शीशी में एक अजीब सा नीला तरल पदार्थ निकाला। 'यह क्या है?'
‘परीक्षण में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतियोगी के पास यह होना चाहिए। यह सोमा है। यह व्यक्ति को अपार शक्ति प्रदान करता है।’
मुझे इस पर विश्वास नहीं है। मुझमें पहले से ही ताकत है।
'अगर आप इसे लेंगे तो आपको उतना फायदा नहीं होगा जितना इससे होगा। हमारा यकीन मानिए, यह अच्छा है। वरना आप ट्रायल्स के पहले हिस्से को भी पार नहीं कर पाएंगे।'
हिरण्य ने अपने जबड़े भींचे और शीशी उठा ली। उसने गर्म तरल को एक ही घूंट में पी लिया।
‘अच्छा, अच्छा। क्या तुम तैयार हो?’ आत्मा ने पूछा।
हिरण्य को अपने पेट में गुड़गुड़ाहट महसूस हुई, जैसे तरल पदार्थ शरीर में प्रवेश कर रहे हों। उसे अपने अंदर शक्ति का एक प्रवाह महसूस हुआ, जिससे उसकी मांसपेशियां ऊर्जावान हो उठीं।
उसके चेहरे पर धीरे-धीरे मुस्कान फैल गई।
'हाँ।'

23

प्रहलाद

प्रहलाद को पता था कि उसके कमरे में कोई है।
खिड़की खुलने की आवाज सुनकर वह गहरी नींद से जाग गया। उसकी गर्दन के बाल खड़े हो गए। उसने अपनी बाहों को सीने पर कसकर बांध रखा था और वह धीरे-धीरे सांस ले रहा था।
उसकी तलवार पास में नहीं थी, इसलिए उसे आंखें बंद करके स्थिर रहना पड़ा और मौका मिलते ही बिस्तर से कूदना पड़ा।

उसे आहट सुनाई दे रही थी कि वह आकृति उसकी ओर आ रही है और इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, वह ठीक उसके बिस्तर के पास खड़ी थी, साँस ले रही थी। उसने तलवार के म्यान से बाहर निकलने की आवाज़ सुनी।
मुझे कौन मारना चाहेगा?
बहुत से लोग… बहुत से लोग।
प्रहलाद ने उस आकृति की एक झलक पाने की उम्मीद में अपनी आँखें थोड़ी सी खोलीं। उसने देखा कि वह काले कपड़ों में लिपटी हुई थी और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें उसे घूर रही थीं।
जब उस राक्षस ने तलवार को प्रहलाद के गले पर रखा तो प्रहलाद ने घबराहट में एक गांठ सी निगल ली।
उन्होंने नरमी से कहा, 'आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। कृपया।'
वह आकृति जम गई, उसकी आंखें घृणा से उसे घूर रही थीं।
उन्होंने दोहराया, 'हम इसे किसी और तरीके से सुलझा सकते हैं, आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है।'
उस आकृति ने ब्लेड को और करीब धकेल दिया।
प्रहलाद को अचानक हुड से बाहर निकले लाल रंग के कुछ बाल दिखाई दिए।
‘धृति,’ उसने कहा, ‘मुझे पता है कि यह तुम ही हो।’
धृति स्थिर खड़ी रही, तलवार अभी भी प्रहलाद के गले पर रखी हुई थी। वह चुप रही।
‘नारदा के लिए कुछ न कर पाने के लिए मुझे खेद है,’ प्रहलाद ने कहा।
वह हिली तक नहीं। अंत में, आँसुओं से भरी आवाज़ में उसने कहा, “मैं चाहती थी कि तुम हमारे साथ, इस मुहिम का हिस्सा बनो। मैं गलत थी।”
प्रहलाद के मन में बहुत कुछ था, लेकिन उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। वह इतना असमंजस में था कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।
धृति ने उनके बीच की असहज चुप्पी तोड़ी। 'आपको इस उद्देश्य का महत्व नहीं पता। आपने हमारे नेता को जेल भेज दिया। हमारे नेता को!'
‘इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। चाची को उस पर शक हो गया था,’ प्रहलाद ने समझाया।
‘वह पागल है और तुम यह जानते हो। तुम बुद्धिमान हो। तुम दूसरों जैसे नहीं हो, प्रहलाद।’ उसका ब्लेड उसकी त्वचा को छू रहा था, मानो उसे काट ही रहा हो। ‘जब तुमने मुझसे कहा कि तुम किसी चीज़ में विश्वास करना चाहते हो, तो

तुम्हें लगा कि तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो… लेकिन तुम खुद से झूठ बोल रहे थे। तुम सच में किसी चीज़ में विश्वास करना चाहते हो।’
और इस प्रक्रिया में मेरे पिता द्वारा निर्मित साम्राज्य को नष्ट कर दूं? “यह साम्राज्य ही हमारा दम घोंट रहा है,” उसने ऊँची आवाज़ में कहा। “तुमने दुनिया को मेरी तरह नहीं देखा है। मैं लंबे समय से अनाथ हूँ और मैंने ऐसी चीज़ें देखी हैं जिन पर तुम्हें विश्वास नहीं होगा। मैंने महिलाओं का अपहरण होते देखा है, पुरुषों को पिटते देखा है, किसानों पर भारी कर लगाए जाते देखा है। मैंने बहुत कुछ देखा है, और इसीलिए मैं इस आंदोलन में शामिल हुई हूँ। मैं तुम्हारी तरह इससे अनजान नहीं थी। तुम्हारे पिता अच्छे शासक नहीं हैं। असुरों का नाश होना ज़रूरी है और तुम हमारी मदद कर सकते हो। तुम जानते हो कि वे दुष्ट हैं,” उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए समझाया। प्रहलाद चुपचाप सुनता रहा।
उसने पूछा, 'क्या आप जानते हैं कि नारद ने विष्णुसेना क्यों शुरू की?' प्रहलाद ने अपना सिर हिलाया।
“क्योंकि कश्यपपुरी के लूटे जाने और हिरण्य द्वारा साम्राज्य का पुनर्निर्माण शुरू करने के बाद, नारद ने कश्यपपुरी के निकट स्थित एक गाँव में अपना गुरुकुल स्थापित किया। हिरण्य अत्यधिक चिंतित था और अपने साम्राज्य में जासूसों की मौजूदगी का पता लगाने के लिए सुरक्षा बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा था। उसे यह अफवाह सूझी कि नारद के गुरुकुल में कुछ जासूस छिपे हुए हैं, और इसलिए उसने पूरे गुरुकुल को जला दिया... यहाँ तक कि अंदर मौजूद बच्चों को भी।”
प्रहलाद भयभीत हो गया। 'पिताजी ऐसा कभी नहीं करेंगे—'
‘वह बदले की प्यास में अंधा हो गया था,’ उसने कहा। ‘जब उसे पता चला कि गुरुकुल उसी गुरु का है जिसे उसने अपने बेटों के लिए नियुक्त किया था, तो उसे तुरंत अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने प्रायश्चित करने के लिए नारद को उस पद पर एक महत्वपूर्ण भूमिका दी। हिरण्य दोषी था। लेकिन नारद… ओह… वह क्रोधित थे। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी टीम बनानी शुरू कर दी, यह समझते हुए कि हत्याएँ ही एकमात्र बुराई नहीं थीं जिन्हें राजा ने अनुमति दी थी या आदेश दिया था। और भी चीजें थीं – गरीबों पर हमला करना, अभिजात वर्ग को भोजन कराना ताकि इस शहर पर शासन करने वाले धनी रईसों से उसके युद्ध का वित्तपोषण हो सके।’

प्रहलाद बढ़ती दहशत के साथ उसकी बातें सुनता रहा। “और जिस व्यक्ति ने लोगों को अपने हिंसक उत्पीड़कों के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए प्रेरित और एकजुट किया, वह अब तुम्हारी उस क्रूर चाची की वजह से जेल में है, जो अंततः उसे मार डालेगी जबकि हम यहां असहाय बैठे रहेंगे।”
'मुझे माफ़ करें।'
प्रहलाद ने महसूस किया कि तलवार उसके और करीब आ रही है, उसकी जंग लगी गंध उसकी नाक में भर गई। 'नारद के साथ जो हुआ, उससे मैं स्तब्ध हूँ। मैं... मुझे खेद है। मुझे नहीं पता कि मैं और क्या कर सकता हूँ।'
‘तुम वो काम कर चुके हो जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था।’
‘तुम सही कह रही हो।’ प्रहलाद ने आह भरी। ‘मैं आस्था पाना चाहता हूँ। मेरी माँ के चले जाने से जो खालीपन आया है, उसने मुझे पूरी तरह से तोड़ दिया है। अनुहरद मेरे पिता समान हैं, लेकिन मैं… मैं अलग हूँ। मैं विष्णुसेना और उनके उद्देश्य में विश्वास रखता हूँ।’ उसने तलवार का दबाव कम होते हुए महसूस किया और उसका हाथ थामने के लिए आगे बढ़ा, उसकी आँखों में सीधे देखते हुए। उसने महसूस किया कि उसका डर कम हो रहा है। ‘आज रात आने के लिए धन्यवाद।’
उसने भी उसे घूरकर देखा और वह महसूस कर सकता था कि उसकी निगाहें उसकी आत्मा को झुलसा रही हैं।
उन्होंने आगे कहा, 'मैं अपनी गलती सुधारूंगा। मैं आप सबका हिस्सा बनना चाहता हूं। मैं आपकी मदद करना चाहता हूं।'
'आपका क्या मतलब है?'
‘हम गुरु नारद को कारागार से छुड़ाने जा रहे हैं, धृति।’

24

अनुह्राद

छह साल पहले

वह उन्नीस साल का था।
लेकिन उन्हें अपने जन्मदिन पर कोई विशेष उपहार नहीं मिला। इसके बजाय, उन्हें वही सख्त दिनचर्या निभानी पड़ी जिसका वे हर दिन पालन करते थे।
वह सुबह उठकर लंबी दौड़ के लिए निकल जाता था। फिर, पौष्टिक नाश्ता करने के बाद, चाहे वह फल हो या मांस, उसे भाला फेंक का अभ्यास करना होता था। उसके बाद, तीरंदाजी और फिर पौष्टिक दोपहर का भोजन। शाम ढलते-होते, उसे नारद से युद्ध कला की शिक्षा मिलती थी, जिसके बाद उसे फिर से दौड़ के लिए जाना पड़ता था।
दिन का अंत तलवारबाजी के पाठ और अपने पिता के साथ कुश्ती के मुकाबले के साथ होता था।
उसके पिता को उसकी हड्डियां तोड़ने में कोई आपत्ति नहीं थी। वास्तव में, उन्हें इसमें आनंद आता था।
कभी-कभी पिताजी का व्यवहार बिल्कुल ही विक्षिप्त हो जाता है।
उसका जन्मदिन बाकी दिनों की तरह ही था, और उसका अंत पीठ पर चोट और अत्यधिक थकावट की भावना के साथ हुआ।
कुश्ती के बाद जब वह घास पर आराम कर रहा था, तभी उसके पिता, अपनी खास सुनहरी धोती पहने हुए, उसके पास आए। “बेटा, तुम्हें इस साम्राज्य का नेतृत्व करने के लिए पर्याप्त बलवान होना होगा। मैं तुम्हें वह सब कुछ सिखा रहा हूँ जो मैं सिखा सकता हूँ ताकि तुम मजबूत बनो और हमें देवताओं जैसे लोगों के विरुद्ध विजय दिला सको। मैं नहीं चाहता कि इंद्र का पुत्र जयंत तुमसे अधिक बलवान हो जाए।”
अनुहराद ने उदास भाव से सिर हिलाया।
वह बार-बार कहता रहता है कि देवों के पास सोमा है। तो क्या पर्याप्त प्रशिक्षण के बाद भी मैं उन लोगों को हरा पाऊंगा जिनकी रगों में सोमा दौड़ रहा है?
‘असुरों का कवच कठोर होता है, जो देवताओं में नहीं होता,’ हिरण्य ने मानो अपने पुत्र के मन की बात जान ली हो, कहा। ‘इसका सदुपयोग करना सीखो।’ हिरण्य ने अपना पसीना पोंछा। ‘याद रखना’ – वह घुटनों के बल बैठ गया – ‘यह सब तुम्हारी माँ के लिए है। ठीक है?’
अनुहराद उससे कई और बातें पूछना चाहता था; उसके अधिकतर प्रश्न इस बारे में थे कि उसके छोटे भाई प्रहलाद के साथ नरम व्यवहार क्यों किया जाता था जबकि

उसे हमेशा योद्धा जीवन शैली में धकेला जाता था। लेकिन जब भी वह उसके प्रशिक्षण का कारण पूछता, उसे केवल यही उपदेश मिलता कि यह उसकी माँ का बदला है, और वह चुप हो जाता।
अनुहराद संगीतकार बनना चाहता था; वह रंगमंच से जुड़ना चाहता था और विभिन्न कला रूपों को सीखना चाहता था, मंडली के साथ यात्रा करना चाहता था। लेकिन वह यहाँ अपना कर्तव्य निभा रहा था, अभ्यास कर रहा था और अपनी जिम्मेदारियों के बारे में सीख रहा था, जब तक कि सिंहासन के कर्तव्यों ने उसे अभिभूत नहीं कर दिया।
मेरे लिए स्वतंत्र इच्छा जैसी कोई चीज नहीं है।
‘तुम उन्नीस साल पहले इसी तारीख को पैदा हुए थे,’ – हिरण्य ने अनुहरद की पीठ थपथपाते हुए कहा – ‘और मेरे पास तुम्हारे लिए एक उपहार है।’
‘धन्यवाद पिताजी। क्या बात है?’ अनुहराद ने डरते हुए पूछा कि कहीं उपहार उन्हें पसंद न आए।
'आप अभी एक शाही शिकार में शामिल हो रहे हैं।'
‘लेकिन ये तो रात है!’ अनुहराद ने हैरानी से कहा और जैसे ही वह गुस्से से आगे झुका, उसकी पीठ में तेज दर्द की लहर दौड़ गई।
‘इससे क्या फर्क पड़ता है? यह आपकी इंद्रियों के लिए अच्छा है। हत्या के प्रयास ज्यादातर रात में होते हैं। आपको अंधेरे में कार्रवाई करने के लिए तैयार रहना चाहिए। आपको अंधेरे से दोस्ती करनी होगी, उसे अपना मित्र बनाना होगा,’ हिरण्य ने समझाया।
अनुहराद ने दांत भींच लिए। 'ठीक है, पिताजी। मैं किसके साथ जा रहा हूँ?' ‘अंधका,’ उसने कहा और अपने चचेरे भाई का नाम सुनकर अनुहरद का सीना कस गया। ‘आखिरकार, उससे बेहतर अंधकार को कौन जानता है?’ हिरण्य ने आगे कहा।

अंधका शांत स्वभाव का था। उसके बाल झड़ चुके थे, चेहरा सफेद था और होंठ चिपचिपे थे। वह तंग कपड़े पहनता था और अपने अंगों को शरीर से इस तरह लपेटे रहता था मानो अपने ज़ख्मों को छुपा रहा हो। अनुहराद अपने चचेरे भाई से अक्सर नहीं मिलता था, क्योंकि वह उसे पसंद नहीं करता था, लेकिन जब भी मिलता

था, तो ज्यादातर काम के सिलसिले में या पारिवारिक मिलन समारोहों में ही मिलता था।

और आज काम था।
वे महल के पीछे जंगल के एक सुनसान हिस्से में थे। वे साथ-साथ चल रहे थे, उनके पीछे एक दर्जन पहरेदार थे। उन्होंने दूरी बनाए रखी, लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए वहां मौजूद थे कि राजकुमारों पर किसी बाहरी खतरे से हमला न हो। अंधका ने आंखों पर काली पट्टी बांधी हुई थी। वह ज्यादा नहीं बोलता था। वह घनी झाड़ियों से होकर चलने के लिए छड़ी का इस्तेमाल कर रहा था।
‘मैं इशारा करता हूँ। तुम गोली चलाओ,’ अंधका ने आदेश दिया।
अनुहराद ने अपना धनुष और बाण तैयार कर लिया था। वह पिछली रात शिकार पर नहीं गया था, और उसे यह अजीब लग रहा था। अधिकांश हिरण गहरी नींद में सो रहे होंगे।
‘रात पर विजय पाने के लिए, हम्म,’ अंधका ने कर्कश और तीखी आवाज में कहा, ‘अन्य इंद्रियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए… शूट!’ उसने अपनी बाईं ओर इशारा किया।
अनुहरद ने तुरंत अपने चचेरे भाई के इरादे पर संदेह किए बिना, अपना हाथ पीछे खींच लिया और उस दिशा में एक तीर छोड़ दिया जिस दिशा में अंधका ने उसे जाने के लिए कहा था।
एक तेज चीख सुनाई दी और अनुहराद ने पहचानते हुए अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। वह एक कुत्ता था। एक पिल्ला।
अनुहराद का दिल बैठ गया और वह कुत्ते की ओर दौड़ते हुए उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया, "यह तो पिल्ला है। तुमने मुझे एक निर्दोष जानवर को मारने पर मजबूर कर दिया!"
‘कोई बात नहीं। हमें इसे खाना ही होगा,’ अंधका उत्सुकता से बेचैन हो उठा। ‘क्या तुम पागल हो? किले में पर्याप्त भोजन है,’ अनुहराद भयभीत होकर बोला। पिताजी मुझे ऐसा करने नहीं देते।
'आपका क्या मतलब है?'
अंधका ने कोई जवाब नहीं दिया। 'कृपया, मुझे बहुत भूख लगी है।'

‘नहीं, दफा हो जाओ! डरपोक!’ अनुहरद चिल्लाया, जिस पर अंधका ने अपना सिर नीचे कर लिया और अनुहरद की नजरों से ओझल हो गया।
अनुहराद कुछ देर तक कुत्ते को देखता रहा। वह चाँदनी में बेजान पड़ा था।
उसने कुत्ते के शरीर से तीर निकाला।
‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।’ पास के पेड़ों से आवाज आई।
अनुहराद ने चारों ओर देखा, लेकिन उसे आवाज का स्रोत नहीं मिल सका।
‘ऊपर यहाँ।’
अनुहराद ने पेड़ों पर नज़र दौड़ाई और देखा कि एक लड़की एक डाल पर बैठी आम खा रही है। उसके बाल बिखरे हुए थे और उसकी त्वचा सांवली थी, जिससे वह अजीब और जंगली लग रही थी। वह बेहद खूबसूरत थी। वह बड़ी फुर्ती से डाल से कूदी और ज़मीन पर आ गिरी।
‘सावधान रहो। मेरे सैनिक तुम पर हमला कर सकते हैं क्योंकि तुम मेरे बहुत करीब आ रही हो,’ अनुहराद ने चेतावनी दी, लेकिन उसने उपहास उड़ाते हुए जमीन में एक छोटा सा गड्ढा खोदना शुरू कर दिया।
‘आप एक राजकुमार हैं, है ना?’
'हाँ मैं हूँ।'
'तुम्हारी बातों और व्यवहार से तो तुम बिल्कुल वैसे ही लगते हो।'
‘क्या मैं?’ अनुहराद ने कंधे उचकाते हुए कहा।
जैसे-जैसे वह खुदाई कर रही थी, अनुहराद की नज़र उसके बैग पर हाथ से बने एक पेड़ की तस्वीर पर पड़ी।
‘क्या तुम निषाद हो?’ उसने पूछा।
उसने सिर हिलाया। ‘मेरा नाम ज्योति है।’ उसने कुत्ते को धीरे से हाथों में उठाया और उसे नए खोदे गए गड्ढे में डालकर मिट्टी से ढक दिया। ‘क्या देख रहे हो? मेरी मदद करो,’ उसने कहा।
‘उह, माफ़ करना।’ अनुहराद ने सिर हिलाया और उस कुत्ते को दफ़नाने में उसकी मदद करने लगा जिसे उसने अभी-अभी मारा था। ‘पिताजी ने एक बार आप लोगों के बारे में बताया था। कि आप लोग उनके अभियान में शामिल नहीं हुए थे।’
'चलिए, उस जान को दफनाने पर ध्यान केंद्रित करें जिसे आपने अभी-अभी छीन लिया है।'
‘मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। वो तो बस मेरा चचेरा भाई है… वो एक अजीब इंसान है।’

उसने मिट्टी का ढेर लगाना बंद कर दिया और उसकी तरफ देखा।
हम राजा के इरादों से अनजान नहीं हैं। बस हमें उस पर विश्वास नहीं है।
वैसे, मैंने देखा कि तुमने उस लड़के को नीच कहा। तुम्हें पता है, वो अंधा है।
‘मुझे क्या फर्क पड़ता है?’ अनुहराद ने मुंह बनाते हुए कहा। ‘उसने मुझे इस निर्दोष जानवर को मारने के लिए मजबूर किया।’
‘नहीं, ऐसा नहीं है।’ वह उठी और मन ही मन प्रार्थना की। ‘यह काम तुमने किया था, लेकिन अब तुम उसे दोष दे रहे हो। अगर तीर चलाने से पहले तुमने एक पल भी सोचा होता और ध्यान से देखा होता कि वह किस ओर इशारा कर रहा था, तो तुम एक निर्दोष की जान बचा सकते थे। लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया। इसलिए, तुम राजकुमार की तरह व्यवहार कर रहे हो। बिलकुल अपने पिता की तरह।’
उसने अपने हाथों से धूल झाड़ी और फिर बोली, 'राजकुमार, अब इस जगह पर दोबारा मत आना। मैं तुम्हें इस जंगल के निवासियों को नुकसान नहीं पहुँचाने दूँगी।'
अनुहराद उस लड़की से मोहित हो गया था, लेकिन उसके शब्दों से उसे ठेस पहुंची और उसने पलटवार करते हुए कहा, 'तुम मुझे यह नहीं बता सकतीं कि मैं कहां जा सकता हूं और कहां नहीं, औरत। तुम अनपढ़ और जंगल में रहने वाली हो! और तुम जैसी औरतों को कुछ भी नहीं...'
वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'अपने शाही अंदाज़ में पेश आ रहे हो, है ना?' अनुहराद को तुरंत समझ आ गया कि वह उसे बेवकूफ बना रही है। वह घमंडी नहीं था, लेकिन अपने पिता की तरह अहंकारी न होते हुए भी वह अपने अहंकार पर काबू नहीं रख पाता था।
‘मुझे खेद है,’ उसने अपना सिर झुकाया।
वह जोर से हंसते हुए बोली, 'अच्छा, आपका दिन शुभ हो, राजकुमार। मुझे उम्मीद है कि हम फिर कभी नहीं मिलेंगे।'
और वह चली गई, धुंध भरे जंगल में नदी के किनारे जलते लालटेन की ओर। अनुहराद उसे जाते हुए देखता रहा और उसके पेट में अजीब सी बेचैनी होने लगी। उसकी हड्डियाँ खोखली सी लगने लगीं और उसके कान गर्म हो गए।
खैर, मुझे उम्मीद है कि हम ऐसा करेंगे।

ज्योति से अनुहराद की पहली मुलाकात को कुछ दिन बीत चुके थे। प्रशिक्षण के बाद वह हर दिन चुपके से निकल जाता और अपने तीर के साथ एक लिखित संदेश भेज देता। उसे उम्मीद थी कि ज्योति को वह संदेश मिल जाएगा।
जब वह प्रशिक्षण नहीं कर रहा होता था, तो वह उससे मिलने की उम्मीद में चुपके से जंगल में चला जाता था।
वह जंगल में खड़ा था और उदास होकर अपने चारों ओर देख रहा था, तभी अचानक उसे एक आवाज सुनाई दी।
‘क्या तुम भूल गए हो कि जंगल में रहने वाले लोग पढ़ नहीं सकते?’ उसने ऊपर से पुकार कर कहा।
उसने उसे पेड़ से नीचे उतरते हुए देखा, जिसके हाथ में उसके द्वारा लिखे गए कुछ पत्र प्रतीत हो रहे थे।
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'एक राजकुमार के पास ऐसे छोटे-मोटे मामलों पर ध्यान देने का समय नहीं होता। लेकिन जब तक संदेश स्पष्ट है, शब्दों का कोई मतलब नहीं, है ना?' उसने पूछा।
वह फिर से हंस पड़ी, जिससे उसका दिल एक धड़कन चूक गया।
उन्होंने प्रकृति, जानवरों और फूलों के बारे में बातें कीं। अनुहरद को पता चला कि ज्योति एक निम्न जाति के परिवार से थी, लेकिन वह पहाड़ों से भोजन इकट्ठा करने में माहिर थी और एक बेहतरीन रसोइया थी।
उसकी नजर जल्द ही उसके हाथ में मौजूद एक लकड़ी के वाद्य यंत्र पर पड़ी।
‘क्या यह एक यूटी (छोटी ट्रक) है?’ उसने उसके बैग से बाहर निकले उपकरण को देखा।
‘जी हां! क्या आप इसे बजा सकते हैं?’ उसने पूछा।
उन्होंने कहा, 'मुश्किल से।'
अनुहरद हमेशा से अपनी संगीत प्रतिभा का प्रदर्शन करना चाहता था, और एक दिन वह अपना वाद्य यंत्र अपने पिता के पास बजाने के लिए ले गया। हिरण्य ने जब कहा, 'बेटा, तुम इसमें अच्छे नहीं हो। तलवारबाजी में माहिर होना बेहतर होगा,' तो वह बुरी तरह टूट गया। हिरण्य के ये शब्द अनुहरद के दिल को बुरी तरह चुभ गए थे।
‘इसे बजाओ,’ उसने उसे प्रोत्साहित करते हुए यूटी (छोटी गाड़ी) उसे थमा दी।
उसने उसे अपने होठों तक उठाया।

जंगल का उदास वातावरण उस समय हल्का हो गया जब अनुहरद ने कश्यपपुरी की धरती पर अनसुनी धुन बजाई। ज्योति ने एक पल के लिए उसे देखा, फिर आग जलाने लगी और शोरबा उबालने के लिए एक बर्तन निकाला।
जंगल में धुन गूंज उठी और पेड़ मानो गीत की धुन पर नाचने लगे। ज्योति उसे ध्यान से देखती रही जब वह बजा रहा था, और फिर उसकी नज़र उसके बगल में पड़े फूलों से भरे थैले पर पड़ी।
क्या वह उसके लिए फूल लाया था?
उसकी मुस्कान और भी खिल उठी और वह शरमा गई।
जब उसने यूटी को नीचे रख दिया और सांस लेने के लिए थोड़ा रुका, तो उसने उससे पूछा, 'तुम्हें खेलना किसने सिखाया?'
‘मेरी माँ। मैं उनके साथ ज्यादा समय नहीं बिता सका क्योंकि उनका कम उम्र में ही निधन हो गया था। लेकिन जब मेरे पिता अपने अभियानों पर जाते थे, तो उनके साथ केवल मैं ही होता था। और मेरा भाई भी, लेकिन वह तो शिशु था।’ उसके चेहरे पर दर्द देखकर ज्योति का दिल भी दुख से भर गया और उसने आगे बढ़कर उसका हाथ थाम लिया।
‘यह बहुत सुंदर है। कल शाम हमारे गाँव आइएगा। हमारे मुखिया अपने लोगों को प्रदर्शन करने की अनुमति देते हैं – चाहे वह अभिनय हो, नकल हो, संगीत हो या नृत्य। कहने की जरूरत नहीं है, वह राजकुमार की मेजबानी करके बहुत खुश होंगे,’ उसने कहा।
अनुहराद मुस्कुराया और वहां आने का वादा किया।

अनुहरद निषाद शिविर में था। उन्होंने उसका बड़े उत्साह से स्वागत किया था। अनुहरद जानता था कि वे किसी जाति के नहीं थे, बल्कि उससे बाहर थे। लेकिन अनुहरद समझ गया था कि उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उनके लिए पल-पल जीना ही सब कुछ था। वह उन्हें आनंद लेते हुए देख सकता था, वे रात के सन्नाटे में संगीत की धुन सुनते हुए बोनरे के चारों ओर बैठे थे। सभी ने रंग-बिरंगे कपड़े पहने थे और एक कोने में सस्ती मिट्टी से बने गहने बेचने के लिए एक स्टॉल लगा हुआ था।

जब अनुहरद की बारी आई, तो उसे केंद्र में बुलाया गया। झिझकते हुए वह आगे आया। उसने घबराते हुए वीणा को होठों तक उठाया, लेकिन जैसे ही उसने बजाना शुरू किया - वही धुन जो उसने जंगल में ज्योति के लिए बजाई थी - उसकी घबराहट दूर हो गई। उसके आसपास के लोग संगीत की धुन पर झूम रहे थे, स्पष्ट रूप से आनंद ले रहे थे। वह महसूस कर सकता था कि लोग उसका हौसला बढ़ा रहे हैं, उसे सहारा दे रहे हैं। उसे ऐसा लगा जैसे वह हमेशा से उन्हीं का हिस्सा रहा हो। उसे आजादी का एहसास हुआ।
अपनी रचना समाप्त करते ही उन्हें जोरदार तालियाँ मिलीं और वे मुस्कुराए।
चारों ओर देखते हुए उनकी नजर शिविर के पास एक परछाई पर पड़ी।
वह उस परछाई को जानता था…
अनुहराद शिविर छोड़कर तुरंत भागने लगा। उसने देखा कि ज्योति उसे देख रही है। कुछ पल रुकने के बाद, वह भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी।
अनुहराद ने दौड़ते हुए जासूस पर झपट्टा मारा और उसकी गर्दन पकड़ ली। 'तुम्हें किसने भेजा है?'
‘तेरा बाप!’ उस आदमी ने हैरानी से कहा और अनुहराद ने उसे जोर से थप्पड़ मारा।
वह गुस्से से आग बबूला हो गया। 'उसे कैसे पता चला?'
‘हे स्वामी, वह आपकी रात्रिकालीन गतिविधियों पर नजर रख रहा है। और लोग आपके पीठ पीछे बातें कर रहे हैं। एक उच्च कुल का असुर, हमारा राजकुमार, वनवासियों के करीब जा रहा है? कितनी शर्म की बात है!’ वह स्तब्ध अनुहरद की पकड़ से बच निकला।
‘चले जाओ,’ अनुहराद ने निराश होकर कहा। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसने ज्योति को उनकी ओर आते देखा। अनुहरद का क्रोधित चेहरा देखकर उसने पूछा, 'क्या बात है?'
अनुहराद परेशान हो गया। 'मेरे लोग तुम्हारे साथ मेरे संबंधों के बारे में बातें कर रहे हैं। मेरे पिता यही नहीं चाहते - चुनाव प्रचार के बीच में अफवाहें उनका ध्यान भटकाएं। हमारे बारे में अफवाहें।'
‘उससे बात करो,’ उसने उसके गाल पर हाथ रखते हुए कहा।
'किस बारे मेँ?'
‘मेरे बारे में,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा।

अनुहराद ऐसा करना चाहता था, लेकिन उसे अपने पिता से डर लगता था। 'वह चाहते हैं कि मैं उनके अभियान में शामिल हो जाऊं, और अगर मैंने उन्हें तुम्हारे बारे में बताया, तो वे तुम्हें एक बाधा समझेंगे।'
अनु, तुम इस रक्तपात से ऊपर हो। तुम इससे कहीं अधिक महान हो। हमारे साथ क्यों नहीं चलती? हम जल्द ही रवाना होंगे और तुम हमारे साथ आकर एक नई जिंदगी शुरू कर सकती हो। इन किलों में जो जिंदगी तुम जी रही हो, वह जिंदगी तुम्हें नहीं चाहिए। मैं तुम्हारे बारे में यह जानती हूँ,’ उसने कहा। ‘क्या तुम मेरे साथ महल में नहीं आ सकती?’ उसने पूछा।
उसने महल की ओर सिर झुकाते हुए कहा, 'क्या तुम सचमुच चाहते हो कि मैं वहाँ रहूँ? क्या तुम खुद भी वहाँ रहना चाहते हो?'
अनुहराद अपने मन में जानता था कि महल उसके लिए उपयुक्त जगह नहीं थी। क्या वह महल उसके लिए उपयुक्त था?
उसे पता था कि उसे क्या करना है।
उसे उसके और अपने पिता के बीच चुनाव करना था।

‘पिताजी, मैं आपके चुनाव प्रचार से अपना नाम वापस लेना चाहता हूँ,’ उसने हिरण्य के कमरे में प्रवेश करते हुए घोषणा की। उसके पिता अपनी मेज पर काम कर रहे थे, उनके सामने दस्तावेज़ और कागज़ करीने से रखे हुए थे।
‘क्यों?’ हिरण्य ने पूछा।
मैं इस जीवन से थक गया हूँ। मैं अपनी इच्छानुसार जीना चाहता हूँ।
क्या आप अपनी मनचाही जिंदगी नहीं जी रहे हैं?
‘पिताजी, मैं आपका जीवन जी रहा हूँ।’ अनुहराद ने दाँत पीसते हुए कहा। ‘आप चाहते हैं कि मैं आदर्श योद्धा, आदर्श पुत्र बनूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं हूँ। यह मेरा काम नहीं है… मुझे नहीं लगता कि मैं राजकुमार बन सकता हूँ।’ ‘यह वही लड़की है, है ना?’ हिरण्य ने अपनी नाक फुलाते हुए, कुर्सी पर पीछे झुकते हुए अपनी मूंछें घुमाईं। ‘मुझे डर था कि तुम्हारा कमजोर दिमाग उस औरत के बहकावे में आ जाएगा। जब वे तुम्हें अपनी टांगों के बीच खींचती हैं तो वे काफी लुभावनी लगती हैं।’

अनुहराद गुस्से में था लेकिन उसने खुद को संभाला। 'बात वो नहीं है। बात वो नहीं है। बात इससे कहीं ज़्यादा है। मुझे वहाँ उसके लोगों के साथ रहने में आज़ादी महसूस होती है।'
हिरण्य ने अपनी कुर्सी पीछे धकेली और मेज के चारों ओर घूमकर अपने उन्नीस वर्षीय बेटे के सामने आकर खड़ा हो गया। 'ठीक है, तुम जा सकते हो। तुमने मुझे निराश किया है, अनुहराद,' उसने कहा।
'मुझे पता है।'
और मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं है।
‘बस याद रखना, एक बार तुम चले गए तो… मैं तुम्हें कभी वापस नहीं अपना सकता, चाहे कुछ भी हो जाए। क्योंकि यह मेरी प्रतिष्ठा पर धब्बा होगा कि मेरे अपने बेटे ने जाति-भेद के बिना जीवन चुना। जिस क्षण तुम इस कमरे से बाहर जाओगे, तुम मेरे लिए एक अछूत, एक महत्वहीन व्यक्ति बन जाओगे।’
अनुहराद ने सिर हिलाया।
‘अनुहरद, वह तुम्हारे लिए सही नहीं है। तुम राजा हो, जबकि वह समाज से बहिष्कृत है। वह ऐसे लोगों में से आती है जिनमें रीढ़ की हड्डी नहीं होती। अपने भाग्य की ओर लौट जाओ। उसे स्वीकार करो,’ हिरण्य ने उसे समझाने की कोशिश की।
‘लेकिन पिताजी, मैं उससे प्यार करता हूँ और मैं उसके साथ रहूँगा,’ अनुहराद ने पहली बार कहा और उसे इन शब्दों पर विश्वास था।
क्या मैंने अभी-अभी प्यार कहा?
लेकिन यही सच था। वह इसे अपने दिल में महसूस कर सकता था। वह जानता था कि वह वापस नहीं लौटेगा।
मैं ऐसा नहीं करना चाहता।
‘ठीक है, पिताजी। मुझे यह स्वतंत्रता देने के लिए धन्यवाद।’
उसने सिर झुकाया और एक नए जीवन की ओर कमरे से बाहर निकल गया।

उन्हें नदी किनारे मिलना था।
अपने थैलों और लिपटे हुए कपड़ों के साथ वह उसका इंतज़ार करता रहा, पर वह कहीं नज़र नहीं आई। कई घंटे बीत गए और दोपहर की धूप उसके चेहरे पर पड़ रही

थी जब वह निषाद शिविर की ओर चल पड़ा। वह धीरे-धीरे चलता रहा और आखिरकार शिविर पहुँच गया, लेकिन वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि...
उसके सामने शिविर खंडहर और नष्ट पड़ा था।
जमीन पर जले हुए शव पड़े थे। आग की आखिरी लपटें हर जगह बिखरी हुई थीं। जमीन और फर्श खून से सने हुए थे।
अनुहराद रोते हुए इधर-उधर घूमने लगा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसकी आत्मा टुकड़े-टुकड़े हो रही हो।
ज्योति…
उसने चारों ओर उसकी तलाश की, अपने सामने पड़े शवों के चेहरों को ध्यान से देखा।
नहीं, नहीं। कृपया नहीं…
उसकी आंखों में आंसू भर आए और गर्म गालों पर बहने लगे, वह बेचैनी से इधर-उधर घूमता रहा, शवों को पलटता रहा और हर चेहरे को देखता रहा जब तक कि उसे वह मिल नहीं गई।
वह एक आम के पेड़ के पास थी; उसका शरीर पेड़ से टिका हुआ था। वह दौड़ा और उसके पास घुटनों के बल बैठ गया, उसकी नज़रें उससे मिलीं। वह मरी नहीं थी, लेकिन उसकी आँखों में दर्द और पछतावा साफ झलक रहा था, और उसके पेट में एक लंबा चाकू चुभा हुआ था। उसे जानलेवा वार किए गए थे।
‘अनु…’ उसने उसके हाथ पकड़ लिए। ‘मेरी मदद करो…’
अनुहराद ने चाकू हटाने की कोशिश की, लेकिन वह चीख पड़ी।
नहीं, ऐसा मत करो... यह और भी बुरा है।
‘लेकिन तुम…’ वह जानता था कि उसका बहुत खून बह चुका था और वह मौत के कगार पर थी।
‘हम तो बस एक नई शुरुआत चाहते थे। क्या यह बहुत जल्दी हो गया?’ उसने व्यथित होकर रोते हुए उसका चेहरा पकड़ लिया। ‘मैं तुमसे बहुत कुछ साझा करना चाहती थी।’
‘तुम कहीं नहीं जा रहे हो, ठीक है। तुम ठीक हो जाओगे। मुझे बस डॉक्टरों को फोन करना है।’
‘अगर मैं तुमसे न मिला होता तो क्या हम इन सब चीजों से बच सकते थे?’
‘नहीं। कृपया इस तरह बात मत करो,’ वह रोते हुए बोला। ‘कौन था?’

‘म्लेच्छों ने हमें लूटा, हम पर हमला किया।’ उसने एक कड़ा घूँट निगला और अनुहराद ने उसकी आँखें देखीं… वे धँसी हुई थीं। ‘मेरे माता-पिता पर हमला किया…’ वह सिसकते हुए बोली, ‘अनु, यह गलत था। यह बहुत गलत था। मेरे लिए, हमारे लिए, अभी बहुत जल्दी है।’
अनुहराद ने उसे गले लगाया और उसके गाल पर चुंबन किया। फिर उसने उसके होंठों को चूमा और उनकी आंखों के आंसू आपस में मिल गए। अनुहराद ने पीछे हटकर देखा तो वह मुस्कुरा रही थी।
'वह आम ले आओ,' उसने कहा और कुछ कदम दूर पड़े फल को लाने के लिए कहा। अनुहराद उसे लाने गया, लेकिन जब तक वह उसके पास लौटा, तब तक उसकी जान निकल चुकी थी और उसकी आँखें भावहीन हो गई थीं।
अब मैं किससे मदद मांगू, ज्योति?

अनुहरद कंबलों के ढेर के नीचे कांप रहा था। वह महल में अपने कमरे में लौट आया था। प्रहलाद उसके बगल में बैठा उसकी पीठ थपथपा रहा था। उसका छोटा भाई कुछ नहीं बोला, लेकिन उसके पिता कमरे के द्वार से बाहर आते हुए बोले। मुझे खेद है, बेटे। ऐसा नहीं होना चाहिए था।
अनुहराद ने अपने जबड़े भींच लिए।
‘ये म्लेच्चा… मैंने उन्हें ढूंढने के लिए एक कार्यबल भेजा है।’
‘मैं उनके साथ शामिल हो जाऊंगा।’ अनुहराद की लाल आँखों ने दर्द से अपने पिता की ओर देखा। ‘मैं उनके साथ शामिल हो जाऊंगा और उन सभी कमीनों को मार डालूंगा।’
आप ऐसा कर पाएंगे और हम आपकी मदद करेंगे।
‘क्यों?’ उसने अपने पिता से पूछा। ‘मेरी वजह से आपकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी। आप बहिष्कृत लोगों से कोई वास्ता नहीं रखना चाहते थे।’
हिरण्य अपने पुत्र के पास घुटनों के बल बैठ गया। ‘कोई बात नहीं, मेरे प्यारे पुत्र। हो सकता है मैं उस समय क्रोधित रहा हूँ, लेकिन मैं टूटे हुए दिल को समझ सकता हूँ। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और मुझे अपनी प्रतिष्ठा की

परवाह नहीं है। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ न्याय करूँगा। लेकिन क्या तुम मुझसे वादा करोगे कि तुम मेरे साथ न्याय करोगे?’ अनुहराद अपने पिता की सुनहरी आँखों में देखता रहा। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसके पिता - नियमों और कायदों के पक्के और सख्त मिजाज इंसान - उसे इतनी आसानी से वापस अपना लेंगे, चाहे उसने कुछ भी किया हो, चाहे उसने दूसरा जीवन चुना हो। उसे एहसास हुआ कि भले ही उसने अपने पिता को अकेले युद्ध लड़ने के लिए छोड़ दिया था, हिरण्य हमेशा उसके साथ रहेगा।
‘जी पिता,’ अनुहरद ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा। ‘अब से, कश्यपपुरी के राजा, मेरी पूरी निष्ठा आपके साथ है।’

25

हिरण्यकश्यप

उसे पता था कि वह मुसीबत में है।
जैसे ही हिरण्य ने शिला पर कदम रखा, उसके चारों ओर की दुनिया घूमने लगी और वह एक वर्महोल में समा गया जिसने उसे बंजर भूमि पर फेंक दिया।
उसकी नज़रें चारों ओर घूमीं और उसे एहसास हुआ कि उस चबूतरे ने उसे कहीं और टेलीपोर्ट कर दिया है। उसके चारों ओर की दुनिया धूसर और निर्जीव लग रही थी।
धुंआ हवा में फैला हुआ था, और पेड़-पौधे या तो कटे हुए थे या सूख चुके थे। लाशों की तीखी गंध पूरे स्थान में फैली हुई थी। जैसे ही हिरण्य आगे बढ़ा, उसने अपने सामने लगभग 5 फीट ऊँचा एक विशाल बांध देखा। और उस धातु के बांध के चारों ओर कुछ कठोर, कुछ मजबूत लिपटा हुआ था - पिघले हुए तांबे के रंग की एक सर्प जैसी पूंछ। उस जानवर का सिर उठा और हिरण्य ने देखा कि उसकी आँखें दोपहर के सूरज की तरह चमक रही थीं। तेज धूप में उसके नुकीले दांत जगमगा रहे थे और नथुनों से हवा के झोंके निकल रहे थे। वह एक सर्प था, लेकिन अजगर जैसा दिखता था।

हिरण्य ने आत्मा द्वारा रचित इस मायाजाल में उस राक्षस को पहचान लिया। उसने पाताल के एक मंदिर में इस नाग की एक मूर्ति देखी थी, जहाँ इसकी पूजा भगवान वृत्र के रूप में की जाती थी। वह एक दानव था, जिसका चेहरा विकृत था, और उसे हमेशा इंद्र से जलबांध को थामे रखने वाले नाग के रूप में चित्रित किया जाता था। वृत्र इस बांध के जल को नियंत्रित करके इल्लावर्ती पर शासन करता था। वह मनुष्यों से ऊँची कीमत वसूलता था, इससे पहले कि इंद्र ने आकर अपने वज्र से वृत्र का वध कर दिया।
वृत्र ने अभी तक हिरण्य को नहीं देखा था। वह अपने पंजों से अपने कान खुजलाने में व्यस्त था।
वह आत्मा हिरण्य के बगल में प्रकट हुई। उसने फुफकारते हुए कहा, 'क्या तुम्हें अपना प्रतिद्वंदी दिखाई दे रहा है?'
'मैं अपने ही जैसे लोगों को नहीं मार सकता,' हिरण्य ने कहा।
‘यह तो बस अतीत का प्रतिबिंब है,’ आत्मा ने कहा। ‘यह स्वयं भगवान वृत्र नहीं हैं।’
‘वह मेरा प्रतिद्वंदी क्यों है?’
‘तुम्हें जल्द ही पता चल जाएगा। क्योंकि तुम्हें याद रखना होगा कि तुम्हारा शत्रु इंद्र है और तुम्हें यह जानना होगा कि इंद्र ने अपने सबसे बड़े शत्रु को कैसे मारा। तुम्हारा काम अपने शत्रु की कमजोरियों को पहचानना है।’
ये परीक्षाएं... वह मुझे इंद्र की ही कपटपूर्ण शक्तियों के खिलाफ प्रशिक्षित कर रहा है।
क्या यह हर दूसरे चुनौती देने वाले के लिए भी एक तरह का परीक्षण था? नहीं। ब्रह्मा की परीक्षाएँ जिन रूपों में प्रकट होती हैं, वे स्वयं चुनौती देने वाले पर निर्भर करती हैं।
हिरण्य आगे बढ़ गया, उस प्रेत को पीछे छोड़ते हुए। उसके पास कोई हथियार नहीं थे, और वह केवल अपनी सुनहरी धोती पहने हुए था। उसके बाल तेल से सने हुए थे और पीछे की ओर बंधे हुए थे, और उसकी मूंछें पसीने से भीगी हुई थीं। वह जानता था कि यह केवल एक भ्रम है। वृत्र के समय में इल्लावर्ती वास्तव में ऐसी नहीं दिखती होंगी, लेकिन कौन जानता है?
आत्मा ने हिरण्य को समझा, 'याद रखो, तुम्हें इंद्र की तरह सोचना होगा। तुम्हें सोचना होगा कि उसने वृत्र का वध कैसे किया।'

‘यह वज्र से किया गया था।’
‘वज्र तो केवल आक्रमण शुरू करने का एक साधन था। इंद्र को पता था कि उसे कहाँ आक्रमण करना है। वृत्र की कमजोरी का पता लगाओ और तुम्हें वज्र से उसका वध करने का अवसर मिल जाएगा।’
‘मुझे लगा था कि यह परीक्षा शक्ति की परीक्षा है…’ हिरण्य ने कहा। वह डरा हुआ था, उसके भीतर भय उबल रहा था, जिससे उसे मतली महसूस हो रही थी। ‘और मेरे पास कोई हथियार भी नहीं होंगे?’
आत्मा हँसी। ‘अगर यह इतना आसान होता, तो इन्हें ब्रह्मा की परीक्षाएँ नहीं कहा जाता।’ और इतना कहकर वह धुएँ में विलीन हो गई।
वृत्र, जो बांध के शिखर पर था जहाँ से पानी टपक रहा था, उसके सामने हिरण्य चूहे के समान छोटा था। हिरण्य ने मनुष्यों को बांध बनाते, उस पर काम करते और उसकी पूजा करते हुए भी देखा। उसने उन्हें दूर से नहीं देखा था, और उसने देखा कि उनमें से कई, बल्कि हजारों लोग, बांध पर और उसके आसपास काम कर रहे थे। उसने अन्य असुरों को भी देखा, और वे सभी तांबे की चमड़ी वाले थे, मनुष्यों पर प्रहार कर रहे थे और उन्हें और भी अधिक मेहनत करने के लिए मजबूर कर रहे थे।
हिरण्य को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह यहाँ है - कि उसे समय में पीछे ले जाया गया है, उस समय में जब वृत्र जीवित थे।
जैसे ही वह करीब पहुंचा, उसने देखा कि वृत्र की पूजा करने वाले रक्षक अपने घोड़ों पर सवार होकर आ रहे हैं। बांध के ऊपर से अजगर नीचे उसकी ओर देख रहा था - उसकी सुनहरी लाल आँखें झपक रही थीं।
पहरेदार हिरण्य के पास आए, उनके भाले उसकी ओर तने हुए थे। उनमें से एक ने उससे पूछा कि वह कौन है, और जवाब में, हिरण्य अपनी जगह से उछलकर पहरेदार पर झपटा, उसे नीचे गिराया और फिर अपना भाला उसके चेहरे पर दे मारा।
दूसरा गार्ड पीछे हट गया, उसके चेहरे पर उलझन के भाव थे, वह स्पष्ट रूप से सोच रहा था कि हिरण्या कौन है।
लेकिन हिरण्य रुका नहीं। उसने बेहोश पड़े रक्षक से भाला छीन लिया और दूसरे रक्षक पर वार किया, जिससे भाला उसकी छाती में जा लगा।
इससे वृत्रा का ध्यान आकर्षित होगा।
रेगिस्तान की गर्मी से उसे बेचैनी हो रही थी, लेकिन वह स्थिर रहा और इंतजार करता रहा।

मुझे यह कायाधु के लिए करना होगा। मुझे यह परीक्षा उत्तीर्ण करनी ही होगी।
ड्रैगन ने हिरण्या को घूरते हुए फुफकारा और फिर बांध की दीवार पर अपने पंजे फंसाकर उससे छलांग लगाई और हिरण्या के सामने जमीन पर उतर गया।
बांध के आसपास मौजूद बाकी लोग - सैनिक और गार्ड - एक अर्धवृत्त बनाकर इकट्ठा हो गए थे और मनोरंजन को होते हुए देख रहे थे।
सूर्य की किरणें दोनों पर पड़ रही थीं और वृत्रा के पंजे धरती में गड़ गए थे। हिरण्य वहाँ कमर से ऊपर नग्न, निहत्था और कवचहीन खड़ा था। वह तैयार था।
इतनी नज़दीक से वह देख सकता था कि वृत्रा की त्वचा काँटों से भरी थी और चट्टान की तरह सख्त लग रही थी, मानो उसे भेदना मुश्किल होगा।
‘तुम कौन हो?’ वृत्रा ने पूछा, उसकी बुलंद आवाज से नीचे की धरती कांप उठी।
‘और तुम क्या चाहते हो?’
हिरण्य ने कोई उत्तर नहीं दिया।
इसके बजाय, वह भाग गया।
हिरण्य पूरी तेज़ी से वृत्र की ओर दौड़ा, उसका हृदय ज़ोरों से धड़क रहा था और उसके मन में केवल एक ही विचार था - कायधु। और जैसे ही वह वृत्र के पास पहुँचा, वह अपनी जगह से उछलकर वृत्र के करीब पहुँचा और उसके सिर पर ज़ोरदार प्रहार किया।
इसका प्रभाव ज्यादा नहीं था, लेकिन इसने वृत्रा को चौंका दिया, जिसने तुरंत अपना लंबा सिर पीछे खींच लिया।
हिरण्य वापस जमीन पर आ गिरा, एक पैर पर घुटने टेककर बैठ गया, उसकी मुट्ठी जमीन पर मजबूती से गड़ी हुई थी और उसके चारों ओर रेत उड़ रही थी। सोमा से मिली शक्ति उसे अच्छी लग रही थी - वह उसके प्रभाव में खुद को अजेय महसूस कर रहा था, मानो वह अपने आसपास की हर चीज को नियंत्रित कर सकता हो।
तभी उसे एक जोरदार प्रहार का आभास हुआ। वृत्र की पूंछ उस पर झपटी और उसके बगल में जा लगी। पूंछ फिर से झपटी, और हिरण्य ने उस पर से छलांग लगाने के बजाय, उसे पकड़ लिया और रोके रखा। पूंछ का प्रहार इतना ज़ोरदार था कि वह पीछे की ओर धकेल दिया गया, लेकिन उसने पूंछ नहीं छोड़ी।
लेकिन तभी पूंछ ऊपर उठी और हिरण्य को एहसास हुआ कि वह हवा में लटका हुआ है, उससे झूल रहा है... लेकिन उसने इसका फायदा उठाया, खुद को आगे धकेला और वृत्र की गर्दन पर जा गिरा।

उसने अपने नाखून वृत्र के शल्कों में गड़ा दिए और नाग क्रोधित होकर दहाड़ा। हिरण्य काँटेदार त्वचा पर चढ़ने लगा।
मुझे यह जानना होगा कि उसकी कमजोरी कहाँ है। उसमें कोई न कोई कमजोरी तो जरूर होगी।
वृत्र के एक भाग से दूसरे भाग पर कूदते हुए हिरण्य, अजगर के मुख के पास शिखर पर पहुँच गया। उसने यह देखने की कोशिश की कि क्या वहाँ से उस पर हमला करके उसे मारा जा सकता है, लेकिन यह मुश्किल लग रहा था। वृत्र के दाँत नुकीले और मज़बूत थे, और जैसे-जैसे हिरण्य उसके करीब पहुँचा, उसने देखा कि उसके दाँत छोटी-छोटी तलवारों जैसे थे। उसने उन्हें पकड़ लिया और मुँह के अंदर जाने के बजाय, हिरण्य काँटेदार अजगर के कंधे पर फिसल गया और उसकी कठोर खाल को पकड़ लिया। जैसे-जैसे वह शिखर की ओर बढ़ रहा था, उसने महसूस किया कि वृत्र अपने पंजों से उस पर वार कर रहा था... उसे झटकने की कोशिश कर रहा था। लेकिन हिरण्य हवा में कलाबाजी करते हुए पंजों से बाल-बाल बच गया।
जब वह वृत्रा के सिर के शिखर पर पहुँचा, तो उसने देखा कि वहाँ एक बूढ़ा व्यक्ति छिपा हुआ था, जिसकी उंगलियाँ हिलाने पर चिंगारियाँ निकल रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई कठपुतली नचाने वाला अपनी गुड़िया की डोरियाँ हिलाता है। ऐसा लग रहा था मानो वह अजगर को भी उसी तरह नियंत्रित कर रहा हो।
क्या हो रहा है?
अचानक, हिरण्य को सच्चाई का एहसास हुआ। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, वह उस आदमी पर झपटा और उसकी उंगलियों से निकली चिंगारियां पल भर में बुझ गईं, और अजगर भी उनके साथ गायब हो गया, मानो वह सिर्फ धुआं और भ्रम था - एक मायाजाल।
हिरण्य उस आदमी को पकड़े हुए था जब वे ज़मीन पर गिर पड़े और धूल में लोटने लगे। अनजाने में ही हिरण्य की उंगलियों ने उस आदमी को छोड़ दिया। उसे थकान महसूस होने लगी थी। उसने अपनी आँखें खोलीं और खड़ा हुआ, उसका शरीर कमज़ोर महसूस हो रहा था जब...
अचानक कहीं से एक धारदार हथियार उसकी ओर आ गिरा!
हिरण्य ने उसे अपनी बांह से रोक दिया, जिससे उसकी त्वचा छिल गई। वह पीछे गिर पड़ा। उसके सामने बूढ़ा आदमी खड़ा था।
हिरण्य ने उसे अब स्पष्ट रूप से देखा। वह चोगा पहने हुए था और उसके चेहरे के चारों ओर घनी दाढ़ी थी। वह असुर नहीं था। वह मानव था।

‘तुम कौन हो?’ हिरण्य ने पूछा।
बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने हिरण्य पर फिर से तलवार चलाई, जो तुरंत लुढ़क कर पीछे से बूढ़े को पकड़ लिया। 'तुम कौन हो? अपनी पहचान बताओ!'
हिरण्य ने जब उसे थाम लिया, तो उसे मानव की दुर्बलता का एहसास हुआ। 'मैं... मैं त्वस्त्र हूँ,' बूढ़े ने उत्तर दिया।
‘त्वस्त्र?’ हिरण्य ने उनके बारे में सुना था। वे एक विद्याधर थे, जिससे ड्रैगन के भ्रम का कारण स्पष्ट हो गया। ‘रुको, क्या तुम उन युवा ऋषियों में से एक नहीं थे, एक शक्तिशाली जादूगर… और मायावी भी?’ हिरण्य ने मुस्कुराते हुए कहा।
‘जी’, बूढ़े ने उत्तर दिया। ‘तुम यहाँ क्यों हो?’ उसने पूछा, मानो वह हिरण्य को जानता हो।
‘तुमने ऐसा क्यों किया?’ हिरण्य ने त्वस्त्र की कथा याद करते हुए कहा। ‘तुम मानव हो, है ना? एक वास्तुकार… एक निर्माता जिसे इंद्र ने देवताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप इल्लावर्ती का पुनर्निर्माण करने के लिए भेजा था।’ ट्वास्त्र ने सिर हिलाया। 'हाँ, मैं हूँ। और मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि यह मेरा बनाया हुआ घोंसला है।'
‘नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। वृत्र वास्तविक थे। वे तुम्हारी छल-कपट का परिणाम नहीं थे।’
नहीं, वो नहीं थे। वो एक विकृत राजा थे जो पाताल से पलायन करके आए थे, जिनसे मेरी मुलाकात हुई और दोस्ती हो गई। मैंने उन्हें पढ़ाया-लिखाया और वो मेरे बेटे जैसे हो गए। और वो बीमार थे। इसलिए जब उनकी मृत्यु हुई, तो मैंने उनके लिए ये भ्रम पैदा किया, ताकि उन्हें मुझ पर गर्व हो... अपने पिता पर गर्व हो।’ वो घुटनों के बल बैठ गए और रोने लगे। ‘मैं हमेशा उनके लिए पिता समान था। मैं चाहता था कि उनकी विरासत जीवित रहे, ताकि उन्हें एक ड्रैगन के रूप में याद किया जाए, न कि एक कमजोर के रूप में।’
हिरण्य ने देखा कि कैसे एक देव ने एक असुर के प्रति पिता समान व्यवहार किया। यह अविश्वसनीय था।
उन्होंने आगे कहा, ‘मैंने उनकी जगह शासन किया, ताकि हर कोई जान सके कि वे कितने शक्तिशाली थे, ताकि हर कोई उनकी पूजा करे और उनसे डरे। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले मुझे अपनी योजना बताई थी; वे चाहते थे कि लोग उनकी

पूजा करें और यह सोचें कि वे जलमार्गों को नियंत्रित करते हैं, और हमने वही किया।’
‘तुमने अपने ही लोगों के साथ विश्वासघात क्यों किया?’
‘क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ से आए हैं, फर्क इससे पड़ता है कि आप कहाँ पहुँचते हैं। हम दोनों अपनी पहचान भूल गए और एक-दूसरे के लिए हमारे मायने पर ध्यान केंद्रित किया।’ बूढ़े ने आह भरी। ‘मैं वही कर रहा था जो उसे पसंद था, मैं उसके लिए कर रहा था और अब… तुम्हारी वजह से सबको पता चल जाएगा। वह बस एक और कमजोर असुर स्वामी बनकर रह जाएगा और मैं सिर्फ एक मायावी बनकर रह जाऊँगा।’
हिरण्य ने सोचा कि यह मायाजाल कितनी कारगर साबित हुई। विद्याधर ऐसी छवियां बनाने में माहिर थे जो इतनी वास्तविक लगती थीं कि आप उनसे संपर्क कर सकते थे। लेकिन अगर आपको स्रोत का पता चल जाता, तो वे गायब हो जातीं और उनके पीछे की चालबाज़ी उजागर हो जाती।
हिरण्य कुछ कह पाता, उससे पहले ही उसने देखा कि उसके हाथ में एक लंबा भाला प्रकट हो रहा है। और भाले की नोक पर वज्र जैसा चिन्ह बना हुआ था।
एक वज्र।
वज्र ऐसे हथियार थे जिन पर इंद्र का प्रतीक - वज्र - अंकित होता था। इनकी विशेषता यह थी कि ये ओब्सीडियन से बने होते थे।
आत्मा ने हिरण्य को बताया था कि जब उसे पता चल जाएगा कि अजगर पर हमला कहाँ करना है, तो उसे वह हथियार मिलेगा जिससे इंद्र ने वृत्र को मारा था। लेकिन हिरण्य को त्वस्त्र को मारने में असहजता महसूस हो रही थी। वह किसी प्रियजन को खोने के गहरे दर्द को जानता था। और वह त्वस्त्र को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।
‘इंद्र की तरह करो।’ आत्मा उसके बगल में प्रकट हुई और उसके कान में फुसफुसाते हुए बोली, ‘उसकी हत्या कर दो और तुम इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।’
‘लेकिन यह परीक्षा ताकत की नहीं है…’ हिरण्य ने अपनी गर्दन कस ली। ‘क्यों… मैं एक पिता को नहीं मार सकता।’
ट्वास्त्र उसके सामने फूट-फूटकर रो रही थी।
‘बिल्कुल सही।’ आत्मा मुस्कुराई। ‘और क्या इंद्र पिता नहीं हैं?’
हिरण्य ने पलकें झपकाईं। और फिर उसकी रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन दौड़ गई।

मैं एक पिता को जान से मारने के लिए तैयार था।
‘ये परीक्षण क्या हैं?’
‘हे असुर राजा, ये स्वभाव से अत्यंत अप्रत्याशित हैं और ये आपकी परीक्षा लेंगे। जो आवश्यक हो, वह करो, अन्यथा... तुम घर लौट सकते हो,’ आत्मा ने समझाया। ‘इन परीक्षाओं का उद्देश्य तुम्हें सबसे कठिन परिस्थितियों में डालना और यह परखना है कि क्या तुम उन पर विजय प्राप्त कर सकते हो।’
हिरण्य आगे बढ़ा, उसने अपनी नाक सिकोड़ी और बूढ़े आदमी का सिर पकड़कर पीछे की ओर खींच लिया, भाला उसके गले के बिल्कुल करीब था।
‘कृपा करके ऐसा न करें,’ ऋषि ने विनती की, ‘मैं यह सब छोड़ दूंगा। कृपया। मैं यह सब छोड़ दूंगा। कृपया…’
हिरण्य हांफ रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि खून उसके कानों तक दौड़ रहा है, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा है।
मुझे यह करना होगा।
'कृपया ऐसा मत करो,' त्वस्त्र ने हाथ जोड़कर विनती की।
बगल में मौजूद आत्मा उसे लगातार उकसा रही थी। 'करो!' उसकी आवाज़ फुसफुसाई।
'इंद्र की तरह करो और इस परीक्षा को जीतो!'
लेकिन जब हिरण्य ने त्वस्त्र की ओर देखा, तो उसे स्वयं की झलक दिखाई दी; उसे प्रहलाद और अनुह्रद दिखाई दिए।
हिरण्य ने बूढ़े व्यक्ति को छोड़ दिया और भाले को एक तरफ फेंक दिया, फिर पीछे मंडरा रहे उस प्रेत की ओर मुड़ा। उसने घोषणा की, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं इंद्र के स्तर तक नहीं गिर सकता।'
आत्मा ने कुछ नहीं कहा, बल्कि गुस्से में फुफकारा।
हिरण्य ने पलक झपकाई और पल भर में खुद को वापस गुफा में पाया। जिस चबूतरे पर वह खड़ा था, उसके चारों ओर की किरण मंद पड़ गई। आत्मा कोने में बैठी स्वयं से कुछ बुदबुदा रही थी।
‘क्या हुआ?’ हिरण्य ने अपने कवच को छूते हुए पूछा। वह चबूतरे पर ऐसे खड़ा था मानो वह कभी गया ही न हो; मानो वृत्र के साथ हुई पूरी घटना कभी घटी ही न हो। “ऐसा नहीं होना चाहिए था! तुम्हें उसे मार डालना चाहिए था। तुम्हें वही करना चाहिए था जो तुम्हारे शत्रु इंद्र ने किया था। लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया, तुम... तुम...” आत्मा दर्द से चीख रही थी।
‘मैं हार गया, है ना? मुझे जाना होगा…’ हिरण्य निराश था।

लेकिन उस आत्मा ने अपना सिर हिलाया। ‘मैं तुम्हें सच बताने के लिए बाध्य हूँ,’ उसने गुस्से से चेहरा बिगाड़ते हुए कहा। ‘भगवान ब्रह्मा हमेशा से मानते आए हैं कि शक्ति का निर्धारण किसी की जान लेने से नहीं, बल्कि किसी की जान बचाने से होता है। किसी को मारना आसान है, लेकिन किसी की जान बचाना मुश्किल है।’
बिल्कुल। परीक्षा का उद्देश्य वृत्र को मारना नहीं था। इसका उद्देश्य वह करना था जो इंद्र ने नहीं किया - वृत्र को बचाना।
हिरण्य मुस्कुराया। उसे राहत महसूस हुई। 'इसका क्या मतलब है?'
उस आत्मा ने उसे घूरकर देखा। ‘इसका मतलब है कि तुम… तुमने परीक्षा पास कर ली है।’
पहला परीक्षण।
हिरण्य ने राहत भरी मुस्कान बिखेरी। उसने अपने युवावस्था में कई प्रतियोगिताएँ, कई लड़ाइयाँ और द्वंद्वयुद्ध जीते थे, लेकिन इसे जीतना - वाकई बहुत अच्छा लगा।
‘अब आगे क्या?’ उसने अपने कंधे उचकाते हुए पूछा।
‘हमने तुम्हें कम आंका। तुम अपने भाई से बिल्कुल अलग हो। वह बलवान था… लेकिन तुम… तुम तो होशियार हो।’ आत्मा गुर्राई। ‘अब नियमों को बदलना होगा।’
‘यह तो ठीक नहीं है!’ हिरण्य ने अपनी नाक फुला ली।
‘ब्रह्मा की परीक्षाएँ निष्पक्ष नहीं हैं।’ आत्मा कमरे में इधर-उधर फुसफुसाते हुए हँसी। ‘वे न्यायसंगत हैं और वे लगातार बदलती रहती हैं।’ हिरण्य ने अपने जबड़े भींच लिए। 'ये लोग आखिर किस रूप में बदल गए हैं?' आत्मा ने उत्तर दिया, ‘तुम्हारी दूसरी परीक्षा इतनी आसान नहीं होगी। पिछली बार के विपरीत, यदि तुम जीतते हो, तो तुम तीसरी परीक्षा में जाओगे। लेकिन यदि तुम हार जाते हो…’
हिरण्य उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था।
'तुम मर जाओगे।'
और फिर उस आत्मा ने हंस दिया।

26

नरसिंह

‘आज रात हमें इस युद्ध को समाप्त करना होगा,’ नारा ने अपने भाषण की शुरुआत की।
अन्य सिंहों ने उसकी ओर देखा। वे सभी एक छोटे से कमरे में huddled थे, जो उनके लिए मुश्किल था, क्योंकि वे सभी अपने मांसल शरीर में बड़े और चौड़े थे। लेकिन वे सभी अपने नेता की बातों को ध्यान से सुन रहे थे और उनसे सहमत हो रहे थे। चेनचेन कोने में बाहें मोड़े बैठा था और नारा को देख रहा था। ‘यह युद्ध देवताओं और असुरों के बीच नहीं है। यह अहंकार के बीच है। और उस अहंकार की जड़ उस बैल के नीचे है।’ उनका तात्पर्य शिव के किले के मध्य में स्थित स्वर्णिम बैल नंदा से था, जो शक्ति और वीरता का प्रतीक था।
उसने चेनचेन से सीखा था कि पशुपतास्त्र उस बैल के नीचे था जिसकी रक्षा नाग और मानव कर रहे थे, जो शिव के सच्चे उपासक थे और जो किसी पर भी हमला करने के लिए तैयार थे जो बहुत करीब आ जाता था, यहां तक कि उन लोगों पर भी जो इस शिविर का हिस्सा थे।
‘हमें इस अस्त्र को जलाकर नष्ट करना होगा ताकि अंधका हमें छोड़कर चला जाए। और इससे बड़ा कोई हथियार नहीं है जो हमें नुकसान पहुंचा सके। पशुपतास्त्र का यहाँ कोई स्थान नहीं है। यह इस दुनिया में कभी नहीं था, और मैं भगवान विष्णु की कसम खाता हूँ, मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि एक समय ऐसा आएगा जब इनका अस्तित्व फिर कभी नहीं रहेगा। लेकिन आज के लिए, हम – इस लोक के रक्षक और संरक्षक के रूप में, धर्म के साथ, नव वैकुंठ के निवासी…’ उन्होंने सिंह जन्मभूमि का जिक्र करते हुए कहा, जिसे पौराणिक रूप से विष्णु का निवास स्थान कहा जाता है, ‘इस परमाणु हथियार के शासन को समाप्त करने की जिम्मेदारी हमारी है। क्या आप सब तैयार हैं?’
उन सभी ने सिर हिलाया और फिर अपनी छाती पर मुक्का मारा।
‘याद रखना, किसी को मारना नहीं है, केवल वश में करना है।’ वह बाईं ओर मुड़ा। उसके समूह के उस सदस्य ने, जो लैंप के पास खड़ा था, कहा, 'पूर्वी दिशा की ओर मुड़ो।'

'सामने।' फिर वह दाईं ओर मुड़ा। 'आप सब पश्चिमी वाला रास्ता ले लो। मैं बीच वाला रास्ता लेकर हथियार की तलाश में जमीन के नीचे जाऊंगा।'
इसका जवाब एक जोरदार गर्जना थी।
‘चलो करते हैं!’ नारा ने भी अपनी दहाड़ से जवाब दिया, उसकी सुनहरी त्वचा लालिमा में चमक रही थी।
जैसे ही वे सब तितर-बितर होकर आधी रात के अंधेरे में बाहर निकले, नारा चेनचेन के पास गया, जिसने उसे आते देखकर मुस्कुरा दिया। 'तुम अच्छा कर रहे हो।'
नारा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'बेहतर बनना एक विकल्प है, है ना?' ‘क्या आपको पता है कि भैरव इससे खुश नहीं होगा?’
मुझे पता है। मैं प्राइड जहाज लेकर वैकुंठ के लिए रवाना हो जाऊंगा।
यह सुनकर चेनचेन असहज हो गई। 'मैं समझ गई।'
नारा को समझ आ गया कि उसके चेहरे पर चिंता की जगह झुंझलाहट क्यों आ गई थी। वह उसे समझने लगा था। 'आप हमारे साथ शामिल हो सकती हैं।'
‘अगर तुम जिंदा लौट आए तो ही,’ वह हंसते हुए बोली। ‘इंद्र का क्या होगा? क्या वह इसे हल्के में लेगा?’
‘क्या आपको ऐसा लगता है? क्योंकि मुझे तो इस पर संदेह है!’
नारा और चेनचेन बाहर गए और चाँद की चाँदी जैसी रोशनी में खड़े हो गए। नंदी के चारों ओर पहरेदार ऐसे खड़े थे मानो कुछ हुआ ही न हो।
‘मुझे शुभकामनाएँ दो,’ नारा ने चेनचेन से कहा।
उन्होंने कहा, 'तुम्हें भाग्य की जरूरत नहीं है। तुम्हें चमत्कार की जरूरत है। और भगवान विष्णु तुम्हें उतने ही चमत्कार प्रदान करें जितने की तुम्हें जरूरत है।'
नारा मुस्कुराया और योजना के अनुसार आगे बढ़ने का इशारा किया। उन सभी ने दस्ताने पहन रखे थे, क्योंकि वे अपने साथियों को गलती से भी चोट नहीं पहुँचाना चाहते थे। चेनचेन पीछे रह गया जबकि नारा आगे की ओर दौड़ पड़ा। नारा बीच में आ गया, उसके दस्ताने पहने हाथ कस गए जब उसने देखा कि उसके आदमी दहाड़ते हुए लोगों को नीचे गिरा रहे थे - कुछ को फंदे से बांधा गया था और कुछ को ज़मीन पर जकड़ा गया था। नारा को बस सीधे आगे बढ़ना था। तभी अचानक एक नाग प्रकट हुआ, नारा ने तुरंत चकमा दिया और उस हथियारबंद नाग को अपने एक आदमी की ओर फेंक दिया।

उसने लोगों को अपने घरों से बाहर निकलते और हो रहे विद्रोह को देखते हुए पाया। और उसे इससे कोई आपत्ति नहीं थी।
यह करना ही पड़ा।
भैरव के टावर की बत्ती गुल हो गई थी, इसलिए भैरव को यह समझने में कुछ समय लग गया कि क्या हो रहा है।
नारा बीस फुट ऊंचे विशालकाय बैल के पास गई। वह पूरी तरह से चमक रहा था। बैल के चारों पैर एक बड़े लकड़ी के दरवाजे पर टिके थे।
मुझे इन्हें हटाना होगा।
नारा ने बैल को धक्का देना शुरू किया और ऐसा करते ही उसकी मांसपेशियां तन गईं, रुद्राक्ष की माला टूट गई और उसने दांत पीस लिए। धीरे-धीरे बैल दूसरी दिशा में बढ़ने लगा…
'ऐसा मत करो,' पीछे से एक कमजोर आवाज आई।
नारा ने पीछे मुड़कर देखा तो उसके पीछे जटाधारी, दाढ़ीदार और नीले रंग की त्वचा वाला एक व्यक्ति खड़ा था। उसका शरीर घावों से भरा था और उसने तेंदुए की खाल ओढ़ रखी थी। वह भैरव था। कुछ दूरी पर वीरभद्र नारा की सेना से लड़ रहा था।
नारा और भैरव एक दूसरे को देखते हुए खड़े रहे।
‘मुझे करना ही होगा,’ नारा ने कहा। ‘तुम यह जानते हो।’
‘आप गलत हैं। पशुपतास्त्र को नष्ट करके आप अंधक की जीत सुनिश्चित कर देते।’ लेकिन उसे हथियार नहीं मिलेगा। मेरे लिए, यही जीत है।'
लेकिन सोचिए, इस हथियार से हम कितनी जानें बचा सकते हैं!
‘और इस प्रक्रिया में कई लोगों को नष्ट भी कर देते हैं,’ नारा ने अपने जबड़े भींच लिए। ‘क्या तुमने देखा है कि ये अस्त्र क्या करते हैं? ऊपर से गिराए जाने पर विकिरणों के माध्यम से ये किस तरह के उत्परिवर्तन पैदा करते हैं?’ भैरव के पास बचाव का कोई आधार नहीं था। 'मुझे तुम्हें उस गांव में नहीं भेजना चाहिए था।'
‘खैर, तुमने कर दिखाया,’ नारा ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘लेकिन अगर तुमने नहीं भी किया होता, तो भी मुझे आखिरकार सच्चाई पता चल ही जाती। यह हथियार हम सबके लिए हानिकारक है, और हममें से कोई भी इसके लायक नहीं है। न तुम, शिव, न इंद्र, तथाकथित राजा, और न ही असुर।’

भैरव ने अपनी पीठ से त्रिशूल निकाला। 'ठीक है, अब मेरे पास तुम्हें रोकने के अलावा कोई चारा नहीं है।'
‘क्यों?’ नारा को तब विश्वासघात का एहसास हुआ जब उसने देखा कि उसका दोस्त एक हथियार के लिए उसे मारने को तैयार था।
क्योंकि भगवान रुद्र चाहते थे कि यह सुरक्षित रहे और मैं उनके निर्देशों का पालन करती हूँ। मैंने हमेशा यही किया है। यहाँ तक कि जब मैंने अपने बेटे को खोया, तब भी मैंने वही किया जो उन्होंने मुझसे करने को कहा था - अपने बेटे को खोजने के बजाय अपने पद पर वापस चली गई।
नारा ने सिर हिलाया। “और इससे तुम्हें क्या मिला? हम एक हारती हुई लड़ाई लड़ रहे हैं। और अंधका जादू-टोने का सहारा लेकर अपना जीवन बचाए हुए है। सोचो उसने इस हथियार के लिए क्या योजना बनाई होगी। लेकिन अगर हम इसे उससे छीन लें, तो खेल खत्म। हम सुरक्षित हैं।”
‘परन्तु मैं भगवान रुद्र की अवज्ञा नहीं कर सकता!’ और यह कहकर भैरव त्रिशूल लेकर नारा पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े।
नारा दूसरी तरफ लुढ़क गया और पीछे से भैरव को पकड़ लिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि उसके दोस्त को गंभीर चोट न लगे।
‘हमें ऐसा करने की जरूरत नहीं है। कृपया, समझने की कोशिश कीजिए!’ वह रोते हुए बोला।
भैरव ने उसकी पेट में कोहनी से जोर से मारा और नारा पीछे गिर गया। पृष्ठभूमि में गूंजते भीषण शोर के बीच भैरव चीख उठा, ‘तुम समझते नहीं!’ उसने फिर दोहराया और नारा के पैरों के पास बर्फ में अपना त्रिशूल गाड़ते हुए वार करने लगा, ‘तुम समझते नहीं, मैं शिव इसलिए हूँ क्योंकि मैं भगवान रुद्र के प्रति अटूट निष्ठा रखता हूँ। शिव की उपाधि अर्जित की जाती है और मैंने इसे वह कर दिखाया है जो दूसरों के पास नहीं था…’
‘दृष्टि!’ नारा चिल्लाया और जैसे ही त्रिशूल पास आया, उसने दोनों हाथों से हथियार को पकड़ लिया। ‘तुम्हारे पास दृष्टि नहीं है, भैरव। तुम जीवित नहीं रहोगे। तुम मर रहे हो और तुम्हें यह देखना होगा।’
‘शिव होना वफादारी के बारे में नहीं है।’ नारा ने हथियार को ज़ोर से पीछे धकेला और उछलकर खड़े हो गए। ‘यह सही काम करने के बारे में है। तुम अंधका की तरह अंधे नहीं हो, लेकिन पशुपतास्त्र की शक्ति से अंधे हो गए हो।’

शिव ने आगे बढ़कर नारा के चेहरे पर दहाड़ मारी और अपना भयानक रूप प्रकट किया। नारा ने तुरंत ही हथियार से बचते हुए भैरव के पेट में घूंसा मारा और त्रिशूल छीन लिया।
‘शिव होने का अर्थ है अपनी प्रजा की रक्षा करना।’ नारा ने हथियार एक तरफ फेंक दिया। ‘न कि इस व्यर्थ युद्ध में उन्हें नष्ट करना। इंद्र ने तुम्हें अपने वश में कर लिया है। वह अच्छा आदमी नहीं है। मुझे तो यह भी नहीं पता कि किसी आदमी में अच्छाई क्या होती है। लेकिन जो भी हो, उसमें वह गुण नहीं है। एक दिन वह असुरों से तंग आ जाएगा और अपनी छवि के लिए इस हथियार से अनगिनत लोगों का नाश करेगा।’
और तभी भैरव के चेहरे का भाव बदल गया। अचानक, वह स्थिर खड़ा हो गया।
नारा ने उनकी ओर मुख करके सिर हिलाया। “हे भगवान शिव, मैं वह दिन नहीं आने देना चाहता,” उन्होंने भैरव को उनके नाम से पुकारते हुए कहा। “मैं उन्हें एक दिन पशुपतास्त्र का प्रयोग करने का विकल्प नहीं देना चाहता। मैं उनसे यह विकल्प छीन लेना चाहता हूँ।”
'मुझे यकीन है कि उसने तुम्हें यह करने के लिए नहीं भेजा था,' भैरव अब अधिक शांत लग रहा था।
‘नहीं, उसने ऐसा नहीं कहा। उसने मुझसे कहा कि इस बार मुझे अंधका को हराकर निर्दोषों को बचाने का मौका मिला है। मैंने सोचा था कि अंधका हमारा दुश्मन है। नहीं, वह नहीं है। वह तो बस अहंकार के बड़े खेल में एक मोहरा है। दुश्मन तो हमेशा से मौजूद था और यही हथियार है,’ नारा ने नंदी की मूर्ति की ओर इशारा करते हुए कहा।
भैरव ने कुछ नहीं कहा, बस हांफते हुए अपने आदमियों को लड़ाई रोकने का इशारा किया। नारा ने भी ऐसा ही किया।
‘धन्यवाद,’ नारा मुस्कुराई।
भैरव बैल के पास गया और उसे थोड़ा धक्का दिया जिससे फर्श में बना छोटा सा गुप्त द्वार दिखाई दिया। फिर उसने उसे खोला और छेद से नीचे उतरने लगा। नारा उनके पीछे-पीछे मशालों से रोशन गुफा में दाखिल हुआ। वह भैरव के पीछे- पीछे चल रहा था, जो उसे एक बड़े खुले मैदान में ले गया जहाँ पशुपतास्त्र रखा हुआ था। यह एक लंबा, सीधा हथियार था जिसके एक सिरे पर रत्न जड़ा हुआ था। यह कुछ-कुछ धनुषाकार धनुष जैसा दिखता था, लेकिन उससे कहीं अधिक जटिल

था। लेकिन तीरों के बजाय, इसमें चट्टान के आकार के प्रक्षेपास्त्र थे, जो शायद असल खलनायक थे।
‘यह इन्हें दागने वाला यंत्र है,’ भैरव ने उस यंत्र की ओर इशारा करते हुए कहा। फिर उन्होंने रत्न की ओर इशारा किया। ‘यह वह लीवर है जो विस्फोटकों को दागने में मदद करता है, जो केवल तीव्र प्रभाव पड़ने पर ही फटते हैं। ये देवी मोहिनी की अस्थियों से बने हैं, जिनमें सूक्ष्म मणि कण हैं, जो घातक विस्फोटों का कारण बनते हैं। इस संपूर्ण यंत्र को पशुपतास्त्र कहा जाता है, लेकिन वास्तव में ये पत्थर ही असली हथियार हैं। यह यंत्र तो केवल इन्हें दागने का एक साधन है।’
भैरव ने पत्थरों को खींचकर ज़मीन पर फैलाना शुरू किया। भैरव ने मशाल हाथ में लेकर पत्थरों के पास रखते हुए कहा, 'मुझे पूरी उम्मीद है कि आप सही हों।'
‘करो,’ नारा ने कहा।
भैरव ने सिर हिलाया और फिर मशाल नीचे कर दी। जैसे ही मशाल चट्टानों को छूई, वह उन्हें पूरी तरह से अपने आगोश में ले लिया।
नारा, हाथ बांधे, हथियार के नष्ट होने को देखता रहा, जिसने अंततः इस युद्ध के असली खलनायक का अंत कर दिया। और वह खुश था, क्योंकि इसे नष्ट करके, वह जानता था... वह जानता था कि उसने कितने निर्दोषों की जान बचाई है। यहाँ आने का, युद्ध में वापस लौटने का उसका उद्देश्य पूरा हो गया था। भैरव ने उदास स्वर में कहा, 'अब हम क्या करें?', और उस हथियार से आने वाली रोशनी की किरणें उनके चेहरों पर प्रतिबिंबित हुईं।
नारा ने कहा, 'हमने अंधका के साथ एक बैठक तय की है।'
‘और क्या करें?’ उनकी आवाज गंभीर थी।
नारा ने आदम से शिव की ओर देखा। 'हम युद्धविराम की घोषणा करते हैं।'

27

होलिका

वे फिर से जेल में थे।
होलिका ने अपनी दोनों तलवारें अपने सामने मेज पर रखीं और फिर नारद के सामने बैठ गई। पहली नज़र में होलिका ने देखा कि नारद एक साधारण बूढ़े व्यक्ति लग रहे थे, लेकिन उनके व्यक्तित्व में कुछ बुराई छिपी हुई थी, खासकर जब वह कमरे में दाखिल हुई और उसने प्रहलाद और नारद को बहस करते देखा। उम्मीद है कि मेरा भतीजा इसमें शामिल नहीं होगा।
उसके पहरेदार कोठरी के बाहर खड़े थे। अंदर, लैंप की हल्की परछाइयाँ दीवार पर पड़ रही थीं। कोठरी की दुर्गंध असहनीय थी और हवा बिल्कुल भी नहीं चल रही थी। वह एक घुटन भरी जगह थी।
‘तुमने गलत आदमी को पकड़ा है,’ नारदा ने कहा, उसके हाथ रस्सियों से कसकर बंधे हुए थे।
‘हो सकता है, लेकिन मुझे तुम वैसे भी कभी पसंद नहीं थे,’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा। उसे यकीन नहीं था कि नारदा दोषी है या नहीं, लेकिन उसकी अंतरात्मा उसे बता रही थी कि वह दोषी है। उसे उसे उकसाना था, उससे बात करवानी थी ताकि वह उसके घोंसले तक पहुँच सके और फिर उन सभी मकड़ियों को जला सके जो साम्राज्य के लिए खतरा थीं।
उसने आह भरी। 'मुझे नहीं पता कि मुझे क्या कहना चाहिए। इसलिए मैं चुप रहूंगा।'
‘क्या आप जानते हैं कि मैंने अपने भाई के शासन से खुद को मुक्त करने का फैसला क्यों किया?’ उसने पूछा, और नारद ने उनका हाथ हिलाया। ‘क्योंकि मैं उसके शासन से तंग आ गया था। वह हिरण्यक्ष नहीं था, और आप यह जानते हैं। हिरण्यक्ष बलवान था, बंजन के विपरीत, जो… नम्र, कमजोर है; खासकर कयाधु के बाद, और उसे इस हालत में देखकर मुझे दुख होता है। और इसीलिए मुझे अपनी स्वायत्तता प्राप्त है, ताकि मैं अपने अर्धसैनिक बल के साथ जो चाहूँ कर सकूँ। तो कृपया, मैं आपसे फिर से पूछता हूँ… मुझे वह सब बताएँ जो मैं जानना चाहता हूँ, अन्यथा मैं आपके साथ जो चाहूँ कर सकता हूँ और कोई कानून या मुकदमा आपकी मदद नहीं कर पाएगा।’
नारदा का चेहरा सिकुड़ गया और झुर्रियाँ और गहरी हो गईं। ‘क्या आप समझ नहीं रही हैं, मेरी देवी? मैं निर्दोष हूँ…’ और इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाते, होलिका ने उनका सिर मेज पर पटक दिया, जिससे उनकी नाक टूट गई और खून

बहने लगा। ‘आपको… ऐसा नहीं करना चाहिए था…’ वह दर्द से लगभग रोने ही वाले थे।
होलिका ने बेपरवाही से कहा, 'मैं तुम्हें अभी मार सकती हूँ या तुम्हें आज़ाद कर सकती हूँ। या मैं तुम्हें ज़िंदगी भर दर्द से तड़पा सकती हूँ। मुझे आखिरी विकल्प पसंद है, तुम्हें नहीं?'
अचानक, नारदा की भौंहें तन गईं। आंसू रुक गए, और उसने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा। डरने के बजाय, वह खिलखिलाकर हँसा। 'त्स्क, त्स्क।'
उसके व्यवहार में अचानक आए बदलाव से होलिका हैरान रह गई। उसने पूछा, 'क्या हुआ?'
‘तुम दिखावा तो बहुत बहादुरी से करते हो, लेकिन तुम भूल गए हो, है ना? खैर, शायद तुम भूले नहीं हो।’ वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया। ‘आखिर, कोई कैसे भूल सकता है कि जब कोई अपने बच्चे को दो बार खो देता है तो क्या होता है?’ होलिका ने दांत पीस लिए।
वह मेरे अतीत की बात कर रहा है।
‘एक बार हारना मुश्किल होता है, दो बार हारना, ओह माय गॉड, कितना भयानक रहा होगा, है ना?’ खून से लथपथ नाक से हंसते हुए उसने कहा। ‘बताओ, कैसा लगता है जब बार-बार गर्भपात होने के बाद आखिरकार पति तुम्हें छोड़ देता है? और अब, उसे सबक सिखाने के लिए, तुम मुझ जैसे निर्दोष पुरुषों को चोट पहुंचा रही हो। मेरा मतलब है, ऐसा करने में कैसा लगता है?’
होलिका को अचानक ऐसा लगा जैसे वह अपने जीवन के उस भयानक दौर में वापस आ गई हो। वे शुरुआती दिन जब वह बहुत कमजोर, बहुत थकी हुई थी। हमेशा बिस्तर पर पड़ी रहती थी।
उन्होंने कहा, ‘मैं यहां नहीं रह सकता। मुझे ताज़ी हवा चाहिए। मुझे पाताल के लिए निकलना होगा। यहां आना हमारे लिए सही नहीं था। हम कभी भी सही नहीं थे।’
वह बिस्तर पर लेटी थी, उसकी आँखों में आंसू थे। 'कृपया ऐसा मत करो। मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।'
‘होली।’ वह उसके बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठ गया। ‘क्या तुम समझ नहीं रही हो? मुझे संतान चाहिए और तुम मुझे संतान नहीं दे सकती।’ वह स्वयं एक कुलीन व्यक्ति था। होलिका जानती थी कि अगर हिरण्य को पता चल गया तो वह उसके पति की हत्या करवा देगा।

लेकिन वह हिरण्य को कभी सच नहीं बताएगी।
क्योंकि वह अपने पति से प्यार करती थी।
नारदा पीछे खड़े होकर शांति से सब कुछ सुन रहे थे। वे उनके चिकित्सक थे, उनके मार्गदर्शक थे जिन्होंने उनकी समस्याओं में उनकी सहायता की।
‘मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। तुम मुझे ऐसे ही छोड़कर नहीं जा सकते,’ उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा, हालाँकि वह जानती थी कि असुर कानून के अनुसार, यदि कोई स्त्री संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हो तो पुरुष को उसे छोड़ने का पूरा अधिकार है, क्योंकि असुर संस्कृति में संतानोत्पत्ति को अत्यंत महत्व दिया जाता है।
‘इसका मतलब यह नहीं है कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता। हमने दो बार कोशिश की और नाकाम रहे। हर बार, तुम्हारे लिए जितना मुश्किल होता है, उतना ही मेरे लिए भी होता है। मुझे माफ़ करना। मुझे कुछ समय चाहिए,’ उसने उसके सिर पर चुंबन करते हुए कहा। ‘मुझे सोचने-समझने की ज़रूरत है। मैं वापस आऊंगा। वादा करता हूं।’
लेकिन उसने कभी जवाब नहीं दिया। हिरण्य ने कई बार उसके बारे में पूछा, लेकिन होलिका ने जो कुछ हुआ था उसे अपने तक ही सीमित रखा।
चीखते हुए वह वर्तमान में लौटी और अपनी कुर्सी पीछे फेंकते हुए नारद का गला पकड़ लिया। ‘तुम्हें मेरे जीवन पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है, कीड़े। मेरे बेचारे भाई ने तुम्हें राजधानी में लाया, जबकि तुम एक सच्चे भक्त थे, तुम्हारे गुरुकुल के विरुद्ध किए गए अपराध के पश्चातापवश। सच कहूँ तो, मुझे उन बच्चों के साथ जो हुआ उसकी कोई परवाह नहीं है,’ उसने झूठ बोला। वह सचमुच उन बच्चों के लिए रोई थी और हिरण्य पर क्रोधित भी हुई थी, लेकिन नारद को यह जानने की ज़रूरत नहीं थी। ‘मुझे बस इतना जानना है कि तुम मुझे सच बताओ। तुम्हारे आदमी कहाँ हैं?’
‘क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘अगर मैं तुम्हें बता दूं, तो तुम मुझे मार दोगे और फिर जाकर उन्हें भी मार दोगे। अगर मैं तुम्हें न बताऊं, तो तुम मुझे मार दोगे लेकिन तुम्हें उन्हें मारने का मौका नहीं मिलेगा।’
तो आप विष्णुसेना के सदस्य हैं?

उसने सिर हिलाया, उसके चेहरे पर एक उन्मादी मुस्कान थी। 'दरअसल, इसकी अगुवाई करो, और मेरा यकीन मानो... अभी हमें बहुत कुछ करना बाकी है, जितना हम कर चुके हैं उससे कहीं ज्यादा। यह तो बस शुरुआत है।'
होलिका ने अपनी नाकें फुला लीं। उसने अपनी दो तलवारों में से एक को पकड़ा और बूढ़े आदमी के गले पर वार करने ही वाली थी कि तभी उसे एक धमाके की आवाज सुनाई दी!
होलिका ने मुड़कर अपने रक्षकों को देखा, जो उसकी ही तरह आश्चर्यचकित थे। होलिका ने नारद की ओर जिज्ञासा भरी नज़र डाली, जो स्वयं भी भ्रमित लग रहा था। वह जल्दी से बाहर निकल गई और अपने एक रक्षक को इशारा किया कि वह नारद के साथ रुके ताकि वह भाग न जाए।
जैसे ही वह कोठरियों में आगे बढ़ी, अन्य कैदी उस पर चिल्लाने, चीखने और थूकने लगे।
तभी एक और जोरदार धमाका हुआ।
होलिका यह देखकर स्तब्ध रह गई कि उसके सामने आग भड़क रही थी और उससे काला, घना धुआँ उठ रहा था। धुएँ में से उसने काले लबादे पहने हुए लोगों को देखा।
आकृतियाँ उभर रही थीं, उनकी तलवारें तनी हुई थीं। उन सभी पर कमल का चिन्ह अंकित था।
उनकी छाती पर प्रतीक चिन्ह।
विष्णुसेना! वे ही इसके पीछे हैं!
होलिका ने जरा भी इंतजार नहीं किया। वह तुरंत आगे बढ़ी, अपनी दोनों तलवारें खींच लीं। उसने विष्णुसेना के एक अनुयायी पर जोरदार प्रहार किया और अपनी तलवारें उसके शरीर में गाड़ दीं।
एक और व्यक्ति प्रकट हुआ, लेकिन उसने अपनी तलवार से उसकी तलवार को रोक दिया और उसकी छाती पर लात मारी, जिससे वह कोठरी के दरवाजे से टकराकर गिर गया। हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी जब होलिका धुएं में दाखिल हुई और अचानक कहीं से दो तलवारें निकलीं। अपनी दोनों तलवारों से उसने उन्हें रोक दिया, लेकिन उसका बचाव नाकाम रहा और वार झेलते हुए वह जमीन पर गिर पड़ी और उसकी मौत हो गई।
होलिका ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अगले हमले पर ध्यान केंद्रित किया।
कुछ मिनटों तक, उसने अपनी तलवारें चलाईं और अपने दुश्मनों को काट डाला।

जब उसका काम पूरा हो गया, तो वह धुएँ से बाहर निकली और उसने अपने आदमियों की लाशों की एक कतार देखी। उनमें से एक खांसा। वह अभी भी जीवित था, हालांकि बहुत मुश्किल से।
होलिका उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई और आगे झुक गई। उसने उससे पूछा, 'वे अंदर कैसे आए?'
“जेल के पहरेदारों को राजा ने एक अत्यावश्यक बैठक के लिए बुलाया था।” उसके पहरेदार ने खून की खांसी की और आगे कहा, “हत्या की अफवाह थी, इसलिए महाराज अपने पास जितने हो सके उतने सैनिक रखना चाहते थे।”
ये तो बहुत बड़ा संयोग है!
होलिका तब तक प्रतीक्षा करती रही जब तक उसने अपनी आँखें बंद नहीं कर लीं और साँस लेना बंद नहीं कर दिया, फिर वह खड़ी हुई और आगे बढ़ गई। जब वह गलियारे के अंत तक पहुँची, तो उसने अंततः देखा कि पूरा कारागार काले वस्त्रधारी पुरुषों से भरा हुआ था, जिनके सीने पर कमल के चिन्ह बने हुए थे।
बहुत ज्यादा हैं। अच्छा हुआ कि मेरे ज्यादा आदमी यहाँ नहीं थे।
होलिका को समझदारी से काम लेना था। वह यहाँ नहीं रुक सकती थी। वह मुड़ी और तेज़ी से किले के दूसरे छोर की ओर चली गई, जहाँ एक रास्ता नीचे नदी की ओर जाता था। वह पहली मंजिल पर थी, क्योंकि नारद की कोठरी उसी मंजिल पर थी। लेकिन अगर वे सारी कोठरियाँ खोलकर कैदियों को रिहा कर दें तो क्या होगा? नहीं। यह विष्णुसेना का जीवन जीने का तरीका नहीं होगा। हम चाहे कितने भी बुरे क्यों न हों, जिन कैदियों को हम कैद में रखते हैं, उन्हें रिहा नहीं किया जाएगा।
होलिका ने गहरी सांस ली, अपने शरीर को शिथिल किया और उस मैदान को देखा जिसके ऊपर से उसे छलांग लगानी थी। उसने अपनी दोनों तलवारें पीठ पर म्यान में रखीं और चट्टान पर खड़ी हो गई।
और फिर वह कूद गई।
उसे लगा जैसे उसका शरीर हवा में उछला और फिर ज़मीन पर आ गिरा। वह करवट लेकर उठी और दर्द को सहते हुए खड़ी हो गई। उसने एक और गहरी साँस ली, दर्द को शांत होने दिया, और फिर ऊपर देखा। चारों ओर सायरन, लाल बत्तियाँ और हॉर्न बज रहे थे। उसे अपनी सेना को बुलाना था और जेल से सभी विष्णुसेना आतंकवादियों को निकालना था।
लेकिन वे जीत गए! वे सचमुच जीत गए!

दांत पीसते हुए, होलिका को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह आतंकवादियों के नेता को मारने के इतने करीब आ गई थी, लेकिन नहीं! और अब नारदा आज़ाद था और अपने गिरोह के साथ वापस आ गया था।
जब वह राजधानी के मुख्य द्वार की ओर चल रही थी, तो उसे केवल एक ही बात परेशान कर रही थी - प्रहलाद ने आधे पहरेदारों को क्यों बुला लिया था? वह ऐसा सोचना नहीं चाहती थी, लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसकी अंतरात्मा कभी झूठ नहीं बोलती।
क्या वह हो सकता है... क्या वह सचमुच इसका हिस्सा हो सकता है?

28

नरसिंह

अंधाका में कौवे भेजे जा रहे थे। जाहिर तौर पर युद्धविराम की घोषणा हो चुकी थी।
आश्चर्य की बात यह थी कि भैरव ने इस बारे में नारा की बात मान ली थी। लेकिन भैरव भी मन ही मन जानते थे कि यही सही कदम है। इंद्र को एक और कौआ भेजा जाना था, जिसमें पशुपतास्त्र के जलने और इसके संभावित परिणाम – अंधक के साथ युद्ध की समाप्ति – के बारे में सूचित किया जाना था।
युद्धविराम की याद में एक छोटा सा उत्सव आयोजित किया गया - लोग नाचे, पृष्ठभूमि में वाद्य यंत्र बजते रहे, एक मशाल जलाई गई, जिसके चारों ओर किले में मौजूद सभी लोग जश्न मनाने के लिए एकत्र हुए।
नारा वहीं रुक गया, ठंड से बचने के लिए उसने अपने हाथों को अपने चारों ओर लपेट लिया। वह संतुष्ट था - उसे लग रहा था कि उसने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया है और यह अब तक का सबसे बेहतरीन एहसास था। फिर उसने अपनी छाती को छूकर देखा कि क्या उस पर आखिरकार कोई चिन्ह प्रकट हुआ है, विष्णु का चिन्ह।
ऐसा नहीं हुआ है। मैंने अवतार बने बिना ही लोगों की जान बचाई।

उसने राहत की सांस ली। वह इस युग का चुना हुआ व्यक्ति नहीं बनना चाहता था। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और रुद्र की कही बातें याद करने लगा…
रुद्र ने इंद्र के बारे में कहा था, "वह खुद भी नहीं जानता," और बोलते-बोलते उसे खांसी आ गई। "लेकिन मैं जानता हूँ। मैं एक ऋषि से मिला था। उन्होंने मुझे बताया... यह युग, यह काल, पिछले युगों से अलग है, बाकी युगों से कहीं अधिक विकृत है।"
‘तुम क्या कह रहे हो?’ नारा ने पूछा।
‘आप इस युग को बचाने वाले नायक नहीं बन सकते। आपको इसे यथासंभव विलंबित करना होगा, उस बिंदु तक... उस बिंदु तक कि बहुत देर हो जाए। ताकि भविष्यवाणी के पूर्ण होने की कोई गुंजाइश ही न रहे।’
'तुम क्या सोच रहे हो?' उसके पीछे से एक आवाज आई।
नारा ने मुड़कर चेनचेन को देखा। उसके सुंदर चेहरे पर एक अलग ही शांति और सुकून था। उसे अपने माता-पिता को दुख पहुँचाने, उन्हें मारने का अपराधबोध फिर से महसूस हुआ। इतना सब कुछ सहने के बाद भी, उसमें इतनी ताकत थी, जितनी वहाँ मौजूद किसी भी व्यक्ति में नहीं थी; उसमें नारा को माफ करने की ताकत थी। 'मुझे नहीं पता,' उसने झूठ बोला। 'शायद मैं बस खुश हूँ।'
‘तुम्हें होना ही चाहिए। क्या कौवों को अंधका भेजा गया है?’
‘कल सुबह,’ नारा ने कहा। ‘उन्हें भी इंद्र के पास भेजा जा रहा है।’
‘इंद्र बहुत क्रोधित होंगे,’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी, मानो इंद्र को परेशान करने का विचार ही उसे आनंद दे रहा हो। वह उसके बगल में खड़ी होकर उसे देखने लगी, पृष्ठभूमि में मधुर संगीत बज रहा था। ‘तो अब क्या?’
‘मुझे नहीं पता।’ नारा ने अपनी भौंहें उठाईं और फिर चेनचेन की ओर मुड़ा। ‘क्या तुम शादीशुदा हो?’
चेनचेन अचंभित रह गई। उसने कहा, 'आप इस बात को किस ओर ले जा रहे हैं?' और फिर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।
‘नहीं, मैं बस…’ उसने घबराकर अपनी गर्दन के पीछे खुजली की। ‘मैं बस पूछ रहा हूँ।’
‘नहीं, मैं नहीं हूँ। हालाँकि मैं पहले हुआ करती थी,’ उसने कहा।
उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।
उन्होंने संक्षेप में बताया, 'विधवा हो गई। उनकी हत्या कर दी गई।'

एक बार फिर, नारा को अपने द्वारा खोए गए सभी नुकसानों से गहरा सदमा लगा, और वह भी इतने कम समय में। 'कब?' उसने पूछा।
‘ये सब म्लेच्छ थे,’ उसने सिर हिलाते हुए कहा। ‘ये असुरों के साथ काम करते थे।’
‘मुझे माफ करना।’ नारा और भी सवाल पूछना चाहती थी, लेकिन उसे लगा कि पूछताछ करना अनुचित होगा।
‘कोई बात नहीं,’ उसने कहा। ‘उनकी मृत्यु मुझे यहाँ ले आई, जहाँ मुझे लगा कि मैं लोगों को ठीक कर पाऊँगी।’
आपने अपने जीवन में बहुत से लोगों को खोया है।
चेनचेन ने सिर हिलाया। 'काश हालात कुछ और होते, लेकिन जो होना था सो हुआ। मुझे इसके साथ जीना होगा। मैंने अब लोगों से दूरी बनाने का फैसला कर लिया है।'
'बिल्कुल, मैं समझता हूँ।'
मुझे ऐसा लगता है कि मेरे साथ रहना एक अभिशाप है। मैं जिसके भी करीब आती हूं, उसका बुरा हाल हो जाता है।
‘नहीं, ऐसा नहीं है। यह एक विशेषाधिकार है,’ नारा ने नरमी से कहा।
उसने ऊपर देखा। 'तुम अभी ऐसा कह रहे हो, लेकिन मैं वो आग हूँ जो तुम्हें जला देगी।'
नारा उसके करीब आई लेकिन उसे छुआ नहीं। 'क्या तुम मुझे जलते हुए देख रही हो?'
उसने सिर आगे झुकाते हुए आह भरी। वह भी आगे झुका, दोनों के माथे एक-दूसरे से छू गए। उसने कहा, 'मुझे खुशी है कि हम मिले।'
शायद किस्मत ने ही हमें मिलवाया था।
उन्होंने कहा, 'हमने लगभग भाग्य का निर्धारण कर दिया था।'
‘आप शब्दों के अच्छे जानकार हैं, है ना?’
मैं एक लेखक हूँ। मुझे लेखक ही होना चाहिए।
उसने अपना सिर पीछे खींच लिया। 'सचमुच? क्या मैं तुम्हारी लिखी कोई भी चीज़ पढ़ता?'
'केवल तभी जब तुम मेरे कमरे में चुपके से घुसने में कामयाब हो जाओ।' नारा हंस पड़ी। 'क्या मैं तुम्हें गले लगा सकती हूँ?'
‘आप कोई भी काम करने से पहले हमेशा पूछते हैं। क्यों?’

'मेरा मानना है कि सहमति महत्वपूर्ण है।'
और वह मुस्कुराते हुए आगे बढ़ी और उसे कसकर गले लगा लिया। उसने भी उसे गले लगा लिया। 'नारा, तुम्हारी कमजोरी क्या है?' उसने पूछा।
‘मेरी?’ उसने उसे थाम लिया और एक पल के लिए वह कहना चाहता था, तुम, तुम मेरी कमजोरी हो। ‘यह…’
और फिर उन्हें एक तेज आवाज सुनाई दी, जिससे वे चौंक गए। सींग बज रहे थे। ‘कोई मुख्य द्वार पर हमला कर रहा है!’ चेनचेन चिल्लाई।
नारा ने मुड़कर देखा तो मुख्य द्वार को बाहर से जोर-जोर से तोड़ा जा रहा था, और
अंततः हार मानकर द्वार फट गया। राक्षस द्वारों से बाहर निकल आए।
तीरंदाज क्षितिज के पार तीर चलाते हुए दिखाई दिए।
‘बच्चों को बुलाओ!’ नारा ने चेनचेन से कहा, जो तुरंत बच्चों की ओर दौड़ी, जो अस्थि कलश के चारों ओर खड़े थे और भयभीत दिख रहे थे।
नारा अपने दस्ताने उतारते हुए द्वार तक गया। वह राक्षसों की ओर झपटा और उन पर अपने पंजे गड़ाते हुए उन्हें घायल करने लगा, साथ ही भीड़ में चेन्चेन को ढूंढने की कोशिश भी कर रहा था। उसने देखा कि चेन्चेन बच्चों को इकट्ठा कर रही थी और उन्हें पास की झोपड़ियों की ओर ले जा रही थी।
तभी नारा ने देखा कि एक तीर सबके बीच से गुज़रते हुए चेनचेन और बच्चों की ओर जा रहा है। उसी क्षण नारा ने भी उसे देखा और तीर और बच्चों के बीच खड़ी होकर उन्हें तीर से बचाते हुए खुद पर वार सह लिया। तीर उसकी कमर में जा लगा।
‘भागो!’ उसने बच्चों से चिल्लाकर कहा, जो शेड की ओर भाग रहे थे। वह ज़मीन पर गिर पड़ी और उसके चारों ओर खून जमा होने लगा।
नहीं!
मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।
नारा के लिए सब कुछ अचानक धुंधला हो गया। उसके चारों ओर चल रहा युद्ध – सिंह और नाग, राक्षस और पिशाच से लड़ रहे थे – सब कुछ अस्पष्ट हो गया। उसे केवल चेंचेन दिखाई दे रही थी, जो जमीन पर पड़ी थी और उसका खून बर्फ में रिस रहा था।
उसने देखा कि राक्षसों ने भी उसे देख लिया और उसकी ओर बढ़ने लगे।

और फिर वह खुद पर काबू नहीं रख सका – उसके भीतर उबलता क्रोध इतना बढ़ गया कि उसने छलांग लगाई और एक ही झटके में चेनचेन तक पहुँच गया। उसने चेनचेन के चारों ओर मौजूद राक्षसों से अंधाधुंध क्रोध में युद्ध किया, इतनी ज़ोर से और उग्रता से दहाड़ा कि एक पल के लिए राक्षस अचंभित होकर पीछे हट गए। उनमें से एक अपनी तलवार लेकर नारा की ओर बढ़ा, लेकिन नारा ने आसानी से उस वार को रोक दिया, उसके पंजों ने राक्षस के चेहरे पर खरोंचें मारीं और उसकी कमर में लात मारी।
और भी दुश्मन उसकी ओर आ रहे थे, लेकिन नारा को कोई परवाह नहीं थी। वह खून से लथपथ चेनचेन के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, उसके पंजे खून से चमक रहे थे और वह दुश्मनों पर दहाड़ते हुए उन्हें चेतावनी दे रहा था कि पास न आएं। अंततः, नर के क्रोध से भयभीत होकर राक्षस पीछे हट गए।
जब शत्रु पीछे हटने लगा और सिंहों ने अंततः उन पर विजय प्राप्त कर ली, तब नारा को एहसास हुआ कि यह भैरव और उसके अनुयायियों को हराने के बारे में नहीं था; यह उन्हें बार-बार, बार-बार और बार-बार पंगु बनाने के बारे में था। वह जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया और चेनचेन का हाथ पकड़ लिया। वह आसपास की बर्फ की तरह पीली पड़ गई थी। 'क्या तुम ठीक हो?' उसने चिंता से भरी आवाज में पूछा।
वह मुस्कुराई। 'मैं... मैं...' उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, स्पष्ट रूप से दर्द में थी।
'नरसिम्हा!' भैरव ने पीछे से पुकारा।
नारा मुड़ा नहीं और चेनचेन को पकड़े रहा, उसे अपने सीने से लगाकर रखा और उसके घाव पर दबाव डालकर खून बहना रोकने की असफल कोशिश करता रहा।
‘तुम शांति चाहते थे! क्या अब तुम इससे खुश हो?’ भैरव चिल्लाते हुए नारा के सामने आकर खड़ा हो गया। ‘अब समझ में आया? यहाँ कोई शांति नहीं है, अंधक के साथ तो बिलकुल नहीं, मेरा विश्वास करो।’
नारा की आंखें लाल हो गई थीं, और गुस्से में आकर उसका मन किया कि वह शिव पर भी झपट पड़े, अपने पंजों से उसे नोच डाले, लेकिन उसने खुद को नियंत्रित करने की कोशिश की और चेनचेन को कसकर पकड़ लिया।
‘हमें पलटवार करना होगा! और अब तो हमारे पास पशुपतास्त्र भी नहीं बचा है,’ भैरव ने कहा। ‘क्या तुम्हारे पास कोई योजना है?’

नारा को कोई उपाय नहीं सूझा। उसने दांत पीसते हुए कहा, 'हम इसका हल निकाल लेंगे।'
‘तुम जाओ! क्योंकि अब हम उसे मार डालेंगे!’ इतना कहकर भैरव नारा को चेनचेन के साथ छोड़कर चला गया। ‘नर्सों को बुलाओ!’ भैरव ने किसी को पुकारा, और जल्द ही नर्सों का एक समूह चेनचेन के पास दौड़ा और उसे वहाँ से हटाने लगा। अंदर ले जाने से पहले, चेनचेन ने नारा का हाथ पकड़ा, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी और आँखें आधी खुली थीं। "अब मुझे तुम्हारी कमजोरी पता चल गई है..." उसने कहा, बोलते समय उसके मुँह से खून निकल रहा था।
नारा ने कुछ नहीं कहा। उसने उसके बोलने की समाप्ति का इंतजार किया।
‘मुझे पता है,’ वह थोड़ी देर रुकी और फिर कोमल स्वर में बोली, ‘यह गुस्सा है।’

29

अनुह्राद

अंधका को ऐसी कौन सी बात पता है जो मुझे नहीं पता?
अनुहरद अपने बिस्तर पर करवटें बदल रहा था, उसके मन में विचारों का मंथन चल रहा था। वह घर से भागने के समय के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा था। वह समय जब वह उससे मिला था। उसकी माँ की मृत्यु के कुछ साल बाद, उसके भीतर एक ऐसा खालीपन था जिसे कोई भर नहीं सकता था। और फिर वह उससे मिला... एक निषाद, वनवासी, जातिगत भेदभाव से दूर, उच्च-कुल और निम्न-कुल के भेदों से परे। निषादों का कोई धर्म नहीं होता। उनका कोई संगठन या व्यवस्था नहीं होती। वे एक स्वतंत्र और बंधनमुक्त जीवन जीते हैं।
अनुहराद एक ऐसी जिंदगी चाहता था - बेहद और बेहद शिद्दत से।
अपनी मां की मृत्यु के बाद, उसके पिता ने उसके साथ सख्ती बरती थी, उसे एक बेहतर योद्धा, एक बेहतर योद्धा बनने के लिए मजबूर किया था - उसे उन लोगों को नुकसान पहुंचाने के लिए प्रशिक्षित किया था जो उनके साम्राज्य की नींव को खतरे में डालते थे।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

‘तुम्हें क्या लगता है कि मैं अपने पिता द्वारा स्थापित साम्राज्य को असुरों के विरुद्ध तुम्हारे प्रतिशोध के कारण नष्ट होने दूंगा? अंधका, तुम असुर नहीं हो, और तुम कमजोर हो।’
और मुझे तुम्हारा अंत करना होगा।
अचानक उत्पन्न हुई उत्तेजना और तीव्र इच्छा के साथ अनुहरद अंधका के पास आया और अपने चचेरे भाई के मुँह पर हाथ रख दिया। एक पल के लिए अंधका सोता रहा, फिर उसने आँखें खोलीं और उसकी त्वचा लाल हो उठी। उसने अनुहरद के कठोर शरीर को हटाने की कोशिश की, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। अनुहरद का हाथ उसके मुँह और नाक पर कसकर दबा हुआ था, जिससे वह साँस नहीं ले पा रहा था।
अंधका को धक्का देते हुए अनुहराद की आँखों में आँसू आ गए। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह उस व्यक्ति को मारने जा रहा है जिसने अपने जीवन में इतना कष्ट सहा था; जिसे उसके अपने पिता ने प्रताड़ित किया था।
मैं यह नहीं कर सकता।
अचानक, अनुहरद ने अंधका के मुंह से अपना हाथ हटा लिया। अंधका ने हांफते हुए सांस ली और अपने बिस्तर पर बैठ गया, लेकिन कुछ नहीं बोला।
अनुहराद ने अपनी आँखें बंद कर लीं और आँसू पोंछे। ‘मुझे माफ़ कर दो। मुझे नहीं पता कि मुझे क्या हो गया था,’ उसने कहा, लेकिन अंधका ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, वह अनुहराद से मुँह फेरकर किसी और चीज़ को घूर रहा था... दरवाज़े के पास किसी चीज़ को।
क्या वह अंधा नहीं है?
उसने अपने चचेरे भाई की आंखों की पुतलियों को देखा, जो बिल्कुल नई लग रही थीं।
अनुहराद ने भी दरवाजे की ओर देखने के लिए अपना सिर घुमाया और दरवाजे पर एक अजीब, परिचित व्यक्ति को खड़ा पाया - एक झुका हुआ, गंजा और आंखों पर पट्टी बांधे हुए आदमी जो अंधेरे से बाहर आया था।
अंधका!
वे दोनों एक ही कमरे में थे। एक अंधा था और दूसरा नहीं। दरवाजे पर खड़ा व्यक्ति उस आदमी जैसा दिखता था जिससे अनुहराद ने पहले बात की थी। अनुहराद ने कुछ नहीं कहा, लेकिन वह थोड़ा-बहुत समझ गया था। इससे पहले कि वह कुछ बोल पाता, दरवाजे पर खड़े आदमी ने कहा, 'मुझे खुशी है कि तुमने मुझे मारा नहीं।'

‘क्या हो रहा है?’ अनुहराद ने पूछा।
'मुझे खुशी है कि तुमने मुझे मारा नहीं, हम्म। अब मुझे पता है कि मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ।'
‘किस बात में मुझ पर भरोसा करो?’
‘रहस्य के साथ, हम्म।’ अंधका की तीखी आवाज उत्साह से भर उठी। ‘आओ, मैं तुम्हें कुछ दिखाती हूँ।’
‘यह कौन है?’ अनुहराद ने दूसरे अंधका की ओर इशारा करते हुए पूछा, जो अभी भी पलंग पर बैठा हुआ था।
‘यही तो राज़ है, हम्म। आओ,’ अंधका ने इशारा किया। ‘उसे भूल जाओ। वह वहाँ हत्यारों के लिए सोया हुआ है, अगर वे कभी आते हैं, जो कल हमारे द्वारा किए गए हमले के बाद अब और भी ज़रूरी है।’
अनुहरद को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन वह अंधका के पीछे- पीछे चलने लगा, जो उसे नीचे ले गया। अनुहरद ने देखा कि अंधका दीवार का सहारा लेकर आगे बढ़ रहा था।
वे जल्द ही भूमिगत तहखाने में पहुँच गए।
‘वह अंधा क्यों नहीं था?’ अनुहरद ने नकली अंधका के बारे में पूछा। 'क्योंकि मैंने जिन चीजों का सामना किया, मैं नहीं चाहता था कि मेरे जैसे दिखने वाले दूसरे लोग भी उन्हीं चीजों से गुजरें।'
‘अन्य संस्करण? आपमें से कितने लोग हैं?’
‘जितने चाहूँ उतने। मेरे दुश्मनों को यह विश्वास होना चाहिए कि हर बार जब वे मुझे मारेंगे, तो मेरे दो रूप फिर से जीवित हो उठेंगे।’
तहखाना लगभग अंधेरे कमरे में खुलता था, लेकिन अंधका के लिए अंधेरा कोई मायने नहीं रखता था। 'दीपक ले लो,' उसने अनुहरद को दीवार पर लगी मशाल लेने का इशारा किया।
अनुहरद, अंधका के पीछे-पीछे उस टपकते तहखाने में चला गया। उसे चूहों के भागने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। लेकिन जैसे ही उसकी आँखें अंधेरे में अभ्यस्त हुईं, अनुहरद ने देखा कि तहखाना हथियारों, कवच और... पलंगों से भरा हुआ था।
‘तुमने मुझे क्यों नहीं मारा?’ अंधका ने पूछा। ‘तुम्हें मौका मिला था।’ अनुहराद ने ईमानदारी से जवाब दिया, 'मुझे तुम पर दया आई। तुमने बहुत कुछ सहा है और मुझे लगा कि तुम्हें और अधिक पीड़ा देना मेरे लिए गलत होगा।'

‘जो कुछ मेरे साथ हुआ, वही मेरा भाग्य है और अब उस पर पछतावा करने की कोई बात नहीं है।’
फिर, अंधका ने अपने पैर पटके। अनुहरद ने चारों ओर देखा और पाया
अंधेरे से आकृतियाँ प्रकट हुईं। और उनमें कुछ खास बात थी।
वे सभी लगभग अंधका के कद के थे, चंद्रमा के समान पीले और गंजे थे। और उनकी चेहरे की बनावट भी एक जैसी थी, हालांकि उनके चेहरे अंधका से थोड़े अलग थे। अनुहरद ने महसूस किया कि अगर उनकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाए, तो वे लगभग उसके चचेरे भाई अंधका जैसे ही दिखेंगे।
‘ये कौन हैं?’ उसने पूछा। यहाँ चूहों की तरह छिपे हुए एक दर्जन से अधिक लोग थे।
‘मैं, मैं खुद और मैं ही,’ अंधका चारों ओर घूमते हुए, उनमें से हर एक को छूते हुए बोली। ‘मुझे अपने हमशक्ल मिल गए। खैर, सच में नहीं। मैंने अपने हमशक्ल बनाए हैं।’
'आपको ऐसा क्यों करना होगा?'
‘मैं जलकर मर गया था, हम्म, अनुहराद। मेरे दत्तक पिता ने। मैं कभी लड़ नहीं पाया। मुझे पता था…’ अंधका ने फुसफुसाते हुए खुशी से बताया। ‘मुझे पता था कि मुझे कोई दूसरा रास्ता ढूंढना होगा। तभी मुझे मेरा हमशक्ल मिला। वह मेरी तरह एल्बिनो था, और मेरे मन में एक विचार आया। मैं
और मेरे डुप्लिकेट; उन्हें बिल्कुल मेरे जैसा होना ज़रूरी नहीं था, लेकिन लगभग वैसा ही होना चाहिए था।
काफी हद तक एक जैसे। मैं उन्हें गोद ले लेता और उन्हें लड़ना सिखाता। और अब इसी वजह से, जब भी युद्ध होता है, मैं अपने जैसे किसी एक को अपनी जगह लड़ने के लिए भेज देता हूँ। और जब मैं युद्ध के मैदान में मर जाता हूँ, तो मैं फिर से जीवित हो उठता हूँ... क्योंकि मैं कभी मरता नहीं। मैं जीवित रहता हूँ। मैं अमर हूँ।’ अंधका हँसा, अपने हमशक्लों को देखते हुए उसने अपनी बाहें हिलाईं। ‘मैंने उन्हें लड़ना सिखाया, अपनी इंद्रियों पर काबू पाना सिखाया। और यह कितना अद्भुत रहा है, कितना मनोरंजक रहा है, लोगों को मुझसे डरते हुए देखना।’
अनुहराद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'तुम्हें कैसे पता कि वे तुम्हें धोखा नहीं देंगे?'

‘क्योंकि वे मैं ही हूँ। वे मुझ पर, मेरे आदर्शों पर विश्वास करते हैं। ये बलिदान उस विशाल योजना का हिस्सा हैं, जहाँ हम सब राज करेंगे और न तो देव होंगे और न ही असुर। कितना आनंद आएगा,’ अंधक ने प्रसन्नता से अपने हाथ मले। ‘अगर तुम्हें लगता है कि तुम असुरों को रोक सकते हो, तो तुम गलत हो। मैं तुम्हें रोक दूंगा।’
‘तो तुम्हें मुझे मार डालना चाहिए था!’ अंधका चिल्लाया। ‘लेकिन तुमने नहीं मारा, हम्म? तुम्हें पता है मैं तुम्हारी प्रेमिका के बारे में क्या जानती हूँ, वही जो म्लेच्छा के उत्पात के दौरान मारी गई थी?’
अनुहराद जम गया। उसने महसूस किया कि उसकी मांसपेशियां तन गई हैं। 'क्या?' उसने फुसफुसाते हुए पूछा।
‘मैंने ही उन्हें, मेल्चास को, काम पर रखा था।’ अंधका मुस्कुराया। अनुहराद स्तब्ध रह गया। क्रोध से अंधा होकर वह आगे बढ़ा। वह अंधका को जान से मार देना चाहता था, लेकिन अंधका ने हाथ उठाकर कहा, 'मेरी बात सुनो। हम आज साथ इसलिए हैं क्योंकि हम त्रासदी और अपने पिताओं के छल-कपट से इस मुकाम पर पहुंचे हैं। मैंने म्लेच्छों को अपनी इच्छा से काम पर नहीं रखा था। तुम्हारे पिता ने मुझे मजबूर किया था। वह चाहते थे कि तुम वापस लौट आओ।' नहीं!
अनुहराद ने दांत पीसते हुए कहा, 'मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं है।' ‘मेरी दाहिनी जेब की तलाशी लो।’
अनुहरद ने अंधका के कहे अनुसार किया और एक कागज निकाला, जो समय के साथ मुड़ा हुआ और पीला पड़ गया था।
‘मैंने इसे इतने वर्षों तक अपने पास इसलिए रखा क्योंकि मुझे पता था कि अंततः मैं इसे तुम्हें दिखाऊंगा। मैं चाहता था कि तुम हमारे पूर्वजों के बारे में सच्चाई जानो। मैं चाहता था कि यह सबूत हो। दुर्भाग्य से, मेरे पास हिरण्यक्ष के दुर्व्यवहार का कोई सबूत नहीं था, लेकिन तुम्हारे पास है, तुम्हारे पिता के कुकर्मों का।’ अंधका ने आह भरी। ‘यह एक शाही फरमान है, जो सीधे तुम्हारे पिता के कार्यालय से आया था जब मैं साम्राज्य में एक कार्य दल का प्रभारी था,’ उसने कहा।
अनुहराद ने फरमान पढ़ना शुरू किया, और वह... वह उसके पिता की लिखावट थी। उसमें जंगल में स्थित निषाद शिविर को नष्ट करने का आदेश था, वही शिविर जिसमें वह रहती थी।

और फरमान के अंत में, हिरण्यकश्यप ने एक परिशिष्ट जोड़ा था। 'मैं उन्हें मरा हुआ देखना चाहता हूँ ताकि मुझे मेरा बेटा वापस मिल सके। वह महान कार्यों के लिए बना है, न कि लापरवाह और बेफिक्र जीवन के लिए।'
‘मुझे खेद है, अनुहरद। उसने तुम्हारे प्यार को मार डाला।’ अंधका ने अपना सिर झुका लिया। ‘और अब मुझे लगता है, यह तुम्हारे लिए उसके सबसे प्रिय – उसके साम्राज्य – को नष्ट करने का अवसर है। मेरे साथ आओ।’
अनुहराद कमजोर महसूस कर रहा था, इस खुलासे के बोझ तले उसके घुटने लगभग लड़खड़ा रहे थे। उसे धोखा महसूस हुआ और अपनी मूर्खता पर वह अपना सिर दीवार पर पटकना चाहता था।
बेशक, यह वही था। वह कभी नहीं चाहता था कि मैं किसी निषाद के साथ रहूँ। ‘मैं अब प्रस्ताव रखता हूँ…’ अंधका आगे आया और अपने जले हुए हाथों को अनुहरद पर रखते हुए बोला, ‘कि हम एक महान उद्देश्य के लिए हाथ मिलाएँ।’
इस बार अनुहरद ने जरा भी संकोच नहीं किया। उसका क्रोध उबल रहा था और फूट पड़ा, उसने अपना सिर उठाया और अंधका की ओर देखा।
‘हां,’ उसने कहा।

30

प्रहलाद

प्रहलाद जानता था कि उसने सही काम किया है।
जेल से पहरेदारों को हटाकर उसने विष्णुसेना को जेल किले पर हमला करने का मौका दे दिया था। और वह इससे खुश था। उन्होंने ठीक वही किया जो उन्होंने वादा किया था - उन्होंने अन्य कैदियों को रिहा नहीं किया और न ही वहां मौजूद किसी अन्य कर्मचारी को नुकसान पहुंचाया। वे केवल पहरेदारों पर टूट पड़े, उन्हें मार डाला और नारद को बचा लिया।
अपने परिवार के साथ विश्वासघात करने का ख्याल ही उसे डरा देता था। वह जानता था कि अगर वह पकड़ा गया तो उसे परिवार से बेदखल कर दिया जाएगा और इसके लिए उसे मौत की सजा दी जाएगी।

लेकिन फिलहाल, उनका ध्यान सड़क पर केंद्रित था।
उसका चेहरा लगभग पूरी तरह ढका हुआ था, उसका शरीर भी। उसके साथ कोई पहरेदार नहीं था।
रात अभी जवान थी जब वह कश्यपपुरी की शांत गलियों में चल रहा था। वह भूमिगत खाइयों की ओर बढ़ रहा था जहाँ असली नायक इंतज़ार कर रहे थे – वे नायक जिनकी उसने अपनी राजधानी के साथ विश्वासघात करके मदद की थी। क्या उस पर राजद्रोह का मुकदमा चलेगा? बेशक, लेकिन उसे अभी इसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं थी।
प्रहलाद एक छोटी सी गली के पास पहुँचा और उसने देखा कि दो बच्चे हमेशा की तरह आलसी मुद्रा में बाहर खड़े हैं। प्रहलाद को देखते ही वे घबरा गए और उन्होंने छोटी कटारें निकाल लीं।
और फिर प्रहलाद ने अपने ऊपर से कपड़ा हटाया और उन्हें अपना चेहरा दिखाया। एक बच्चे ने दूसरे से कहा, 'उसकी उम्मीद तो थी ही, है ना?'
दूसरे ने सिर हिलाया और प्रहलाद को अंदर जाकर सीधे चलते रहने को कहा जब तक कि उसे कोई सराय न मिल जाए।
प्रहलाद ने निर्देशों का पालन किया और जल्द ही वह अंधेरे में जगमगाते सराय के सामने खड़ा था। इमारत ऊंची थी, जिसमें मेहराबदार खिड़कियां और दरवाजे थे। प्रहलाद ने देखा कि सराय के चारों ओर हर उम्र के लोग आपस में बातें कर रहे थे। वे सभी गंदे और मैले थे, लेकिन प्रहलाद समझ गया कि इसके बावजूद वे सभी अच्छे और सभ्य परिवारों से थे।
जैसे ही प्रहलाद करीब आया, वे सब शांत हो गए और उसकी ओर देखने लगे। प्रहलाद समझ गया कि वे उसे पहचानते हैं, और किसी कारणवश, यह सोचकर उसे असहजता और आत्मसंदेह महसूस होने लगा।
वह दरवाजे पर गया और इससे पहले कि वह दस्तक दे पाता, दरवाजा खुल गया और एक लड़की बाहर कूदकर उसे कसकर गले लगा लिया।
वह धृति थी।
वह एक पल के लिए अचंभित रह गया, और फिर उसने उसे गले लगा लिया।
‘तुमने कर दिखाया!’ वह मुस्कुराई, पीछे हटते हुए और जैसे अपनी गलती का एहसास होते ही उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। ‘ओह, मुझे माफ़ करना!’ प्रहलाद ने देखा कि उसने अपने बालों में ताज़ा लैवेंडर लगाया हुआ था, और

उसे याद आया कि उसे फूल कितने पसंद थे। वह फिर से अपने खुशमिजाज अंदाज़ में लौट आई और उसका हाथ पकड़कर उसे अंदर ले गई।
प्रहलाद ने काले लबादे पहने कुछ लोगों को देखा, जिन्होंने उसे अंदर आते देख अपने नकाब हटा लिए। वे बैठे आपस में बातें कर रहे थे। कुछ अपने हथियार तेज कर रहे थे, तो कुछ ध्यान लगा रहे थे। यह अपने आप में एक युद्ध शिविर था, एक सुरक्षित ठिकाना। अगर होलिका को इस जगह का पता चल जाता, तो वह इसे पूरी तरह जला देती।
‘इसी तरह हमारे पास और भी कई छिपने की जगहें हैं,’ धृति ने पहली मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ते हुए समझाया। ‘और हम छिपने में बहुत माहिर हैं। बाहर पहरा देने वाले हमें बता देते हैं कि कौन आ रहा है और हम तुरंत अपना वेश बदल लेते हैं और इसे एक आम सराय जैसा बना देते हैं। और किसी को कुछ पता भी नहीं चलता।’
जब वे और लोगों के साथ गलियारे में आए तो प्रहलाद ने सिर हिलाया। कुछ कमरों में उसने पुरुषों और महिलाओं को बातें करते देखा, कुछ तो ऊंघ भी रहे थे। प्रहलाद और धृति आखिरी कमरे में पहुंचे और फिर धृति ने उन्हें अंदर आने का इशारा किया।
‘तुम्हें अंदर जाना चाहिए। वह इंतजार कर रहा है।’ वह मुस्कुराई।
प्रहलाद ने सिर हिलाया, लेकिन इससे पहले कि वह दरवाजा खोल पाता, धृति आगे झुकी और उसके गाल पर चुंबन कर दिया। 'शुभकामनाएं!' उसने कहा। 'आशा है तुम अच्छा करोगे।'
और फिर वह चली गई।
प्रहलाद एक पल के लिए स्तब्ध रह गया और फिर उसने अपने गाल को छुआ। वह गर्म था, और उसे अपने भीतर एक सुखद अनुभूति हुई।
अब भी मुस्कुराते हुए, वह अंदर चले गए और एक छोटे से कमरे में प्रवेश किया। एक कोने में एक छोटी सी मूर्ति स्थापित थी, और उसके सामने नारद घुटने टेककर प्रार्थना कर रहे थे। एक कोने में किताबों के ढेर लगे थे। प्रहलाद ने दीवार पर प्रदर्शित योजनाएँ देखीं - प्रमुख असुर संरचनाओं और पूर्व असुर राजाओं की विशाल मूर्तियों के खाकों से लेकर हिरण्य द्वारा स्वीकृत भव्य जुआघरों और सबसे घटिया वेश्यालयों तक।
प्रार्थना करने के बाद, नारद खड़े हुए और प्रहलाद की ओर मुड़े। उनके गले में रंगीन माला थी और नाक पर चोट के निशान थे, जिस पर पट्टी बंधी थी। बिना

कुछ कहे, वे आगे बढ़े और प्रहलाद को प्यार से गले लगा लिया। ‘धन्यवाद, मेरे बालक। धृति ने मुझे बताया कि तुमने मेरे लिए, हमारे लिए क्या किया।’ ‘बिल्कुल,’ प्रहलाद ने भौंहें सिकोड़ते हुए कहा।
आप दुविधा में लग रहे हैं।
‘मैं अपने पिता के साथ विश्वासघात कर रहा हूँ।’ प्रहलाद का दिल भारी हो गया और वह दीवार से टिक गया। ‘गुरुजी, आप क्या सोचते हैं? क्या मुझ पर मुकदमा नहीं चलना चाहिए?’
‘मैं जानता हूँ, और समझता हूँ। सच कहूँ तो, मुझे इसमें आपको शामिल करने का कोई मतलब नहीं दिखता। मेरा युद्ध आपकी जाति के विरुद्ध नहीं है, बल्कि उन लोगों के विरुद्ध है जो इस राजधानी में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं और अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। मेरा उद्देश्य विष्णु युग को पुनः स्थापित करना है। क्या आप सहमत नहीं हैं?’
‘बेशक।’ प्रहलाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
'मेरा विश्वास करो, भगवान विष्णु से प्रार्थना करो और तुम अपने भीतर उनकी शक्ति, उनकी महानता की चमक का अनुभव करोगे।'
'लेकिन मैं एक दानव हूं,' प्रहलाद के भीतर कुछ उमड़ता हुआ महसूस हुआ - एक असहनीय दुःख जो उसे वर्षों से सता रहा था।
‘भगवान विष्णु सभी को स्वीकार करते हैं। वे केवल एक ही बात में विश्वास करते हैं और वह है आपके कर्म। यदि आपके कर्म शुद्ध और न्यायसंगत हैं, तो वे आपको स्वीकार करेंगे।’ उन्होंने कमरे में रखी विष्णु की मूर्ति की ओर इशारा किया और प्रहलाद को उसके सामने बैठने को कहा। ‘तुम्हें उनकी महानता का अनुभव होगा। बस उन पर विश्वास करो और अपने पिता के नास्तिकता के कारण फैले सभी पूर्वाग्रहों को भूल जाओ।’
प्रहलाद पालथी मारकर जमीन पर बैठ गए और अपनी आँखें बंद कर लीं। उन्होंने भगवान विष्णु का नाम जपना शुरू किया और उन्हें शांति का अनुभव हुआ। सब कुछ थम सा गया और उन्हें अपने भीतर एक अनुभूति, एक गर्माहट महसूस हुई जो उनकी आत्मा को कोमल स्पर्श दे रही थी।
यहां घर जैसा महसूस होता है।
एक पल के लिए उसे ऐसा लगा जैसे वह नाव चला रहा हो, हवा में एक सुगंध फैली हुई थी और कानों में किसी गाड़ी की धुन गूंज रही थी। मानो भगवान विष्णु प्रहलाद के लिए स्वर्ग से अवतरित हुए हों।

फिर उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि नारद उस पर मुस्कुरा रहे थे।
‘मुझे इतनी संतुष्टि क्यों महसूस हो रही है?’ प्रहलाद ने पूछा।
“मेरे प्यारे बालक, तुमने आस्था पा ली है,” नारद ने कहा। “किसी चीज में आस्था तुम्हें उस प्रेम के करीब लाती है जिसके तुम हकदार हो और जिसकी तुम्हें जरूरत है।”
प्रहलाद मुस्कुराते हुए खड़ा हो गया। उसे अब ऐसा नहीं लग रहा था कि वह अपने पिता के साथ विश्वासघात कर रहा है, क्योंकि वह जानता था कि वह जो कुछ भी कर रहा है, उसके पीछे सही कारण हैं।
‘मैं तुम्हें इस मामले में और गहराई से नहीं ले जाना चाहता,’ नारद ने प्रहलाद के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। ‘मेरा सुझाव है कि इससे पहले कि हम सब कुछ जलाकर राख कर दें, तुम इस शहर को छोड़ दो।’
लेकिन मैं मदद करना चाहूंगा।
'क्या आपको यकीन है?'
मुझे अपने जीवन में कभी किसी बात का इतना यकीन नहीं हुआ।
'बिल्कुल, मैं हूँ,' प्रहलाद ने कहा, उसकी आँखों में दृढ़ विश्वास झलक रहा था।
नारद ने कोमल मुस्कान के साथ प्रहलाद को एक दीवार के पास ले गए, जो युद्ध योजनाओं से ढकी हुई थी। प्रहलाद ने देखा कि नारद कुश्ती के अखाड़ों और शराब विक्रेताओं पर प्रतिबंध लगाने और असुर जाति के हर सदस्य को, चाहे वे कुलीन वर्ग के हों या आम आदमी, मार डालने की योजना बना रहे थे, ताकि विष्णुसेना की शुद्धिवादी दृष्टि को साकार किया जा सके - कोई भी असुर फिर कभी इस शहर में कदम नहीं रख पाएगा।
और यह सब अतिवादी लग रहा था; इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी।
‘मैं जल्द ही कुछ करने की योजना बना रहा हूँ, और मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता होगी,’ नारदा ने कहा।
'हां,' प्रहलाद ने सिर हिलाया।
नारद ने उस तख्ती की ओर इशारा किया जिस पर एक प्रतिष्ठान का खाका बना हुआ था। उन्होंने कहा, ‘मैं चाहता हूँ कि तुम पहरेदारों का ध्यान भटकाओ, जबकि हम इस शहर को त्रस्त करने वाले वेश्यालय को जला दें। यह एक भ्रष्ट संस्था है जो शांड और राजकोष को धन मुहैया कराती है। भगवान विष्णु इसे स्वीकार करेंगे।’

‘इसके अंदर मौजूद लोगों का क्या होगा?’ नारदा ने पूछा।
नारद जरा भी नहीं टस से मस नहीं हुए। 'वे भी इसमें शामिल हैं, है ना? उन्हें भी इसके साथ डूबना होगा।'
यह बहुत ही कठोर प्रतीत हुआ और प्रहलाद को यह पसंद नहीं आया। इतनी सारी महिलाओं और बच्चों को मारने का विचार उसे परेशान कर रहा था।
लेकिन यह भगवान विष्णु का तरीका ही होगा।
लेकिन क्या भगवान विष्णु ऐसा चाहेंगे?
मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। लोग मरेंगे। आप इमारतों को जला सकते हैं, लेकिन उनमें मौजूद लोगों को नुकसान न पहुंचाएं। उन्हें बाहर निकालें। तब मैं आपकी मदद करूंगा।
नारद का चेहरा भावहीन था। उनकी आँखों में एक अजीब, उन्मादी चमक थी, लेकिन उन्होंने सिर हिलाया। 'ठीक है, मैं वादा करता हूँ,' उन्होंने कहा।
प्रहलाद ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और नारद ने उसे थाम लिया।
युवा राजा मुस्कुराया। 'तो हम कब शुरू करेंगे?'

31

हिरण्यकश्यप

हिरण्य को यह बात पसंद नहीं आई।
पहले हारने का मतलब अपने जीवन में वापस लौटना होता था, लेकिन अब इसका मतलब मृत्यु है।
जैसे ही उसके आसपास का दृश्य बदला, उसकी दृष्टि धुंधली होने लगी और उसे पेट में एक लात महसूस हुई। उसने आँखें खोलीं तो उसे बैंगनी-नीला आसमान दिखाई दिया और फिर अचानक वह वहाँ पहुँच गया...
दूसरे ट्रायल में!
जैसे-जैसे उसका शरीर इस नई वास्तविकता के अनुकूल ढल रहा था, उसे महसूस हो रहा था कि उसका शरीर हल्का होता जा रहा है, मानो गायब हो रहा हो। एक बार फिर, उसके पास न कोई कवच था, न कोई हथियार, और उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह

महज़ अपनी ही छवि हो। वह सचमुच वहाँ नहीं था, लेकिन वह वहाँ था। यह सब कुछ उलझन भरा था।
वह घने, अंधेरे जंगल के बीचोंबीच खड़ा था, जहाँ आसमान से छनकर आती हल्की रोशनी पत्तियों के बीच से अंदर तक पहुँच रही थी। उसे संतरे और अन्य फलों की खुशबू आ रही थी। भूख से बेहाल होकर उसने एक गिरा हुआ सेब उठाया और उसे खाकर उसे एहसास हुआ कि वह सचमुच का सेब है। हवा में एक आवाज़ भी गूंजी - सीटी जैसी।
“यह परीक्षा मानसिक जागरूकता की है,” आवाज ने कहा, और हिरण्य ने अपने बगल में एक आत्मा को प्रकट होते देखा, जो हवा में लटकी हुई थी। “आओ, हमारे पीछे चलो।” वह झाड़ियों और घनी वनस्पतियों के ऊपर से सरकने लगी।
हिरण्य उसके पीछे-पीछे चल रहा था, उसकी भौंहें तन गई थीं क्योंकि वह अपने चारों ओर के सुंदर जंगल, छोटी नदी और पहाड़ों को निहार रहा था। पूरा दृश्य शांत और सुखद था।
मानसिक जागरूकता क्या होती है?
हिरण्य चलते-चलते उस आत्मा की कही बातों पर विचार करने लगा। कुछ देर बाद वे एक छोटे से खुले मैदान में पहुँचे जहाँ एक कुटिया थी, जिसके चारों ओर अच्छी तरह से बनाए गए खेत में गायें चर रही थीं। नदी के पास ही एक मंदिर था। यहां कौन रहना चाहेगा?
हिरण्य को जल्द ही अपना जवाब मिल गया, जब उसने एक युवती को कुएँ से पानी भरते देखा। वह बेहद खूबसूरत थी। और उसे एहसास हुआ कि यह उसी की सीटी की आवाज़ थी जो उसने सुनी थी।
हिरण्य चकित रह गया, लेकिन बस इतना ही। उसने अपनी पत्नी के अलावा किसी और स्त्री के बारे में कभी कामुक भाव से नहीं सोचा था। वह उसकी मृत्यु के बाद भी वफादार बना रहा।
‘यह अजीब है,’ आत्मा ने कांव-कांव करते हुए कहा।
'क्या?'
'तुम्हें उसके प्रति कोई वासना नहीं है।'
'मैं क्यों?'
आत्मा ने फुफकारा। 'उसे देखो। यह आश्चर्य की बात है कि तुम उसे नहीं देखते। क्या तुम्हें वाकई औरतें पसंद हैं?'

“सभ्य रहो,” हिरण्य ने भारी स्वर में कहा, जब वह गोरी चमड़ी वाली स्त्री को अपने काम करते हुए देख रहा था। वह बेशक सुंदर थी, लेकिन उसके लिए कायधु के समान कोई नहीं था। “यह कौन है?” हिरण्य ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। ‘अहल्या,’
हिरण्य ने वह नाम सुना था। ‘आह,’ उसने अपने चेहरे पर एक गंभीर मुस्कान के साथ कहा। ‘वह हमारे साम्राज्य में एक मज़ाक है, हा हा! वही है जिसके साथ इंद्र ने बलात्कार किया था और जिसकी वजह से उसने अपनी मर्दानगी खो दी थी। हा हा!’
आत्मा ने निराशा में अपना सिर हिलाया। 'हे हिरण्यदेव, कभी-कभी आप बुद्धिमान प्रतीत होते हैं, और फिर आप अपनी तुच्छता प्रकट कर देते हैं।' 'इसका क्या मतलब है?'
‘शायद इस मुकदमे के अंत तक आपको समझ आ जाएगा कि हमारा क्या मतलब है।’ आत्मा अहल्या की ओर नाव से यात्रा की।
‘रुको! वो तुम्हें देख सकती है!’
‘चिंता मत करो, वह ऐसा नहीं करेगी। न ही वह तुम्हें देखेगी।’
'मुझे उम्मीद है कि मैं इस ट्रायल में इंद्र की भूमिका नहीं निभा रहा हूं। मैं वह नहीं हूं।'
‘लेकिन बलात्कार पीड़िता का मजाक उड़ाना ठीक है क्या?’ आत्मा ने उपहास उड़ाते हुए कहा।
हिरण्य चुप हो गया। उसके पास कोई जवाब नहीं था, उसने बस सिर हिलाया और आगे बढ़ा, और अब वह अहल्या को करीब से देख सकता था। वह उसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता था, बस उसके और इंद्र के बीच की कहानी जानता था। जब वह अपने भाई के साथ शासन कर रहा था, कयाधु की मृत्यु से कई साल पहले, यह अफवाह फैली थी कि इंद्र ने एक स्थानीय निषाद के साथ बलात्कार करने के बाद अपनी मर्दानगी खो दी थी।
फिर हिरण्य ने कुटिया से एक आदमी को निकलते देखा – उसका पति; एक बूढ़ा आदमी, जिसके शरीर पर सफेद कपड़ा लिपटा हुआ था। वह अपनी उम्र के हिसाब से काफी मोटा था और सुंदर अहल्या के लिए एक उपयुक्त साथी नहीं लग रहा था। उन्होंने बातें कीं, फिर एक-दूसरे को गले लगाया और चूमा।

‘□□ □□□□,’ □□□□□ □□ □□□□□□□ ‘□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□’
‘□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□,’ □□□□□□ □□□□□ ‘□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□?’
‘□□□□,’ □□□□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□
‘□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□?’
‘□□□□ □□ □□□□ □□ □□, □□□□,’ □□□□□ □□ □□□ □□□□ ‘□□□□□ □□□□ □□□ □□!’
□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ – □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□□□
□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□? □□□□□ □□□□□□ □□, □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□…
□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□…
□□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ - □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□
‘□□□ □□□□ □□□□□ □□?’ □□□□□ □□ □□□□□
‘□□ □□□ □□□□ □□□□ □□,’ □□□□□□ □□ □□□□ ‘□□□□□ □□□…’
□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□… □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□□□□ □□□□-□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□

गौतम अपने घर से बाहर निकले और उन्होंने इंद्र को देखा। उन्होंने पूछा, ‘हे देवदेव, मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। कृपया बताएं कि मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?’
इंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, “मैं असुरों के चंगुल से और अधिक लोगों को मुक्त कराने जा रहा हूँ। उनके पीछे वानर और सिंह सावधान मुद्रा में खड़े थे। और कल जाने से पहले मुझे शरण चाहिए थी।”
'बिल्कुल, मेरे स्वामी। मेरा घर आपका ही है। दुर्भाग्यवश, मैं वहाँ नहीं आ पाऊँगा, क्योंकि मैं जंगल में प्रायश्चित करने जा रहा हूँ।'
अहल्या अपने घर से बाहर निकली, उसके होठों पर एक शरारती मुस्कान थी। इंद्र भी उसे देखकर मुस्कुरा रहा था।
‘बिल्कुल, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी,’ उसने उसके पति से कहा।
दृश्य फिर से बदल गया, और हिरण्य कुटिया के अंदर था, अहल्या को बिस्तर पर अकेले सोते हुए देख रहा था।
गौतम कहीं नजर नहीं आ रहा था। और दीपक भी बुझ चुका था। अंधेरा था, फिर भी चांद की रोशनी उसे रोशन करने के लिए काफी थी।
‘मुझे लगा था कि गौतम के जाने के बाद वे दोनों एक-दूसरे के साथ सोएंगे।’ अहल्या को सोते हुए देखकर हिरण्य बहुत असमंजस में था।
‘खैर, उन्होंने ऐसा नहीं किया। अब देखो…’
और उसी क्षण, अहल्या के कमरे का दरवाजा खुला। बाहर उल्लुओं का शोर बंद हो गया और लकड़ी के दरवाजे की चरमराहट से कमरा भर गया। हिरण्य ने देखा कि नग्न इंद्र अंदर आए और अहल्या के बगल में लेट गए।
‘गौतम?’ उसने नींद में पूछा। इंद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। ‘क्या यह तुम हो?’ उसने फिर पूछा।
‘हाँ, यही है,’ इंद्र ने अंधेरे में जवाब दिया, लेकिन यह स्पष्ट था कि यह गौतम नहीं था। अहल्या ने इंद्र को दूर धकेलने की कोशिश की, जिसके बाद इंद्र ने उसे कसकर पकड़ लिया, उसके हाथ-पैर थाम लिए…
फिर आत्मा ने दृश्य को सुबह के समय में बदल दिया, जहाँ कुटिया के सामने आँगन में, लज्जित और उदास इंद्र, अहल्या के बगल में खड़े थे, जिसने अपने शरीर को कपड़ों में लपेटा हुआ था। उनके सामने गौतम थे।
‘अब,’ आत्मा ने कहा, ‘यहीं पर गौतम ने उन्हें एक साथ बिस्तर पर पकड़ा और क्रोधित हो गया।’

हिरण्य ने गौतम का चेहरा क्रोध से लाल देखा। उसके हाथ में चाकू था और उसने निहत्थे इंद्र पर झपट्टा मारा। दोनों कीचड़ में लड़े और गौतम ने इंद्र के चेहरे पर वार किया, जिससे उसका गाल कट गया। इंद्र ने उसे शांत करने की कोशिश करते हुए पीछे धकेला, लेकिन गौतम घुटनों के बल बैठ गया और अपना चाकू इंद्र के गुप्तांग पर रखकर उसे चीर डाला।
इंद्र अपने हाथों को पैरों के बीच दबाकर जमीन पर गिर पड़ा, उसके गुप्तांग से खून बह रहा था। गौतम फिर से आगे बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि वह हमला कर पाता, इंद्र के आदमी आ गए - दो वानर जिन्होंने गौतम को पकड़ लिया और उसे घूंसे मारकर नीचे गिरा दिया।
‘उसे मार डालो!’ इंद्रा भयानक दर्द से चीखी। ‘उसे अभी मार डालो! मुझे डॉक्टर चाहिए!’
अहल्या दौड़कर गौतम के पास गई और गार्डों और उसके बीच खड़ी हो गई। उसने अपने पति को गले लगाया और उससे माफी मांगी। ‘उसने मुझे मजबूर किया। कृपया… कृपया… मैंने ऐसा नहीं किया, मैं वादा करती हूं।’
जब गार्डों ने उसे एक तरफ धकेल कर गौतम को खींचकर दूर ले गए, तो उसने अहल्या से कहा, 'तुम एक वेश्या हो।'
और पल भर में दृश्य बदल गया, हिरण्य को अहसास हुआ कि वह वापस गुफा में ब्रह्मशास्त्र के साथ आसन पर खड़ा है। आत्मा
उसके सामने हवा में तैर रहा था।
हिरण्य को बेचैनी महसूस हो रही थी, उसके मन में कई तरह की भावनाएं उमड़ रही थीं। उसने अपने विचारों को स्पष्ट करने और खुद को शांत करने के लिए अपना सिर हिलाया।
‘इसमें परीक्षा क्या है?’ उसने आत्मा से पूछा।
आत्मा ने गुर्राते हुए कहा, ‘परीक्षा अभी शुरू भी नहीं हुई है। आपको एक परिदृश्य दिया गया था। अब असली परीक्षा प्रश्न है। यदि आप इसका सही उत्तर देते हैं, तो आप उत्तीर्ण हो जाएंगे…’
‘ठीक है, अपना सवाल पूछिए।’
इस कहानी में अपराधी कौन है?
यह सवाल देखने में तो बहुत सीधा-सादा लग रहा था, लेकिन किसी कारणवश हिरण्या को झटका लगा। 'अपराधी? बेशक वही था...'

‘याद रखना, सही जवाब देने का तुम्हारे पास सिर्फ एक ही मौका है, इसलिए सोच समझकर जवाब देना।’ आत्मा ने अपनी उंगलियां उठाईं। ‘नहीं तो, तुम्हें इसके परिणाम पता ही होंगे…’
हिरण्य ने एक पल सोचा और उसे अपने गालों से पसीने की बूँदें महसूस हुईं। आत्मा हँसी। ‘क्या इंद्र ने उसके साथ बलात्कार किया है, या अहल्या ने अपने पति को धोखा दिया है? कौन है?’ उसने फिर पूछा।
‘उसने ही उसे उकसाया था, है ना?’ हिरण्य ने मन ही मन पूछा। ‘शुरुआत में तो वह चिढ़ी, लेकिन जब उसने उसके साथ कुछ करने की कोशिश की, तो वह उसे नहीं चाहती थी।’
‘शायद उसे उकसाने में कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन उसके साथ सोने में नहीं,’ आत्मा हँसी। ‘तो क्या वह गलत है? उसे उकसाने के लिए?’
हिरण्य को एहसास हुआ कि आत्मा के प्रश्न का उत्तर उतना सीधा नहीं था जितना उसने सोचा था।
ऊपरी तौर पर देखा जाए तो इंद्र की गलती थी। उन्होंने ही अहल्या पर ज़बरदस्ती की थी। लेकिन अगर गौर से देखा जाए तो अहल्या भी गलत हो सकती थी, क्योंकि उन्होंने इंद्र को गलत संदेश दिया था।
लेकिन तभी हिरण्य को कुछ याद आया। 'तुम नहीं चाहते कि मैं जीतूं,' उसने आत्मा की ओर देखा, उसकी निगाहें उसे भेद रही थीं।
'आपका क्या मतलब है?'
‘तुम हमेशा महत्वपूर्ण बात को छोड़ देते हो, ठीक वैसे ही जैसे तुमने पिछली परीक्षा में किया था। और इस परीक्षा में भी तुम मेरे साथ खेल खेल रहे हो। तुमने कहा कि अहल्या दोषी हो सकती है और इंद्र भी दोषी हो सकते हैं, लेकिन तुमने गौतम के दोषी होने की बात नहीं कही,’ हिरण्य मुस्कुराया। ‘क्योंकि…’ आत्मा ने बुदबुदाते हुए कहा, ‘हमें लगा कि यह तो स्पष्ट है। इस मामले में पीड़ित वही है।’
‘नहीं, वह नहीं है।’ हिरण्य ने तुरंत सोचते हुए पहेली के टुकड़ों को जोड़ा। ‘आपने पूछा कि इस कहानी में अपराधी कौन था। आपने अपराधी शब्द पर ज़ोर दिया। लेकिन तीनों ही गलत थे। इंद्र ने अहल्या के विरुद्ध जघन्य अपराध किया, लेकिन… गौतम। उसकी क्या गलती थी?’
'हां, आप सही कह रहे हैं। गौतम भी दोषी हो सकता है, क्योंकि वह ईर्ष्यालु था और अपनी पत्नी पर भरोसा नहीं कर रहा था जब उसने कहा कि वह निर्दोष है।'

हिरण्य ने गौर किया कि आत्मा के वाक्य कहने के तरीके में कुछ विचित्रता थी।
मैं उसके जाल में फंस रहा हूँ।
हिरण्य मुस्कुराया। 'नहीं।' उसने सिर हिलाया। 'यह इंद्र है, है ना?'
मैं असफल नहीं हो सकता। कायाधु के लिए। मुझे उसका बदला लेना है। और अगर मैं मर गया, तो सब कुछ खत्म हो जाएगा।
‘बिल्कुल है,’ आत्मा ने कहा।
‘लेकिन यह इसलिए नहीं है कि उसने उसके साथ बलात्कार किया,’ हिरण्य अब समझ गया था, आत्मा के चेहरे में बदलाव देखकर उसका आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ने लगा। उसने आगे कहा, ‘तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इतना सरल नहीं है, क्योंकि अंततः सबसे बड़ी गलती इंद्र की है, और इसके कई कारण हैं। वह न केवल उस कृत्य के लिए दोषी है, बल्कि उस कृत्य के पीछे के कारण के लिए भी दोषी है। यह सोचने के लिए कि अहल्या ने उससे प्रेम किया तो वह उसके साथ सोना भी चाहेगी। ऐसा नहीं था। वह उसे पसंद करती थी, बस इतना ही, और उसने इसे उसके साथ बलात्कार करने का बहाना बना लिया।’ हिरण्य ने आत्मा की ओर देखा, जो चुप हो गई थी। ‘क्या मैं सही हूँ?’ उसने पूछा।
आत्मा बड़बड़ाई और सिर हिलाया। ‘तुम अच्छे हो, कश्यप के पुत्र,’ उसने कहा। ‘भगवान ब्रह्मा हमेशा से मानते आए हैं कि संतानोत्पत्ति के मामले में सहमति सर्वोपरि है। यदि कोई स्त्री या पुरुष आपत्ति करे और फिर भी उस पर ज़बरदस्ती की जाए, तो यह सहमति नहीं रह जाती। यह बलात्कार है।’ वह रुकी। ‘तुम्हें कैसे पता चला?’
‘क्योंकि आपने मुकदमे की शुरुआत में जो कहा था – कि इससे मुझे महिलाओं के बारे में कुछ सीखने को मिलेगा। और मैंने महिला के नजरिए से सोचा, साथ ही यह भी सोचा कि आपने मुझे कुछ खास दृश्य क्यों दिखाए, इसके पीछे कोई कारण जरूर रहा होगा।’ हिरण्य मुस्कुराया। ‘क्या मैं पास हो गया?’
आत्मा ने निराशा से अपना सिर हिलाया। 'तुम्हारा भाई इस स्तर पर हार गया। वह तुम्हारी तरह प्रतिभाशाली नहीं था।'
‘यह बुद्धिमान होने की बात नहीं है, बल्कि सामान्य ज्ञान की बात है।’ हिरण्य ने कहा। वह अहल्या के साथ जो हुआ था, उससे दुखी था।
काश लोग सहमति को समझते। काश वे समझते कि किसी को चिढ़ाना किसी भी तरह की यौन क्रिया करने की अनुमति नहीं है।

‘तो अब आगे क्या?’ उसने आत्मा से पूछा।
तीसरा आसन चमक उठा और हवा में ऊपर उठ गया, और उस पर एक अजीब सा चिन्ह बना हुआ था। लेकिन इससे पहले कि हिरण्य इसका अर्थ पूछ पाता, उसने एक और सवाल पूछा। 'क्या यह भी इंद्र-केंद्रित होगा?'
‘पिछली परीक्षाओं का इंद्र के इर्द-गिर्द होने का कारण अपने शत्रु को पहचानना, यह जानना था कि वह कहाँ से आया है, उसने क्या-क्या झेला है।’ आत्मा ने अपना सिर हिलाया। ‘लेकिन तीसरी परीक्षा उसके बारे में नहीं है।’ वह मुस्कुराई।
'यह किस बारे में है?'
आत्मा ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बजाय, आसन पर बने प्रतीक बदल गए और हिरण्य अब समझ गया कि वे एक लंबे आदमी और एक छोटे लड़के के थे। और किसी कारणवश, वे आकृतियाँ उसे बहुत जानी-पहचानी लग रही थीं।
‘ये कौन हैं?’ हिरण्य ने चबूतरे की ओर इशारा किया, लेकिन जवाब सुनने से पहले ही उसे अपने दिल में पता चल गया था।
‘यह तुम हो।’ आत्मा ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा। ‘और यह मुकदमा प्रहलाद के बारे में है।’

32

नरसिंह

योजना सरल थी।
नरसिम्हा और भैरव युद्धक्षेत्र के मध्य में मिलने वाले थे, ताकि अंधका को पशुपतास्त्र के टुकड़े सौंप सकें और फिर इस झूठी जीत का फायदा उठाकर वास्तव में अंधका और उसके साथियों को मार सकें। लेकिन वे सोनितपुर में ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि वह किलेबंद था और अगर वे अंदर जाते तो अंधका की सेना द्वारा उनका नरसंहार कर दिया जाता, इसलिए उन्हें यह कार्य खुले मैदान में, बाहर ही करना पड़ा।

एक दिन पहले ही अंधका के पास युद्धविराम का आह्वान करने के लिए कौआ भेजा गया था। संदेश में दावा किया गया था कि भैरव शांति के बदले पशुपतास्त्र त्यागने को तैयार हैं। दरअसल, अंधका को लुभाने और उसके अहंकार को कम करने के लिए टूटे हुए पशुपतास्त्र को चारा बनाने का विचार नर का ही था।
और जब तक उन्हें उसकी तरफ से जवाब का इंतज़ार था, नारा अपना ज़्यादातर समय चेनचेन के पास ही बिताता था, जब वह बेहोश और पीली पड़ी होती थी तो उसका हाथ थामे रहता था। नारा उसे पानी पिलाता, जब भी उसके घावों से खून बहने लगता तो उन्हें साफ करता और यह सुनिश्चित करता कि उसे ठंड न लगे।
उसके भीतर का चिकित्सक देख सकता था कि वह खतरे से बाहर लग रही थी, लेकिन फिर भी उसे उसकी चिंता सता रही थी। उसके भीतर का रक्षक उसे उकसा रहा था कि वह भैरव द्वारा सिंहों के लिए रखे गए पात्र से सोमास उसे दे दे, लेकिन वह जानता था कि यह गलत होगा। सोमास हर किसी को नहीं दिया जा सकता था, और कभी- कभी, इसे लेने वालों को प्रतिकूल प्रभाव भी हो सकते थे। यह व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता और सोमास की शक्ति को सहन करने की क्षमता पर भी निर्भर करता था। अधिकांश मानव, विशेषकर निषाद जो गरीब थे और अपने आसपास की कई बीमारियों से जूझ रहे थे, सोमास का सेवन नहीं कर सकते थे; उनका शरीर शायद इस पेय से अभिभूत हो जाता।
नारा अस्पताल से बाहर आया था और बहुत थका हुआ था। चेनचेन के स्वास्थ्य को लेकर तनाव के कारण उसे ज्यादा नींद नहीं आ रही थी।
बाहर, नारा ने भैरव को नंदी बैल के पास खड़े देखा, जो पीठ पीछे हाथ बांधे दूर कहीं देख रहे थे। वह शिव के पास गए और उनकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, 'आप क्या सोच रहे हैं?'
'शांति के बारे में, और हम अंततः कब उस पर लौट सकते हैं,' भैरव ने हंसते हुए कहा।
'कभी आप करते हैं?'
‘अरे…’ भैरव ने सिर हिलाया। ‘मुझे नहीं पता कि शांति क्या होती है। इस उपाधि को धारण करना डरावना है। क्या आपको भगवान रुद्र याद हैं?’
जितना आप सोच भी नहीं सकते उससे कहीं अधिक।
‘वह एक अच्छे इंसान थे, है ना?’ भैरव ने आगे कहा। ‘यहाँ उनकी पूजा एक देवता के रूप में की जाती थी, मानो वे भगवान शिव का साक्षात रूप हों, और मैं यहाँ

उनकी छाया में जी रहा हूँ, उनकी छवि के अनुरूप जीने की कोशिश कर रहा हूँ,’ भैरव ने उदास स्वर में कहा।
‘ऐसा करना ज़रूरी नहीं है, है ना?’ नारा ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए अपने शब्दों पर ज़ोर दिया। ‘आपको उसके जैसा बनने की ज़रूरत नहीं है। आप स्वयं महान हैं और आपको अपने किए पर गर्व होना चाहिए।’
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘मैंने क्या किया है? मेरी पत्नी तो यह सब देखने के लिए बाहर भी नहीं आना चाहती...’ उसने अपने घर की ओर इशारा किया, जो एक छोटा सा गुंबदनुमा ढांचा था जहाँ पार्वती रहती थी। ‘जब से हमने अपना बच्चा खोया है, उसने लोगों से मिलना-जुलना बंद कर दिया है। वह अभी भी सदमे में है और मुझसे नफरत करती है। वह मुझे अपने बेटे से ज़्यादा अपने कर्तव्यों को चुनने का दोषी ठहराती है। मेरे लोग मेरा सम्मान नहीं करते। मेरे पास तुम हो, और तुमने मेरे खिलाफ बगावत कर दी है। मैं उस हथियार की भी रक्षा नहीं कर सका जिसका मैंने वादा किया था और मैं एक युद्ध हार रहा हूँ, एक युद्धविराम का प्रस्ताव रख रहा हूँ और एक हत्या के प्रयास की योजना बना रहा हूँ जो शायद नाकाम हो जाए।’
‘ऐसा नहीं होगा, मेरे स्वामी,’ नारा ने कहा। ‘आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान महादेव आप में दिव्य सत्य देखते हैं और वे आपकी रक्षा करेंगे।’
‘क्या मैंने तुम्हें कभी बताया है कि मुझे नाचना कितना पसंद है?’ भैरव हँसा, शायद अपनी असफलताओं के भयावह अनुभवों से ध्यान हटाने के लिए। नहीं, तुमने ऐसा नहीं किया।
'एक समय था जब मैं ऐसा करती थी। मुझे नृत्य करना बहुत पसंद था। मुझे अपने कबीले में होने वाले समारोहों का नृत्य-प्रक्रिया करना बहुत अच्छा लगता था। मैं एक मनोरंजनकर्ता थी, आप जानते हैं, जब तक कि भगवान रुद्र ने मुझे मेरी बहादुरी के लिए अपना उत्तराधिकारी नहीं चुन लिया।'
‘किस तरह की बहादुरी?’
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, “पास के एक जंगल में मेरा सामना म्लेच्छों के एक समूह से हुआ जो हमारे गाँव को लूटना चाहते थे, लेकिन मैंने उनसे लड़कर उन्हें हरा दिया। हमेशा की तरह वीरता का कार्य, है ना? भगवान रुद्र ने इसके बारे में सुना और उन्हें यह बहुत अच्छा लगा।”
तुम हमेशा से बहादुर थे।

‘मैं मूर्ख था। सोचो अगर मैंने ऐसा न किया होता, तो मैं आज यहाँ नहीं होता।’ उन्होंने कहा, ‘मैंने अपना बेटा खो दिया है, और लगभग अपनी जान भी गंवा दी थी। और यह दर्द मुझे हर दिन सताता है। कभी-कभी मुझे लगता है कि काश मैंने गाँव को म्लेचाओं से न बचाया होता। काश मैं वहाँ से चला गया होता।’
‘मैंने भी ऐसा ही किया था,’ नारा ने कहा। ‘लेकिन फिर मैं वापस आ गया। अगर हम दूर ही रहते तो हम हीरो नहीं होते।’
‘हम नहीं हैं, नारा। हम किसी की नज़र में दुष्ट हैं। अगर मैं अपने लोगों की रक्षा करके और अंधका को पराजित करके शिव के कर्तव्यों को पूरा नहीं कर सकता, तो मैं नायक नहीं बनना चाहता। भगवान रुद्र का निधन यहीं वृद्धावस्था के कारण हुआ था। वे शुरुआत से अंत तक यहाँ रहे, अपनी पूरी शक्ति से सब कुछ करते रहे, जब तक कि भगवान ब्रह्मा उन्हें अपने पास नहीं ले गए।’
नारा चुप रहा और भैरव की कही बातों पर विचार करने लगा।
‘मैंने कुछ तो किया है,’ भैरव ने अपने होठों पर हल्की सी मुस्कान लिए आगे कहा।
'क्या?'
‘तुम्हें वह गांव याद है जहां मैंने तुम्हें चेनचेन के साथ भेजा था?’ उसने पूछा।
मैं कैसे भूल सकता हूँ? उस यात्रा ने ही मुझे विद्रोह करने का कारण दिया था।
नारा ने सिर हिलाया।
‘मुझे डर था कि अगर उन्हें पता चल जाए कि मैंने इंद्र के साथ क्या किया था, कैसे मैंने पशुपतास्त्र से उन्हें नुकसान पहुँचाया था, तो वे विद्रोह कर देंगे। हालाँकि यह अनजाने में हुआ था, मैंने उस गाँव को नष्ट होने दिया।’ उसने अपना सिर हिलाया। ‘और मैंने अपनी गलती स्वीकार तक नहीं की।’
नारा ने सिर हिलाया। वह सोच रहा था कि भैरव इस बात को किस ओर ले जा रहा है। ‘अच्छा…’ शिव ने पैर पटकते हुए कहा। ‘मैंने एक कौआ भेजा था ताकि उन्हें बता सकूँ कि उनकी बीमारियों के पीछे मैं ही हूँ और अगर वे मेरे किए का पश्चाताप करें तो मैं उन्हें कुछ भी देने को तैयार हूँ।’ वह रुका। ‘हथियार का इस्तेमाल करने के अलावा, क्या आप जानते हैं कि हमने और क्या किया? हमने हमले का दोष किसी और पर डाल दिया, बजाय इसके कि हम इसे स्वीकार करें।’

‘यह सिर्फ आप ही नहीं थे, महाराज।’ उन्होंने इंद्र की संलिप्तता का जिक्र किया। ‘चेनचेन ने मुझे बताया था।’
भैरव हँस पड़ा। ‘क्या उसने ऐसा किया? खैर, उसने मेरी और इंद्र की पोल खोल दी, पर कोई बात नहीं। ज़्यादा लोगों को पता नहीं था, बस कुछ ही लोगों को। कोई फर्क नहीं पड़ता। इंसान को अपनी गलतियों को स्वीकार करना चाहिए, अपनी भूलों को मानना चाहिए। मैं अंधका से निपटने के बाद गाँव जाकर उनसे मिलकर मामला सुलझाने की योजना बना रहा हूँ। मैं खुद को सुधारना चाहता हूँ।’ उसने नारा की ओर मुस्कुराते हुए कहा, ‘मैंने बहुत से संदिग्ध काम किए हैं। अब मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जिस पर मुझे गर्व हो।’
नारा ने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया। उसे भैरव जैसा मित्र पाकर गर्व महसूस हो रहा था।
अंततः उनमें सच्चे भगवान शिव के लक्षण दिखाई देने लगे हैं।
अचानक उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी और मुड़कर देखा तो एक मानव उनकी ओर आ रहा था। उसके हाथ में एक पत्र था, जो उसने भैरव को सौंप दिया और फिर प्रणाम करके चला गया। भैरव ने पत्र खोला, पढ़ा और फिर कहा, 'यह अंधक की ओर से है।
उसने एक कौआ भेजा है।'
‘इसमें क्या लिखा है?’ अंधका का नाम सुनते ही नारा सतर्क हो गया।
'वह महाकाल वन में मिलना चाहता है, और उसने हमसे वादा किया हुआ पशुपतास्त्र लाने को कहा है,' भैरव ने पढ़ा और उसकी आंखें भय से चौड़ी हो गईं।
नारा ने यह देखा और पूछा, 'क्या हुआ?'
मुझे उन जंगलों की बुरी यादें हैं।
'क्यों?'
भैरव ने आह भरते हुए पत्र को मोड़ दिया। 'यहीं मैंने अपने बेटे को खोया था।'

33

होलिका

होलिका के प्रवेश करते ही सराय में मौजूद सभी लोग चुप हो गए।
शायद उसकी उपस्थिति ही इसका कारण थी, या फिर यह तथ्य कि हर कोई उसे उसकी क्रूरता और निर्दयता के लिए जानता था। जब लोगों ने उसे प्रवेश करते देखा, तो अधिकांश का ध्यान भटक गया। संगीत बंद हो गया। अप्सराओं और गंधर्वों ने भोजन परोसना बंद कर दिया।
वहां पूर्ण सन्नाटा छाया हुआ था।
और होलिका को अपने प्रभाव से संतुष्टि मिली; इससे उसके अहंकार को शांति मिली। वह अपने दो अंगरक्षकों के साथ उस स्थान पर घूमने लगी।
जेल की घटना के बाद सब कुछ शांत हो गया था। विष्णुसेना गायब हो गए थे और किसी को नहीं पता था कि वे कहाँ हैं। होलिका ने प्रहलाद से इस बारे में कोई सवाल नहीं किया, क्योंकि वह उसे सतर्क नहीं करना चाहती थी। उसके पास एक योजना थी।
और वह इसे अंजाम देने के लिए यहां आई थी।
उसने एक स्टॉल में सिम्हीका को देखा, जिसके हाथों में चूड़ियों का ढेर था।
वह उसके पास गई और सिम्हीका ने उठकर होलिका को गले लगा लिया। स्टॉल में होलिका ने एक लंबे, जवान आदमी को देखा, जिसका जबड़ा नुकीला था और चेहरे पर एक छोटा सा निशान था। वह उससे डरा हुआ लग रहा था।
वह विपरिचित था।
मेरे पास आपके लिए काम है।
उसने अपनी पदवी का प्रदर्शन करने के लिए कवच, पैड और दस्ताने पहने हुए थे, और जब सिम्हीका विपरिचित के बगल में बैठी, तो होलिका ने देखा कि वह उस आदमी को किस तरह देख रही थी।
मैं उस मुहावरे को जानता हूँ। एक ज़माने में मैं भी ऐसा ही करता था। होलिका ने अपने लिए कुछ भी ऑर्डर नहीं किया, वह दंपति को देखती रही।
‘तो? तुम उसे यहाँ चाहती थी, है ना?’ सिम्हीका ने उत्साह से कहा। ‘कितना प्यारा है ना?’
विपरिचित शरमा गया। 'उम, लेडी होलिका, वह मुझे शर्मिंदा कर देती हैं, लेकिन आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। मुझे लगता है कि हम सुबह के किसी अभ्यास सत्र में मिले होंगे।'
होलिका इतने सैनिकों से मिल चुकी थी कि गिनती भूल गई थी। 'हाँ, ज़रूर। सिम्हीका के प्रति आपके क्या इरादे हैं?' उसने सीधे-सीधे पूछा।

‘उह… उम…’ विपरिचित ने सिम्हीका की ओर देखा, जो इन सवालों से खुश होकर मुस्कुरा रही थी। ‘मुझे वो पसंद है।’
‘क्या तुम मुझे ही पसंद करते हो?’ सिम्हीका ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। ‘तुम्हें वो पसंद है?’ होलिका ने और पूछा। उसे लोगों से खेलना और बातचीत में हावी रहना अच्छा लगता था।
‘अह, नहीं, नहीं, बिल्कुल… मैं उससे प्यार करता हूँ, बिल्कुल…’ विपरिचित को पसीना आ रहा था। ‘मुझे अपना कवच नहीं पहनना चाहिए था।’
सिम्हीका हंसते हुए उसके बालों में उंगलियां फेरने लगी। 'कोई बात नहीं, प्यारे। हम बस तुमसे मजाक कर रहे थे। मां तुम्हें पसंद करती है क्योंकि उन्हें मेरी पसंद पर भरोसा है।'
होलिका ने मुस्कुराने की कोशिश की। 'हां, मुझे सिम्हीका पर भरोसा है।' विपरिचित खुश हुआ और राहत की सांस लेते हुए बोला, 'मैं बिल्कुल ठीक हूँ। अब मुझे अच्छा लग रहा है। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप दोनों कैसे मिले?' ‘अरे, मैंने तुम्हें बताया ही नहीं?’ सिम्हीका ने पूछा। ‘बिल्कुल नहीं बताया! मैं ये कहानी अक्सर किसी को नहीं बताती। क्या मुझे उन्हें बताना चाहिए, माँ?’ उसने अनुमति माँगी, जबकि होलिका पीछे झुककर लापरवाही से सिर हिला रही थी। ‘ठीक है, तो असल में, जब मैं छोटी थी, तो मैं उसी वेश्यालय में काम करती थी जहाँ मैं अभी भी काम करती हूँ। अभी की तरह, तब भी मैं बस सफाई और बर्तन धोती थी। तुम तो जानती ही हो कि मेरी माँ वहाँ एस्कॉर्ट का काम करती थी। मेरे पिता का कोई अस्तित्व ही नहीं था, क्योंकि मेरे जन्म के समय ही वे हमें छोड़कर चले गए थे। खैर, वेश्यालय में आने वाले पुरुष अच्छे नहीं होते थे। और उनमें से एक ने मेरी माँ को चोट पहुँचाई…’ याद करते हुए उसने पलकें झपकाईं। ‘खैर, संक्षेप में, मेरी माँ एक ग्राहक का शिकार हो गई और होलिका माँ वहाँ मौत की जाँच कर रही थीं। उन्होंने उस आदमी को ढूँढा और फिर…’
होलिका ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "मैंने उसे सूअर की तरह चीर डाला," उसकी आँखें ठंडी थीं।
‘मैं इसे इस तरह नहीं कहती, लेकिन हाँ।’ सिम्हीका ने सिर हिलाया। विपरिचित ने अटकते हुए कहा, 'अरे बाप रे, यह तो बहुत कठोर लग रहा है।' ‘और न्यायसंगत।’ होलिका ने अपनी भौहें उठाईं और सिर हिलाया।

और उसके बाद, होलिका मां और मैं... हम करीब आ गए। मुझे आज भी वो समय याद है जब मैंने उन्हें अपनी चूड़ी दी थी। मुझे चूड़ियां बहुत पसंद हैं, मुझे लगता है आप मेरी चूड़ियों के प्रति दीवानगी के बारे में पहले से ही जानते हैं, लेकिन मैंने उन्हें एक चूड़ी दी, क्योंकि वो किसी कारण से किसी भी तरह के गहने नहीं पहनती थीं।
तब तक मैंने सजने-संवरने की आदत छोड़ दी थी।
सिम्हीका ने होलिका का हाथ आगे खींचते हुए, उसके गले में पहनी हुई लाल चूड़ी दिखाई। 'कितनी सुंदर है ना?'
विपरिचित ने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया।
होलिका ने उस दिन को बड़े प्यार से याद किया जब वह पहली बार सिम्हीका से मिली थी।
होलिका वेश्यालयों में रहने वाली महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित कर रही थी और उन्हें ज़रूरत पड़ने पर आत्मरक्षा के तरीके बता रही थी। होलिका ने उन्हें हथियार भी दिए, ताकि किसी अप्रिय घटना की स्थिति में वे उनका इस्तेमाल कर सकें। उनके साथ काम करते समय, होलिका का स्वागत एक छोटी बच्ची ने किया, जिसके पास एक लकड़ी का खिलौना था।
होलिका ने उसे पहले भी देखा था। वह सिम्हिका या सिम्मी थी, उस गरीब महिला की बेटी जिस पर उस अंत में हमला हुआ था।
बच्चे ने कहा, 'यहां की आंटियां कहती हैं कि आपने मेरी मां का बदला लिया।' होलिका मुस्कुराते हुए घुटनों के बल बैठ गई। 'तुम्हारे जैसी छोटी बच्ची के लिए ये बहुत बड़े शब्द हैं।'
‘मुझे परवाह नहीं।’ उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ‘क्या उसे वही मिला जिसका वह हकदार था?’
होलिका को याद आया कि उसने उसे कमर से ऊपर तक चीर दिया था। काफी काव्यात्मक। 'हाँ, उसने किया था।'
मुझे खुशी है। क्या तुम सिर्फ पुरुषों को ही मारते हो?
‘वे लोग जो इसके हकदार हैं, यानी उनमें से अधिकांश।’
‘मुझे उनसे नफरत है।’ उसने गुड़िया को कसकर अपनी छाती से लगा लिया।
मुझे भी उनसे नफरत है। लो, मेरा हाथ पकड़ो।
और उसने ऐसा ही किया। सिम्मी प्यारी थी और होलिका के दिल में एक गर्माहट सी महसूस हुई।

‘अगर ऐसा दोबारा हुआ तो क्या होगा, मेरी मालकिन?’ बच्चे ने पूछा। ‘अगर कोई और आदमी भी ऐसा ही करे तो क्या होगा?’ उसने आँखें चौड़ी करते हुए पूछा। ‘और अगर मैं उसकी अगली शिकार बन जाऊँ तो क्या होगा?’
‘चिंता मत करो। मैं तुम्हारे साथ रहूंगी,’ होलिका ने आश्वासन दिया। ‘क्या आप निश्चित रूप से वहाँ होंगे?’ छोटी बच्ची ने खुशी से अपनी भौहें उठाते हुए पूछा।
‘बेशक, मैं तुम्हारी माँ की रक्षा नहीं कर पाई, लेकिन मैं तुम्हारी रक्षा अवश्य करूँगी। जब भी तुम मुसीबत में हो, मुझे पुकार लेना, ठीक है?’ होलिका मुस्कुराई।
सिम्मी ने बचकाने अंदाज में सिर हिलाया।
क्या आपके साथ कोई और है जो आपकी देखभाल कर सके?
उसने अपना सिर हिलाया, उसका चेहरा उतर आया और फिर वह फूट-फूटकर रोने लगी। होलिका अवाक रह गई। उसने सिम्मी को गले लगाया और बच्ची को देखकर उसका दिल दुख से भर गया।
सिम्मी ने कहा, 'मेरी मां नहीं है।'
‘कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं किसी को तुम्हें छूने नहीं दूँगी, ठीक है?’ उसने कहा। ‘कोई बात नहीं, जान। तुम्हें पता है, तुम मुझे माँ कह सकती हो।’
‘क्या आपको यकीन है?’ लड़की ने ऊपर देखते हुए पूछा।
‘बेशक,’ होलिका मुस्कुराई।
और उस दिन होलिका को एक बेटी मिल गई और सिम्हिका को एक और माँ मिल गई।
अब, विप्राचित को देखते हुए होलिका ने कहा, 'सिम्हिका, मैं उससे अकेले में बात करना चाहती हूँ। क्या तुम हमारे लिए कुछ ला सकती हो?'
सिम्हीका एक पल के लिए हिचकिचाई, लेकिन फिर उसने विपरिचित की ओर देखा और सिर हिलाकर उठ गई और उन्हें अकेला छोड़कर चली गई।
सिम्हिका के जाते ही होलिका आगे झुकी। 'मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूँ।' 'मेरी महोदया, आपकी पुत्री के प्रति मेरे मन में सबसे सच्चे और नेक भाव हैं...'
‘मुझे पता है, बेटा।’ होलिका ने सिर हिलाया। ‘मुझे यह भी पता है कि तुम उससे शादी करने की योजना बना रहे हो।’
‘ऐसा कैसे?’ वह चौंक गया। ‘मैंने उससे अभी तक पूछा भी नहीं है।’

‘उसे पता है। हमें पता है। औरतें बुद्धिमान होती हैं। है ना चौंकाने वाली बात?’ उसने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा। ‘अब, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरी मदद करो। इसे उससे शादी करने की मेरी अनुमति प्राप्त करने का एक तरीका समझो।’
विपरिचित को आश्चर्य हुआ। होलिका जैसी स्त्री को उसकी मदद की क्या ज़रूरत थी? लेकिन उसने सिर हिलाया। 'ज़रूर, मेरी देवी।'
‘मुझे पता है कि आप प्रहलाद के करीबी हैं। मैं चाहता हूं कि आप पता लगाएं कि क्या उसका विष्णुसेना से कोई संबंध है।’
‘ओह, उम…’ विपरिचित हँसते हुए बोला, ‘मुझे यकीन है कि वह ऐसा नहीं करता। वह उनसे उतनी ही नफरत करता है जितनी तुम करते हो।’
‘मेरे लिए पता लगा लो, ठीक है?’ उसने पूछा।
और फिर क्या?
‘अगर वह दोषी है,’ उसने आह भरते हुए कहा, ‘तो उसे मेरे पास ले आओ।’
‘उम, मेरी महिला, क्या मैं पूछ सकती हूँ, आप उसके साथ क्या करेंगी?’ होलिका चुप रही, उसका चेहरा गंभीर था।
लेकिन विपरीतित समझ गया।
ओह, वह समझ गया।

34

हिरण्यकश्यप

‘मैं थक रहा हूँ।’ हिरण्य दीवार के सहारे गिर पड़ा।
वह आत्मा उसके बगल में मंडरा रही थी, उसकी दुर्दशा पर शरारती मुस्कान लिए हुए। 'हम जानते हैं कि तुम डरे हुए हो।'
हिरण्य ने कुछ नहीं कहा, उसका चेहरा भावहीन था। 'इन परिस्थितियों में मेरे भाई का क्या हाल रहा?'
वह भी डरा हुआ था, लेकिन वह पागल था। ब्रह्माशास्त्र…

आत्मा ने कवच की ओर वापस स्वर दिया, 'यह सही व्यक्ति के लिए बना है, पागलों के लिए नहीं। हम जानते थे कि वह इसे पास नहीं कर पाएगा। ये परीक्षण... प्रतियोगी के अनुसार बदलते रहते हैं।'
‘अरे! तुमने उन्हें बदल दिया!’ हिरण्य ने हैरानी से कहा। ‘तुम नहीं चाहते कि मैं जीतूँ। तुम लगातार मेरे लिए मुश्किलें खड़ी करने की कोशिश कर रहे हो।’ ताकि तुम इस खूबसूरत कवच को धारण करने के योग्य बन सको। अगर यह इतना आसान होता, तो इसे कोई भी प्राप्त कर सकता था। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता? और फिर आत्मा का चेहरा बदल गया, जो परिचित होते हुए भी अपरिचित सा लगा।
‘हमें कुछ महसूस हो रहा है।’ आत्मा की आँखों में भय था। ‘क्या तुम्हारा पीछा किया गया था?’
हिरण्य ने अपना सिर हिलाया। वह आश्वस्त था, फिर भी वह उठ खड़ा हुआ और उस आत्मा के साथ गुफाओं से बाहर निकल गया। उसके सामने, तारों भरी रात में, उसने प्रवेश द्वार के पास पहरा देते हुए पुरुषों की कतारें देखीं। और बीच में क्रोधी अग्नि, जिसे पुनर्जन्म का देवता कहा जाता था, खड़ा था। उसकी मुस्कान भयानक और डरावनी थी। हिरण्य की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। 'उसने मेरे पीछे जासूस भेजा होगा। वे किले से निकलने वाले घोड़ों का पीछा कर रहे हैं,' हिरण्य ने कहा, हालांकि उसने यह सुनिश्चित करने में सावधानी बरती थी कि कोई उसका पीछा न करे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह पूरी तरह सफल नहीं हुआ था।
‘इस जगह के बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते,’ आत्मा ने फुफकारते हुए कहा। अचानक, एक गोला उठा और हिरण्या के सामने सुलगने लगा, जिसने खुद को पीछे खींच लिया और जमीन पर लेट गया क्योंकि उस गोले ने उस जगह को पूरी तरह से अपनी चपेट में ले लिया जहां वह कुछ सेकंड पहले खड़ा था।
लानत है!
उन्होंने कहा, ‘तीसरा मुकदमा अभी पूरा नहीं हुआ है। मुझे इसे पूरा करना होगा।’
और मुझे कवच चाहिए ताकि मैं इस देवता को मार सकूं।
हिरण्य ने दांत पीसते हुए आत्मा से पूछा, 'क्या इन्हें रोकने का कोई तरीका है?' उसे उम्मीद नहीं थी कि उसे मदद मिलेगी, लेकिन वह तब हैरान रह गया जब आत्मा ने प्रवेश द्वार की दरारों पर अपनी उंगलियां फिराईं और तुरंत ऊपर से पत्थर जमीन पर गिरे, जिससे गुफा का प्रवेश द्वार पूरी तरह बंद हो गया।

‘इससे वे कुछ समय के लिए रुक जाएंगे।’
मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे लगा था कि तुम मुझे शार्क के हवाले कर दोगे।
‘तुम हमारे प्रतिद्वंद्वी हो। और जब तक तुम इन परीक्षाओं से गुज़र रहे हो, तब तक हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम तुम्हारी रक्षा करें, भले ही हम तुम्हें जीतते हुए न देखना चाहें,’ आत्मा ने समझाया। ‘लेकिन हम तुम्हारी रक्षा ज़्यादा देर तक नहीं कर सकते।’
‘यह दुर्भाग्यपूर्ण है। एक पल के लिए तो मुझे लगा कि तुम मुझे पसंद करते हो,’ हिरण्य मुस्कुराया।
आत्मा ने कंधे उचका दिए। 'चलिए आगे बढ़ते हैं, क्योंकि आपके पास ज्यादा समय नहीं है। उनके गुलेल जल्द ही प्रवेश द्वार से अंदर आ जाएंगे, और अगर वे आपको परीक्षणों के बीच में पा लेते हैं, तो उनके लिए आपको मारना आसान होगा क्योंकि आप उस समय सम्मोहन की अवस्था में होंगे।'
हिरण्य जानता था कि उसके पास समय नहीं है और वह वापस चबूतरे की ओर भागा। उसने देखा कि चबूतरे पर एक नया प्रतीक चिन्ह बना हुआ था, जिसमें एक बड़ा आदमी और एक छोटा लड़का एक चट्टान के पास एक दूसरे के बगल में बैठे हुए दिखाए गए थे।
हिरण्य ने आह भरी। 'ठीक है। चलो शुरू करते हैं।'

35

नरसिंह

वे इंतजार करते रहे।
अपने कांवड़ी वानर, नीली आंखों वाले नाग, मानव और सिंह वंश के सैनिकों के साथ, भैरव और नारा मंदारा पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित महाकाल वन में प्रतीक्षा कर रहे थे, जहाँ बर्फ अभी भी ताज़ी थी और हरे-भरे पेड़-पौधे और झाड़ियाँ बहुतायत में थीं। कई सैनिकों ने अपने गंदे, चिकने युद्ध कवच के

नीचे मोटे गर्म कपड़े पहन रखे थे। उनके कुल्हाड़े, भाले, तलवारें और धनुष हमले की तैयारी में तत्पर थे।
नारा ने अपना सिर घुमाकर पशुपतास्त्र की ओर देखा, जो देखने में बिल्कुल नया लग रहा था, लेकिन मोहिनी की राख से बने पत्थरों के बजाय, इसके बगल में साधारण पत्थर रखे हुए थे।
उनका मकसद अंधका को उसके किले से बाहर निकालना और हमेशा के लिए उसका अंत करना था।
‘अगर ऐसा दोबारा हुआ तो?’ नारा ने पूछा। वह भैरव के बगल में अपने घोड़े पर सवार था। भैरव ने अपने शरीर पर तेंदुए की खाल कसकर लपेटी हुई थी, उसके बाल उलझे हुए थे और भुजाओं पर रुद्राक्ष था। ‘अगर हम अंधका को मार दें और कहीं से दूसरा अंधका प्रकट हो जाए तो क्या होगा?’
‘नारा, मैं जादू-टोने को नहीं हरा सकता। हमारे पास विद्याधर नहीं हैं,’ भैरव ने उत्तर दिया। ‘लेकिन मुझे लगता है कि पशुपतास्त्र का वादा अंधक के असली रूप को सामने लाएगा। वह इसे स्वयं देखना चाहेगा। जीत इस असुर के अहंकार को संतुष्ट करेगी।’
उम्मीद है आप सही हों।
नारा शिव को हतोत्साहित नहीं करना चाहता था।
भैरव ने कहा, 'कुछ अजीब बात हुई। पार्वती ने कहा कि वह फिर से बच्चा पैदा करने की कोशिश करना चाहती है।'
नारा मुस्कुरा उठा। ‘यह तो अद्भुत है।’ और उसने जंगल की ओर देखा। ‘और मुझे यह बताने का यह कितना अच्छा समय है, है ना?’ वह हँस पड़ा।
‘नारा, मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि उसने ऐसा कहा। मतलब, इससे पहले तो वो मुझे छूने तक नहीं देती थी। लेकिन शायद इंद्र के विचारों के खिलाफ खड़े होकर पशुपतास्त्र को नष्ट करते देख उसने मुझ पर फिर से भरोसा कर लिया हो। या शायद उसने मुझे माफ कर दिया हो।’ भैरव मुस्कुरा रहा था, उसके चेहरे पर सच्ची खुशी झलक रही थी। ‘और मैं इस दूसरे मौके को खोना नहीं चाहता। मैं इसे निभाऊंगा। अब से, मेरे लिए सबसे पहले वो और हमारा होने वाला बच्चा है।’ नारा ने अपने दोस्त की पीठ थपथपाई। 'जब हम यहाँ अंधे राजकुमार का शासन समाप्त कर देंगे, तो चलो जश्न मनाते हैं, ठीक है?'
मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आप मुझसे यह कब पूछेंगे। धन्यवाद!

फिर उन्हें यह आवाज़ सुनाई दी। पहरे पर तैनात सैनिकों ने तुरही बजाकर शत्रु के आने का संकेत दिया था। नारा ने चारों ओर देखा और राक्षसों, पिशाचों और मानवों की सेना को आते हुए देखा। उनके पीछे सुनहरे नेत्रों वाले, विशाल और सुंदर असुर आ रहे थे। नारा जानते थे कि असुरों और देवताओं के शारीरिक लक्षण समान थे क्योंकि वे एक ही पिता - द्यौस - से उत्पन्न हुए थे। लेकिन इस मिथक पर बहुत कम लोग विश्वास करते थे और इसके बारे में बहुत कम लोग बात करते थे।
सबसे आगे अंधा राजकुमार खड़ा था – उसके चेहरे पर लाल पट्टी बंधी थी, वह पीला, बिना भौंहों और बिना बालों वाला था, और उसने गहरे काले रंग की वर्दी पहन रखी थी। उसके बगल में एक युवक खड़ा था, जिसका चेहरा दागदार था और उसके लंबे बाल पीछे बंधे हुए थे।
वह जाना-पहचाना सा लगता है।
‘यह बहुत अजीब है। मैंने उसे अपने हाथों से मारा था। और अब वह फिर से मेरे सामने खड़ा है,’ नारा ने अंधका का जिक्र करते हुए कहा।
‘क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?’ भैरव ने पूछा। ‘वह यहाँ है, और वह स्पष्ट रूप से मरा नहीं है।’
‘हमें क्या करना चाहिए?’ नारा ने पूछा।
भैरव ने कुछ नहीं कहा, लेकिन अपने सैनिकों को पशुपतास्त्र को आगे लाने का इशारा किया।
नारा ने युवा असुर को अंधका से कुछ फुसफुसाते हुए देखा, जिसने सिर हिलाया और फिर वे बिना किसी रक्षक या सैनिक के अकेले ही पशुपतास्त्र की ओर चल पड़े।
जैसे ही अंधका हथियार के पास पहुंचा, उसने उसे छुआ और मुस्कुराया।
'क्या यह सब ठीक है?' भैरव ने अंधका से पूछा।
अंधका ने ऊपर देखा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था।
नारा के पीछे खड़े पहरेदारों में से एक ने कहा, 'बेशर्म कमीना! लोग कहते हैं कि वह सिर्फ खून पीता है, भगवान न करे ऐसा हो।'
नारा ने भैरव से पूछा, 'हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें हमला करना चाहिए? वह निहत्था है।'
भैरव स्थिर खड़ा था, अपने विकल्पों पर विचार कर रहा था। नारा ने उसके चेहरे के भावों को गौर से देखा और इससे पहले कि वह उससे कुछ पूछता, अंधका ने तीखी

और कमजोर आवाज में कहा, 'यह गलत है, हम्म।' नारा ने देखा कि वह कितना नाजुक और हड्डियों का ढांचा जैसा दिख रहा था। नारा को वह अंधका याद आया जिसे उसने मारा था - वह कहीं अधिक मजबूत और योद्धा की तरह गठीला था।
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ भैरव ने पूछा।
‘मैं अंधा हूँ। लेकिन मुझे गंध आती है। मुझे बताया गया था कि हथियार में गंधक होगा… हम्म,’ अंधका ने उत्तर दिया। ‘गंधक की कोई गंध नहीं, क्यों, हम्म? मुझे तो केवल पत्थरों की गंध आ रही है, आपके किले के गंदे पत्थर।
आपको लगता है कि मैं मूर्ख हूँ, है ना, शिव?’
नारा को यकीन नहीं हो रहा था कि अंधका उनकी चाल समझ गया था। और वो भी सिर्फ एक छोटी सी गलती की वजह से। उसने मन ही मन बड़बड़ाया।
‘उस पर हमला करो,’ नारा ने फुसफुसाते हुए कहा।
भैरव ने ऐसा नहीं किया। वह जम सा गया।
‘शिव, तुम लोगों को धोखा क्यों देते हो?’ अंधका आगे बढ़ा और चोटी वाले लड़के को पीछे छोड़ दिया। ‘तुम्हें लोगों को धोखा नहीं देना चाहिए। तुम्हें उन्हें पीछे भी नहीं छोड़ना चाहिए।’
नारा को अपने शरीर में एक सिहरन सी दौड़ महसूस हुई।
उन्हें पीछे छोड़ देना? उसे कैसे पता चला?
‘मुझे पता था कि तुम मुझे धोखा दोगे। हमें पता था।’ उसने अपने पीछे खड़े लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘फिर भी हम आए, क्योंकि हम तुम्हारे जैसे नहीं हैं। हम अब भी उम्मीद रखते हैं, भले ही तुम हमें बहकाने की कोशिश करते हो, हम्म। बार-बार,’ उसने अपनी आंखों पर बंधी पट्टी हटाते हुए और आंखें खोलते हुए कहा।
नारा ने उसकी जली हुई, बुरी तरह से क्षतिग्रस्त आँखें देखीं, मानो किसी ने सीधे उसकी आँखों में कोयले डाल दिए हों और आश्चर्यजनक रूप से उसे जीवित बचा लिया हो।
‘वह मुझे मरने नहीं देता था,’ अंधका ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा। ‘वह मुझे परेशान करता, चाकू मारता, चोट पहुँचाता, और जब भी मैं मौत के करीब होता, वह मुझे सोमा देता ताकि मैं बच सकूँ। वह उन्हें कहीं से लाता था, शायद किसी ऐसे भंडार से जिस पर उसने बहुत पैसा खर्च किया हो। मुझे नहीं पता। मुझे परवाह भी नहीं है। लेकिन उसने मुझे मरने नहीं दिया। और इतने दर्द के बाद,

मुझे पता चला कि जीने का असली मतलब क्या होता है। और उस पूरे समय, तुमने मुझे अपने साथ ले जाने दिया। तुम मेरे लिए वापस नहीं आए।’
नारा एकदम स्तब्ध रह गया। उसने भैरव की ओर एक नज़र डाली। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि भैरव वहाँ अवाक खड़ा होकर किस पीड़ा से गुजर रहा होगा।
मैं वहां अंधेरे में छिपकर तब तक इंतजार करता रहा जब तक असुर राजा मेरे पास नहीं आ गया। उसने मुझे देख लिया। उसने मुझे देख लिया। और वह मुझे अपने साथ ले गया। और मैं फिर कभी पहले जैसा नहीं रहा।
‘भृंगी?’
भैरव अपने घोड़े से कूद गया, नारा भैरव को लड़खड़ाते हुए और उसके पैरों को कमजोर होते हुए देखता रहा।
‘मत जाओ!’ नारा ने शिव को पुकारा, लेकिन उन्होंने नहीं सुना और चलते रहे।
‘भृंगी, मेरी बच्ची। क्या यह तुम हो?’ वह फिर से चिल्लाया।
और युद्ध के दोनों ओर सभी लोग चुप थे जब भैरव अंधका के करीब आए, जिसने भी अपनी भुजाएँ फैला दीं।
भैरव ने कहा, 'तुम्हें मुझे बताना चाहिए था कि यह तुम हो। मुझे माफ़ कर दो। तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि मुझे कितना अफ़सोस है। हर पल मुझे इसका पछतावा होता है। मुझे लगा कि तुम मर गए। मुझे लगा कि उसने तुम्हें मार डाला।'
अंधका ने अपने पिता को गले लगाते हुए कुछ नहीं कहा। यह एक मार्मिक क्षण था, और नारा की आँखों से आँसू बहने लगे।
‘पिताजी, मैं आपको मारना चाहती थी,’ अंधका ने भैरव को पकड़े हुए कहा। ‘लेकिन मैं नहीं कर सकती, हम्म। मैं बहुत कमजोर हूँ। मुझे लगा था कि इतने कष्ट सहने के बाद मैं मजबूत हो गई हूँ, लेकिन नहीं। मुझे अब भी उम्मीद थी कि आप मुझसे प्यार करेंगे।’
‘कोई बात नहीं, मैं समझता हूँ। मुझे भी खेद है,’ भैरव ने कहा। ‘कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं सब ठीक करना चाहता हूँ, भृंगी।’
अंधका ने सिर हिलाया। 'तुम्हें करना ही होगा। क्या तुम्हें पता है कि तुम सही हो?'
‘किस बारे में?’ शिव ने पूछा।

‘उस रात उसने ही मुझे मार डाला था,’ अंधका ने पीछे हटते हुए कहा। ‘भृंगी की मृत्यु उसी दिन हो गई जब तुमने उसे वहाँ छोड़ा था। वह अब इस दुनिया में नहीं है।’
‘नहीं, मेरे बेटे,’ भैरव ने विनती की। ‘तुम यहाँ हो। हम फिर से एक साथ हो सकते हैं।’
‘अब तो बस अंधका ही है।’ अंधे राजकुमार ने सिर हिलाया। ‘हम्म, मुझे खेद है।’ ‘किसलिए?’ भैरव ने पूछा।
फिर अंधक ने अपनी म्यान से कटार निकाली और शिव का गला काट दिया। खून की बौछार हुई और शिव घुटनों के बल गिर पड़े…
वह अब शिव नहीं रहे थे। वह मात्र भैरव थे – एक असफल पिता का शव।
एक पल के लिए नारा सदमे से इतनी व्याकुल हो गई कि हिल भी नहीं सकी। पूरी सेना अपने नेता को अपनी आँखों के सामने बेरहमी से मरते हुए देखती रही, सब इतने स्तब्ध थे कि कुछ भी नहीं कर सके।
और फिर अंधका ने अपनी सेना को इशारा किया… हमला करो।
नारा अपने जादू के प्रभाव से जागा और फिर अपनी सेना से चिल्लाकर बोला, 'जाओ!'
युद्ध शुरू हो चुका था।

36

नरसिंह

उनके चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल था।
नारा को सब कुछ समझ में नहीं आ रहा था। जैसे-जैसे युद्ध तेज होता गया, हवा में फैली धूल के कारण नारा को सांस लेने में कठिनाई होने लगी और वह गंदी बर्फ से घिरी हुई थी। बारिश होने लगी और खून बहने से जमीन कीचड़ में बदल गई।
नारा ने अपना ध्यान उस चीज़ पर केंद्रित किया जो उसे ढूंढनी थी।

भैरव का शरीर!
शिव का अंतिम संस्कार विधिपूर्वक किया जाना आवश्यक था। उन्हें अन्य सैकड़ों मृतकों की तरह यूं ही पड़े रहने नहीं दिया जा सकता था।
शिव के शव की तलाश करते हुए नारा का हृदय भारी था। भैरव की अचानक मृत्यु से वह व्याकुल हो गया था, इस तथ्य से कि उसके जैसा पवित्र आत्मा इतना क्रूर भाग्य भोग रहा था।
लेकिन दुनिया बेरहम है।
नारा अपनी व्यर्थ खोज जारी रखे हुए था कि तभी एक पिशाच उसके पीछे प्रकट हुआ और उसकी पीठ पर वार कर दिया। नारा दर्द से कराह उठा और तुरंत पिशाच पर टूट पड़ा, अपने पंजों से उस पर हमला करते हुए उसके फेफड़े को छेद दिया और उसकी आंतें बाहर निकाल दीं। वह क्रोधित था। उतना ही क्रोधित जितना वह चेनचेन के घायल होने पर हुआ था।
इसीलिए मुझे लोगों के करीब आना पसंद नहीं है।
नारा मुड़ा ही था कि उसके सामने एक राक्षस प्रकट हो गया। उसने देखा कि उसके सैनिक उसके चारों ओर असुर सेना के अन्य सैनिकों से लड़ रहे हैं। सामने खड़ा राक्षस नारा पर झपटा और उसे ज़मीन पर पटक दिया। उसने नारा को घूंसे मारने शुरू किए और फिर अपनी कटार निकाली, जिससे उसने नारा के कंधे पर वार किया। खून की बौछार हुई जब नारा ने कटार बाहर निकाली और उसे राक्षस की आँखों के ठीक सामने से गुज़ार दिया। राक्षस ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए पीछे गिर पड़ा और नारा उठ खड़ा हुआ।
भैरव, तुम कहाँ हो?
नारा की आंखों में आंसू भर आए, लेकिन बारिश में किसी को पता नहीं चला। यहां तक कि अंधका भी गायब हो गया था। जब नारा की सेना ने पुनः संगठित होकर हमला किया, तो अंधका और उसका चोटीदार मित्र अपने घोड़ों पर सवार होकर भाग निकले।
नारा अंधका को मारना चाहता था, लेकिन अभी बदला लेने का समय नहीं था। भैरव के शरीर को ढूंढकर भाग निकलने का समय था, ताकि उनका अंतिम संस्कार किया जा सके।
किसी ने नारा को ज़मीन पर गिरा दिया और जैसे ही उसने मुड़कर देखा, वह एक असुर था – विशाल और सुंदर, उसके ऊपर मंडरा रहा था और उसके हाथ में एक तलवार थी। असुर ने तलवार से नारा पर वार करना शुरू कर दिया, उसे मारने की कोशिश

कर रहा था, लेकिन नारा अपनी जगह से उछलकर आगे की ओर लुढ़क गया और हमले को नाकाम कर दिया।
पास में पड़े हथियार को उठाकर, नारा ने उसका इस्तेमाल असुर के वारों को रोकने के लिए किया और फिर उसके पैरों के बीच में लात मारी।
असुर पीछे हट गया और नारा अपनी जगह से उछल पड़ा, हाथ में हथियार लिए उसने असुर की छाती पर वार किया। तलवार असुर के शरीर में धंस गई और वह जमीन पर गिर पड़ा।
नारा ने तलवार को और गहराई तक घुसा दिया, और फिर उसे एहसास हुआ कि वह जिस हथियार को पकड़े हुए था वह एक त्रिशूल था।
एक त्रिशूल!
शिव के लिए एक प्रकार का धार्मिक हथियार, जिसे सर्वप्रथम भगवान नटराज ने गण जनजाति के गठन के समय धारण किया था, त्रिशूल का उपयोग केवल एक सच्चे नायक - एक जन्मजात नेता द्वारा ही किया जा सकता था।
जैसे ही असुर ने अंतिम सांस ली, उसने त्रिशूल बाहर निकाल लिया। नारा जानता था कि अगर त्रिशूल उसके पास होता, तो भैरव का शरीर भी दूर नहीं होता। और सचमुच, कुछ ही गज की दूरी पर भैरव पड़ा था। उसका चेहरा लगभग पहचान से परे था, और उसका गला खून से लथपथ था। उसके चारों ओर जमा पानी अंदर तक रिस गया था, और वह बहुत फूला हुआ लग रहा था।
नारा शिव के शरीर को अपनी पीठ पर लादे हुए और हाथ में त्रिशूल लिए अपने शिविर की ओर वापस जा रहा था।
वह अपनी पूरी ताकत से दौड़ा, उसके फेफड़े जल रहे थे, उसके पैर ठंडे और दर्द से भरे थे, और उसकी आँखों में आंसू भरे हुए थे।
शिविर पहुँचते ही उसने निकटतम घोड़े को सीटी बजाकर बुलाया। उसे एहसास हुआ कि शिविर नष्ट हो चुका है। लेकिन उसके सैनिक पूरी लगन से लड़ रहे थे और देखने से लग रहा था कि वे जीत रहे हैं। अधिकांश राक्षस और असुर मारे जा चुके थे।
एक घोड़ा हिनहिनाता हुआ दिखाई दिया।
वह घोड़े पर सवार हुआ और शव को अपने सामने सुरक्षित करके जाने के लिए मुड़ा। लेकिन इससे पहले कि वह जा पाता, उसकी नज़र वीरभद्र पर पड़ी और उसने उसे पुकारा, ‘सेनापति! मैं भगवान भैरव को यहाँ से ले जा रहा हूँ।’

वीरभद्र एक युद्ध में संलग्न थे, जिसे उन्होंने राक्षस में अपनी तलवार घोंपकर समाप्त किया, फिर नारा की ओर मुड़कर सिर हिलाया।
नारा युद्धक्षेत्र से निकलकर महाकाल वन के किनारे पहुँचते ही पीछे मुड़कर देखने लगा। विशाल वन दोनों पक्षों के सैनिकों के खून से लथपथ था। नारा जहाँ खड़ा था, वहाँ से वे चींटियों जैसे दिख रहे थे, और उसे एहसास हुआ कि इस व्यर्थ युद्ध में भाग लेकर वह उन सभी चीजों का हिस्सा बन गया है जिनसे उसे घृणा थी।
मुझे लगा कि पशुपतास्त्र को नष्ट करके मैंने निर्दोषों को बचा लिया है। नारा ने इस कड़वी सच्चाई को स्वीकार कर लिया। जब तक इस दुनिया में क्रोध रहेगा, युद्ध भी होता रहेगा।
और इससे पहले कि वह आगे बढ़ पाता, एक तीव्र दर्द ने उसे पीछे की ओर खींच लिया और घोड़े से नीचे गिरा दिया।
उसे पता नहीं था कि यह कहाँ से आया और जैसे-जैसे उसकी धुंधली दृष्टि थोड़ी साफ हुई, उसने देखा कि यह एक तलवार थी जो उसकी छाती में घुसी हुई थी। वह अपने अंदर तलवार की धार को महसूस कर सकता था, जो उसका खून, उसकी जान चूस रही थी।
मुझे सोमास तक पहुंचना है।
वह तलवार बाहर निकालना चाहता था, लेकिन उसे शीशी तक भी पहुंचना था। इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, उसने महसूस किया कि तलवार और गहरी धंस रही है। कोई उसे नीचे की ओर धकेल रहा था, उसे उसके अंदर घुसा रहा था।
वह अंधका था।
उसकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी और उसके पैर नारा की तलवार के ऊपर थे।
‘देखो, सिर्फ आवाज़ से क्या किया जा सकता है? मुझे तुम पर तलवार चलाने के लिए आँखों की ज़रूरत नहीं है।’ वह रुका। ‘तुम उसका शरीर नहीं ले जा सकते।
वह वहीं, उस अफरा-तफरी के बीच रहने का हकदार है।’ अंधे राजकुमार ने ठहाका लगाया।
उसके पीछे, वह छोटा लड़का खड़ा था, जो स्पष्ट रूप से सहमा हुआ था।
नारा का रंग दिन-ब-दिन पीला पड़ता जा रहा था। वह थका हुआ और कमजोर महसूस कर रहा था।
‘शव ले लो,’ अंधका ने चोटी वाले लड़के से कहा, जिसने नारा के घोड़े से भैरव का शव उठाया और उसे अपने घोड़े पर लादने लगा। ‘मैं कभी युद्ध में रुककर

अपना समय बर्बाद नहीं करता,’ अंधका ने आह भरते हुए कहा। ‘मुझे इसमें कोई कारण नहीं दिखता, हम्म। हमारे चारों ओर इतनी मौतें देखकर मुझे बहुत दुख होता है।’
‘फिर…’ नारा खांसा, उसकी आंखें बंद हो गईं, ‘तुम्हें इसकी शुरुआत नहीं करनी चाहिए थी।’
यह सुनकर अंधका ने बस एक मुस्कान दी, और वह मुस्कान भयावह थी। उसके पीले, पतले होंठ चौड़े होकर बड़े-बड़े दांत दिखाने लगे। 'यह तो बस शुरुआत है, हम्म। तुम ही हो वो आदमी जिसे भले लोगों को हमसे बचाने के लिए लाया गया है? नरसिम्हा, मेरा यही मानना है?'
नारा ने कुछ नहीं कहा। वह उस ब्लेड को पकड़े हुए था, जो उसके शरीर में गहराई तक धंसा हुआ था।
‘मैंने सुना था कि आप धर्म हैं, हम्म।’ निराश होकर अंधका ने अपना सिर झुका लिया। ‘यह तो अफसोस की बात है; एक धर्म मेरे पैरों के नीचे है। मैं झूठ नहीं बोलूंगा, मुझे और अधिक की उम्मीद थी।’
‘बस करो,’ लड़के ने कहा। ‘चलो अब चलते हैं। उसे यातना देने की कोई जरूरत नहीं है।’
अंधका ने उसकी बात नहीं सुनी, शांति से सूंघते हुए उसने अपना सिर नारा की ओर घुमाया। ‘यह तो बस शुरुआत है, नरसिम्हा। मैं इस देश के लिए बहुत कुछ करूंगा। मेरी बहुत महत्वाकांक्षी योजनाएँ हैं। और मैं यह बात मरने वालों के अलावा किसी को नहीं बताता। क्योंकि…’ उसकी आवाज धीमी हो गई, ‘मृतक बोलते नहीं और मुझसे कोई खतरा नहीं।’
‘अंधका!’ लड़का आगे बढ़ते हुए चिल्लाया। ‘सब खत्म हो गया। चलो चलते हैं। हमें भैरव मिल गया है।’ और उसने अंधका को खींचा, जिसने धीरे से एक कदम पीछे हटकर सिर हिलाया।
जब अंधका और वह लड़का नारा को युद्ध के मैदान में मौत के करीब छोड़कर चले गए, तो नारा को पता था कि वह खुद को इस तरह मरने नहीं दे सकता।
उसने अपनी छाती से तलवार निकाली और आह भरी। फिर उसने अपने साथ रखे थैले में रखी शीशी निकाली। उसने उसे पी लिया और उसके अंदर ऊर्जा का प्रवाह बढ़ गया, बहुत ज़्यादा नहीं, लेकिन इतना ज़रूर कि वह उठकर ज़मीन पर गिरे त्रिशूल को उठा सके।

उसने दूर से अंधका और उस बालक को भैरव के शव को लेकर घोड़े पर सवार होकर जाते देखा। नारा ने त्रिशूल अंधका की ओर तान दिया। उसकी दृष्टि धुंधली थी, फिर भी उसने अपनी सांस को स्थिर किया और पूरी ताकत से त्रिशूल फेंका। उसने अपना निशाना साध लिया। त्रिशूल अंधका की छाती में जा लगा और वह घोड़े से गिर पड़ा, ज़मीन पर धड़ाम से गिरा।
नारा ने गंभीर संतुष्टि के साथ देखा, और फिर अपनी आँखें बंद कर लीं, खून बहना रोकने के लिए उसने अपना हाथ अपने घाव पर कसकर पकड़ लिया।
और फिर अचानक, उसने एक चीख सुनी और अपनी आँखें खोलीं…
वह अंधका था।
असंभव! क्या मैंने अभी-अभी उसे नहीं मारा?
उसने उस जगह की ओर देखा जहाँ अंधका गिरा था और उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। धुंधली दृष्टि के कारण उसने अंधका को नहीं बल्कि उस लड़के को गोली मार दी थी।
इसी बीच, अंधका ने अपने घोड़े को मोड़ दिया और भागने लगा, अपने युवा मित्र के शरीर के साथ-साथ भैरव के शव को भी पीछे छोड़ गया, जो लड़के के घोड़े से बंधा हुआ था।
कुछ ही देर में वह जंगल में गायब हो गया।
नारा आगे बढ़ा और खून से लथपथ लड़के के शव के पास रुक गया। नारा माफी मांगना चाहता था, लेकिन उसने नहीं मांगी।
वह अंधका के युद्ध में शामिल था।
नारा ने भैरव को पकड़ा और उसे वापस उसके घोड़े पर बिठा दिया। फिर वह गया और लड़के की छाती से त्रिशूल निकाल लिया। लड़का पीला पड़ गया था, हांफ रहा था और अपनी आखिरी सांसें गिन रहा था।
‘कृपया…’ उसने कहा, ‘क्या वह चला गया है?’
नारा जमीन पर घुटने टेककर घायल लड़के को ध्यान से देखने लगा। वह एक असुर था, सुनहरी आंखों वाला एक शाही व्यक्ति।
‘मुझे उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए था…’ लड़के ने आह भरी।
‘मैं आपकी मदद करती हूँ,’ नारा ने कहा।
‘नहीं,’ लड़के ने जवाब दिया, ‘यह मेरा कर्म है। मुझे पता है। मैंने कुछ भयानक काम किए हैं। मुझे अंधका की बात नहीं सुननी चाहिए थी। मुझे अपने पिता की बात नहीं माननी चाहिए थी। मैंने सब कुछ खो दिया। मैंने सबको खो

दिया। मेरा कोई नहीं बचा।’ उसकी पुतलियाँ फैल रही थीं। ‘मैं अकेला हूँ। मैं अकेला ही मरूँगा।’
नारा ने सिर हिलाया। 'नहीं, मैं यहाँ हूँ, बेटा। मैं एक चिकित्सक हूँ। मुझे तुम्हारा घाव देखने दो। मुझे खेद है। मेरा तुम्हें मारने का इरादा नहीं था।'
‘अगर तुम उसे कभी पाओ,’ लड़के ने दृढ़ता से कहा, ‘मेरा मतलब अंधका से है। याद रखना… उसके जैसे कई लोग हैं।’ वह खांसा और नारा को समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब है। ‘लेकिन असली वाला… असली वाला तो सिर्फ अंधा है। यह याद रखना।’
नारा को समझ नहीं आया। 'तुम्हारा नाम क्या है?'
‘अनुहरद,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
‘तुम हिरण्यकश्यप के पुत्र हो?’ नारा आश्चर्यचकित रह गया।
‘हाँ। मुझे बदला लेना था, लेकिन अब मुझे समझ आ गया है, मुझे उम्मीद की किरण दिख रही है,’ उसने खांसते हुए कहा। ‘यह बदला लेने की बात नहीं है। यह क्षमा करने की बात है।’ अनुहराद मुस्कुराया और हार मानकर एक गहरी साँस ली। ‘मेरे पास कोई है जो पिछली बार युद्ध में मेरे साथ था। वह अच्छा लड़का है… मैं… उफ़…’ उसने एक लकड़ी के लट्ठे पर पीछे झुकने की कोशिश की। ‘तुम्हें उतना दर्द क्यों नहीं हुआ जितना मुझे हुआ?’
नारा समझाना चाहता था, पर समय नहीं था। इसके बजाय, उसने सोमास से भरी अपनी शीशी की ओर हाथ बढ़ाया, इस उम्मीद में कि वह अनुहराद को कुछ दे सके, लेकिन शीशी खाली थी। उसने मन ही मन बड़बड़ाया।
लानत है!
‘मुझे अपने भाई की चिंता है। वही इकलौता बचा है जिसे मैं अपना परिवार कह सकता हूँ।’ अनुहराद की आँखों में आँसू थे। ‘और मैं ही उसका इकलौता सहारा था। मेरे पिता क्रूर हो सकते हैं, और ज़रूरत पड़ने पर वे उसे आसानी से मार डालेंगे।’
‘उसका नाम प्रहलाद है?’ नारा ने पूछा।
अनुहराद ने सिर हिलाया। 'काश मैं उसके साथ होता।' उसकी नज़रें नारा की आँखों से मिलीं। 'काश कोई उसके साथ होता।'
और लड़के की आंखें बंद हो गईं।

नारा को गहरा अपराधबोध हुआ। और वह इसका कारण अच्छी तरह जानता था। उसने सोचा था कि पशुपतास्त्र को नष्ट करके उसने युद्ध समाप्त कर दिया है। लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि उसने एक बार फिर अच्छे लोगों में से एक को मार डाला है।
उसके भीतर क्रोध भरा हुआ था, बहुत अधिक क्रोध। उसने उस दिशा में देखा जिधर अंधका गया था।
वह सोनितपुर जा रहा है।
और नारा जानता था कि उसे क्या करना है।
मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ, अंधका।

37

हिरण्यकश्यप

हिरण्य को तब तक पता नहीं चला कि वह कहाँ है, जब तक कि वह पीछे की ओर नहीं गिर गया।
उसकी वास्तविकता आत्मा द्वारा आकारित और रूपांतरित होकर एक परिचित परिदृश्य में तब्दील हो गई थी, और उसने देखा कि यह कश्यपपुरी था - अधिक जीवंत, कम धुएँ वाला, और तेज़ संगीत से गूंजता हुआ। आसपास के लोग खुश और संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे, और जब हिरण्य अपने कवच के बिना भीड़ भरे बाजारों और सुंदर इमारतों में घूम रहा था, तो उसने आश्चर्य से चारों ओर देखा। आत्मा उसके बगल में ही मंडराती रही।
‘सब लोग इतने खुश क्यों हैं?’ हिरण्य ने पूछा।
‘यह स्वर्ण युग है। शांतिपूर्ण समय है,’ आत्मा ने समझाया। ‘हम आपकी प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक हैं।’
‘तुम बार-बार “हम” क्यों कह रहे हो?’ हिरण्य ने चिढ़कर कहा।
आत्मा ने प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। वे आगे बढ़े और एक गुंबदनुमा संरचना के पास पहुँचे, जिसके मध्य में कमल का चिन्ह बना हुआ था। यह काश्यपुरी के

केंद्र में स्थित थी, जहाँ कभी हिरण्य ने हरिग्रीव की मूर्ति स्थापित की थी।
‘यह क्या है?’ हिरण्य आगे आया और उस संरचना को छुआ। ‘यह ठीक नहीं है,’ उसने आत्मा से कहा, जिसने केवल असहमति जताते हुए अपना सिर हिलाया।
यह भगवान विष्णु का मंदिर है।
‘विष्णु? विष्णु?’ हिरण्य क्रोधित होकर बोला। ‘उसके सिपाही ने मेरे भाई की हत्या की और उसका मंदिर मेरे शहर में स्थित है?’
उस आत्मा ने उपहास किया। 'कौन कहता है कि यह अभी भी तुम्हारा शहर है, भगवान हिरण्य?' उसने उपहास किया और क्रोध के आवेश में आकर हिरण्य उसे घूंसा मारना चाहता था।
‘यह क्या है? यह कोई परीक्षा नहीं है। आप मुझे क्या दिखा रहे हैं?’ हिरण्य ने पूछा।
‘यह एक परीक्षा है, लेकिन इसका अर्थ अंत में प्रकट होगा,’ आत्मा ने समझाया। हिरण्य ने दांत पीसते हुए मंदिर की दीवार पर मुक्का मारा। फिर वह पीछे हटा... तो देखा कि मंदिर पर कोई असर नहीं हुआ था। 'यह क्या हो रहा है? मुझे समझ नहीं आ रहा।'
‘हे हिरण्यदेव, यह सब वास्तविक नहीं है। क्या आप भूल गए हैं? यह सब एक प्रक्षेपण है।’
‘जी हाँ, बिल्कुल।’ हिरण्य ने अपना सिर नीचे झुका लिया और अपना गुस्सा शांत किया। ‘तुम मुझे यह क्यों दिखा रहे हो?’
'बस रुको।'
फिर उस आत्मा ने मंदिर के द्वार की ओर इशारा किया, जो खुल गया और उसमें से एक आत्मा प्रकट हुई…
प्रहलाद।
उनके गले में फूलों की माला थी और सिर पर टीका लगा हुआ था। उनके अंगरक्षक उनके पीछे-पीछे चल रहे थे और वे उम्रदराज लग रहे थे।
‘मेरा बेटा एक देव मंदिर से बाहर आ रहा है। यह असंभव है।’ हिरण्य ने सिर हिलाया। ‘यह अनुमान गलत है।’
‘ब्रह्मा की परीक्षाएँ चुनौती देने वाले के अनुसार प्रकट होती हैं। यह गलत हो सकता है, लेकिन यह आपके सबसे बुरे डर का प्रकटीकरण है – आपके बेटे का आपके विरुद्ध हो जाना,’ आत्मा ने समझाया। ‘आपको विश्वासघात का डर है। आप इस

बात को सहन नहीं कर सकते कि आपके बेटे में आस्थावान व्यक्ति बनने की क्षमता है।’
हिरण्य को यह भी पता नहीं था कि भीतर ही भीतर वह ठीक इसी बात से डर रहा था। अपने डर का सामना करने पर उसे एक तरह की शांति का अनुभव हुआ।
‘लेकिन आपको ऐसा क्यों लगता है?’ आत्मा ने पूछा। ‘आपको ऐसा क्यों लगता है कि आपका बेटा आपके खिलाफ हो जाएगा?’
हिरण्य ने अपने बालों में हाथ फेरा। उसने कभी भी उस भूली हुई याद को साझा नहीं किया था। 'क्योंकि वह मेरे जैसा नहीं है,' उसने संक्षिप्त उत्तर दिया, और फिर पूछा, 'तो आप कह रहे हैं कि यह स्वर्णिम युग, यह भी वास्तविक है?'
‘यह एक अनुमान है, एक संभावित भविष्य है यदि आपका पुत्र विष्णु का मार्ग चुनता है,’ आत्मा ने उत्तर दिया। ‘तभी स्वर्ण युग का प्रारंभ होगा।’
और असुर काल का अंत हो जाएगा।
‘और अगर वह मेरा रास्ता चुन ले तो?’ हिरण्य ने मन में भय लिए पूछा।
आत्मा ने सिर हिलाया, जिससे परिदृश्य बदल गया – पूरा नजारा बदल गया और उनके सामने एक नया दृश्य था। आकाश लाल था, इमारतें जलकर राख हो चुकी थीं, और असुरों की विशाल मूर्तियाँ चारों ओर छाई हुई थीं। और इन सबके बीच प्रहलाद खड़ा था, जिसके बाल लंबे और पीछे बंधे हुए थे और हिरण्य जैसी मूंछें थीं। वह अपने कोड़े से एक मानव पर प्रहार कर रहा था।
‘इलावार्टी के जीवन का सबसे अंधकारमय दौर,’ आत्मा ने कहा। ‘हे भगवान, हम बहुत डरे हुए हैं।’
‘वह इतना दुष्ट नहीं हो सकता।’ हिरण्य ने सिर हिलाया। ‘मैं इतना दुष्ट नहीं हूँ। मेरा बेटा ऐसा कैसे कर सकता है?’
क्योंकि मनुष्य अपने द्वारा किए गए कार्यों को कभी बुरा नहीं मानता, चाहे वे कितने भी गलत क्यों न हों।’ आत्मा मुस्कुराई।
वह सही कह रहा है।
हिरण्य जानता था कि आत्मा सही कह रही थी। कई बार उसका मन अपने द्वारा किए गए गैरकानूनी कामों के बारे में सोचने से बचता था, और उन्हें आवश्यक बताकर उनका औचित्य सिद्ध करता था।
आत्मा ने पूछा, 'आप अपने बेटे को कौन सा रास्ता अपनाते हुए देखना चाहेंगे?' ‘बिल्कुल, दूसरा वाला,’ हिरण्य ने बिना पलक झपकाए जवाब दिया। ‘उसे असुर परंपरा को आगे बढ़ाना होगा।’

आत्मा के पास कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे, लेकिन उसने दृश्य को फिर से बदल दिया और इस बार हिरण्य ने खुद को चट्टान के करीब, बैंगनी रंग के तारों भरे आकाश में पाया। पक्षी चहचहा रहे थे और हवा उसके चेहरे को छू रही थी। और चट्टान के उस पार, उसे अंधेरा दिखाई दे रहा था। लेकिन चट्टान के पास, किनारे पर, एक छोटा लड़का बैठा था।
प्रहलाद।
हिरण्य की पहली प्रवृत्ति अपने बेटे को चट्टान से वापस खींचने की थी, लेकिन उसने खुद को समझाया कि यह केवल एक कल्पना है, एक भ्रम है।
आत्मा उसके बगल में प्रकट हुई। ‘परीक्षा सरल है। तुम्हारी आखिरी परीक्षा, और सभी परीक्षाओं में सबसे कठिन।’
'यह क्या है?'
तुम्हें अपने बेटे को मारना होगा।
हिरण्य जम गया। 'क्यों?'
‘आपने दूसरा विकल्प चुना, है ना? आप चाहते हैं कि वह असुर नाम धारण करे। लेकिन अगर वह ऐसा न करे तो? अगर वह विष्णु का अनुसरण करने का विकल्प चुने और इस प्रकार असुर साम्राज्य का अंत करके देव राजा बन जाए तो? आप क्या करेंगे? यह परीक्षा इसी संभावना पर विचार करती है और आपसे कार्रवाई करने को कहती है, चाहे उसे मारना हो या बख्श देना, ताकि यह देखा जा सके कि आप ब्रह्मास्त्र के योग्य हैं या नहीं।’
‘लेकिन अगर वह ऐसा नहीं करता तो? अगर वह मेरे जैसा बन जाता है तो?’ हिरण्य ने पूछा।
‘परीक्षणों से इस संभावना का समर्थन नहीं मिलता।’
‘यह संभव नहीं है। यह सब काल्पनिक है,’ हिरण्य ने विरोध किया।
‘ये परीक्षाएँ कभी काल्पनिक नहीं होतीं,’ आत्मा ने गरजते हुए कहा। ‘ये चक्रों का हिस्सा हैं, वे परमाणु हैं जो इलवर्ती की वायु में प्रवाहित होते हैं। आप जो कुछ भी देखते हैं, उसका कोई न कोई कारण होता है, और इस परीक्षा का भी कोई न कोई कारण है। यह परीक्षा आपसे यह निर्णय करवाना चाहती है कि आपके लिए आपका पुत्र अधिक महत्वपूर्ण है या असुर साम्राज्य।’
‘आपका मतलब यह है कि ऐसी संभावना है कि मेरा बेटा विष्णु की शरण में चला जाए?’

‘यह मुकदमा भविष्य, अतीत और वर्तमान को देख सकता है। इसलिए हम नहीं जानते या हम जानते हैं। कुछ भी संभव है।’
तो मेरे बेटे को मारकर मुकदमे को क्या फायदा होगा?
‘यह इस बात की पुष्टि है कि भविष्य में यदि आवश्यकता पड़ी तो तुम अपने पुत्र को फिर से मारने के लिए तैयार रहोगे। याद रखो, ब्रह्माशास्त्र कवच और शस्त्र योग्य व्यक्तियों के लिए हैं। और योग्य व्यक्तियों को शस्त्र प्राप्त करने की प्रक्रिया में कुछ भी करने के लिए तैयार रहना होगा।’ हिरण्य ने आह भरी। वह प्रहलाद के पास गया, और इस बार प्रहलाद छोटा था, शायद सात या आठ साल का।
हिरण्य उसके बगल में बैठ गया।
‘पिताजी,’ प्रहलाद ने हिरण्य की ओर मुड़ते हुए कहा। वह बिल्कुल वास्तविक लग रहे थे; किसी भ्रम की तरह नहीं, जिससे हिरण्य और भी असहज हो गया। ‘देखिए मेरे पास क्या है।’ लड़के ने अपने हाथ फैलाए और उन्हें खोलकर हथेलियों में लाल रंग की अंगीठियां दिखाईं। ‘ये कितनी सुंदर हैं, है ना? मुझे क्या करना चाहिए?’
हिरण्य कुछ बोल नहीं सका। वह रोने से खुद को रोकने की पूरी कोशिश कर रहा था, और उसने प्रहलाद के सिर पर हाथ रखकर उसे थपथपाया।
‘मैं इन्हें आज़ाद कर दूंगा!’ और फिर लड़के ने अपनी हथेलियाँ खोल दीं, जिससे
रात में रोशनी फैलती है। 'क्या तुम्हें याद है तुमने मुझे बताया था कि तारों में से एक है...'
मेरी माँ?'
हिरण्य ने ऊपर देखा तो आकाश में केवल एक ही चमकीला तारा दिखाई दिया। 'हाँ।'
जब भी वह एक तारा दिखाई देता था, तो तुम कहते थे कि माँ हमें देख रही है, मुझे देख रही है।
‘हां, मैंने किया।’ हिरण्य की आंखों से आंसू बहने लगे। ‘वह आज रात भी हमें देख रही होगी।’
‘मुझे खुशी है कि मेरे माता-पिता मेरे साथ हैं। एक स्वर्ग में और एक यहाँ।’ प्रहलाद ने हिरण्य को गले लगाया।

वो कितना प्यारा है। लेकिन अगर वो बड़ा होकर विष्णु का अनुयायी बन जाए तो क्या होगा?
हिरण्य ने उस संभावना के बारे में सोचा।
क्या मैं उसे इसलिए बख्श दूंगा क्योंकि वह मेरा बेटा है, या फिर मैं उसे अपनी जाति के साथ विश्वासघात करने के लिए मार डालूंगा?
उसे आत्मा की कही बात याद आ गई। उसे अभी तुरंत कार्रवाई करनी होगी, अन्यथा प्रहलाद विष्णु का अनुयायी बनकर असुर वंश का अंत कर देगा।
यह वास्तविक नहीं है। लेकिन अगर यह वास्तविकता में हो जाए तो क्या मैं उसे मार पाऊँगा?
हिरण्य ने प्रहलाद के सिर पर चुंबन किया।
‘आप क्यों रो रहे हैं, पापा?’ लड़के ने पूछा।
‘क्योंकि तुम्हारे पापा बुरे आदमी हैं,’ हिरण्या ने दांत पीसते हुए कहा।
आँसू रोकते हुए, ‘प्रहलाद… तुम मेरे बेटे हो। लेकिन अगर ऐसा कुछ है तो...’ अगर जरा सी भी संभावना हुई कि आप हमारे सिद्धांतों के साथ विश्वासघात करेंगे, तो मैं आवश्यक कदम उठाऊंगा।
‘और क्या आवश्यक है?’ प्रहलाद ने पूछा।
हिरण्य ने अपनी आँखें बंद कीं और प्रहलाद की पीठ पर हाथ रखा। एक झटके में उसने लड़के को चट्टान से नीचे धकेल दिया। जब उसने आँखें खोलीं, तो उसने आकाश में अकेले तारे की ओर देखा। प्रहलाद वहाँ से जा चुका था।
और हिरण्य बिलकुल अकेला था।

38

प्रहलाद

प्रहलाद अपनी बालकनी में खड़ा था। धुंधले, अंधेरे आसमान के नीचे उसका शहर उसके सामने फैला हुआ था। वह विचारों में डूबा हुआ था, उसका मन बीते हुए सभी घटनाक्रमों और भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में सोच रहा था।

क्या मैं अब सही काम कर रहा हूँ? मुझे उम्मीद है कि मैं सही कर रहा हूँ।
उन्हें नारद पर भरोसा था, लेकिन उस बूढ़े व्यक्ति को वही करने की आदत थी जो उसे लगता था कि भगवान विष्णु चाहते हैं, और इस प्रक्रिया में वह किसे चोट पहुंचा सकता है, इसकी उसे कोई परवाह नहीं थी।
मुझे पूरा यकीन है कि भगवान विष्णु ऐसा नहीं चाहेंगे।
प्रहलाद ने नारद से भगवान विष्णु पर पुस्तकें उधार ली थीं; वे पुस्तकें भगवान ब्रह्मा और प्रथम शिव के साथ उनके प्रारंभिक वर्षों, वैकुंठ में उनके अंत, मनुष्यों को सिंहों की शक्ति प्रदान करने, सिंह संकर की रचना करने और अपनी मृत्यु पर इलवर्ती को यह वचन देने के बारे में थीं कि वे प्रत्येक युग में अपने सैनिक, चुने हुए व्यक्ति को, अधर्म से लड़ने के लिए भेजेंगे।
प्रहलाद को ये कहानियाँ प्रेरणादायक और वीरतापूर्ण लगीं, और सबसे बढ़कर... बहुत महत्वपूर्ण लगीं, क्योंकि इनसे लोगों को यह उम्मीद मिली कि अंधकार में भी कोई नायक होगा जो उन्हें अत्याचार से मुक्ति दिलाएगा।
लेकिन दुर्भाग्य से, मैं भी उस अंधकार का हिस्सा हूं।
इन कहानियों को पढ़कर और इनका अध्ययन करके उन्हें यह भी एहसास हुआ कि नारद एक अतिवादी थे और वे गलत थे। धर्म के नाम पर शांति का प्रचार और प्रसार करना चाहिए, न कि हिंसा का। शायद अपने छात्रों और गुरुकुल को खोने के बाद नारद प्रतिशोध की प्यास से ग्रस्त थे और उनका यही क्रोध अतिवाद में तब्दील हो गया था।
भगवान विष्णु के बारे में इतना कुछ पढ़ने के बाद, प्रहलाद को यह भी पता चल गया था कि उसके पिता इंद्र का पीछा उसकी माता के कारण नहीं कर रहे थे। कायधू तो बस उनके क्रोध और प्रेरणा को भड़काने का एक जरिया था। अंततः, हिरण्य को केवल सत्ता चाहिए थी, और कायधू को मारकर इंद्र ने उनकी सत्ता को चुनौती दी थी। अब हिरण्य स्वयं को और दूसरों को यह साबित करना चाहता था कि वह कोई खास है। यह विशुद्ध अहंकार ही था जो उसे प्रेरित कर रहा था।
लेकिन यह तो सिर्फ मेरा तर्क है। हो सकता है मैं गलत हूँ।
'मेरे स्वामी,' पीछे से एक आवाज आई और उनके विचारों में खलल डाला।
प्रहलाद ने मुड़कर धृति को देखा। वह हाथ पीछे बांधे खड़ी थी और उसकी कमर पर बंधी बेल्ट से एक तेज कटार लटक रही थी।
उन्होंने विरोध करते हुए कहा, 'मुझे उस नाम से मत बुलाओ।'

मैं अब भी आपका सेवक हूँ।
‘चलो,’ प्रहलाद ने कहा।
धृति मुस्कुराते हुए आगे बढ़ी। हमेशा की तरह उसके बालों में एक फूल लगा हुआ था।
उसने कहा, 'मैं पूछना चाह रही थी, आपको क्या बात परेशान कर रही है?'
‘मैं सोच रहा था कि नारद एक अच्छे नेता हैं या नहीं,’ प्रहलाद ने बालकनी की रेलिंग पर पीछे झुकते हुए कहा। ‘इस बात पर ध्यान मत दीजिए। उन्होंने विष्णुसेना की स्थापना की है, लेकिन मुझे संदेह है कि क्या वे इसका नेतृत्व करने के लिए सही व्यक्ति हैं?’
धृति कुछ देर चुप रही, फिर बोली, 'वह थोड़ा... अतिवादी है, मैं समझती हूँ। लेकिन क्या हमें इसकी ज़रूरत नहीं है?'
‘धृति, हमें संतुलन चाहिए, अराजकता नहीं। हम पहले से ही मेरे पिता के शासन में अराजकता में जी रहे हैं, और वेश्यालयों को जलाने से भले ही राजकोष खाली हो जाता है, लेकिन मंत्रियों को ज्यादा नुकसान नहीं होता। ऐसा करने के लिए, हमें राजकोष को ही खाली करना होगा,’ उन्होंने समझाया।
वह मुस्कुराई। 'यह बहुत अच्छा विचार है। शायद वेश्यालयों के बाद हम ऐसा कर सकते हैं।'
‘और शांद और अमरका को भगा दूं?’ प्रहलाद हँसते हुए बोला। ‘मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। वे दोनों ही बहुत परेशान करने वाले हैं।’
वह हंसी।
‘मैं नारदा के खिलाफ कुछ भी कहना नहीं चाहती,’ उसने कहा, ‘क्योंकि उन्होंने सचमुच मेरी मदद की। मैं खोई हुई थी। मैं अनाथ थी, चोर थी। मुझे याद है कि मेरा कोई लक्ष्य नहीं था और मैं एक ऐसे मकान मालिक के यहाँ काम करती थी जो मुझे हर रात अपने कमरे में बुलाता था।’ उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। ‘यह बहुत भयानक था।’
‘लेकिन तुम तो बहुत छोटे हो!’ प्रहलाद ने हैरानी से कहा।
'मुझे पता है। लेकिन उसे परवाह नहीं थी, और ऐसा कोई कानून नहीं था जो मेरी रक्षा कर सके।'
प्रहलाद जानता था कि उसे अपने लोगों की जरूरतों के अनुरूप राज्य के कानूनों में बदलाव करना होगा और धृति जैसी युवा लड़कियों को राज्य का शिकार नहीं बनने देना होगा।

उसने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, 'मुझे बहुत खेद है। मैं दोबारा तुम्हारे साथ ऐसा नहीं होने दूंगा। हमें उस मकान मालिक को ढूंढकर उसे सजा देनी होगी।' ‘तुम बहुत प्यारे हो,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘जिस दिन मैं विष्णुसेना में शामिल हुई, उसी दिन मैंने उसका दिल निकाल लिया था।’
प्रहलाद को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे।
उसे मेरी मदद की ज़रूरत नहीं थी। मुझे लगता है कि मुझे उसकी मदद की ज़रूरत थी।
'अब तुम हमारे हिस्से हो, और हम तुम्हारे लिए अपनी जान दे देंगे, और अपनी जान देकर तुम्हारी रक्षा करेंगे,' उसने कहा, और उसकी मुस्कान सच्ची थी। प्रहलाद ने जवाब दिया। ‘धन्यवाद।’ उसने उसके होंठों की ओर देखा और उसने उसके होंठों की ओर। उनके बीच सन्नाटा छा गया।
धृति ने कहा, 'मुझे लगता है मुझे जाना चाहिए।'
'हां, मुझे लगता है कि आपको ऐसा करना चाहिए।'
लेकिन उनमें से कोई भी नहीं हिला। वे एक-दूसरे के बहुत करीब खड़े थे, वास्तव में बेहद करीब, और प्रहलाद उसकी धड़कन महसूस कर सकता था और उसकी धड़कन सुन सकता था। वह आगे झुका और...
कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई।
भगवान विष्णु की तलवार की कसम, यह कौन है?
प्रहलाद और धृति एक दूसरे से दूर हट गए, और धृति की भौंहें तन गईं।
‘मुझे छिप जाना चाहिए। रात के इस समय मुझे यहाँ कोई नहीं देख सकता,’ उसने लंबे पर्दों के पीछे छिपते हुए कहा। प्रहलाद ने सिर हिलाया और दरवाजा खोलने चला गया।
यह विपरिचित था, जो घबराया हुआ और चिंतित दिख रहा था। 'क्या मैं खुलकर बोल सकता हूँ, प्रहलाद?'
वह अक्सर अपना पहला नाम नहीं लेता था, लेकिन जब लेता था तो समझ जाता था कि कुछ गड़बड़ है। प्रहलाद नहीं चाहता था कि वह अंदर आए, लेकिन विपरिचित बिना पूछे ही अंदर चला गया। उसने कहा, 'माफ़ कीजिए, मैं थोड़ा हैरान हूँ।'
'गलत क्या है?'
‘मैं… उह…’ विपरिचित ने आह भरी। ‘तुम्हारी चाची मुझसे मिलने आई थीं।’
हे भगवान…
‘ठीक है, और?’

उसे लगता है कि तुम साम्राज्य के साथ विश्वासघात कर रहे हो।
प्रहलाद ने उपहास करते हुए कहा, 'उसे ऐसा क्यों लगता है?'
‘उसने देखा कि कैसे तुमने हमले से ठीक पहले बड़ी चालाकी से उसकी सेना को अड्डे से हटा लिया। मुझे तुम्हें ये सब नहीं बताना चाहिए था क्योंकि वो चाहती थी कि मैं तुम्हारी जासूसी करूँ, लेकिन तुम्हें पता है... मुझे बताना ही पड़ा, यार। तुम मेरे दोस्त हो।’ उसने सिर हिलाया। ‘तुम्हें ये सब बताकर मैं सिम्मी के साथ अपने रिश्ते खराब कर सकता हूँ, लेकिन मुझे बताना ही पड़ेगा, ठीक है?’
प्रहलाद ने अपने दोस्त के कंधे पर हाथ फेरते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। चिंता मत करो। उसके पास कोई सबूत नहीं है। उसके पास कुछ भी नहीं है। ये सब महज़ संयोग हैं जिनके आधार पर वह ये आरोप लगा रही है।'
विपरिचित ने प्रहलाद की ओर देखा और फिर सिर हिलाया। ‘मुझे पता है। आप सही कह रहे हैं। आपको पता है, मैंने लगभग आपकी जासूसी करने का मन बना लिया था, लेकिन फिर मुझे याद आया कि एक बार मैंने राजमहल की रसोई से कुछ खाना चुराया था और आपने मुझे ऐसा करते हुए देख लिया था, लेकिन आपने मेरी शिकायत नहीं की। आप... आप एक अच्छे इंसान हैं।’ वह मुस्कुराया। ‘मुझे पता है कि आप कभी विष्णुसेना का साथ नहीं देंगे।’
प्रहलाद ने एक गहरी सांस ली। उसे अपने दोस्त के भरोसे को तोड़ने का बहुत पछतावा हो रहा था।
लेकिन मैं उसे बता नहीं सकता।
विपरिचित ने आगे कहा, 'यह तुम्हारे खून में नहीं है। हमें होलिका के बारे में क्या करना चाहिए?'
‘मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा। तुम्हें पता है, होलिका मुझे कभी पसंद नहीं करती,’ प्रहलाद ने जवाब दिया। ‘वह हमेशा से… खैर… वह मुझे ही अपने बच्चे न होने की वजह मानती है।’
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ विपरिचित ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
‘आप जानते हैं कि हमारी संस्कृति में भाई-बहन अक्सर शादी कर लेते हैं,’ प्रहलाद ने बात शुरू की। ‘होलिका खुश नहीं थी जब मेरे पिता ने उससे शादी नहीं की। इसके बजाय, उन्होंने मेरी माँ से शादी कर ली क्योंकि वह अनुहरद के गर्भ में थीं। और फिर बाद में मेरा जन्म हुआ। मेरी चाची इससे खुश नहीं थीं। तब से वह मुझसे और अनुहरद से नफरत करती हैं। असल में, वह हमेशा मानती थीं

कि अगर उन्होंने मेरे पिता से शादी की होती, तो उनके माँ बनने की अच्छी संभावना होती।’
विपरिचित ने सिर हिलाया। ‘यह दुख की बात है कि उसके मन में ये व्यक्तिगत पूर्वाग्रह हैं।’ वह पास जाकर बिस्तर पर बैठ गया और किताबों पर नज़र डाली। ‘मुझे लगा था कि तुम्हें पढ़ना पसंद नहीं है, प्रहलाद।’
‘मैं तो बस यूं ही…’ प्रहलाद ने किताबें छीनने की कोशिश की, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, विपरिचित ने उनमें से एक किताब उठा ली और उसका शीर्षक देख लिया।
प्रहलाद द्वारा रेखांकित किए गए पृष्ठों को पढ़ते ही वह खड़ा हो गया। पढ़ते-पढ़ते वह चलने लगा और अंत में उस लंबे पर्दे के पास रुक गया जिसके पीछे धृति छिपी हुई थी।
'एक ऐसे लड़के के लिए जो कहता है कि वह विष्णुसेना का हिस्सा नहीं है, तुम विष्णु के बारे में बहुत कुछ पढ़ते हो,' विपरिचित ने प्रहलाद से आंखें सिकोड़ते हुए कहा।
'यह सिर्फ दुश्मन की पहचान करने के लिए है,' प्रहलाद ने कमजोर आवाज में कहा। विपरिचित ने संदेह से अपने होंठ सिकोड़ लिए, उसकी आँखें प्रहलाद के शांत, परेशान चेहरे में जवाब खोजने की कोशिश कर रही थीं। 'ज़रूर। क्या तुम्हें पता चला कि उस लाल बालों वाली लड़की के साथ क्या हुआ?'
मुझे नहीं पता। मैंने उसे कभी नहीं पाया।
‘ठीक है,’ विपरिचित ने सिर हिलाया। ‘मुझे लगता है कि मुझे अब जाना चाहिए।’ उसे पता है।
और इससे पहले कि विपरिचित कुछ समझ पाता, धृति पर्दे से कूदकर बाहर आई और उसका गला पकड़कर उस पर चाकू तान दिया। 'शांत रहो, मेरे बच्चे।'
‘तुम उनके लिए काम कर रहे हो।’ विपरिचित ने अपनी नाक के नथुने फुला लिए। 'यह जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक जटिल है,' प्रहलाद ने कहा।
'झूठे!' विपरिचित चिल्लाया।
उन शब्दों से प्रहलाद को ठेस पहुंची, लेकिन उसने स्थिति को नियंत्रण में लाने पर ध्यान केंद्रित किया। 'धृति, उसे छोड़ दो।'
धृति चिल्लाकर बोली, 'वह होलिका को बता देगा।'
वह ऐसा नहीं करेगा।

‘मैं बताऊंगा!’ विपरिचित क्रोधित होकर चिल्लाया। ‘मुझे उसे बताना ही होगा कि इस शहर पर एक गद्दार राजा राज करता है। सबको यह जानना होगा।’
धृति ने विपरिचित की गर्दन पर खंजर से वार करने की कोशिश की, तभी विपरिचित ने उसका हाथ पकड़कर मरोड़ दिया, जिससे खंजर ज़मीन पर गिर गया। फिर उसने धृति को कमरे के उस पार घसीटा और अपना छुरा निकालकर उस पर हमला कर दिया। उसने धृति को दीवार से धक्का दिया और दर्द से चीखती-चिल्लाती धृति के बाल खींचने लगा।
मैं होलिका को तुम्हारा सिर लाकर दूंगा। उसे यह बहुत पसंद आएगा।
प्रहलाद ने धृति के हाथ से गिरी कटार उठाई और विपरिचित की ओर दौड़ा, जिसने ठीक समय पर हरकत करते हुए प्रहलाद के हमले को नाकाम कर दिया।
आमने-सामने खड़े होकर विपरिचित ने कहा, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम इसके पीछे थे।' एक हाथ से उसने धृति को दीवार से सटा रखा था।
अगले ही क्षण, उसने प्रहलाद पर आक्रमण किया, जिसने हमले से बचते हुए विपरिचित की रीढ़ में अपना खंजर घोंप दिया। अगले ही क्षण, विपरिचित मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा।
प्रहलाद धृति के पास गया, जो अपने घायल हाथ को पकड़े हुए थी। उसने धृति को गले लगाया और वे दोनों दीवार के सहारे खड़े होकर अपने सामने पड़े मृत राजरक्षक को निहारने लगे।
मुझे खेद है, मेरे दोस्त।
प्रहलाद ने अपना हाथ अपने लॉकेट को पकड़ने के लिए उठाया, उसमें सांत्वना की तलाश करते हुए।
अगर होलिका को उसकी मौत के बारे में पता चला तो उसे पता चल जाएगा कि यह मैंने किया है।

40

नरसिंह

नरसिम्हा सोनितपुर के द्वार की ओर जाने वाले पुल पर खड़े थे। उनकी पीठ पर बंधी बेल्ट से त्रिशूल लटका हुआ था।
उसने भैरव का शव गण के एक सैनिक के पास छोड़ दिया था और उसे शव लेकर किले में वापस लौटने का आदेश दिया था।
वह अंधका का अंत करने के लिए त्रिशूल का प्रयोग करेगा।
उसका सिर ऊंचा था। डूबते सूरज को देखते हुए उसकी घायल छाती तेजी से धड़क रही थी। वह थका हुआ और घायल था, लेकिन उसे परवाह नहीं थी। उसे अपने भीतर शक्ति का एक जबरदस्त प्रवाह महसूस हो रहा था।
वह जानता था कि उसे ऐसा क्यों महसूस हो रहा है।
मैं धर्म का अनुयायी तो नहीं हूँ, लेकिन बुराई को देखते ही पहचान लेता हूँ।
और मैं उसे खत्म कर दूंगा।
और जहाँ एक ओर इससे उसे हिम्मत मिली, वहीं दूसरी ओर इस विचार ने उसे बुरी तरह डरा भी दिया। उसे डर था कि कहीं वह अवतार न बन जाए।
क्या मुझे अब परवाह है?
मैं नहीं।
मुझे अपने दोस्त का बदला लेना है।
चलते-चलते उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। पुल सुनसान था। अंधका की सेना कहीं नज़र नहीं आ रही थी; शायद वे छिपे हुए थे। पुल लंबा था और उसके नीचे बर्फीली नदी उफनती बह रही थी।
और जैसे-जैसे उसे तापमान बढ़ता हुआ महसूस हो रहा था, उसने अपने दुश्मन को सामने देखा।
वह अंधका था। वह अपने घोड़े पर सवार था - उसकी आंखों पर वही चमकदार लाल पट्टी बंधी थी और उसके हाथ में एक भाला था।
और बिना किसी देरी के, अंधका उसकी ओर बढ़ गया।
एक पल के लिए नारा अचंभित रह गया - जब उसने अंधका को देखा था तब उसके पास भाला नहीं था और अब उसके पास भाला था।
लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा।
नारा ने दांत पीस लिए।
मैं तुम्हारा बदला लूंगा, मेरे दोस्त।

वह तेजी से आगे बढ़ा, दहाड़ता हुआ जैसे ही वह घोड़े के करीब पहुंचा, उसने अंधे राजकुमार को पंजा मारने के बजाय, उसके घोड़े पर छलांग लगा दी और उसे नीचे फेंक दिया।
अंधका ने उसे घुटने से मारा और अपने भाले से उसकी चमड़ी को भेदने की कोशिश की, लेकिन...
नारा ने वार रोक दिया और भाले को धार से पकड़ लिया, खून बह रहा था। उसने भाले को घुमाकर उसके लंबे चमड़े के हैंडल से तोड़ दिया। फिर उसी भाले से उसने अंधका के चेहरे पर वार कर दिया।
अंधका की मृत्यु हो गई थी।
नारा वहीं खड़े-खड़े आह भरते हुए बोला। क्या उसने सचमुच अंधका को मार डाला था?
लेकिन जल्द ही उसे अपना जवाब मिल गया। पुल के ठीक अंत में, एक और अंधका खड़ा था, और उसके बगल में एक और! वास्तव में, वहाँ तीन अंधका थे।
तीन अंधका!
नारा को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। तीनों आदमी शारीरिक बनावट में थोड़े अलग थे, लेकिन उनकी पोशाक एक जैसी थी, उनका रूप-रंग भी एक जैसा था
- गंजे, पीले रंग के, और आँखों पर लाल पट्टी बंधी हुई थी।
मैंने एक को मार डाला, और तीन और उठ खड़े हुए।
उनमें से कितने लोग थे?
इससे पहले कि वह हिल पाता, अंधक अपने भाले लेकर आगे बढ़े और नारा पर झपटे। नारा अपने पंजों से हर हमले को नाकाम करने लगा और यह पता लगाने की कोशिश करने लगा कि उनमें से असली अंधका कौन है?
प्रत्येक अंधका ने आंखों पर पट्टी बांधे होने के बावजूद भी सटीकता से लड़ाई लड़ी।
वो आंखों पर बंधी पट्टियां! अनुहराद की कही कोई बात अब समझ में आ गई। नारा ने लाल कपड़े को फाड़ते हुए उनकी चौड़ी आँखों में देखा और इस प्रक्रिया में उसे कुछ अहसास हुआ...
वे देख सकते थे।
लेकिन अंधका अंधा था।
ये सब ढोंगी हैं! असली अंधका अंधा है। वही एकमात्र अंधा है।

और इसका केवल एक ही मतलब हो सकता है - अंधाका हमशक्लों का इस्तेमाल कर रहा था।
नारा लुढ़क गया और पीछे से अपने पंजे एक अंधक की पीठ में गड़ा दिए, जिससे उसकी रीढ़ टूट गई, और फिर दूसरे पर झपटा, उसके गले को नोंचकर फाड़ दिया।
तीसरे अंधक ने अपने भाले का इस्तेमाल किया और नारा पर कूद पड़ा।
उस पर हमला करने के बजाय, नरसिम्हा ने अपनी पूरी ताकत से दहाड़ लगाई।
उस आवाज़ को सुनकर अंधका की आँखें भय से चौड़ी हो गईं और वह झिझक उठा। नारा ने फिर दहाड़ा और काले बादलों के बीच से छनकर आती सूरज की रोशनी में उसकी त्वचा चमक उठी। अचानक उसका चेहरा दिखना बंद हो गया। केवल शेर ही चमक रहा था।
केवल वह राक्षस ही दिखाई दे रहा था।
नारा ने अपना सिर घुमाया और उसने देखा कि वह और भी अंधकों से घिरा हुआ था - उनमें से छह अंधक थे।
असली वाला मुझे व्यस्त रखने के लिए इन्हें भेज रहा है ताकि वह खुद भाग सके।
उन पर हमला करने के बजाय, नारा दर्द की लहरों के बीच तेजी से आगे बढ़ा।
उसने छह अंधकों की दीवार तोड़ दी, उन्हें एक तरफ धकेल दिया और शहर के द्वार से बाहर निकल गया। उसके पीछे-पीछे छह अंधक भी आ गए।
नारा ने शहर की ओर देखा - गरीब, भूखे नागरिक बाहर आ गए थे और उसे भय भरी निगाहों से देख रहे थे।
‘वह कहाँ है?’ नारा ने पूछा। उसके पीछे, अंधक तेजी से आगे बढ़ रहे थे और उसके पास पहुँचने ही वाले थे।
आम नागरिक असमंजस में थे। उन्होंने सिंह की ओर देखा, और फिर अनेक अंधकों की ओर।
किसी के जवाब देने से पहले ही, अंधकों ने नारा को घेर लिया था, और वह बीच में खड़ा होकर उनमें से प्रत्येक को ध्यान से देख रहा था, तभी अंधकों ने उसे घेर लिया।
जैसे ही एक-एक करके लोग आगे आए, नारा ने व्यवस्थित ढंग से उनकी आंखों पर बंधी पट्टी को काटा और उनकी आंखें देखीं... सामान्य, स्वस्थ आंखें, पुतलियां एकदम सही थीं।
और जैसे ही उन्होंने अपने भाले उठाए और आगे की ओर बढ़ाए, नारा शेर की तरह हवा में उछला, और अंधकों के भाले एक दूसरे पर वार करने लगे।

अंततः उन्होंने खुद को चाकू मार डाला।
'सब खत्म हो गया, जानवर,' पीछे से एक तीखी आवाज आई।
नारा ने मुड़कर देखा तो उसे एक दुर्बल-सा दिखने वाला अंधका अकेला, निहत्था चलता हुआ दिखाई दिया। वह ठंड से ठिठुरते हुए अपने हाथों को रगड़ रहा था।
नारा को लगा कि वह डरा हुआ है।
‘सब खत्म हो गया,’ बूढ़े ने फिर कहा। ‘मेरे पास अब कोई सेना नहीं बची। वे सब मारे गए, हम्म,’ अंधका ने सिर हिलाते हुए कहा। आम नागरिक उन्हें दूर से देख रहे थे। ‘मैंने उन्हें परेशान किया। मैंने तुम्हें भी परेशान किया। यहाँ तक कि मैंने अपने प्यारे दोस्त अनुहराद को भी मरने दिया। उसके लिए मेरे बड़े-बड़े सपने थे, हम्म।’ वह हार मानकर बर्फ पर घुटने टेककर बैठ गया। फिर उसने अपने हमशक्लों की ओर इशारा किया। ‘इन लोगों ने मुझ पर भरोसा किया था… वे भी चले गए।’
नारा गंभीर भाव से देखता रहा। वह एक राक्षस पर अपनी दया व्यर्थ नहीं करना चाहता था।
‘और मैंने अपने पिता को मार डाला।’ अंधका ने सिर हिलाया। ‘मैंने सोचा था कि मैं भाग सकता हूँ…’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ, हम्म, क्या फायदा? मैं हार गया हूँ। मेरे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। कोई दरवाजा नहीं जो मेरा स्वागत करने के लिए खुले।’ वह रोने लगा, और फिर उसकी सिसकियाँ गुस्से की दहाड़ में बदल गईं। ‘क्या तुम जानते हो कैसा लगता है, हम्म, सब कुछ प्लान करने के बाद उसे खो देना?’
नारा उसका मतलब समझ गई थी।
मुझे कई बार ऐसा महसूस हुआ है।
‘मुझे मार डालो,’ अंधका ने कहा। ‘मैं इस क्रूर दुनिया में और जीना नहीं चाहता, हम्म। कृपया।’
नारा अंधका के करीब गया और उसकी आंखों पर बंधी पट्टी हटा दी, जिससे आंखों की जगह दो बड़े-बड़े जले हुए छेद दिखाई दिए।
वही असली वाला है।
‘हाँ, मैं ही हूँ,’ अंधका ने सिर हिलाया। ‘आखिरकार तुमने मुझे ही पकड़ लिया।’
मुझे नहीं लगा था कि तुम इस तरह हार मान लोगे।

‘एक आदमी को पता होना चाहिए कि कब हार माननी है,’ अंधका ने कहा। ‘क्या तुम उस भावना से परिचित हो, हे जानवर?’ उसने नारा से पूछा।
क्या वह था?
वह जीवन भर धर्म से भागता रहा। उसने हार मान ली थी, लेकिन उसे वापस यहीं लाया गया था... इसी क्षण में। उसका जन्म इसी काम के लिए हुआ था; बुराई का नाश करने के लिए। और भागकर उसने बुराई को और बढ़ने दिया था।
‘मनुष्य को अपनी जिम्मेदारियों का ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि जब आपको महानता के लिए चुना जाता है,’ नारा ने धर्म बनने के अपने अनुभव को याद करते हुए कहा, ‘तो आपको इससे भागने के बजाय इसे स्वीकार करना होगा।’ वह मुस्कुराया। फिर उसने अंधे व्यक्ति की ओर क्रूर मुस्कान के साथ देखा। ‘एक पल के लिए भी यह मत सोचना कि मैं तुम पर दया करूंगा,’ उसने कहा।
‘मुझे पता है तुम ऐसा नहीं करोगे। मुझे सिंह जाति के हाथों मारे जाने पर शर्म आती है,’ अंधका ने कहा।
नारा ने त्रिशूल निकाला और उसे अंधका के गले की ओर तान दिया।
‘नहीं। तुम सिंह के हाथों नहीं मारे जाओगे,’ नारा ने जवाब दिया और त्रिशूल को अंधका के गले में घोंप दिया, और सफेद बर्फ पर खून के फव्वारे को फैलते हुए देखा।
उसके पास अपनी बात को सही ठहराने के लिए विष्णु का प्रतीक नहीं था। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।
वह अपने मुंह से निकले शब्दों पर विश्वास करता था, ऐसे शब्द जो प्रतीक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे।
‘तुम विष्णु के अवतार के हाथों मारे जाओगे।’

41

हिरण्यकश्यप

‘तुम उत्तीर्ण हो गए हो,’ आत्मा ने कहा।

हिरण्यकश्यप की सारी ऊर्जा समाप्त हो चुकी थी, और एक क्षण के लिए उन्हें लगा कि अब उन्हें ब्रह्मास्त्र की भी परवाह नहीं रही। जो कुछ उन्होंने सहा था, वह अब असहनीय हो गया था।
अब आपको कवच और हथियार मिल सकते हैं।
हिरण्य ने अपना कवच उतारते हुए सिर हिलाया और उसे ज़मीन पर फेंक दिया। उसने अपने दस्ताने और कंधे के पैड, साथ ही अपना सोने का सींगों वाला मुकुट भी उतार दिया - जो बैल के सींगों से मिलता-जुलता था और शक्ति का प्रतीक था।
ये सींग असुर साम्राज्य की शक्ति और वीरता के प्रतीक के रूप में बनाए गए थे, लेकिन देवताओं ने इनका इस्तेमाल असुरों के खिलाफ किया था, जिससे आम लोगों के मन में इन सींगों को राक्षसों और बुराई से जोड़ दिया गया था। हिरण्य ब्रह्मशास्त्र के पास गया। कवच की रक्षा करने वाली नीली किरण जैसे ही उसने लटके हुए कवच को पकड़ने के लिए अपना हाथ उसमें डाला, गायब हो गई। जैसे ही हिरण्य ने कवच पहनना शुरू किया, उसे एहसास हुआ कि इसमें स्वयं जीवन है। यह उसके शरीर से कसकर चिपक गया और आसानी से उसके शरीर पर फिट हो गया। इसमें कोई पट्टियाँ या बकल नहीं थे, बल्कि एक अजीब सा तरल पदार्थ था जिसने उसके पूरे शरीर को सोने और प्लैटिनम के कवच से झटपट ढक दिया। उसके दस्ताने साधारण दस्तानों जैसे थे और उसके पैर भी सुनहरे कवच से ढके हुए थे।
और जैसे ही उसने उसे पहनना समाप्त किया, उसके भीतर शक्ति का एक प्रवाह उत्पन्न हुआ, जिसने उसे पूर्ण शक्ति प्रदान की।
‘मुझे बहुत अच्छा लग रहा है,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
‘तुम्हें ऐसा करना चाहिए। अपनी तलवार मत भूलना,’ आत्मा ने निर्देश दिया। हिरण्य ने सिर हिलाया और अपने हाथ में हथियार उठा लिया। जैसे ही उसने हथियार उठाया, उसके हाथ के चारों ओर एक सुनहरा आवरण बन गया। हिरण्य ने तलवार का अध्ययन किया। उस पर सुनहरे शिलालेख थे जो चमक रहे थे और प्रकाश को प्रतिबिंबित कर रहे थे। उसे बहुत गर्व महसूस हुआ और उसने आशा की कि उसका भाई परलोक से देख रहा होगा और हिरण्य की सफलता पर उसकी सराहना कर रहा होगा। ‘ब्रह्मशास्त्र तब लुप्त हो जाता है जब आपको इसकी आवश्यकता नहीं होती है और जब आपको इसकी आवश्यकता होती है, तो आप इसे प्राप्त करने के लिए भगवान ब्रह्मा का नाम जप सकते हैं,’ आत्मा ने समझाया।
‘क्या यह सब जादू है?’

‘सब कुछ है।’ हिरण्य ने अपनी तलवार म्यान में रखते हुए आत्मा मुस्कुराई। ‘लेकिन याद रखना, कुछ नियम हैं। ब्रह्मास्त्र को या तो बाहर या अंदर ही बुलाया जा सकता है, बीच में कभी नहीं। इसे सुबह या रात में बुलाया जा सकता है, लेकिन गोधूलि बेला में कभी नहीं। इसे जमीन पर या आकाश में बुलाया जा सकता है, लेकिन बीच में कभी नहीं।’
‘यह बहुत ही विशिष्ट है।’
‘भगवान ब्रह्मा के वरदानों में हमेशा कोई न कोई खामी रह जाती है,’ आत्मा ने कहा। ‘यह वरदान उन्होंने मानवजाति के लिए छोड़ा था, लेकिन एक राक्षस स्वामी को मिल गया है। इसका मतलब है कि तुम्हारे सिवा कोई और इसे प्राप्त करने में सक्षम नहीं था।’
हिरण्य को गर्व महसूस हुआ। ‘तुमने मुझे यह क्यों नहीं देने दिया? क्या इसलिए कि मुझे राक्षस समझा जाता है? यह झूठा प्रचार है।’
‘हम जानते हैं।’ आत्मा ने सिर हिलाया। ‘हम योग्य चुनौती देने वाले को हतोत्साहित करते हैं, यह देखने के लिए कि क्या हतोत्साहन उसे रोक पाता है, लेकिन इसने तुम्हें नहीं रोका। तुम फिर भी आगे बढ़ते रहे।’
हिरण्य मुस्कुराया और जाने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन फिर रुक गया और आत्मा से अपना अंतिम प्रश्न पूछा, 'यह "हम" क्यों?'
आत्मा चुप रही। फिर उसने कहा, 'क्योंकि हम चार हैं।'
‘उनमें से चार?’ हिरण्य ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘मुझे तो केवल एक ही दिखाई दे रहा है।’
और फिर, इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, एक तेज रोशनी हुई और उसके सामने मौजूद आत्मा एक लंबे, दुबले-पतले आदमी में बदल गई, जिसका चेहरा रोशनी से ढका होने के कारण दिखाई नहीं दे रहा था। हिरण्य ने पलकें झपकाईं और उसकी दृष्टि साफ हुई तो उसने देखा कि उसके सामने चार आदमी खड़े थे, सभी रंग-बिरंगे वस्त्र पहने हुए थे।
‘यह कौन है?’ हिरण्य ने प्रकाश में आंखें सिकोड़ते हुए कहा।
'वह व्यक्ति जिसका हथियार तुम धारण करते हो,' उन चारों ने एक ही समय में कहा।
हिरण्य तुरंत जमीन पर गिर पड़ा और सिर झुकाकर घुटनों के बल बैठ गया। ‘भगवान ब्रह्मा!’
'हां, मेरे योद्धा।'

‘तुम जीवित कैसे हो सकते हो?’
‘मैं केवल यहीं जीवित हूँ, उस पहले मंदिर में जो मेरे लिए बनाया गया था,’ दोनों आवाजों ने एक साथ कहा। ‘मैं बस एक आत्मा हूँ, ठीक वैसे ही जैसे तुमने मुझे शुरुआत से देखा है।’
‘हे प्रभु, आपकी उपस्थिति में होना मेरे लिए सम्मान की बात है,’ हिरण्य ने कहा।
‘मेरे हथियार का बुद्धिमानी से इस्तेमाल करो, अन्यथा भगवान विष्णु का अवतार तुम्हें ढूंढ निकालेगा,’ भगवान ब्रह्मा ने चेतावनी दी।
लेकिन वह जीत नहीं सकता। आपके वरदान ने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी है।
जब तक मैं यह कवच नहीं उतारता, मैं अजेय हूं।
और मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा नहीं करेंगे, लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं, तो याद रखें कि इसे किसी अवतार के सामने न करें।
हिरण्य ने सिर हिलाया और फिर अपने मन में उठ रहे एक और सवाल को पूछा। 'हे स्वामी, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप चार क्यों हैं?'
भगवान ब्रह्मा ने समझाया, “ब्रह्मा चार पुरुषों – वेदांत, ज्ञानेश्वर, चतुर्मुख और स्वयंभू – का संयुक्त रूप हैं। हम प्रथम सभ्यता के अगुआ थे। हम चारों को यहीं दफनाया गया था और तब हम सभी को भगवान ब्रह्मा कहा गया और चार के बजाय एक के रूप में पूजा जाने लगा। अलविदा, वीर। आशा है कि तुम अपना मार्ग सही ढंग से चुनोगे।”
'जी, महाराज।' हिरण्य ने सिर झुकाया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह अपने सामने एक देवता को देख रहा है और उसे अपने देश के धर्म में फिर से आस्था जागृत होती महसूस हुई।
जैसे ही प्रकाश मंद हुआ, हिरण्या ने ऊपर देखा तो पाया कि वे आकृतियाँ गायब हो चुकी थीं। उसके शरीर पर अभी भी सुनहरा कवच था। मुस्कुराते हुए वह चट्टानों से घिरे गुफा के प्रवेश द्वार की ओर बढ़ा।
उसने तलवार को चट्टानों के सामने लाया, और वह चमकने लगी, इतनी ऊर्जा और प्रकाश उत्सर्जित करने लगी कि चट्टानें टूटकर गुफा से काफी दूर जा गिरीं। हिरण्य मंत्रमुग्ध होकर देखता रहा। उसे शक्ति का अहसास हुआ, मानो...
मानो वह अजेय हो।
वह अपनी तलवार और कवच के साथ गुफा से बाहर निकला और अग्नि की स्तब्ध सेना को देखा, जो उसे भय से देख रही थी।

उन्हें पता है... कि अब वे मुसीबत में हैं।

42

हिरण्यकश्यप

हिरण्यकश्यप अग्नि के सैनिकों को नष्ट कर रहा था।
उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी बड़ी तलवार इतनी हल्की और चलाने में इतनी आसान हो सकती है। जैसे ही उसने इसे दाएं-बाएं घुमाया, इसने आदमियों को ऐसे काट डाला जैसे वे फल हों। हिरण्या को ऐसा लगा जैसे वह इसे सालों से चला रहा हो, और उसे अपने हमलों में ज़रा भी ताकत नहीं लगानी पड़ी।
उसने एक सैनिक की पसलियों में तलवार घुसा दी और फिर उसे तब तक घुमाया जब तक कि तलवार से रोशनी निकलने लगी और...
सैनिक के टुकड़े-टुकड़े हो गए!
एक लाल चट्टान उसके पास आकर गिरी और हिरण्या ने एक ही झटके में अपने सुनहरे दस्तानों से उसे रोक दिया। चट्टान फट गई, लेकिन उसके कवच ने तुरंत हमले को नाकाम कर दिया, जिससे आग शांत हो गई।
हिरण्य उस आग के बीच से चलता हुआ आगे बढ़ा, बचे हुए आदमियों को अपने पास आने दिया जबकि वह उनके हमलों से बचता रहा और फिर एक ही जोरदार वार में उन सभी को काट डाला।
जैसे ही एक नाग उसके पास पहुंचा, हिरण्य ने उसके गले में वार किया और आसानी से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसे दूसरे सैनिक की ओर फेंक दिया, जिससे वह सैनिक गिर पड़ा।
इतना खून बहा कि रेत लाल हो गई, मानो उसमें से भी खून बह रहा हो।
हिरण्य ने देखा कि अग्नि का चेहरा पीला पड़ रहा है। उसके चेहरे पर अब वह अति आत्मविश्वास भरी मुस्कान नहीं थी। इसके बजाय, उसकी भौंहें तन गईं और वह असहाय प्रतीत हो रहा था।
अग्नि के धनुर्धारियों ने दूर से हिरण्य पर बाण चलाए, लेकिन जब वे बाण उसे लगे तो उसे जरा भी चुभन महसूस नहीं हुई और कवच को छूते ही बाण टूट गए।

साथ क्या हुआ, और यही वह मृत्यु है जिसके तुम हकदार हो। हाँ, मेरी पत्नी के साथ तुमने जो किया उसके बाद यही सही लगता है।’
अग्नि ने सिर हिलाया। ‘नहीं…’
‘क्या?’ हिरण्य ने अपना सिर आगे की ओर झुकाया।
‘यह हमने नहीं किया।’ उसने अपना सिर रेत पर टिकाया और तारों को देखने लगा। ‘हमने शहर पर हमला किया, हाँ, लेकिन यह…’ उसे खांसी आई और खून थूका, ‘यह हमने नहीं किया। हमने तुम्हारी पत्नी को नहीं मारा। हाँ, यह… इंद्र की ज़िम्मेदारी थी, लेकिन जिसने वास्तव में उसे मारा… वह कोई और था।’ हिरण्य ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'कौन?'
‘इंद्र ने मुझे इसके बारे में बताया था। वह कयाधु को डराना चाहता था, मारना नहीं।’ अग्नि को फिर खांसी आई। ‘लेकिन कयाधु ने उस पर और उसके रक्षक पर हमला कर दिया, और...’
हिरण्य ने अग्नि को पकड़कर ऊपर खींच लिया, लेकिन अग्नि की जान निकल रही थी। ‘नहीं…नहीं…’ हिरण्य ने अग्नि के चेहरे पर थप्पड़ मारा, ‘कौन था? वह रक्षक कौन था? उसका नाम क्या है? मुझे बताओ!’
अग्नि ने अपनी आँखें खोलीं, उसके क्रूर होठों पर विजय की मुस्कान तैर रही थी, और उसने अपना अंतिम शब्द कहा—
‘नरसिम्हा।’

43

नरसिंह

युद्ध समाप्त हो गया था।
या शायद यह अभी शुरुआत ही है।
और कोई भी नहीं जीता था। अंधका मर चुका था। सोनितपुर असुरों से मुक्त हो गया था। यह खबर फैल चुकी थी और अब सभी को पता था कि पशुपतास्त्र को नष्ट कर दिया गया है।

भैरव की सेना ने आंशिक रूप से जीत हासिल कर ली थी, लेकिन इस प्रक्रिया में उन्हें अपने ही बेटे के हाथों अपनी जान गंवानी पड़ी।
नारा भैरव के शरीर को चिता पर जलते हुए देख रहा था, चेनचेन उसके बगल में खड़ा उसका हाथ थामे हुए था। नारा ने पार्वती को आगे देखा, उसने अपने हाथों को अपने शरीर के चारों ओर लपेटा हुआ था। वह एक सुंदर स्त्री थी - थकी हुई, लेकिन बेहद खूबसूरत। एक कहावत थी कि जो भी उसे देखता, उसे उससे प्यार हो जाता। वह उससे बात करना चाहता था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया।
कुछ देर बाद, उसने नारा की ओर सिर घुमाया और उसके पास चली गई। नारा ने आदरपूर्वक थोड़ा झुककर अभिवादन किया। जब उसने उसे देखा, तो उसने गौर किया कि उसकी आँखों में कोई भाव नहीं था – न पछतावा, न क्रोध।
'क्या भृंगी जीवित हैं?' उसने पूछा।
नहीं, मेरी देवी। मैंने उसे मार डाला। वह अब भृंगी नहीं रहा। वह अंधक बन गया था।
नारा ने देखा कि वह निराश नहीं हुई थी।
‘भैरव के कर्मों का अंत यहीं उनके पुत्र के हाथों हुआ,’ पार्वती ने आह भरी।
‘लेकिन मेरे लिए यह एक नई शुरुआत है।’ उन्होंने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, ‘क्या आप इस जगह को फिर से बसाने में मेरी मदद करेंगे?’
लेकिन मेरी कुछ और योजनाएँ हैं।
‘महादेवी, मुझे जाना होगा। लेकिन मेरे सिंह आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे।’ नारा ने अपना सिर घुमाकर अपने समूह की ओर देखा। ‘वीरसिंह आपका मार्गदर्शन कर सकता है। मैंने उसे समूह का नया नेता नियुक्त किया है।’ समूह इससे खुश नहीं था, क्योंकि नारा ने उनके पिछले नेता को हटाकर फिर से अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ लिया था, लेकिन नारा ने उन्हें समझाया था कि उन्हें कभी भी उनका नेतृत्व नहीं करना था। उन्हें तो उन्हें उनके अगले नेता, एक योग्य नेता की ओर मार्गदर्शन करना था, और वीरसिंह में वे सभी गुण मौजूद थे जो उन्हें चाहिए थे।
पार्वती ने उसके जवाब पर अपने जबड़े कस लिए। 'लेकिन तुम्हारा क्या?'
नारा ने चेनचेन से नज़रें मिलाईं। 'मुझे कहीं जाना है।' वह थोड़ी देर रुका, उसके होठों पर एक उदास मुस्कान थी। 'और, सच कहूँ तो: मैं यहाँ हमेशा के लिए नहीं रहने वाला था।'

पार्वती ने सिर हिलाया। 'आज सुबह एक कौआ आया था - इंद्र किले में आ रहे हैं। वे इस बात से बहुत क्रोधित हैं कि हमने पशुपतास्त्र को नष्ट कर दिया।' ‘बेशक वो है।’ नारा मुस्कुराई। ‘लेकिन मैं उसके आने तक यहाँ रुकने का इरादा नहीं रखती। मुझे उसके लिए कोई सम्मान नहीं है… अब और नहीं।’
वह मुस्कुराई। 'बिल्कुल। वीरभद्र इसे संभाल लेंगे।' उसने लेफ्टिनेंट की ओर देखा, वह व्यक्ति जो गण जनजाति का अगला शिव बनने वाला था।
उन्होंने कहा, 'और मेरी यही कामना है कि भगवान विष्णु आपके मिशन में आपके साथ रहें।'
'आप भी।'
‘मेरे पास भगवान भैरव का त्रिशूल है। क्या मैं इसे आपको दूं या वीरभद्र को?’ नारा ने पूछा।
उसने सिर हिलाया। 'इसे अपने पास रखो। मुझे यकीन है कि वह चाहता होगा कि यह तुम्हारे पास रहे।'
अंतिम संस्कार समाप्त हुआ और नारा चेनचेन के साथ उसकी झोपड़ी तक गई। उसका शरीर छिदा हुआ था और उसने धोती व नरम मफलर पहन रखा था। उसने अपनी यात्रा के लिए सामान पैक करना शुरू कर दिया। चेनचेन उसके पीछे खड़ी थी, उसके हाथ पीछे बंधे हुए थे। 'मुझे नहीं पता था कि आप जा रहे हैं।'
‘मुझे लगा कि तुम जानना नहीं चाहोगे,’ नारा ने दवाइयाँ, हथियार और अपनी चमड़ी थैले में रखते हुए कहा। ‘तुम यहीं के हो, चेनचेन।’
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर वह उसके पास आकर उसके हाथ पर हाथ रखकर बोली, 'तुम्हें मुझे यह बताने का कोई हक नहीं है कि मेरा स्थान कहाँ है और कहाँ नहीं।'
नारा ने उसकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा, 'ठीक है। फिर तुम क्या करने की योजना बना रही हो?'
‘मैं तुम्हारे साथ रहना चाहती हूं, नारा। तुम्हें मेरी उतनी ही जरूरत है जितनी मुझे तुम्हारी,’ उसने कहा।
‘आप जिन गांवों को बचा रहे थे उनका क्या हुआ?’
‘मेरी नर्सें अभी भी यहीं हैं, है ना?’
नारा ने सिर हिलाया। 'तुम बहुत ज्यादा उत्साहित हो रहे हो, चेनचेन। तुम्हें यहीं रहना होगा और अपने द्वारा तय किए गए उद्देश्य को पूरा करना होगा।'

उसने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया और उसने अपनी बाहों को उसकी कमर के चारों ओर लपेट लिया। 'तुम सही कह रहे हो। मैं बस... भावुक हो रही थी, हा हा,' उसने कहा।
'बेशक। अगर हमारी किस्मत में लिखा होगा तो मैं वापस आऊंगा। और फिर हम आपकी शादी के बारे में कुछ करेंगे।'
वे दोनों इस बात पर हंस पड़े।
‘तुम कहाँ जाने का इरादा रखते हो?’ उसने पूछा।
नारा काफी समय से इस बारे में सोच रहा था। 'कश्यपुरी,' उसने जवाब दिया। 'मुझे प्रहलाद से मिलना है।'
‘क्यों?’ वह पीछे हट गई। ‘वह दानव राजकुमार?’
‘मुझे उसकी रक्षा करनी होगी,’ नारा ने कहा। भविष्यवाणी पूरी न हो पाए और भगवान रुद्र का रहस्य, इस युग का रहस्य, उसी के पास रह जाए।
शायद मैंने अपना भाग्य बदल दिया है। मैंने सोचा था कि अंधका को मारने के बाद मैं अवतार बन जाऊंगा... लेकिन मुझे अभी तक वह चिन्ह प्राप्त नहीं हुआ है।
क्या मैं सचमुच धर्म हूँ?
लेकिन वह दुनिया में जा रहा था और इस बात का खतरा था... कि आखिरकार उसे भी यह बीमारी हो सकती है।
लेकिन मुझे यह जोखिम उठाना ही होगा। मुझे उस लड़के को बचाना ही होगा। मुझे अपने भाग्य को स्वीकार करना ही होगा।
मुझे अब डर नहीं लगता।
‘मुझे समझ नहीं आ रहा, क्यों?’ चेनचेन ने पूछा।
नारा ने चेनचेन की ओर एक नजर डाली।
काश, वह समझ पाती।
मैंने उसके भाई को मार डाला।
लेकिन आपको इससे बेहतर जानकारी नहीं थी।
‘मैंने ऐसा नहीं किया। लेकिन मेरी एक जिम्मेदारी है। मुझे उसे बचाना होगा।
उसके पिता के अलावा उसका कोई नहीं है और उसका पिता अच्छा आदमी नहीं है,’ नारा ने जवाब दिया।

‘मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा,’ वह उससे दूर हटते हुए बोली। ‘उसके भाग्य में तुम्हारा कोई हाथ नहीं था, और अगर तुमने उसके भाई को मारा भी तो यह एक गलती थी, जो युद्ध के दौरान हुई।’
नारा ने आह भरी। उन्हें कश्यपपुरी का युद्ध याद आया – वह समय जब हिरण्य पाताल लोक के लिए रवाना हुआ था और नारा इंद्र के साथ अपने महल में गए थे। उन्होंने शहर को लूटा था और हिरण्य की पत्नी को मार डाला था।
‘जी हां, बिल्कुल,’ उसने कहना शुरू किया। ‘देखिए, उसके पिता के क्रूर चंगुल में होने का कारण मैं ही हूं।’
‘कैसे?’ चेनचेन ने पूछा।
नारा को वह भयानक दिन याद आ गया जब यह घटना घटी थी। यह उन कई कारणों में से एक था जिनकी वजह से उसने युद्ध छोड़ दिया था। उसने कहा, 'मैंने सिर्फ उसके भाई को ही नहीं मारा।'
‘फिर?’
‘यह उसकी माँ भी थी।’ बोलते ही अंगीठी में चटकने की आवाज़ आई। ‘काश्यपपुरी पर अपने युद्ध के दिन इंद्र को बचाने के लिए मैंने कयाधु की हत्या की थी और उसका खून मेरे हाथों पर है। और अब उसके भाई का खून भी मेरे हाथों पर है…’ वह रुका, ‘मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि प्रहलाद का खून न बहे। उसकी सुरक्षा अब मेरी ज़िम्मेदारी है। मैं उसे कुछ नहीं होने दूँगा,’ उसने आह भरी। ‘यही मेरा प्रायश्चित है। यही मेरा प्रायश्चित है।’

44

होलिका

होलिका को पता था कि कुछ गड़बड़ हो रही है।
शुरुआत में ही मौसम एक समस्या बन गया था, और वातावरण में बेचैनी थी। कुछ गड़बड़ थी, कुछ अशुभ संकेत, मानो विष्णुसेना का साया दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हो। नारद कहीं नजर नहीं आ रहे थे। वे मानो गायब हो गए थे, मानो उनका

अस्तित्व ही न हो, और यहां तक कि मंत्रियों से भी उनके बारे में पूछताछ की गई थी।
मुझे उन्हें रोकना होगा।
उसने अपनी चूड़ी को छुआ और सोचने लगी कि क्या सिम्हीका सुरक्षित है।
शायद मुझे उसे यहाँ से दूर ले जाना चाहिए, कम से कम तब तक जब तक विष्णुसेना का अंत न हो जाए।
प्रहलाद नगर पर शासन करता था, लेकिन वह उस पर भरोसा नहीं करती थी। बात सिर्फ इतनी नहीं थी कि वह कयाधू के बेटों को कमजोर समझती थी, बल्कि इसलिए भी थी क्योंकि उसे हमेशा से लगता था कि उन लड़कों में कुछ तो गड़बड़ है। लेकिन सबसे बढ़कर, उसे यह पता लगाना था कि विपरिचित के साथ क्या हो रहा है।
उसने उसे जवाब नहीं दिया था और उसे निर्देश दिए हुए कई दिन बीत चुके थे।
होलिका अपने अध्ययन कक्ष में जलते हुए दीपक के पास बैठी थी। उसने अपने रक्षक को विपरीतित को ढूंढने भेजा था। रक्षक के लौटने पर उसने दरवाजे पर दस्तक दी और होलिका सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद में ऊपर देखने लगी।
‘महामहिम, वह गायब हो गया है। उसे किसी ने नहीं देखा,’ गार्ड ने कहा।
‘यह असंभव है।’ होलिका ने सिर हिलाया।
गार्ड ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'उसके पिता भी उसके बारे में चिंतित हैं।' होलिका गुनगुनाते हुए इस बात पर विचार करने लगी।
क्या वह जीवित भी है?
उसे इस बात को लेकर बुरा एहसास हो रहा था। उसने पूछा, 'हर हफ्ते लावारिस शवों को हम कहाँ भेजते हैं?'
उन्होंने एश खाने वाले कबीले का जिक्र करते हुए कहा, 'हम या तो उन्हें सीमा पर मौजूद पिशाचों के हवाले कर देते हैं, या फिर हम उन्हें जला देते हैं या दफना देते हैं। उनमें से कुछ को समुद्र में भी फेंक दिया जाता है।' होलिका ने कहा, 'मुझे उन शवों का अगला समूह दिखाओ जिन्हें पिशाच के पास ले जाया जा रहा है।'
गार्ड ने सिर हिलाया। 'अब आप आ सकते हैं। अभी एक गाड़ी रवाना हो रही है।' होलिका ने अपनी दोनों तलवारें उठाईं और उन्हें म्यान में रख लिया। भारी मन से वह पहरेदारों के पीछे चल पड़ी।
उम्मीद है विपरीत... उम्मीद है। सिम्मी उससे बहुत प्यार करती थी।

वह नहीं चाहती थी कि सिम्मी विपरिचित को खो दे। चाहे वह बेचारे को कितना भी परेशान करे, विपरिचित सिम्मी के लिए अच्छा ही लगता था, क्योंकि सिम्मी काफी जिद्दी थी।
वे गाड़ी की ओर बढ़े। कब्र खोदने वाला, जो बेहद मोटा और चिकना था, होलिका को देखकर डर से जम गया। जैसे ही वह उसके पास आई, उसने उसे प्रणाम किया। गाड़ी बड़ी थी और उस पर जानवरों का झुंड उमड़ पड़ा। होलिका के पहरेदारों ने शवों को ढकने वाली लंबी चादर हटा दी। उन्होंने अपनी नाक पर हाथ रखकर शवों की जांच शुरू की।
उम्मीद है कि वह यहाँ नहीं होगा। उम्मीद करते हैं ऐसा ही हो।
‘क्या इस सप्ताह सामूहिक दफन के लिए कुछ शव भी भेजे गए हैं?’ होलिका ने पूछा।
‘पिछले कुछ दिनों में नहीं,’ गार्ड ने जवाब दिया। ‘ये, जो आप सामने देख रहे हैं, पिछले एक सप्ताह में लावारिस पड़े सभी शव हैं।’
‘मुझे ऐसा लग रहा है कि हम नहीं जीतेंगे…’ होलिका ने कुछ सुनते ही कहना शुरू किया।
खनकने की आवाज।
उसकी निगाहें उस दिशा में गईं जहाँ से आवाज़ आई थी और वह ज़मीन पर घुटने टेककर बैठ गई और एक चमकदार वस्तु उठाई। वह एक अंगूठी थी।
नहीं।
फिर होलिका आगे बढ़ी और खुद शवों का निरीक्षण करने लगी, उस शव की तलाश करने लगी जिसकी वह अंगूठी थी, और अंत में, चिकने, बदबूदार शवों के नीचे, उसने उसे देख लिया।
नहीं!
वह विपरिचित था, जो अभी भी अपने कवच में था।
होलिका का दिल बैठ गया।
प्रहलाद ने ये कर दिया। उसी ने ये कर दिया, उस कमीने ने!
‘हमें क्या करना चाहिए, महारानी?’ उनके अंगरक्षक ने पूछा।
उसने एक पल सोचा। ‘उसे पिशाच के हवाले मत करो। उसे दफना दो, लेकिन किसी को पता मत चलने देना,’ होलिका ने कहा। वह नहीं चाहती थी कि सिम्मी को पता चले।
गार्ड ने सिर हिलाकर कब्र खोदने वाले को विपरिचित के शरीर को गाड़ी से हटाने का निर्देश दिया।

बेचैनी महसूस करते हुए, होलिका ठेले से दूर हट गई और सुनसान सड़क पर लड़खड़ाती हुई चलने लगी। उसे किसी की मृत्यु पर इतना भयानक और अपराधबोध पहले कभी नहीं हुआ था। वह जानती थी कि ऐसा इसलिए था क्योंकि इस बार यह मामला सिम्मी से जुड़ा था। और सिम्मी उसके बहुत करीब थी।
जैसे ही रथ आगे बढ़ा, एक रक्षक होलिका के पास आया। उसने देखा कि वह उसके हालिया दल का हिस्सा नहीं था, बल्कि एक संदेशवाहक रक्षक था जो दौड़ता हुआ उनके पास आया था। ‘महाराज, मुझे अभी-अभी खबर मिली है। विष्णुसेनाओं को किले के पास स्थित वेश्यालयों के आसपास विस्फोटक जमा करते हुए देखा गया है। जब तक हम वहाँ पहुँचे, आग लग चुकी थी। हम देर से पहुँचे क्योंकि हम सभी को राजा प्रहलाद ने एक सभा में बुलाया था।’
वह नन्हा बच्चा!
फिर अचानक, होलिका को उसके शब्दों का पूरा अर्थ समझ में आ गया।
किले के पास वाला वेश्यालय? लेकिन वहाँ तो सिम्मी है... नहीं!
अपने घोड़े के लिए पूछने के बजाय, होलिका वेश्यालय की दिशा में दौड़ने लगी, गलियों से गुज़रते हुए मुख्य सड़क पर पहुँची, जहाँ उसे आसपास खड़े नागरिक मिले जो भयंकर आग को देखकर भयभीत थे।
होलिका की निगाहें चारों ओर घूमीं और अंत में उस वेश्यालय पर टिक गईं जहाँ सिम्मी काम करती थी। वह जलकर राख हो रहा था, धुआँ हवा में फैल रहा था। उसके पास के अन्य वेश्यालय भी आग की चपेट में थे, और इसका प्रभाव भयावह था, मानो पूरा शहर आग की लपटों में घिर गया हो।
'संस्थानों को खाली कराने की कोशिश करो,' उसने अपने कुछ गार्डों से कहा जो उसकी तरफ दौड़कर आए थे।
होलिका ने जलती हुई इमारतों से बच निकलने वाले और अन्य नागरिकों की मदद से अपने ज़ख्मों का इलाज कर रहे लोगों के बीच सिम्मी को खोजने की कोशिश की।
लेकिन उसका कोई अता-पता नहीं था।
विष्णुसेना का भी कहीं कोई नामोनिशान नहीं था।
होलिका ने पास खड़े गार्ड को पकड़ लिया। उसने उससे पूछा, 'क्या तुमने सिम्हीका को देखा है?' उसने सिर हिलाकर मना कर दिया।
क्या वो अभी भी अंदर है? भगवान की कसम, ऐसा न हो!
होलिका ने अपनी कमीज़ से कपड़े का एक टुकड़ा फाड़ा और धुएं को अपने फेफड़ों में जाने से रोकने के लिए उसे अपने चेहरे पर लपेट लिया, और फिर वह

जलते हुए वेश्यालय में घुस गई। ढहती हुई इमारत में वह संघर्ष करती हुई आगे बढ़ी, दरवाज़े तोड़ती हुई, क्योंकि उसे अपने पहरेदारों की पुकार सुनाई दे रही थी।
वह सिम्मी को ढूंढने के लिए बेतहाशा इधर-उधर देखने लगी, हर जगह छानबीन करने लगी, अपने हाथों और पैरों में हो रही जलन पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही थी। ‘सिम्हिका!’ उसने चिल्लाकर कहा।
होलिका ने जमीन पर कुछ जले हुए शव पड़े देखे। विष्णुसेना द्वारा किए गए कृत्य को देखकर वह भयभीत हो गई।
‘सिम्हिका!’ वह फिर से चिल्लाई, लेकिन उसकी आवाज कमजोर थी, क्योंकि उसने अस्थायी रूप से लपेटे होने के बावजूद बहुत अधिक धुआं अंदर ले लिया था, और उसके फेफड़े जवाब दे रहे थे।
होलिका को सिम्मी का कमरा पता था, और जैसे ही वह उसकी ओर बढ़ने लगी, एक लकड़ी का बीम गिरकर उसके सामने आ गिरा और वह बाल-बाल बच गई।
असहनीय गर्मी महसूस करते हुए वह बीम के ऊपर से कूद गई। उसने सिम्मी के कमरे का दरवाजा खोला। उसके सामने, कमरे के फर्श पर, चूड़ियों से सजी बाहों वाली एक लड़की पड़ी थी, जिसके ऊपर एक जलती हुई लकड़ी पड़ी थी। होलिका चौंक उठी। उसे सिम्मी को पूरी तरह से भस्म करने से पहले उस जलती हुई लकड़ी को हटाना था।
होलिका ने अपनी नंगी बाहों से लकड़ी का लट्ठा ऊपर खींचा, उसके हाथों में असहनीय दर्द हो रहा था। दर्द से चीखते हुए उसने लट्ठे को कोने में फेंक दिया और आह भरते हुए सिम्मी को उठाकर उसके चेहरे पर थपथपाया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ और कर पाती, उसे एहसास हुआ कि...
आग उसके करीब आ रही थी, और उसके पैरों के नीचे फर्श चटक रहा था।
मुझे यहां से निकलना होगा।
उसने खिड़की की तरफ देखा और बिना एक पल भी सोचे, सिम्मी को अपनी पीठ पर उठाया और आँखें बंद करके उससे कूद गई। जैसे ही वह अपने पैरों पर उतरी, उसके पैर लड़खड़ा गए और ठीक उसी समय उसके पीछे एक धमाके ने इमारत को तहस-नहस कर दिया।
होलिका ने सिम्मी को जमीन पर लिटाया और उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई।
पहरेदार कंबल लेकर उसके पास आए, लेकिन होलिका ने परवाह नहीं की।
वह सिम्मी को देख रही थी, जिसकी आंखें अभी भी बंद थीं।

‘बेबी, सब ठीक है। उठो, तुम ठीक हो। मैंने तुम्हें बचा लिया, ठीक है,’ उसकी आँखों में आँसू भर आए और वह मुस्कुराई। ‘चलो, सिम्मी। मुझे पता है तुम ठीक हो। चलो करते हैं। प्लीज़, उठो।’ वह आगे झुकी और अपनी बेटी को गले लगाया, फिर उसकी धड़कन सुनने लगी।
लेकिन उसे कुछ सुनाई नहीं दिया।
होलिका का दिल बैठ गया।
नहीं।
ऐसा नहीं हो सकता। मैं एक और को खोना नहीं चाहती। बिलकुल नहीं। दोबारा नहीं।
‘तुम्हें मुझे आवाज़ देनी चाहिए थी, जान। तुमने क्यों नहीं दी? तुमने क्यों नहीं दी?’ उसने आँसुओं से गला भरते हुए कहा।
होलिका अपने भीतर उबलते गुस्से को महसूस कर सकती थी। बहुत अधिक गुस्सा। और जैसे-जैसे...
उसके पीछे आग की लपटें उठ रही थीं, उसकी सुनहरी पुतलियाँ आँसुओं से चमक रही थीं। उसके पास
मैंने पहले कभी इतनी नफरत महसूस नहीं की थी।
उसे दर्द का एहसास हुआ और उसने देखा कि उसकी बांह से खून बह रहा है। उसने गौर से देखा तो पाया कि उसकी पहनी हुई चूड़ी, जो सिम्मी ने उसे दी थी, टूट गई थी और उसकी त्वचा को छेद दिया था।
मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ, प्रहलाद। मैं अभी तुम्हारे पास आ रहा हूँ।

45

प्रहलाद

प्रहलाद अपनी बालकनी से अवशेष देख सकता था।
और उसे पता था कि मुसीबत आने वाली है।

लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, कोई अंदर आ गया। उसने अपना हथियार उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उसने देखा कि नारदा हांफते हुए और जल्दबाजी में कमरे में दाखिल हुआ है।
‘उन्होंने कर दिखाया, है ना?’ नारदा मुस्कुराते हुए बालकनी के पास गए। ‘अद्भुत दृश्य!’
प्रहलाद ने कहना शुरू किया, 'मुझे खबरें मिल रही हैं कि आग में लोगों की मौत हो गई है। आपने उन्हें निकालने का वादा किया था।'
‘मैंने अपने आदमियों को ऐसा करने को कहा था।’ नारदा ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘अगर यह उनके लिए संभव नहीं था, तो मैं कुछ नहीं कर सकता।’
प्रहलाद ने मुट्ठी भींची और बिना सोचे-समझे नारद को पकड़कर बालकनी के किनारे धकेल दिया। 'मैं यह नहीं चाहता था। तुम मेरे पिता से बेहतर कैसे हो?'
‘शांत हो जाओ, पुत्र।’ नारद की आवाज बिल्कुल उस गुरुजी जैसी थी जो प्रहलाद को उसके प्रारंभिक वर्षों में शिक्षा देते थे। ‘तुम्हें समझदारी से सोचना होगा। तुम्हारे पिता ने इस राजधानी का निर्माण हिंसा के बल पर किया था और हिंसा के माध्यम से ही इसका अंत हो सकता है।’
लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि अच्छे लोगों को मरना होगा?
‘अच्छे लोग वेश्यालय नहीं जाते। वे पाप के स्थान हैं। हे पुत्र, कृपया समझो,’ नारद ने विनती की।
प्रहलाद पीछे हट गया, नारद के प्रति उसके मन में जो सम्मान था, उसने उसे और कुछ करने से रोक दिया। उसने अपने बालों में हाथ फेरा। 'आप यहाँ दिखाई नहीं दे सकते। होलिका को आपकी संलिप्तता के बारे में पता है,' उसने उस बुजुर्ग व्यक्ति से कहा।
‘मैं इस महल के रहस्यों को तुमसे बेहतर जानता हूँ। मुझे पता था कि कहाँ से आना है और कहाँ जाना है।’
और आप यहां क्यों हैं?
‘तुम्हें चेतावनी देने के लिए,’ नारद ने कहा।
'किस बारे मेँ?'
‘उसने उन्हें रिहा कर दिया है। लेकिन कोई बात नहीं। तुम्हारे पास अपनी रक्षा के लिए अपनी सेना है।’

अचानक धरती हिल उठी और प्रहलाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। उसने मुड़कर बालकनी से बाहर देखा और आकाश में महल की ओर बढ़ते हुए विशाल और भयावह आकृतियों की परछाईं को देखा।
दानव।
‘उसे ये कहाँ से मिले?’
‘कुछ लोग शहर के बाहरी इलाके में तैनात थे। उसने उन्हें बुलाया है। और वह तुम्हारे लिए आ रही है। हमें सराय के लिए निकलना होगा,’ नारदा ने कहा। लेकिन इस महल का क्या?
‘पुत्र, अब तुम इसका हिस्सा नहीं हो।’ नारद ने अपने हाथों से प्रह्लाद का चेहरा थाम लिया। ‘तुम इससे कहीं बढ़कर हो। तुम भगवान विष्णु का अंश हो। कृपया मेरे साथ आओ।’
प्रहलाद ने अपनी बालकनी से देखा कि उसके असुर रक्षक भाले, ढाल, बरछी और तलवारें लिए मुख्य द्वारों की ओर बढ़ रहे थे। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि वे उस अंतरिम राजा की रक्षा के लिए तैयार हो रहे थे जिसने उन्हें धोखा दिया था। मीनारों के किनारे तीरंदाज कतार में खड़े थे। तुरही बज रही थी; गिद्ध ऊपर मंडरा रहे थे। चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। प्रहलाद के अंगरक्षक अंदर आए और नारद दरवाजे के पीछे छिप गए।
'मेरे स्वामी, लेडी होलिका करीब आ रही हैं। आपको भूमिगत सुरंगों में भेजा जाना चाहिए।'
‘जी हां, बिल्कुल,’ प्रहलाद ने सिर हिलाया। ‘मैं खुद जाऊंगा। आप उन्हें रोकने की चिंता कीजिए। इस महल की रक्षा करके मेरे पिता के राज्य की रक्षा कीजिए।’
लेकिन मेरे स्वामी, लेडी होलिका हम पर हमला क्यों कर रही हैं?
प्रहलाद के पास कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे। 'क्योंकि... यह एक गलतफहमी है।'
'हे स्वामी, हम आपसे विनती करते हैं कि आप महल के सामने जाकर उससे बात करके उसे रोकें,' गार्ड ने कहा।
‘ठीक है, मैं देख लेता हूँ।’
पहरेदारों ने सिर हिलाया और द्वार की ओर वापस चले गए। प्रहलाद ने मुड़कर देखा कि दानव किस प्रकार विनाश कर रहे थे, महल के द्वारों की दीवारों को

तोड़ रहे थे, उन्हें चीर रहे थे और प्रहलाद की ओर से आ रहे तीर उनके चेहरों पर लग रहे थे।
‘तुम्हें यहाँ से जाना होगा,’ नारदा ने कहा। ‘क्या तुम समझते नहीं हो? तुम उसके सामने आत्मसमर्पण करके उससे बात नहीं कर सकते। वह क्रोधित है।’ लेकिन मेरे लोगों का भविष्य मेरे हाथों में है। क्या मैं अपनी जिम्मेदारियों से भाग सकता हूँ?
‘तुम जाओ,’ प्रहलाद ने कहा। ‘मैं नहीं जा सकता।’
‘क्यों? क्या आप अपने लोगों को हमसे ऊपर चुनते हैं?’
‘नहीं, मैं इस अराजकता को रोकना चाहता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान विष्णु भी यही चाहते होंगे,’ प्रहलाद ने कहा। ‘और आपको बता दूं, वे कभी भी अनावश्यक मृत्यु नहीं चाहते थे, जो आपने उनके नाम पर की हैं।’
‘क्या मैं तुम्हें फिर कभी देख पाऊंगा?’ नारद ने पूछा। उनका चेहरा विकृत था, मानो प्रहलाद के शब्दों ने उन्हें बहुत दुख पहुंचाया हो।
‘मुझे नहीं पता।’ प्रहलाद ने आह भरी। ‘धृति को मेरी शुभकामनाएं देना। उसे सुरक्षित रखना।’
नारद ने कुछ क्षण प्रहलाद को देखा और फिर उसके कमरे से चले गए। अपने बालों में हाथ फेरते हुए प्रहलाद अपने अगले कदम के बारे में सोचने लगा।
मैं मरने वाला हूँ। इससे बचने का कोई और रास्ता नहीं है।
उसने अपने पहरेदारों की ओर देखा और उन्हें पुकारा, ‘आत्मसमर्पण कर दो। और लेडी होलिका को बता दो कि मैं अंदर उसका इंतजार कर रहा हूँ।’
नीचे से पहरेदारों ने सिर हिलाया और अपने हॉर्न बजाए।
प्रहलाद ने अपना काला कुर्ता पहना और तैयार हो गया।
बस यही है। मैं मरने ही वाला हूँ।

46

प्रहलाद

उसने इंतजार किया।
वह अपने महल के मुख्य द्वार के सामने खड़ा था। और वह अपनी चाची के आने और उसे ले जाने का इंतज़ार कर रहा था। हिंसा थम चुकी थी। दानव अब भूकंप नहीं ला रहे थे। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था और इसके लिए प्रहलाद शुक्रगुजार था। अंततः उसे शांति मिल गई थी।
कम से कम, मैं विष्णु भक्त बनकर मरूंगा।
प्रहलाद के दोनों ओर एक-एक दर्जन पहरेदार थे। वे होलिका को मारने के लिए नहीं, बल्कि किसी अप्रिय स्थिति में उसकी रक्षा करने के लिए थे। उसे अब भी उम्मीद थी कि वह
और उसे शांत करने का एक तरीका।
क्रोध एक बुरी भावना है। यह कमजोर लोगों को भ्रष्ट कर देता है।
दरवाजा खुला और होलिका अपने भारी कवच में बाहर निकली। उसके हाथों में उसकी दो तलवारें थीं।
और वह बेहद क्रोधित थी। उसकी नाक के नथुने फूले हुए थे, भौंहें तन गई थीं और वह भयानक भय से तेवर चढ़ाए बैठी थी। उसे याद आया कि बचपन में वह इस तरह के चेहरे को देखकर कितना डरता था। उसे यह भी याद आया कि उसकी चाची अक्सर उसे घूरती और सिर हिलाती थी, स्पष्ट रूप से इसलिए क्योंकि वह उसे असुर जाति के लिए निराशा का कारण मानती थी।
‘प्रहलाद!’ वह चीखी और तुरंत, बिना कुछ कहे, उसने अपनी तलवार से उस पर वार कर दिया।
उसने हमले को रोकने के लिए अपनी ढाल का इस्तेमाल किया।
वह शांति के लिए तैयार नहीं है।
'प्रहलाद, तुम मर चुके हो।'
मैं शांति स्थापित करना चाहता हूँ। इसीलिए मैं आत्मसमर्पण करने आया हूँ।
‘तुम्हारे चारों ओर तुम्हारे आदमी हैं? यह आत्मसमर्पण नहीं है, लड़के। यह कायरता है,’ उसने थूकते हुए कहा और फिर आगे बढ़कर प्रहलाद पर हमला कर दिया, लेकिन उसके रक्षकों ने उन दोनों के बीच आकर उन्हें बचा लिया।
और प्रहलाद चाहे जितनी भी कोशिश करे इस रक्तपात को रोकने में, वह असमर्थ रहा, क्योंकि होलिका ने अपनी तलवार से रक्षकों पर वार करते हुए उनके सिर धड़ से अलग कर दिए। वह इतनी फुर्तीली और चुस्त थी कि उसके हर कदम का अनुसरण करना भी मुश्किल था।

अंतिम पहरेदार को निपटाते हुए उसने कहा, “यह बहुत दुख की बात है कि मुझे अपनी ही जाति के लोगों को मारना पड़ रहा है। तुम्हारी मूर्खता, तुम्हारे विश्वासघात की वजह से हममें से बहुतों की मौत हुई है। तुम्हारी वजह से हमने कितनी जानें गंवाई हैं। काश तुमने विष्णुसेना के साथ हाथ न मिलाया होता…”
मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की।
लेकिन होलिका ने बात नहीं मानी।
उसने प्रहलाद के बाल पकड़कर उसकी गर्दन पर चाकू रख दिया। ‘तुमने उन्हें नहीं रोका। तुमने अपने ही लोगों के साथ विश्वासघात क्यों किया, प्रहलाद? क्यों?’ वह गुस्से से बोली।
प्रहलाद की आंखों में आंसू आ रहे थे। वह दर्द में था। 'क्योंकि मैं जहां था वहां खुश नहीं था। और मैं किसी ऐसी चीज की तलाश में था जिसकी मैं प्रशंसा कर सकूं।'
होलिका कुछ नहीं बोली। वह उसे घूरती रही। 'तुम एक मूर्ख, बिल्कुल मूर्ख लड़के हो।'
और फिर उसने ब्लेड नीचे कर दिया —
अचानक एक चीख सुनाई दी।
उसने उसे छोड़ दिया। वह जमीन पर गिर गया और उसने देखा कि कैसे वह अचानक हुए हमले से बचने के लिए तेजी से मुड़ी।
उसने तुरंत ही हथियार हमलावर के पेट में घोंप दिया, जिससे उसे जानलेवा चोट लगी। हमलावर की ओर से एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी और प्रहलाद ने देखा कि वह कोई और नहीं बल्कि नारद थे।
होलिका ने अपने गुरुजी के शरीर में तलवार घुमा दी, और वे जमीन पर गिर पड़े, घाव से खून बह रहा था।
नहीं।
प्रहलाद लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ, जब उसने नारद को देखा, जिसने प्रहलाद को देखकर मुस्कुराया।
‘याद रखना… कि उनका नेतृत्व बुद्धिमानी से करना,’ वह रुका। ‘मेरे विपरीत।’ और फिर उसकी आँखें बंद हो गईं।
नहीं।

होलिका ने तलवार निकाली और नारद को लात मारी और प्रहलाद की ओर मुड़ी, जिसका चेहरा पीला पड़ गया था और आंसुओं से भीगा हुआ था।
‘तुम इस राक्षस के लिए रोती हो?’ होलिका ने सिर हिलाया।
‘मुझे मार डालो और इस झंझट से छुटकारा पाओ।’ प्रहलाद ने अपनी आँखें बंद कर लीं, वह अपनी मृत्यु के लिए तैयार था।
‘तुम्हें पता है, तुम्हारे जैसे तुच्छ लड़के को, जो एक गद्दार के लिए रोता है, ऐसी मौत नहीं मिलनी चाहिए, जहाँ तुम्हारे किए गए अपराधों को कोई देख न सके,’ होलिका ने जवाब दिया।
और यह देखकर प्रहलाद ने अपनी आँखें खोल दीं।
नहीं।
'आपका क्या मतलब है?'
वह उसके पास घुटनों के बल बैठ गई, उसकी आँखें गुस्से से भरी हुई थीं। 'तुम्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाना चाहिए और... सार्वजनिक रूप से मौत की सजा दी जानी चाहिए।'

47

प्रहलाद

उसे कई दिनों से धोखा दिया जा रहा था।
उसे अपनी ही सांस की बदबू आ रही थी। वह भूखा और प्यासा था, लेकिन उन्हें खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं दिया गया था।
यह सार्वजनिक फांसी से भी बदतर है।
प्रहलाद एक कोने में जंजीरों से जकड़ा हुआ था, छत के पास लगी जालीदार खिड़की से छनकर आती धूप को देख रहा था। उसने कश्यपुरी की हवा को सूंघने की कोशिश की, पर नहीं कर सका। वह यहीं फंसा हुआ था और हर पल खुद से नफरत करता था, लेकिन भगवान विष्णु की शरण में जाने के अपने फैसले पर उसे कभी संदेह नहीं हुआ।
मुझे विश्वास है कि वह मुझसे मिलने आएगा।

‘और अगर वह ऐसा नहीं करता तो?’ एक आवाज ने कहा, मानो किसी ने उसके मन की बात पढ़ ली हो।
प्रहलाद ने ऊपर देखा तो उसे एक महिला दिखाई दी – घुंघराले बालों वाली एक महिला, जिसकी मुस्कान बेहद खूबसूरत और जानी-पहचानी थी। वह बिल्कुल वैसी ही दिख रही थी जैसी तस्वीर उसके पिता ने अपने अध्ययन कक्ष में रखी हुई थी। वह उसकी मां थी।
‘अगर वो नहीं आया तो क्या होगा, बेटा?’ कायाधु ने आगे आते हुए पूछा, और उसकी आवाज बिल्कुल वास्तविक लग रही थी।
क्या मुझे मतिभ्रम होने लगा है?
‘वह करेगा। मुझे उस पर भरोसा है,’ प्रहलाद ने जवाब दिया, लेकिन उसकी आवाज कमजोर थी।
‘तुम यहाँ तीन दिन से हो। तुम अंधकार के आगे हार मानने ही वाले हो, फिर भी तुम उस पर विश्वास करते हो। बेटा, तुम्हारा विश्वास इतना मजबूत क्यों है?’ प्रहलाद ने सिर हिलाते हुए आह भरी।
वह तो बस मेरे अपने डर का ही नतीजा है।
क्योंकि मेरे पास और कुछ नहीं है, और जब कुछ नहीं होता, तो भगवान विष्णु होते हैं। और आस्था होती है। कभी-कभी, प्रकाश की ओर मार्गदर्शन पाने के लिए आपको आँख बंद करके आस्था का अनुसरण करना पड़ता है।
प्रहलाद के गालों पर हथेलियाँ फेरते हुए कायाधु की आँखें नम हो गईं और उसने उन्हें सहलाया। ‘मुझे उम्मीद है कि तुम सही हो, पुत्र। मैं इस साम्राज्य के लिए मरी थी। और तुम अपने धर्म के लिए मरने वाले हो। मुझे नहीं पता कि इनमें से कौन सा ज़्यादा बुरा है।’
प्रहलाद के पास इसका कोई जवाब नहीं था, क्योंकि तभी द्वार खुलने की तेज़ आवाज़ से उनकी बातचीत रुक गई और कायाधू गायब हो गया। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, लेकिन वह चुप रहा। उसने द्वार की ओर देखा और होलिका को अपने दो अंगरक्षकों के साथ अंदर आते देखा। प्रहलाद ने देखा कि उसकी आँखें लाल थीं और वह थकी हुई लग रही थी।
‘आज का दिन है, बेटा,’ होलिका ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘क्या तुम तैयार हो?’ प्रहलाद ने सिर हिलाया।
‘अच्छा। मेरे पास तुम्हारे लिए एक और आश्चर्य है। कौवे का संदेश आ गया है।
तुम्हारा भाई मर गया है,’ उसने कहा।

उसका दिल बैठ गया।
‘युद्ध में मारे गए,’ वह खिलखिलाकर हंसी। ‘यह कितना मजेदार है! हिरण्य के उन दोनों लड़कों को वही मिला जिसके वे हकदार थे।’
‘इसके लिए मेरे पिता तुम्हें मार डालेंगे।’
‘प्रहलाद, तुम उसे मुझसे बेहतर जानते हो। वह गद्दार को मारने पर मेरी तारीफ करेगा, अपने बेटे को मारने पर मेरी निंदा नहीं करेगा।’ होलिका ने सिर हिलाया। ‘वह हमेशा तुम्हें अपना सही उत्तराधिकारी मानता था और तुमने उसके साथ विश्वासघात किया। मैंने एक कौवे को भेजकर उसे तुम्हारे कार्यों की सूचना दे दी है और उससे कह दिया है कि तुम्हारी फांसी में अब और देरी नहीं की जा सकती। तुम्हें अपने कर्मों का फल भुगतना होगा। उसे पकड़ो,’ उसने अपने पहरेदारों से कहा।
पहरेदारों ने प्रहलाद को उठाया और उसे बाहर धकेल दिया, उनके भाले उसकी पीठ पर चुभ रहे थे। उसने एक लंबा कुर्ता पहना हुआ था जिससे उसका पूरा शरीर ढका हुआ था और वह होलिका के पीछे-पीछे जेल से बाहर निकलने लगा।
वह अनुहरद के अलावा किसी और चीज के बारे में सोच ही नहीं पा रहा था।
मर गया। नहीं।
उसका दिल डूब रहा था, दुनिया के प्रति नफरत से भारी हो गया था।
जैसे ही वह जेल से बाहर निकला, उसने एक लंबा गलियारा देखा जिसके दोनों ओर लोग उस पर चिल्ला रहे थे और थूक रहे थे, साथ ही ऐसे होर्डिंग्स पकड़े हुए थे जिन पर लिखा था, 'झूठा राजा'।
‘तुम शायद पूछोगे कि मैंने तुम्हारी फांसी के लिए तीन दिन क्यों लिए,’ होलिका ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘ताकि सबको पता चल जाए कि तुमने क्या किया है। ताकि सबको गुस्सा आए। ताकि वे तुमसे उतनी ही नफरत करें जितनी मैं तुमसे करती हूँ।’
‘आप मुझसे इतनी नफरत क्यों करती हैं, चाची?’ प्रहलाद ने पूछा। सूरज की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी, मानो उसकी आँखें चौंधिया रही हों। वह खुद को पूरी तरह असुरक्षित महसूस कर रहा था। सब कुछ खत्म हो चुका था।
पूरा शहर उससे नफरत करता था।
‘क्या यह मेरी मां की वजह से है?’ उसने जोर देकर पूछा।

‘नहीं, मूर्ख। मुझे तुम्हारी माँ पसंद थी,’ होलिका गुर्राई। ‘ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारे कार्यों के कारण मेरे एक बहुत करीबी व्यक्ति की मृत्यु हो गई है।’
प्रहलाद की आंखें चौड़ी हो गईं। उसने इस बारे में उस नजरिए से कभी नहीं सोचा था।
और जब तुम्हें फांसी दे दी जाएगी, तो मैं तुम्हारे बाकी साथियों को ढूंढ-ढूंढ कर उनकी हत्या कर दूंगा, क्योंकि उन्होंने मेरी सिम्मी के साथ जो किया है, उसका मुझे पछतावा है।
‘मैं तहे दिल से माफी मांगता हूं। मुझे… मुझे पता नहीं था,’ प्रहलाद ने कहा। ‘अगर मुझे पता होता…’
‘तुम्हें कोई परवाह नहीं होती, लड़के,’ होलिका ने उस पर तीखे स्वर में कहा। ‘मेरी अपनी कोई संतान नहीं थी, लेकिन जब मुझे एक संतान मिली, तो तुमने उसे मुझसे छीन लिया।’
प्रहलाद को इतना गहरा अपराधबोध हुआ कि वह उसे व्यक्त करना चाहता था, लेकिन उसके पास शब्द नहीं थे। तभी उसने देखा कि उसे कहाँ ले जाया जा रहा है। राजधानी के दक्षिणी द्वार के पास एक बड़ी नदी बहती थी – और वह बहुत गहरी थी। नागरिकों को उसमें प्रवेश करने की मनाही थी, क्योंकि वे उसकी प्रचंड धारा में डूब सकते थे।
'मुझे लगा जैसे मेरा सिर धड़ से अलग हो रहा है,' प्रहलाद ने अपनी किस्मत पर हंसते हुए कहा।
'तुम्हारे जैसे गद्दार के लिए डूबकर मरना ज्यादा बेहतर रहेगा,' होलिका ने कंधे उचकाते हुए कहा।
लोगों की हंसी सुनकर प्रहलाद ने सिर हिलाया। वह अनुह्राद, धृति, नारद और अपनी माता कयाधु को अंतिम बार देखना चाहता था। वह नदी के पास पहुंचा, जिसके पार घना जंगल था।
प्रहलाद ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे अंतरिम राजा के निष्पादन को देखने के लिए आए सभी नागरिक दिखाई दिए। वे वहाँ खड़े होकर तमाशा शुरू होने का इंतज़ार कर रहे थे। उसने दूर से चुपचाप तमाशा देखते हुए दानवों को भी देखा।
एक गार्ड ने उसकी जंजीरें तोड़ दीं और फिर उसके पैरों को रस्सियों से बांध दिया, जिनके सिरों पर दो पत्थर थे।

‘क्या आपके पास कोई अंतिम शब्द हैं?’ होलिका ने पूछा।
भगवान विष्णु का आशीर्वाद और सद्गुण मुझ पर बना रहे।
होलिका हंस पड़ी। 'ठीक है।'
पहरेदार ने प्रहलाद को नदी के किनारे धकेल दिया। फिर उसने प्रहलाद के पैर से बंधी हुई चट्टान को उठाया और पानी में फेंक दिया।
एक झटका लगा, लेकिन इतना नहीं कि वह अंदर खींच ले। उसने अपने ईश्वर के नाम पर हाथ जोड़ते हुए अपने दिल की धड़कन को तेज महसूस किया।
इसके बाद गार्ड ने दूसरा पत्थर उठाया और उसे नदी में फेंक दिया।
और पल भर में प्रहलाद के पैर आगे की ओर झटक गए, जिससे वह पानी में गिर गया।
उसे चारों ओर सिर्फ अंधेरा ही दिखाई दे रहा था। लोगों की आवाजें थम सी गईं।
उसके चारों ओर सब कुछ पानी ही पानी था, जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था।
और चट्टानों ने उसे गहराई में खींच लिया…

उपसंहार

अन्धक
क्या सबको लगा था कि मैं इतनी आसानी से मर जाऊँगा?
अंधका को सोनितपुर से पचास मील दूर एक काफिले में ले जाया जा रहा था, उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसके साथ उसकी राक्षस सेना, पिशाच और उसके बचे हुए सैनिक थे... सभी एक साथ सूर्यास्त की ओर, बर्फ से दूर, हरे-भरे भूभाग की ओर बढ़ रहे थे।
लेकिन अंधका देख नहीं सकता था... उसे केवल सूखते हुए बारिश के पानी की गंध, पत्तों की महक आ रही थी। वह गौरैयों की आवाज़ सुन सकता था।
उसे पता था कि नरसिम्हा उसके पीछे है और उसे रोकना ज़रूरी है, ताकि अंधका अपनी बची हुई सेना को बचा सके और अपनी जान बचाकर भाग सके। इसलिए, नरसिम्हा के सामने आसानी से आत्मसमर्पण करवाने के लिए एक छलावा रखा गया था। नरसिम्हा ने अपने ही एक हमशक्ल को मार डाला था – वही एक हमशक्ल जिसे अंधका ने हताशा में अंधा कर दिया था, ताकि वह ज़्यादा विश्वसनीय लगे।
वह ऐसा नहीं करना चाहता था, लेकिन यह जरूरी था।
छलावा छोड़ने का एक और मकसद भी था। अब जबकि नरसिम्हा ने उसे मार डाला था और यह खबर फैल चुकी थी कि वह अब नहीं रहा, तो वह धैर्यपूर्वक अपनी भव्य योजना पर काम कर सकता था।
मैं असुरों और देवताओं से सब कुछ छीन लूंगा। उन्होंने मेरा बचपन छीन लिया।
उनके तुच्छ युद्धों ने मेरी जान ले ली। और अब, मैं उनके साम्राज्यों को छीन लूंगा।
वह मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।
‘महाराज, कहाँ जाना है?’ उनके विनम्र सेवक कलानेमी ने पूछा।
अंधका ने गहरी सांस ली और उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई।
‘कश्यपुरी।’

क्या प्रहलाद बच पाएगा?
क्या नरसिम्हा को मुक्ति मिलेगी? भगवान रुद्र ने नरसिम्हा को कौन सा रहस्य बताया था? क्या हिरण्यकश्यप इंद्र को मार सकेगा?
अंधका की भव्य योजनाओं का विवरण क्या है?
दूसरी किताब में जानिए!
आगे जारी रहेगा…
महावतार त्रयी पुस्तक 2
हिरण्यकश्यप

आभार

बहुत से लोग सोचते हैं कि किताब का सृजन केवल लेखक द्वारा किया जाता है।
लेकिन वास्तव में हर किताब के निर्माण के पीछे लोगों की एक पूरी टीम होती है।
चलिए शुरुआत मेरे माता-पिता - ज्योत्सना और लेस्ली मिसल से करते हैं। वे मेरे जीवन में एक मजबूत स्तंभ रहे हैं और मैं इसके लिए बहुत आभारी हूं। साथ ही, मेरे एजेंट, रेड इंक लिटरेरी एजेंसी के अनुज बाहरी भी। वो इस इंडस्ट्री में मेरे मार्गदर्शक हैं, जहाँ इतने सारे रास्ते और संभावनाएं हैं कि मुझ जैसे 22 वर्षीय युवक के लिए भटक जाना आसान है। श्री बाहरी ने ऐसा होने नहीं दिया।
मैं अपने शानदार प्रकाशकों को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ। वे इस किताब को लेकर इतने उत्साहित हैं कि मुझे यकीन करने के लिए खुद को चुटकी काटनी पड़ रही है कि यह सचमुच हो रहा है।
सबसे पहले स्वाति दातुआर, जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित करवाया और मेरे सभी सवालों को ध्यान से सुना। धन्यवाद। मैं कभी-कभी बहुत परेशान करने वाली होती हूँ, लेकिन आपने मेरे साथ बहुत धैर्य रखा।
प्रेरणा गिल, जिन्होंने मेरी किताब की इतनी कुशलता से कॉपी एडिटिंग की।
पर्सी भारूचा, जिन्होंने मेरी मार्केटिंग रणनीति तैयार की। वो मुझे ‘ब्रो’ कहकर बुलाते हैं – जो कि आम तौर पर ‘सर’ कहने से एक अच्छा बदलाव है।
मैं जितेंद्र और अर्थत स्टूडियो में उनकी टीम का विशेष रूप से आभारी हूं।
मुझे एहसास हुआ कि मैं उनका पर्याप्त धन्यवाद नहीं करता। वे मेरी किताबों के लिए इतने शानदार कवर आर्ट बनाते हैं और बेहद पेशेवर रवैया दिखाते हैं।
साथ ही, मैं हार्परकॉलिन्स इंडिया की बोनिता वाज़-शिमरे का भी धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने अपनी कलात्मक प्रतिभा का इस्तेमाल करते हुए इस कवर को पहले से भी कहीं अधिक शानदार बना दिया।

मैं बिजीत सिन्हा को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने इस पुस्तक के पहले मसौदे का संपादन किया। वह मेरी मुलाकात के सबसे बेहतरीन इंसान हैं।
इस पुस्तक की मेरी पहली बीटा रीडर शिवंगी साहा को बहुत-बहुत धन्यवाद। आप मेरी पहली रीडर थीं और आपने मुझे सारी खूबियाँ बताकर इस पुस्तक को और भी बेहतर बना दिया। आपके बिना यह संभव नहीं होता।
मैं अपने परिवार को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ – मेरे चचेरे भाई रयान और मेरी चाची और चाचा, जो सभी मेरे बहुत करीब हैं और इस सफर में हमेशा मेरे साथ खड़े रहे। हमें उन लोगों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने हमें आज इस मुकाम तक पहुँचाया है।
पुस्तक का ट्रेलर बनाने के लिए प्रखर भार्गव और उनकी टीम का धन्यवाद, और उसमें अभिनय करने के लिए विशाल बावा का भी धन्यवाद। सोशल मीडिया पर मेरे द्वारा प्रचारित क्लिप बनाने के लिए शुभम घाटगे का धन्यवाद। प्रचार के लिए उपयोग किए गए अनोखे चरित्र डिजाइन बनाने के लिए हितेश का धन्यवाद। मैं अपने दोस्तों रागिनी रघुराम, चेतन शर्मा और आयुष डोगरा को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं अपनी किताबों के बारे में अपने विचारों पर उनसे चर्चा करता हूँ और वे हमेशा मेरे प्रति उत्साही और धैर्यवान रहे हैं।
और अंत में, मैं सोम्या शर्मा को धन्यवाद देना चाहता हूं।
किताब की मार्केटिंग को लेकर उसके पास हमेशा बहुत ही शानदार विचार होते हैं। कभी यह मत सोचो कि तुम्हारे विचारों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

किताब के बारे में

कभी एक बहादुर सैनिक रहे नरसिम्हा ने युद्ध छोड़ दिया है और अब वे एक चिकित्सक के रूप में छुपकर जीवन बिता रहे हैं।
किसी गांव में।
लेकिन उसके अतीत का एक जाना-पहचाना चेहरा उससे अत्याचार रोकने में मदद मांगता है।
अंधा हड़पने वाला - अंधका। अगर नरसिम्हा इनकार कर देता है, तो शायद दुनिया खत्म हो जाएगी। वह क्या करेगा? और क्यों?
क्या उसने शुरू में ही युद्ध छोड़ दिया था? कश्यपुरी के अंतरिम राजा प्रहलाद अपने आदर्शों और अपने देश के आदर्शों के बीच दुविधा में फंसे हुए हैं।
एक दुष्ट पिता और भगवान विष्णु के प्रति उनका प्रेम। वे किसे चुनेंगे? असुर साम्राज्य के शासक हिरण्यकश्यप अपने पुत्र की मृत्यु का बदला लेना चाहता है।
अपनी पत्नी को पाने के लिए, उसे कई परीक्षाओं से गुजरना होगा और अंततः सफलता प्राप्त करनी होगी। हथियार – ब्रह्माशास्त्र। लेकिन इन परीक्षाओं ने कई अन्य लोगों को भी भेज दिया है।
उनकी मृत्यु. क्या हिरण्यकश्यप जीवित रह सकता है?
भगवान विष्णु के चौथे अवतार की पुनर्कल्पना में आपका स्वागत है।
बेस्टसेलिंग लेखक केविन मिसल।

[redacted]

[redacted] 14 [redacted] 22 [redacted], [redacted] [redacted] [redacted]: [redacted] [redacted]: [redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

Harper
Collins

□□□□ □□□ □□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□

http://twitter.com/HarperCollinsIN

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□

□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□

http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia

□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

http://instagram.com/harpercollinsindia/

Tumblr □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□

http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] 2019 [illegible]
[illegible]-75, [illegible] 57, [illegible], [illegible] [illegible] 201301, [illegible]
www.harpercollins.co.in
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1
[illegible] © [illegible] [illegible] 2019
ISBN: 978-93-5357-076-7
[illegible] [illegible] © [illegible] 2019 [illegible]: 978-93-5357-077-4
[illegible] [illegible] [illegible] [

□□□□□□□□□ □□□□□□, 55 □□□□□□□□ □□□□, □□□□□ 2900, □□□□□□□, □□□□□□□□□ M5R 3L2
□□ 1995 □□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□□, □□□□□□□□□ M1B 5M8, □□□□□□
25 □□□□□ □□□□, □□□□□□□, □□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□ 2073, □□□□□□□□□□□□□
195 □□□□□□□□, □□□□□□□□□□, □□□□□□ 10007, □□□□□□